चैत्र, वैशाख सम्वत् १९९७

सम्मेलन-पत्रिका

[भाग २७, संख्या ८, ९]

संपादक

श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

साहित्य मंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

एक प्रति ।=)

विषय-सूची

नियमावली

१—सम्मेलन-पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है।

२—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदर्शों की पूर्ति में सहायक ह[ोना] पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) है।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार साहित्य-मन्त्री, हिन्दी साहि[त्य] सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका-संबन्धी पत्र-व्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहि[ए] अन्यथा आवश्यक-अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

सम्मेलन-पत्रिका

भाग २७]   चैत्र, वैशाख १९९७   [संख्या ८, ९

बाँकीदास और उनके काव्य

[लेखक—श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित 'साहित्य-रत्न']

यह कवि डिंगल भाषा में बहुत ऊँचा स्थान रखते हैं। ये आसिया जाति के चारण थे। इस जाति के लोग पहले नागवंशियों के फिर राठौड़ों के पोलपात हुए। जोधपुर नरेशों के भी ये कृपापात्र रहे। यह कवि फतह सिंह के पुत्र भाँडिया वास (परगना पचभद्रा) के निवासी थे। इनका जन्म सं० १८३८ वि० में हुआ। विद्या पढ़ने में इनकी बड़ी ही अभिरुचि थी। जब इनकी ग्राम-शिक्षा समाप्त हुई तो ये जोधपुर आ गये और ठाकुर राठौर अर्जुन सिंह के आश्रय में रह कर अध्ययन करने लगे। इन्होंने ठाकुर साहब की प्रशंसा में यह दोहा कहा—

रवि रथ चक्र गणेश रद, नाक अलंकृत नार।
यूंहिज हक हल पर अजो दीपै सूर दतार॥

बाँकीदास ने स्वयं अपने गुरुओं के विषय में कहा है—

"बंक हतेयक गुरु किये जित यक सिर पर केस।"

इससे ज्ञात होता है कि इन्होंने बहुत से गुरुओं से शिक्षा पाई थी। ये कविराज डिंगल, व्रजभाषा और संस्कृत के पूर्ण विद्वान थे। फारसी उर्दू आदि भी जानते थे। इनमें स्वाभिमान की मात्रा भी अधिक थी। जब एक बार जोधपुर नरेश मानसिंह की आँखें दुखने आईं उस दशा में सरदारों का उनसे मिलना बन्द कर दिया गया था। उस राज की यह रीति ही थी। यदि आवश्यक कार्य हो तो पर्दे की आड़ से बात चीत की जाती थी। महाराज ने बाँकीदास को बुलवाया परन्तु वे नहीं आये। अन्त में उनकी इच्छा जान कर प्रत्यक्ष

मिलने की प्रतिज्ञा पर उन्हें बुलाया गया और तब वे आने लगे।

सं० १८७० वि० में एक बार रूपनगर और मरवा गाँव में मानसिंह और जगतसिंह व्याह करने गये। उसमें पद्माकर और बाँकीदास भी गये थे। उनका शास्त्रार्थ हुआ। पद्माकर जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ थे। अंत में बाँकीदास विजयी हुए।

एक बार महाराणा उदयपुर ने इन्हें दान लेने के लिये बुलाया परन्तु इन्होंने जोधपुर दरबार के सिवाय अन्य किसी का दान न लेने की प्रतिज्ञा कर ली थी। इस विषय में एक छंद प्रचलित है—

पारस की परवाह नहीं परवाह रसायन की न रही है।
वंक सौं दूर रहौ सुर पादप चाह मिटी कित मेरु मही है॥
देवन की सुरभी दिस दौर थकीयन की सब सांची कही है।
मांगि हौं एक मरुपति मान कौं नाथ निभायगो टेक गही है॥

उन्होंने उदयपुर दरबार में न जाने के किये कहला भेजा था। और न आने की क्षमा मांग ली थी।

इनको सम्पत्ति तथा अधिक प्रतिष्ठा पाने की भी तीव्र अभिलाषा प्रतीत होती है। तभी तो वे सूध कवि के विषय में कहते हैं—

कहै बंक कवि सूध कवि काहू धुर तप कीध।
जग दाता ऊनड़ जिसौ दई धणी जै दीध॥

ऊनड़ जामनगर (गुजरात) का राजा था। उसने सूध कवि को अपना राज्य तक दान दे दिया था। बाँकीदास की भी इसी प्रकार की अभिलाषा थी। सं० १८८१ वि० में अपने पूर्वज भीमा जी के अनुकरण पर उन्होंने चारणों को सौ-सौ रुपये अश्व मूल्य के रूप में दिये थे। इस प्रकार ५०००) दान दिया था।

इनकी मृत्यु सं० १८८१ वि० में हुई थी।

इनकी रचना डिंगल भाषा में है। यह भाषा सौरसेनी से निकली हुई है और अपभ्रंश से मिलती जुलती है। डिंगल भाषा राजपूताने में बोली जाती है। राजपूतों का जीवन सैकड़ों वर्षों तक युद्ध का जीवन रहा है और ये चारण आदि उनको प्रोत्साहन देने के लिये रक्खे जाते थे। अतः उनकी रचनाएँ भी वीर-

भाषा

काव्य से परिपूरित हैं। और वह भाषा इस काव्य के लिए ऐसी अनुकूल बन गयी है कि डिंगल के नाम से ही वीर काव्य का स्मरण हो आता है। इस भाषा में टवर्ग का बाहुल्य है। 'न' के स्थान में उस प्रान्त में 'ण' का प्रयोग तो इतना अधिक होता है कि ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों से ही नितान्त भिन्न प्रतीत होती है; यद्यपि ये तीनों ही सौरसेनी अपभ्रंश से निकली हुई हैं।

भाषा का नमूना भी देखिये—

केहरतणी कलाइयां भणणाहट भमरांह।
भींजी गजसिर भाँजतां यक्षसौरँभ डभरांह॥ १॥
पिड़भूपयि पछाड़ियों खुरम गयौ करिखेह।
गाजण गजण अभंजिया वीर वणायौ वेह॥ २॥

इनमें टवर्ग की अनोखी छटायें मानो युद्ध की घरराहट हो रही है। पुरुष शब्द की अधिकता ही डिंगल की विशेषता है।

इसका साहित्य भंडार भी बहुत गहरा है। इसमें वीर रस की प्रधानता होते हुए भी शृङ्गार आदि की रचनायें भी कम नहीं हैं। कृष्ण-रुक्मिणी वेली, ढोला मारू आदि शृङ्गारिक रचनायें भी इसमें पर्याप्त मात्रा में दृष्टि-गोचर होती हैं परन्तु बाहुल्य वीर, रौद्र और भयानक रसों का ही है।

इनके सिवाय बाँकीदास ने नीति इत्यादि के विषय में भी दोहे अच्छे कहे हैं। बैल के विषय में इन्होंने जो दोहे कहे हैं वे 'धवल पचीसी' के नाम से विख्यात हैं। ये दोहे बड़े मार्के के हैं—

प्रथम वीर रस पर विचार किया जाता है—

सूर छतीसी में जो प्रार्थना की गई है वह देखने योग्य है—अवलोकन कीजिये—

धकै फरसधर चक्रधर पाली जिण निज पैज।
सो सूराँ सिर सेहरौ, नर पुंगव सुरनैज॥

इसमें गाङ्गेय भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा पूर्ण करने का चित्र अंकित किया गया है। इन्होंने युद्ध में अपने गुरु परशुराम को हटने के लिये बाध्य किया और भगवान कृष्ण से उनकी प्रतिज्ञा तुड़वा कर महाभारत में शस्त्र-ग्रहण करने के लिये मजबूर किया। कैसा वीर भाव पूर्ण मंगलाचरण है—

एक और प्रार्थना को भी दृष्टिगत कीजिये—

प्राणेश्वर जो पंच मुख भणै पंच मुख बाह।
पूज जिकां श्री पावही दैणी असुरां दाह॥

इसमें भी प्राणों के स्वामी नृसिंह भगवान की स्तुति की गयी है। जिनकी पंचानन (शिव जी) भी प्रशंसा करते हैं। उनकी पूजा से ऐश्वर्य प्राप्त होता है और म्लेच्छों का नाश हो जाता है। अब बाँकीदास युद्ध में मरने वालों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं—

नहीं गया माँचे युवा रवि मण्डल रै राह।
जूझ मुआ रण मैं जिकै, गत पंचमी गयाह॥

इसमें बतलाया गया है कि चारपाई पर मरनेवाले व्यक्ति सूर्यमण्डल बेध कर मोक्ष नहीं पाते। युद्ध-भूमि में लड़कर मारे जाने वाले ही मुक्तात्मा होते हैं। कैसी सुन्दर और प्रोत्साहन देने वाली उक्ति है। फिर वे वीरों के युद्ध का कैसा वर्णन करते हैं। सुनिये—

जिके सूर ढीला जरद ऊबड़ ही आराण।
मूँछ अणी भूहाँ मिलै, मुँहगौ राखै माण॥

जिन वीरों के युद्ध में लड़ते लड़ते कवच ढीले पड़ कर टूट गये हैं, तथा जिनकी मूछें नोकदार और भौंहें मिली हुई हैं; वे ही इस संसार में बहुमूल्य सम्मान को प्राप्त करते हैं। वीरत्व का यह प्रदर्शन आधुनिक काल में चाहे युक्ति-युक्त न जँचे परन्तु अपने काल का तो वह स्वाभाविक और सजीव चित्रण है।

बाँकीदास सिंह को स्वाभाविक और वास्तविक वीर समझते हैं; इसलिये उसकी प्रशंसा बहुत ही प्रभावशाली शब्दों में की है। वे कहते हैं—

बाघ करै नह काट बन बाघ करै नह बाड़।
बाघां रा बघवान सूँ, झिलै अगंजी झाड़॥

इस दोहे में बतलाया गया है कि बाघ न तो कांटों का बन तैयार करता है और न बाड़ लगाता है। उसकी गंध से ही वृक्षों का समूह बन जाता है। अर्थात् उसके भय से कोई उस वन में नहीं जाता और वह जंगल खूब घना हो जाता है। इसी प्रकार प्रभाव शाली व्यक्तियों का प्रताप ही उनकी प्रजा

आदि की रक्षा करता है। इसमें स्वभावोक्ति, व्यतिरेक और अन्योक्ति का अच्छा समन्वय किया गया है।

फिर बाँकीदास सिंह का वर्णन करते हैं—

सादूलौ वन संचरै करण गयंदा नास।
प्रवल सोच भमरां पड़ै हंसा हुवै हुलास॥

इस दोहे में सिंह द्वारा मस्त हाथी के मारे जाने पर कौन सुखी और कौन दुखी है; इसका अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया गया है। जब सिंह मदोन्मत्त हस्ती का वध करता है तो भ्रमरों को चिन्ता होती है क्योंकि उनको मद की सुगन्धि मिलनी बन्द हो जायगी और हंसों को प्रसन्नता होती है क्योंकि उनको गज-मुक्ता खाने को मिलेंगे। इस प्रकार से कवि ने इस दोहे में बड़ा ही मनोहर भाव अंकित किया है।

अब सिंह के विषय में एक और मनोहर उक्ति अवगत कीजिये—

मण्डल माँह बसाय मृग भयौ कलंकी चन्द।
पायौ सीह मयन्द पद, हण हाथल मृग वन्द॥

अर्थात् हिरणों को जिसने शरण दी वह चन्द्रमा कलंकी कहलाया और सिंह मृगों को मार कर मृगेन्द्र (मृगों का राजा) कहलाया। भावार्थ यह कि दुर्बलों को शरण देना भी कभी-कभी अच्छा नहीं होता और उनको मारना उत्कर्ष का द्योतक होता है।

एक और उक्ति पर दृष्टि डालिये—

पद वन राय न पायियो दुरद दिखाले दाँत।
सीह भयो वन साहिबो ढीगां री सँकरात॥

अर्थात् हाथी दाँत दिखाने (दीनता प्रकट करने) से वन का राजा न हो सका और अपनी हेंकड़ी से सिंह वन का राजा हुआ। इसमें शक्ति व तेजस्विता को महत्व पूर्ण बतलाया गया है और दीनता को घृणित कहा गया है।

दाँत दिखाने में लोकोक्ति और पूरे दोहे में अप्रस्तुत प्रशंसा है। और लीजिये—

के दंती शृङ्गी किता नखी बन जन्त।
समझाया दे दे सजा साहूलै बलवन्त॥

सिंह दूसरों को किस प्रकार शिक्षा देता है, इसका बड़ा ही आकर्षक वर्णन किया गया है। दाँत, सींग और नख वाले जानवरों को ताड़ना देकर ठीक मार्ग पर ले आता है। अन्योक्ति और अप्रस्तुत प्रशंसा का बहुत सुन्दर समन्वय है।

आसिया कवि के एक रूपक को भी देखिये—

> सिला तखत केसर चमर अनड़ दरी आवास।
> प्रकट लियां मृगराज पद सादूलां स्वावास।

इस दोहे में सिंह महाराज का चट्टान ही सिंहासन है। उसके गर्दन के बाल ही चँवर ढुर रहे हैं। पहाड़ी कंदराएँ ही निवास स्थान हैं। इस प्रकार उसने प्रत्यक्ष ही मृगराज का पद ले लिया है। कैसा उत्कृष्ट कथन है। हाथी क्यों अपने सिर पर धूल डालता है; इसका वर्णन बाँकीदास के शब्दों में सुनिये—

> मोती धूड़ मिला दिया तैं सादूल तमाम।
> देता सदा जणाय दुप किल और होणौ कांम॥

अर्थात् ऐ सिंह! तूने हाथी को मार कर उसके मस्तक के सम्पूर्ण मोतियों को धूल में मिला दिया। इस पर कवि कहता है कि हाथी भविष्य में होने वाले कार्य को मस्तक पर धूल डाल कर व्यक्त करता है। भावार्थ यह कि मस्तक में भरे मोती एक दिन धूल में मिलेंगे। इसलिए अपने मस्तक पर वह धूल डालता है। कैसी नवीन और अनोखी सूझ है।

अब बैल की प्रशंसा के भी दो एक उदाहरण लीजिये—

> कांकर कर हौ गार गज थल है वर था कंत।
> त्रहं ठौर हे कण तरह कंगो धवल चलंत॥

अर्थात् कंकड़ों में ऊँट घबड़ा जाता है। हाथी गड्ढों में और घोड़ा रेत में थकित होता है। परन्तु बैल तीनों स्थानों पर एक सा उत्तम ढंग से जाता है। इसमें समुच्चय की छटा के साथ अप्रस्तुत प्रशंसा भी बड़ी सुन्दर है। एक और लीजिये—

> धवल रूप धरियौ धरम शिव धवले असवार।
> कामधेन खरणो धवल क्यूँ न्रह फालै भार॥

इस दोहे में कवि ने धर्म का बैल रूप धर, शिव जी का बैल पर सवार होना और कामधेनु की संतान होने से बैल महत्व शाली माना गया है। वह बोझ को अवश्य ले जा सकता है।

इस प्रकार कवि ने बैलों पर अत्यन्त सुन्दर और उत्तम दोहे कहे हैं। जो धवल पच्ची सी के नाम से विख्यात हैं।

दाता के विषय में कवि कहता है—

पहियां राब न पावही पड़ो बीज उण पोल।
ऊ फल सौ रहजौ अडग दूधा दहियाँ छौल।

अर्थात् यदि पथिकों को बड़ों के द्वार पर राब (पका हुआ अधिक पानी में आटा) भी नहीं मिले तो उस पर बिजली गिरे और बाडे के द्वार पर (अर्थात् ग्वालों के यहाँ) यदि दूध उदारता से मिले तो वह स्थिर रहे। इसमें उदारता की बड़ी सुन्दर व्यंजना और कंजूसों की निंदा की गयी है। और भी—

भूका पोसणहार यूं ज्यूं जग कमला कांत।
नागां ढाकण हार इस जिस तर बरां बसन्त॥

इसमें उदार व्यक्तियों को बसन्त की उपमा दी गयी है क्योंकि वह वृक्षों को पत्ते देता है और उसे विष्णु के समान माना है।

आसिया कवि ने नीति पर भी कुछ दोहे कहे हैं—

मनन कीजिये—

अम रस वे इतबार निर दपता मन नास्तिक।
नर सम सार असार बैलां घर बांछै पिसरण॥

इसमें कवि कहता है कि बिना विश्वास का क्रोध, मन में नास्तिकता और निर्दयता हो और सार व असार वस्तु को एक समान मानने वाले व्यक्ति के शत्रु के घर में आनन्द होता है। अर्थात् उसके उल्टे कार्यों से शत्रु को प्रसन्नता होती है।

काज अहोणो हरि करे एह प्राकृति खल अंग।
रामण पहियो राम दिस कर सो बनो कुरंग॥१॥
रीझे सांभल राग भीजै रस नह भै चकै।
नैड़ी आवै नाग, पकड़ीजे छावड़ पड़ै॥२॥

ऐ वक यूनी ऊजला मीठा बोला मोर।
पूछो सफरी पनग नूं ऋत ऊधड़ै कठोर ॥३॥

इन दोहों में कवि ने नीति की बहुत उत्तम भावनाओं इत्यादि का संग्रह किया है।

अन्त में कवि ने वीर राजाओं की प्रशंसा की है राय रणमल्ल की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है—

परवत पईं पछाड़ियां मेरो चाचग देव।
कुंभ करण रांणौ कियौ अह्यौ रमण अजेय ॥

इसमें राणा लाखा के बड़इन से उत्पन्न मेरा और चाचग देव को राय रणमल्ल ने हरा कर राणा कुंभा को सिंहासनासीन कराया। इस से रणमल्ल को प्रशंसनीय कहा है।

फिर वे कहते हैं—

पिड़भू भूमि पछाड़ियौ खुरम गयौ कर खेह।
गाजण गजण अगंजिया वीर वणायौ वेह ॥

इसमें गजासिंह की प्रशंसा की गयी है। जिसने खुर्रम को भीमसिंह सहित हराया था। जिसमें भीमसिंह जो मुगलों के यहाँ सरदार था, मारा गया और खुर्रम जो पीछे शाहजहाँ के नाम से बादशाह हुआ था भाग गया।

इस प्रकार कवि ने अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है। यह कवि डिंगल भाषा का उच्चकोटि का कवि था। इसकी प्रतिभा चतुर्मुखी और दर्शनीय है।

इस पुस्तक के सम्पादन में कुछ साधारण सी अशुद्धियाँ भी रह गई हैं। आशा है नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी अगले संस्करण में इन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करेगी।

बाँकीदास ग्रंथावली के प्रथम भाग के पृष्ठ ९ पर कवि राजा मुरारिदान को जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह का कृपापात्र और समकालीन लिखा है। यह ध्यान ही नहीं दिया कि महाराज जसवन्त सिंह औरंगजेब के समकालीन थे, और उसी के कहने से फ्रांटियर में वहाँ के निवासियों को दबाने के लिये भेजे गये थे और वहीं मारे गये थे। यह संवत् १७४३ वि० की घटना है। और कविराज मुरारिदान सं० १९०० वि० के लगभग हुये हैं। ये बाँकीदास के पौत्र और भारतदान के पुत्र थे। बाँकीदास का जन्म

सं० १८३८ वि० में हुआ था। अतः उनके पौत्र मुरारिदान सं० १७४३ वि० से पूर्व कैसे हो सकते हैं ?

संभवतः यह भूल उनके ग्रंथ 'जसवन्त जसो भूषण' और 'जसवन्तभूषण' के रचने के कारण हुई है। मुरारिदान ने महाराजा जसवन्त सिंह की प्रशंसा में उनके नाम को विख्यात और स्थायित्व प्रदान करने के लिये ये ग्रंथ रचे हैं; उनके आश्रित होने के कारण नहीं। इसी भ्रम में पड़ कर सम्पादक ने भूल कर दी है।

इसके अतिरिक्त कुछ शब्दार्थों में भी भूल हुई है। देखिये—'सूर छतीसी' का बारहवाँ दोहा यह है—

नहीं गया माँचै मुवा रवि मंडल रै राह ।
जूझ मुवा रण में जिकै गत पंचमी गयाह ॥

इसके नोट में 'माचै = खाट जो खाट में मरे नहीं'—लिखा है। वास्तव में इसका अर्थ होना चाहिये था कि 'जो खाट में पड़ कर मरें वे सूर्य-मंडल को वेध कर मोक्ष गामी नहीं हुए' और जो युद्ध-भूमि में मारे गये वे ही मोक्ष को प्राप्त हुए।

पृष्ठ ३३ पर—वलता का अर्थ पीछे लौटना लिखा है। परन्तु इसका अर्थ व्यर्थ होना चाहिये। राजपूताने में यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।

पृष्ठ ३७ पर धुर = अगाड़ी—लिखा है।

परन्तु यहाँ—'धवलन अट कै धुर बहै', में धुर का अर्थ अन्त तक होना चाहिये।

पृष्ठ ४२ पर—चहीले चालताँ = मार्ग में चलते—लिखा है। परन्तु 'चहीले' का अर्थ 'कीचड़ दार गड्ढे' के होते हैं। इसी प्रकार पृष्ठ ४३ पर 'आड़ेके अंक = परावधि'—लिखा है। परन्तु इसका अर्थ शरीर मोड़ना होना चाहिये।

पृ० ४७ के सातवें दोहे—'ज्याँरा मोटा भाग जग मोटा किरतनमन्न' में—मन्न = मन —लिखा है परन्तु यथार्थ में इसका अर्थ 'मानो' होना चाहिये।

पृष्ट ६१ में—'माझी मरण = मुखिये की मृत्यु'—लिखा है परन्तु यहाँ पर 'पलंग पर मरना' होना चाहिये। 'कम ही मत कुल काट माफी मरण मलीण मत'—में उसका भाव भी यही ठीक बैठता है।

इनके सिवाय थोड़े से और भी शब्द हैं जिनके अर्थ अशुद्ध दिये गये हैं। आशा है इन्हें ठीक कर लिया जायगा। इसका सम्पादन अच्छा हुआ है और वीर रस की रचना में इसका स्थान भी बहुत ऊँचा है। यहाँ पर इस ग्रंथावली के केवल प्रथम भाग की ही अशुद्धियाँ दी गई हैं। संभव है अन्य भाग में भी कुछ अशुद्धियाँ हों। अतः उन पर भी दृष्टिपात कर लेना चाहिये।

राम-काव्य की एक भूल

[लेखक—श्रीयुत राकेश गुप्त बी० ए०, 'साहित्य-रत्न']

कई वर्ष पुरानी बात है, मैंने अपने अबोध शैशव के अविकसित मस्तिष्क को लेकर राधेश्याम की रामायण के रूप में राम-कथा का पारायण प्रारंभ किया। कथा की सहज रोचकता और प्रसाद के अबाध प्रवाह में बहता हुआ भी मेरा बालक-मन चित्रकूट में कही गई राम की इस बात पर एकाएक अटक गया—

जब बातें अधर्म-कार्य की हैं, तो कर्म-शील क्या कर्म करे !
हे भरत ! आज्ञा देते हो, यह भाई राम अधर्म करे ?

भरत की एक भूल को सुधार लेने की महान् भावना के आगे राम की यह दलील बहुत लचर लगी। शंका मन-ही-मन में अधिकाधिक गहरी होती गई, और विचार आया कि जब पिता के दिए हुए वरदान के विरुद्ध अवधि से पहले अयोध्या लौट जाना अधर्म था, तो फिर राम का भरत को दिए हुए राज्य का ग्रहण करना किस प्रकार धर्म ?

धीरे-धीरे समय बीता और उसके साथ बुद्धि में भी विकास हुआ। राम-कथा के प्रति मेरी श्रद्धा राधेश्याम से हटकर तुलसी पर केन्द्रित हुई परन्तु वह बचपन की उलझन फिर भी न सुलझ सकी। 'साकेत' और 'राम-चन्द्रिका' का अध्ययन किया, पर इतने पर भी मन को सन्तोष न मिला। राम-काव्य के प्रमुख ग्रन्थों में अब केवल 'वाल्मीकीय रामायण' तथा 'अध्यात्म रामायण' शेष रह गये थे, इन्हें भी पढ़ा, पर शंका ज्यों की त्यों बनी रही। अन्त में मैं अपनी इस शंका का कोई भी समाधान न पाकर इसे एक भूल की परम्परा मानने को विवश हुआ। इस लेख में मैं उपर्युक्त सभी ग्रन्थों से उद्धरण देकर यही दिखलाने का प्रयत्न करूँगा कि वास्तव में इस कथा में एक अतारतम्यता उत्पन्न करने वाली बात है।

कैकेयी ने स्पष्ट रूप से एक वर से भरत को राज्य तथा दूसरे से राम को चौदह वर्ष का वनवास माँगा था।

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का।
देहु एक वर भरतहि टीका॥
मागउँ दूसर वर कर जोरी।
पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥
तापस वेषि विसेषि उदासी।
चौदह बरिस रामु बनबासी॥

—'रामचरितमानस'

नृपता सुबिसेस भरत्थ लहैं।
बरषैं बन चौदह राम रहैं॥

—'राम-चन्द्रिका'

नाथ मुझको दो यह वर एक,
भरत का करो राज्य अभिषेक;
दूसरा यह दो, न हो उदास,
चतुर्दश वर्ष राम बनवास।

—'साकेत'

'अध्यात्म रामायण' तथा 'वाल्मीकीय रामायण' में तो उसने यहाँ तक कहा है कि भरत का अभिषेक उसी सामग्री से किया जाये जो कि राम के राज-तिलक के लिये सजाई गई है।

राम के अभिषेक के लिए जो सामग्री तैयार की गई है, उससे मेरे पुत्र भरत का राज्याभिषेक किया जावे ......चौदह वर्ष पर्य्यंत दण्डक-वन में चीर और मृग चर्म को धारण कर राम तपस्वी हों, और आज भरत अकण्टक यौवराज्य को पावें।

—'वाल्मीकीय रामायण'

तत्रैकेन वरेणाशु भरतं मे प्रियं सुतम्।
एभिः संभृतसंभारैर्यौवराज्येऽभिषेचय॥

—'अध्यात्म रामायण'

ऊपर के किसी भी अवतरण से यह अभिव्यंजित नहीं होता कि भरत के लिए यौवराज्य अस्थायी रूप से माँगा गया था। अभिषेक के होने का अर्थ ही जीवन भर के लिए सिंहासन प्राप्त कर लेना है।

कैकेयी की माँग के पश्चात् अब हम यह देखें कि राजा ने इन वरदानों को किस रूप में दिया। माँग के पहले वे कुछ भी कह चुके हों, पर बाद में उन्होंने अपने मुख से क्या कहा। अध्यात्म रामायण में वे कैकेयी से कहते हैं कि तुम अपने पुत्र के लिए राज्य को ग्रहण करो परन्तु राम को महल में ही रहने दो!

राज्यं गृहाण पुत्राय रामस्तिष्ठतु मन्दिरे।

'रामचरित मानस' में यही बात और भी विकसित ढंग से कही गई है—

रिस परिहरु अब मंगल साजू।
कछु दिन गये भरत जुबराजू॥
एकहिं बात मोंहि दुख लागा।
बर दूसर असमंजस माँगा॥
प्रिया हास रिस परिहरहि, माँगु विचारि विवेकु।
जेहिं देखौं अब नयन भरि, भरत राज अभिषेकु॥

इन अवतरणों को पढ़ने से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि भरत को यौवराज्य तो दशरथ प्रसन्नता-पूर्वक देने को तैयार थे, परन्तु दूसरा वरदान वे कैकेयी को किसी प्रकार भी नहीं देना चाहते थे। इतना ही नहीं, जब उन्होंने देखा कि राम वन को जाने के लिए तैयार हैं, तो उन्होंने क्रियात्मक रूप में उनके पथ में बाधा डालने का प्रयत्न किया, उन्हें वन जाने से रोकना चाहा। 'वाल्मीकीय रामायण' तथा 'साकेत' में तो उन्होंने क्रमशः राम और लक्ष्मण को अपने को बन्दी बनाने के लिए भी आमंत्रित किया है।

हे राघव, मैं तो कैकेयी के वरदान से मोहित हूँ, सो तुम मुझे बाँधकर एक ओर डाल दो और अपने पराक्रम से अयोध्या के राजा हो जाओ।

—'वाल्मीकीय रामायण'

तदपि सत्पुत्र हो तुम शूर मेरे,
करो सब दुःख लक्ष्मण दूर मेरे।
मुझे बन्दी बना कर वीरता से,
करो अभिषेक-साधन धीरता से।
स्वयं निःस्वार्थ हो तुम, नीति रक्खो,
न होगा दोष कुछ, कुल-रीति रक्खो। —'साकेत'

परन्तु दशरथ का यह अनुरोध राम और लक्ष्मण में से किसी ने भी नहीं माना और दशरथ ने अत्यन्त दैन्य-भाव प्रदर्शित करते हुये राम को वन जाने से रोकने का अन्तिम प्रयत्न किया।

भला एक बार भी तो मैं तुम्हारे साथ भोजन और कर लूँ। मेरी और अपनी माता की ओर देखो और आज की रात रहो।

—'वाल्मीकीय रामायण'

तिष्ठ तिष्ठ सुमन्त्रेति राजा दशरथोऽब्रवीत्।

—'अध्यात्म रामायण'

रायँ राम राखे हित लागी।
बहुत उपाय किये छलु त्यागी॥

तथा

सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनक-सुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु, फिरेहु गए दिन चारि॥

—'रामचरितमानस'

दशरथ की आशा-अभिलाषाओं के विरुद्ध राम वन को चले गये। दशरथ ने मन से तो क्या, बेमन से भी अपने वचन को नहीं रक्खा। उनके चरित्र की महानता पर उनके मोह की विजय तो वहीं प्रमाणित हो गई, जहाँ उन्होंने कैकेयी के वरदान माँगते ही 'हाँ' कह दिया। इसके पश्चात् राम का पिता के वचन को जबर्दस्ती रखना दशरथ को सत्यवादी नहीं बना देता। यह तो 'ठोक-पीट कर हकीम' वाली बात हुई। दशरथ अपने मुख से यदि एक बार भी हाँ कह देते, तो फिर चाहे राम उनके वचन का उल्लंघन करके वन को नहीं भी जाते, हम दशरथ को सत्य-प्रतिज्ञ कहने में नहीं हिचक सकते थे। अस्तु, राम चित्रकूट में आकर ठहरे, और उनके प्राण-प्यारे भाई भरत भी उन्हें मना कर अयोध्या लौटा ले चलने के लिए वहीं दौड़े आये। उन्होंने राम से अत्यन्त विनीत-वाणी से वनवास को एक भूल बतलाते हुए अपनी कृपा द्वारा उसे सुधारने की प्रार्थना की।

पिता की भूल-चूक को जो पुत्र साधु या उचित मान लेता है, वही पुत्र लोक में पुत्र माना जाता है और नहीं तो वह सुपुत्र नहीं है।

—'वाल्मीकीय रामायण'

'राम-चन्द्रिका' में भी भरत ने यही बात कुछ अशिष्ट परन्तु जोरदार शब्दों में कही है।

मद्य-पान-रत तिय-जित होई।

* * *

तासु बैन हति पाप न लागै॥

भरत के इस स्वस्थ तर्क का उत्तर देने का प्रयत्न 'अध्यात्म रामायण' और 'राम-चन्द्रिका' में एक अजीब ही ढंग से किया गया है। भरत हठ-पूर्वक राम के अयोध्या न चलने पर अन्न-जल छोड़ने का दृढ़ संकल्प करते हैं। उनके ऐसा करने पर 'अध्यात्म रामायण' में वशिष्ट तथा 'राम-चन्द्रिका' में गंगा उन्हें इस प्रकार समझातीं हैं।

रामो नारायणः साक्षाद् ब्रह्मणा याचितः पुरा।
रावणस्य वधार्थाय जातो दशरथात्मजः॥
योगमायापि सीतेति जाता जनकनन्दिनी।
शेषोऽपि लक्ष्मणो जातो राममन्वेति सर्वदा॥

* * *

निवर्तस्व महासैन्यैर्मातृभिः सहितः पुरम्।
रावणं सकुलं हत्वा शीघ्रमेवागमिष्यति॥

—'अध्यात्म रामायण'

अनेक ब्रह्मादि न अंत पायो।
अनेकधा वेदन गीत गायो॥
तिन्हें न रामानुज बंधु जानौ।
सुनौ सुधी केवल ब्रह्म मानौ॥

* * *

उठो हठी दोहुन काज कीजै।
कहैं कछू राम से मानि लीजै॥

—'राम-चन्द्रिका'

परन्तु यह ढंग मनोवैज्ञानिक चित्रण की माँग को पूरा नहीं करता। अतएव हम इस स्थल का अध्ययन शेष तीनों ग्रन्थों से ही करेंगे। 'वाल्मीकीय रामायण' में राम भरत को समझाते हुए कहते हैं—

हे भरत, तुम को अयोध्या में जाकर उस लोक-पूजित राज्य का शासन करना चाहिए और मुझे वल्कल धारण कर दण्डकारण्य में रहना चाहिए, क्योंकि लोगों के सामने इसी प्रकार हमारा और तुम्हारा विभाग करके महाराज स्वर्ग को सिधारे हैं।

तथा

पिता ने जब तुम्हारी माता से विवाह किया था, तब तुम्हारे नाना से यह प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारी पुत्री से जो पुत्र उत्पन्न होगा, वही मेरे राज्यासन पर बैठेगा।

राम के वनवास की बात दशरथ के किसी रूप में भी स्वीकार न करने से वैसे ही बहुत निर्बल थी, फिर ऊपर दिये हुये अन्तिम उद्धरण ने तो उसे और भी निर्बल बनाकर केवल राज्य की बात को ही प्रधान रक्खा है। ऐसी अवस्था में राम का भरत से यह कहना किस प्रकार धर्म-संगत माना जाय।

मैं यह बात भी कहता हूँ कि जब मैं वन से लौटूँगा, तब धर्म-शील भाई भरत के साथ पृथ्वी का राज्य ग्रहण करूँगा।

पिता के द्वारा भरत को दिये गये राज्य को इस प्रकार चुपचाप स्वीकार कर लेने वाले राम का अरण्य-काण्ड में इस रूप में विलाप करना तो और भी अधिक हास्यास्पद प्रतीत होता है—

मुझे परलोक में महाराज पिता जी अवश्य देखेंगे और कहेंगे कि जितने समय तक की प्रतिज्ञा थी उसको पूरा किये बिना तुम क्यों मेरे पास चले आये?

— 'वाल्मीकीय रामायण'

चित्रकूट के इस दृश्य को तुलसीदास ने तो एक विचित्र पहेली बना दिया है। राम को अयोध्या लौटा ले चलने की चर्चा चलते ही वशिष्ठ भरत तथा शत्रुघ्न से कहते हैं—

तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई।
फेरअहिं लखन सीय रघुराई॥

इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि वशिष्ठ जी के साथ-साथ तुलसीदास जी ने भी राम के कोई उत्तर देने के पहले ही यह मान लिया कि दशरथ की

प्रतिज्ञा की लाज रखने के लिये चौदह वर्ष का वनवास राम के लिये अत्यंत आवश्यक है। यदि वे उससे बचना चाहें तो वन में उन्हें कम-से-कम अपने प्रतिनिधि अवश्य रखने होंगे। यदि हमारे सामने भरत की चारित्रिक महानता की एक परम्परागत पृष्ठ-भूमि न होती, तो निश्चय ही गुरु-वशिष्ठ के इस प्रकार के कथन में हम षडयन्त्र की अभिसंधि मानने को विवश होते। राम जैसे चरित्र से यह कहना कि तुम्हारे अयोध्या लौटने पर भरत को वन जाना होगा, उनको वन में रहने का एक कड़ा आदेश देने से भी अधिक ही है। मानस में इस स्थल के बाद इस प्रसङ्ग की सारी चर्चा कौतुक के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। भरत बार-बार राम से और राम बार-बार भरत से अंतिम निर्णय करने का आग्रह करते हैं और अन्त में भरत को केवल राम की खड़ाउँओं के आधार पर ही सन्तोष हो जाता है।

बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती।
बिनु अधार मन तोष न साँती॥

* *

प्रभु कर कृपा पाँवरी दीन्हीं।
सादर भरत सीस धर लीन्हीं॥

अब जरा 'साकेत' की ओर भी चल कर देखें। उसने इस दृश्य को कहाँ तक तर्क-सम्मत बनाने का प्रयत्न किया है। यहाँ पर अयोध्या लौट चलने के लिये प्रार्थना स्वयं कैकेयी ही करती है। राम का वही चिर-अभ्यस्त उत्तर है।

वन-वास लिया है मान तुम्हारा शासन।
लूँगा न प्रजा का भार, राजसिंहासन?
पर यह पहला आदेश प्रथम हो पूरा।
वह तात सत्य भी रहे अम्ब अधूरा॥

चौदह वर्ष का वन-वास समाप्त करके भी दशरथ द्वारा दिए गये दूसरे वरदान के विरुद्ध राम के राज्य स्वीकार कर लेने से 'तात-सत्य' किस प्रकार अधूरा न रह कर पूरा हुआ, यह 'साकेत'-कार ही जाने। कैकेयी राम से फिर कहती है।

हे वत्स, तुम्हें वन-वास दिया मैंने ही,
अब उसका प्रत्याहार किया मैंने ही।

और राम का वही पुराना असमर्थ उत्तर है!

पर रघुकुल में जो वचन दिया जाता है,
लौटा कर वह कब कहाँ लिया जाता है?

इसके पश्चात् भरत वही 'राम-चरित-मानस' की पुरानी बात दोहराते हैं, अच्छाई इतनी ही है कि 'मानस' में यह बात सब से पहले रख दी गई है और यहाँ सबसे बाद में।

तब भी है तुमसे विनय, लौट घर जाओ।

इस प्रकार से राम-काव्य के सभी प्रमुख ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि राम का चित्रकूट से अयोध्या न लौटने के लिए पिता के वचन को रखने का तर्क देना तर्क की एक भूल (Fallacy) है, और यह भूल आदि-कवि वाल्मीकि से लेकर राम-काव्य के नवीनतम कवि तक सभी से होती आयी है। कैकेयी ने स्पष्ट रूप से दशरथ से दो वरदान माँगे, जिनमें से भरत को राज्य दशरथ प्रसन्नता-पूर्वक देने को तैयार थे; परन्तु निम्नांकित शब्दों में जोर के साथ अपनी पितृ-भक्ति को जतलाने वाले राम ने एक आडंबरपूर्ण तर्क का आश्रय लेकर चित्रकूट से अयोध्या लौट चलने से इनकार किया और पिता के मुख्य वचन की रक्षा न करते हुए अवधि के पश्चात् अयोध्या लौटकर राज्य-सिंहासन पर प्रसन्नता-पूर्वक विराजमान हुए।

निज कर खाल खैंचि या तक तें
जो पितु पग पानहीं करावौं।
होऊँ न उऋन पिता दशरथ तें
कैसे ताके बचन मेटि पति पावौं॥

भरत के राज-तिलक का अर्थ केवल उन्हें चौदह वर्ष तक के लिए ही राज्य देने का भी हो सकता है, इस बात की शंका हमें वाल्मीकीय तथा अध्यात्म रामायणों में निम्न-लिखित स्थलों पर हो सकती है।

यदि १५ वें वर्ष राघव वन से लौटे भी तो भरत राज्य और कोष को छोड़ देंगे, इस बात का मुझे कुछ भी भरोसा नहीं है।

—'वाल्मीकीय रामायण' में कौशल्या का वचन।

इदानीं भरतायेदं राज्यं दत्तं मयाखिलम्।

—'अध्यात्म रामायण'

परन्तु यदि इस बात का ध्यान रखते हुए इन स्थानों पर विचार किया जाय कि संसार के इतिहास में अभिषेक करने का अर्थ एक अवधि-विशेष के लिए राजा बनाना कभी भी नहीं हुआ, तो इस प्रकार की किसी भी शंका के लिए स्थान न रह जायेगा। फिर इस प्रसङ्ग विशेष में भी यदि अभिषेक का यह अर्थ लिया जा सकता तो चित्रकूट से राम को लौटाने में असमर्थ भरत क्यों न अपना अभिषेक करा के चौदह वर्षों के लिए सिंहासन को सुशोभित करते? क्या आवश्यकता होती उन्हें राम के प्रतिनिधि-स्वरूप उनकी खड़ाउँओं को लाकर राज्यासन पर पधरा देने की?

अपने अध्ययन के आधार पर अपने कुछ स्वतंत्र विचारों को मैंने विद्वान पाठकों के सामने रखने का साहस किया है। यदि मेरे द्वारा निर्देशित भूल तर्क-युक्त समझी गई, तो आशा है भावी युग में राम-काव्य की परम्परा में योग देने वाले सहृदय कविगण उसे दूर करने की चेष्टा करेंगे।

हिन्दी के लिये हम क्या करें ?

[साहित्य और संस्कृति की एक स्कीम]

[लेखक—पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी]

हिन्दी भाषा-भाषियों की संख्या १४, १५ करोड़ कही जाती है और जिन प्रान्तों में वे बस रहे हैं वे एक दूसरे से सैकड़ों मील दूर हैं। इन करोड़ों आदमियों तक सांस्कृतिक संदेश पहुँचाना, उनके बीच में ज्ञान का प्रकाश फैलाना, अथवा यों कहिये कि उनमें साहित्यिक जागृति उत्पन्न करना किसी एक संस्था अथवा दस-बीस आदमियों का काम नहीं है, इस समय हम उन लोगों को छोड़े देते हैं जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है और जो उसे राष्ट्र-भाषा के रूप में पढ़ रहे हैं। उनके प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य हैं, पर उनमें से कितने ही सांस्कृतिक दृष्टि से हमसे आगे बढ़े हुए हैं। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि जितनी निरक्षरता हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में है उतनी अन्य प्रान्तों में नहीं।

निरक्षरता-निवारण के लिये जो उद्योग भिन्न-भिन्न प्रान्तीय सरकारों ने किये हैं उनका हमें स्वागत ही करना चाहिये, पर यह काम इतना भारी और इतना अधिक विस्तृत है कि सर्वसाधारण के हार्दिक सहयोग के बिना इसका पूर्ण या सफल होना संभव नहीं और कोरमकोर साक्षरता प्रचार से भी हमारा काम अधूरा रह जायगा। यदि अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के बाद जनता ने 'किस्सा तोता मैना' आठ भाग, 'किस्सा साढ़े तीन यार' या 'छबीली भठियारिन' पढ़ना शुरू किया या 'एक रात में चालीस खून' का स्वाध्याय प्रारम्भ किया तो किया कराया सारा काम चौपट हो जायगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम लोग कार्यक्षेत्र को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट लें और फिर इन क्षेत्रों को जिम्मेदार कार्यकर्ताओं के सिपुर्द कर दें।

विभाजन का सिद्धान्त—किसी तरह की गलतफहमी न हो इसलिये प्रारम्भ में ही हमें एक बात स्पष्ट कर देनी चाहिये, वह यह कि यह विभाजन कार्य की सुविधा की दृष्टि से किया जा रहा है। इसमें कोई भीतरी उद्देश्य

नहीं है। उदाहरणार्थ यदि झाँसी और ग्वालियर के प्रान्त ब्रज साहित्य-मंडल से संबद्ध रह कर अधिक साहित्यिक प्रगति कर सकते हैं तो वे सहर्ष वहाँ पर संबद्ध हों। ब्रजमंडल या बुन्देलखंड मण्डल कोई राजनैतिक प्रान्त तो हैं नहीं! ये तो भाषा के ख्याल से भिन्न-भिन्न भूमिखण्ड हैं और यह भिन्नता भी ऐसी नहीं है कि लकीर खींचकर कोई बता सके। हमारे कुछ आदरणीय मित्रों को इस बात की आशंका है कि कहीं इससे क्षुद्र प्रान्तीयता के भावों के फैलने में सहायता न पहुँचे। ऐसे महानुभावों की सेवा में यह निवेदन कर देना आवश्यक है कि साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य तो प्रान्तीयता जैसे अपराधों को दूर करने के लिये किये जाते हैं, उनका उल्टा प्रभाव कैसे हो सकता है? यदि किसी मुहल्ले के रहनेवाले अपने-अपने घरों को स्वच्छ तथा सुन्दर बनाने के लिये उद्योग करें तो क्या इससे यह आशंका की जा सकती है कि इससे घरेलू झगड़ों की वृद्धि होगी?

विभाजन के सिद्धान्त के मूल में केवल एक चीज है, यानी साहित्यिक कार्य करने की सुविधा। मि० जिन्ना की तरह हम लोग इस देश के टुकड़े-टुकड़े करने थोड़े ही बैठे हैं।

वर्षों के अध्ययन और मनन के बाद हम इस सिद्धान्त पर पहुँचे हैं कि १५ करोड़ आदमियों की साहित्यिक भूख को मिटाने का काम न अकेला साहित्य सम्मेलन कर सकता है और न नागरी प्रचारिणी सभा। इन दोनों महान संस्थाओं के महत्त्वपूर्ण कार्य की यथोचित प्रशंसा करना हम सब का कर्तव्य है। कौन ऐसा कृतघ्नी होगा जो इनके महत्त्व से इन्कार करे? पर मुख्य प्रश्न यह है कि क्या हम अपनी सम्पूर्ण साहित्यिक शक्ति को प्रयाग अथवा काशी या वर्धा में केन्द्रित करना पसंद करते हैं। यदि हम ऐसा करेंगे तो हिन्दी के साहित्यक शरीर को लकवा मार जायगा। जरूरत इस बात की है कि हमारे यहाँ जिले-जिले में और नगर-नगर में साहित्यिक सभाएँ और साहित्यिक परिषद् तथा हिन्दी समाज और नागरी प्रचारिणी सभाएँ कायम हों। ज्योति तथा शक्ति का केन्द्र इन छोटी-छोटी संस्थाओं को बनाना चाहिये। बड़ी-बड़ी संस्थाओं का मुँह ताकते रहने से हम लोग परमुखापेक्षी तथा निर्बल ही बन जावेंगे। सारा प्रश्न है केन्द्रीय शक्ति को सम्पूर्ण हिन्दी जगत में व्याप्त करने का। राजनैतिक क्षेत्र में किसी

एक व्यक्ति अथवा एक समूह के हाथ में संपूर्ण शक्ति दे देने का समर्थन इस कारण से किया भी जा सकता है कि हम लोग पराधीन हैं और हमें अपने विरोधियों के हाथ से सत्ता छीन कर स्वयं अपने घर का मालिक बनना है, पर साहित्य क्षेत्र में ऐसी कोई बात नहीं है। और फिर काँग्रेस भी तो जिला, ताल्लुका और ग्राम काँग्रेस कमेटियों की स्थापना पर जोर देती आ रही है। आशा है कि इस प्रारंभिक गलतफहमी को दूर कर के हम अपने कार्य को अग्रसर करने में समर्थ होंगे।

यद्यपि हम कई वर्ष से इस बात के लिए आन्दोलन करते रहे हैं कि व्रज साहित्य-मंडल, बुन्देलखंड साहित्य-मंडल, अवध साहित्य-परिषद इत्यादि की स्थापना की जावे और इस दिशा में पहले थोड़ा सा कार्य हुआ भी था, पर अभी तक यह कार्य संतोषजनक रूप से आगे नहीं बढ़ सका। यहाँ पर यह बतला देना भी आवश्यक है कि दिल्ली के अधिवेशन में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने हमारे इस विभाजन संबंधी सिद्धान्त को स्वीकार भी कर लिया था। अब वक्त आ गया है कि इस पद्धति के अनुसार आगे बढ़ा जाय। हम लोग इस उम्मेद में हैं कि अभी सम्मेलन हमारी दशा पर करुणा करके इधर ध्यान देगा, कब तक बैठे रहेंगे। दूसरों को अपने कर्तव्य के पालन करने का उपदेश देने के बजाय यह कहीं अच्छा है कि हम लोग स्वयं अपने काम पर जुट जाँय। कहा भी गया है कि 'जिस आदमी की तुम तलाश कर रहे हो, वह खुद ही बन जाओ।'

क्षेत्रों की जाँच—पहला काम जो हमें करना है, वह है अपने क्षेत्र की जाँच या सर्वे करना। यह जरूरत नहीं है कि हम एक साथ दस-बीस जिले ले बैठें। बेहतर तो यह होगा कि हम प्रारंभ में दो-तीन जिलों में ही पारस्परिक साहित्य सहयोग स्थापित कर लें। पेश्तर इसके कि कोई काम शुरू किया जाय यह निहायत जरूरी है कि दो-तीन आदमियों का एक डेपुटेशन भिन्न-भिन्न स्थानों की जाँच कर के वहाँ की परिस्थिति को पहिचान ले।

इन छोटे-छोटे केन्द्रों को स्वावलंबी बनाना चाहिये। चन्दा करने का काम स्थानीय व्यक्तियों का है और उन्हें और साधारण जनता को साफ-साफ कह देना चाहिए कि भई, एक पैसा भी हम आप से नहीं चाहते। आप खुद ही रुपया इकट्ठा करें और स्वयं ही व्यय करें!

विशेष अनुनय-विनय की भी आवश्यकता नहीं। मान लीजिये कि कोई स्थानीय संस्था इसी में अपना हित समझती है कि वह हमारे मंडल से अलग ही रहे तो उस पर किसी भी प्रकार का दबाव डालने की जरूरत नहीं। हम लोगों में एक बड़ा दुर्गुण है कि झट से एक दूसरे के सदुद्देश्यों में आशंका करने लगते हैं। 'जरूर ही इसमें इनका कुछ स्वार्थ होगा। ये कोई न कोई भीतरी स्वार्थ लेकर आये हैं।' ऐसा कह देना हमारे आलोचकों के लिए बड़ा आसान है। ऐसे आदमियों से स्पष्टतापूर्वक कह देना चाहिए कि सौ बार गरज पड़े तो आप हमारे मंडल से संस्था को संबद्ध करें। हमें आपकी खुशामद नहीं करनी, अपना कोई मतलब नहीं गाँठना।

क्षेत्र की जाँच के बाद कार्यक्रम का सवाल आता है। कार्यक्रम में हम (१) पुराने पुस्तकालयों को परामर्श (२) नवीन पुस्तकालयों की स्थापना (३) व्याख्यान माला का प्रबंध (४) साहित्यिक क्लबों की आयोजना (५) साहित्यिक यात्रायें आदि को ले सकते हैं।

इस कार्य के लिए एक छोटी सी पत्रिका की जरूरत है, जो साइक्लोस्टा-इल पर निकाली जा सकती है। वैसे कितने ही पत्र ऐसे हैं जो सहर्ष हमारे समाचारों को और छोटे-मोटे लेखों को छाप देंगे। इन लेखों के रिप्रिन्ट लेकर भिन्न-भिन्न स्थानों को भेजे जा सकते हैं। नवीन पत्र निकाल कर धन का अपव्यय करने की जरूरत नहीं।

साहित्य संबंधी कार्य बहुत धीरे-धीरे ही अग्रसर होते हैं क्योंकि प्रायः साहित्य-सेवी साधन-हीन हैं और उनके पास इतना अवकाश भी नहीं कि वे अपनी जीविका चलाकर इस प्रकार के कार्यों के लिए भी अधिक शक्ति व्यय कर सकें। यदि हम साल दो साल में किसी आश्चर्यजनक परिणाम की आशा करेंगे तो अंत में हमें नाउम्मेद होना पड़ेगा।

भिन्न-भिन्न संस्थाओं का सहयोग पारस्परिक सद्भाव पर ही निर्भर रहेगा। हाँ, इतना प्रबंध तो करना ही होगा कि पोस्टेज तथा कागज इत्यादि का व्यय केन्द्रीय संस्था को मिल जावे, जोर जबरदस्ती का तो कोई मामला है ही नहीं।

प्रायः संस्थाओं में प्रधान, सेक्रेटरी इत्यादि पदों के लिए झगड़े उठ खड़े होते हैं। इस प्रकार की बदतमीजियों को रोकने के उपाय हमें प्रारंभ में ही

सोच लेना चाहिये। जो आदमी पद-लोलुप हों उन्हें हर्गिज कोई पद न दिया जाय।

हमें एक मुख्य उद्देश्य सदैव संमुख रखना चाहिये। केन्द्रीय संस्था का नियंत्रण कम से कम हो और वह भी केवल परामर्श के रूप में। स्थानीय संस्थाओं को अधिक से अधिक स्वतंत्रता हो।

सजीव व्यक्तित्व—हमें जिस चीज की जरूरत है वह है सजीव व्यक्तित्व, संस्थाएं तो पुरुष की छाया मात्र होती है। जिस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में पहले का वह जमाना नहीं रहा जब लोग बड़े दिन के अवसर पर जाग्रत होकर काँग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित हो जाते थे और अपने को धन्य मान लेते थे, वैसे ही साहित्य क्षेत्र में भी अब युग परिवर्तन होने वाला है, बल्कि यों कहिये कि हो गया है।

यदि आप में इतना दम नहीं है कि साहित्यिक क्षेत्र के लिए अपने समय और शक्ति का एक अच्छा भाग दे सकें तो बेहतर है कि आप अपने घर पर बैठें और हिन्दी माता की यथाशक्ति सेवा करते रहें। यह भी कोई छोटी बात नहीं, और आपके रचनात्मक कार्यों की हम प्रशंसा ही करेंगे, पर साहित्यिक क्षेत्र का नेतृत्व अब उन हाथों में नहीं रह सकता जो दान लेना ही जानते हैं देना नहीं। हिन्दी साहित्य में जमाना इस तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है कि २५ वर्ष के बजाय पीढ़ी अब १०, १२ वर्ष की ही होने लगी है। इसमें अपरिग्रही तथा निरंतर दानशील व्यक्ति ही सजीव तथा स्फूर्तिमय रह सकते हैं।

कवीन्द्र का आदर्श—यदि किसी को देखना हो कि साहित्यिक व्यक्तित्व को कैसे सजीव रक्खा जा सकता है तो उसे एक बार शांति-निकेतन जाकर कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन कर लेना चाहिए। ८० वर्ष की उम्र में भी वे कितने प्रगतिशील बने हुए हैं। सैकड़ों साहित्य सेवियों के व्यक्तित्व के विकास में उन्होंने भरपूर सहायता दी है। नोबल प्राइज से मिला हुआ रुपया किताबों की रायल्टी से मिला हुआ धन और उनकी जमींदारी की आमदनी बीसों वर्षों से शान्ति-निकेतन के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए व्यय होती रही हैं। इसके सिवाय बाहर से माँग माँग कर उन्होंने अपनी इस प्रिय संस्था को पाला पोसा है। पूज्य महात्मा जी कहते

हैं :—"शांति-निकेतन भारतवर्ष है" और उनका यह कथन निःसंदेह सर्वथा सत्य है। कवीन्द्र की कविताओं को भले ही हम न समझें और उनके उच्च दार्शनिक विचारों को हृदयंगम करने में चाहे हमें कठिनाई हो पर उनकी निरंतर दानशीलता को तो प्रत्येक सहृदय व्यक्ति समझ सकता है।

यह हम मानते हैं कि हर आदमी कवीन्द्र की तरह साधन-सम्पन्न नहीं हो सकता। और उन जैसे कवि तो सैकड़ों वर्षों में एकाध ही आते हैं। पर मुख्य प्रश्न, इतना धन तथा योग्यता का नहीं जितना भावना का है। जिसके पास एक रुपया ही है वह प्रेमपूर्वक उसमें से दो एक आने ही दे सकता है। बड़ी थैलियों की नहीं, बड़े दिल की जरूरत है। क्या किसी छुटभइये कवि की रचनाओं में संशोधन कर देने में कुछ पैसा खर्च होता है ? क्या नवीन लेखकों को प्रोत्साहन देने में रुपयों की जरूरत है ? क्या समय समय पर उत्साहप्रद पत्र भेजने के लिए बहुत पोस्टेज चाहिए ? जो भी कवि या लेखक अपने प्रभाव को बढ़ाना चाहता हो या अपनी कीर्ति को चिरस्थायी रखना चाहता हो तो उसके लिए एक ही उपाय है, वह यह कि वह अपने छुटभाइयों को—उन व्यक्तियों को जो साधनहीन हैं और साथ ही हमारे परामर्श के लिए उत्सुक—बराबर आगे बढ़ाता रहे और उन्नति के सोपान पर जिस प्रकार वह चढ़ा है उसमें तौर तरीके तथा रंग ढंग अपने अनुभवहीन बंधुओं को बतलाता रहे। ऋषिवर एमर्सन ने साहित्य सेवा का आदर्श बतलाते हुए अच्छा कहा था—

'सत्य ही किसी साहित्य सेवी के लिये पर्याप्त नीति है। जो भी आदमी ईमानदारी के साथ उससे कुछ पूँछे, उसके सामने उसे दिल खोल कर रख देना चाहिए। उसे कलाकारों की कलाबाजियों से ऊपर उठ कर साहित्य स्रष्टा बनना चाहिये। सन्त पुरुषों की तरह आप अपने तरीकों की अनुभूतियों को, अस्त्रों को और साधनों को स्पष्टतया सबको बतला दीजिये कि वे इनका प्रयोग पूर्ण स्वाधीनतापूर्वक कर सकें। इस प्रकार की उच्चकोटि की स्पष्ट-वादिता और उदारता से आप को अपनी प्रकृति की गुप्त शक्तियों का पता लग जायगा और देवता लोग आपको अपने भावों का सर्वसाधारण तक पहुँचाने में सहायता देंगे।'

हमारे साहित्यिक नेताओं के लिये, साहित्यिक बड़भइयों के लिए इस कथन में एक महान संदेश छिपा हुआ है।

जो साहित्य सेवी यह ख्याल करता है कि हम कोई परोपकार कर रहे हैं, वह गलत रास्ते पर है। खुद अपने व्यक्तित्व की सजीवता के लिये जिन्दा-दिली बनाये रखने के लिये उसे घूमने फिरने की आवश्यकता है। इस प्रकार वह नवयुवकों के संपर्क में आकर अपने में नवीनता ला सकेगा।

निश्चित कार्य-क्रम—पर ये यात्रायें एक निश्चित कार्यक्रम के साथ होनी चाहिये। इस विषय में हमें 'सुसंगठित' ढंग से काम करना चाहिये। यद्यपि इस समय हम लोग बड़े पैमाने पर कोई काम नहीं उठा सकते तथापि तीन चार व्यक्तियों की यात्राओं का प्रबन्ध करना मुश्किल न होगा। आगे चल कर हमारे साहित्य सेवियों, कलाकारों और संगीत विशारदों की ये यात्रायें क्या रूप धारण कर सकती हैं, इसके लिए हमें अमरीका की चाताकुआ शिक्षा पद्धति का आदर्श सामने रखना चाहिये। अमेरिका में साधारण जनता के लाभार्थ चाताकुआ शिक्षा पद्धति प्रचलित है। वह पत्रव्यवहार द्वारा स्थान स्थान पर ग्रीष्म विद्यालय खोल कर तथा भ्रमणशील समितियों के द्वारा अमेरिका में शिक्षा प्रचार करती है। प्रसंगवश हम उसकी भ्रमणशील समितियों का संक्षिप्त वृत्तांत यहां देना उचित समझते हैं।

जनता में शिक्षा प्रचार के अतिरिक्त चाताकुआ सप्ताह की प्रथा भी बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। सबसे प्रथम वर्ष के दस दिनों तक होने वाले सम्मेलन की प्रथा को अधिक उपयोगी और अधिक लाभप्रद बनाने के लिए इस संस्था के संचालकों ने चाताकुआ भ्रमणशील समितियों की स्थापना की। इस समय ऐसी समितियों की संख्या ८७०० तक पहुँच गई है। ये समितियाँ संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के भिन्न भिन्न शहरों में खोली गई हैं। इन समितियों ने जनता में शिक्षा फैलाने में बहुत बड़ा भाग लिया है। प्रत्येक समिति वर्ष में आस पास के ६ शहरों में एक ही तारीख में चाताकुआ सप्ताह का समारोह करती है। इस समारोह के लिये प्रत्येक नगर में एक विशाल मंडप बनाया जाता है, जिसे बहुत अच्छी तरह सुसज्जित किया जाता है। प्रतिदिन की कारवाई विशेष मनोरंजक और शिक्षाप्रद बनाई जाती है। सवेरे कई विषयों पर विद्वत्ता पूर्ण व्याख्यान कराये जाते हैं। दोपहर के बाद संगीत

और वाद्यादि तथा रात को नाटक, प्रहसन, भिन्न भिन्न खेल अथवा बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और प्रसिद्ध पुरुषों के विविध विषयों पर उपयोगी भाषण होते हैं। एक वक्ता एक शहर में एक दिन भाषण देकर दूसरे शहर में चला जाता है, और वहाँ भाषण देकर दूसरे शहर में चला जाता है, और वहाँ भाषण देकर तीसरे दिन तीसरे शहर में चला जाता है। इस तरह कुछ कार्यकर्ता ही छः शहरों में सप्ताह-समारोह मनाने के लिये काफी होते हैं।

चाताकुआ में व्याख्यान देने के लिये अपने-अपने विषय के प्रामाणिक विद्वानों, योग्य वक्ताओं और उत्तम प्रचारकों को निमंत्रित किया जाता है। केवल अमेरिका के ही नहीं, यूरोप के विद्वान भी यहाँ व्याख्यान देने के लिए बुलाये जाते हैं, बड़े बड़े विद्वान यहाँ व्याख्यान देने में अपना सम्मान समझते हैं। केवल उत्तम वक्ता और योग्य विद्वान ही नहीं, उत्तम नाटक और अभिनय प्रहसन आदि में अत्यन्त प्रवीण पुरुषों को भी निमंत्रित किया जाता है। वहाँ एक पुरुष एक सत्र (सेशन) में ऐसे अच्छे से अच्छे अभिनय, गान, और भिन्न भिन्न वाद्य सुन सकता है जिनकी उसने पहले कभी कल्पना भी न की होगी। सुप्रसिद्ध पहलवान आकर वहाँ लोगों को विविध प्रकार के व्यायाम आदि भी सिखाते हैं।

यह एक ऐसी संस्था है, ऐसा शिक्षण क्रम है, जिससे जनता की बौद्धिक और नैतिक उन्नति की जा सकती है। प्रसिद्ध अमेरिकन रूजवेल्ट ने इस अपूर्व शिक्षण पद्धति के लिए कहा था कि अमेरिका में सबसे अधिक अमेरिकन चीज यही है। यह एक व्यावहारिक पद्धति है। शिक्षा जगत में इसने क्रान्ति कर दी है। आज अमेरिका ही नहीं यूरोप में भी इस पद्धति का पर्याप्त अनुकरण हुआ है।

यह जरूरी नहीं है कि हम किसी पद्धति विशेष का अन्ध अनुकरण करें। कार्य करते करते हमारी कार्यपद्धति का विकास स्वयं ही हो जायगा। गरज कहने की यह है कि हमें अपने मस्तिष्क के कपाट बन्द न करने चाहिए और प्रकाश चाहे जिस देश से आवे, उसे ग्रहण कर लेना चाहिये।

यह शिकायत की जाती है कि लोग आलोचना करते हैं, कोई कार्यक्रम उपस्थित नहीं करते। हमारी समझ में यह शिकायत बेजा है। आज से ९ वर्ष पहले यानी १ मार्च सन् १९३१ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत किया था।

"यह सम्मेलन हिन्दी भाषा भाषी जनता से प्रार्थना करता है कि वह आगामी वर्ष से वसंत ऋतु में वसंत-व्याख्यान-माला का प्रबन्ध करे और साहित्य संगीत तथा कला इत्यादि की उन्नति के लिये इस ऋतु के महीनों का उपयोग सांस्कृतिक सप्ताहों के रूप में करे।"

"यह सम्मेलन स्थायी समिति से अनुरोध करता है कि वह वसंत-व्याख्यान-माला के लिये उपर्युक्त कार्यक्रम तैयार करे और सम्मेलन की संबद्ध संस्थाओं तथा अन्य सभा समाजों की सहायता से उसे कार्यरूप में परिणत करे।"

इस प्रस्ताव के बाद आठ वसंत ऋतु निकल गईं, और नवीं आज कल निकली जा रही है, पर अभी तक वसंत-व्याख्यान-माला का प्रबन्ध हम लोग नहीं कर पाये।

अब हमें किसी का इन्तजार करने की जरूरत नहीं। हम लोगों में जितने भी इस कार्यक्रम से सहमत हों उन्हें आपस में मिल कर आगे बढ़ना चाहिये। उदाहरण के लिये यदि बुन्देलखण्ड के चार पाँच आदमी भी इस उद्देश्य को अपना लें तो साल दो साल के अन्दर ही कुछ उल्लेख योग्य काम कर दिखा सकते हैं। और यदि बुन्देलखंड तथा ब्रजमंडल के कार्यकर्ताओं का पारस्परिक सहयोग स्थापित हो जाय तब तो कहना ही क्या है! हम उस दिन की कल्पना कर रहे हैं जब कि हमारे प्रान्तों के अलग अलग साहित्यिक मण्डल होंगे और जिलों की भिन्न भिन्न साहित्य परिषदें। नगर नगर में हिन्दी पुस्तकालय तथा हिन्दी समाज होंगे और ग्राम-ग्राम तक हिन्दी साहित्य का संदेश पहुँचेगा।

सदुद्देश्य से किया हुआ कोई कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। जिस देश में भगीरथ २१ पीढ़ी में गंगा को लाये थे, उसके निवासियों को निराश होने की जरूरत नहीं है, क्या संस्कृति की सुरसरि एक दिन में अथवा दो चार वर्ष में इस महाद्वीप को सरस बना सकती है? क्या वट-वृक्ष दो चार दिन में उग सकता है? जो बीज आज हम बो रहे हैं संभवतः वह कई वर्ष बाद अंकुरित हो और उसके पल्लवित होते होते अनेक वर्ष लग जावें। हमें तो "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" इस सिद्धान्त के अनुसार काम करना चाहिए।

ऐतरेय ब्राह्मण में एक जगह बड़े महत्वपूर्ण वाक्य आये हैं। "चरैवेति चरैवेति", चले चलो, चले चलो।

"चलने वाले की आत्मा फलग्राही होती है और उसके सभी पाप मार्ग में ही नष्ट हो जाते हैं, चले चलो, चले चलो।"

"सोने वाला कलयुग है, जागने वाला द्वापर, उठ खड़े होने वाला त्रेता, और चलते रहने वाला सतयुग होता है, चले चलो, चले चलो।"

यह वसंत ऋतु, कुन्डेश्वर जैसा प्राकृतिक सौन्दर्यमय स्थल और ऐतरेय ब्राह्मण का यह उपदेश ! दुर्लभ संयोग है। फिर क्यों न हम प्रगतिशील बनें ?*

* गत १० मार्च १९४० को यह आयोजना बुन्देलखण्ड तथा व्रज-मण्डल के कुछ साहित्यिक कार्यकर्ताओं के संमुख उपस्थित की गई थी।

हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मुख-पत्रिका 'सम्मेलन-पत्रिका' पिछले कई वर्षों से प्रकाशित होती आई है। समय समय पर उसमें सुन्दर और विचार-पूर्ण लेखों के साथ सम्मेलन की स्थायी समिति तथा अन्यान्य समितियों के कार्य-विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। हिन्दी के प्रेमियों, विद्वानों तथा स्थायी समिति के सदस्यों को यह अविदित नहीं है। किंतु अब हम चाहते हैं कि 'सम्मेलन-पत्रिका' प्रति मास ठीक समय पर प्रकाशित हो। साथ ही सुन्दर और श्रेष्ठ साहित्यिक लेख प्रकाशित किये जायँ जिससे हिन्दी के प्रति अनुराग रखने वाले सुदूर प्रांतों के हिन्दी प्रेमी और विद्यार्थी भी उससे लाभ उठा सकें। इसके सिवा 'साहित्य-रत्न' 'मध्यमा' तथा 'प्रथमा' परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों को साहित्य-अध्ययन में समय समय पर सहायता प्राप्त होती रहे। इसलिये हम प्रत्येक हिन्दी प्रेमी तथा विद्यार्थी से अनुरोध करते हैं कि वह 'सम्मेलन-पत्रिका' के स्वयं ग्राहक बनें और अपने मित्रों को भी बनावें। यदि एक हजार भी ग्राहक हमको मिल गये तो 'पत्रिका' का आकार प्रकार भी बड़ा कर दिया जायगा और विद्वानों के श्रेष्ठ साहित्यिक लेखों से भी इसका कलेवर अलंकृत होता रहेगा। आशा है, हिन्दी प्रेमी इस निवेदन की ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे। सम्मेलन प्रत्येक हिन्दी प्रेमी की संस्था है और इसीलिये हम उनसे हर प्रकार के सहयोग और सहायता की पूर्ण आशा रखते हैं। जिन ग्राहकों का वार्षिक चंदा समाप्त हो गया है वे कृपया १) मनीआर्डर से शीघ्र भेज दें।

साहित्य मंत्री

साहित्य और उसका अध्ययन

[लेखक—श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी, एम० ए०, 'विशारद']

(१)

साहित्य शब्द चाहे जितना व्यापक भी होने पर आलोचकों की दृष्टि में सदैव ही एक विशेष अर्थ रखता है। यह हम सुगमता पूर्वक समझ सकते हैं कि कौनसी पुस्तक साहित्यिक है और कौनसी नहीं। लेकिन यह कहना कठिन है कि इसकी जाँच की सुलभ कसौटी क्या है? जब कभी यह प्रश्न सामने आता है कि साहित्य क्या है, हम अपने को कठिनाई में पाते हैं। किसी अँग्रेजी के कवि से पूछा गया था कि कविता क्या है? उत्तर में उसने कहा था कि 'यदि मुझसे पूछा न जावे तो मैं जानता हूँ कि कविता क्या है! अन्यथा मैं नहीं जानता।' ऐसे प्रश्नों के उत्तर में बहुत से लोगों के यही उत्तर होंगे। यह तो हम सब कह सकते हैं कि 'रेलवे का टाइम टेबुल' 'पाक शास्त्र' अथवा 'साकेत' 'रंगभूमि' में कौन सी पुस्तक साहित्य में गिनी जानी चाहिये, पर इसके सम्बन्ध में क्यों का उत्तर देना टेढ़ी खीर है।

यदि हम दो बातों को ध्यान में रक्खें तो हम पर्याप्त रूप से साहित्य का तात्पर्य समझ सकते हैं। साहित्य से तात्पर्य उन पुस्तकों से है जिनमें सर्व प्रथम ध्यान इस ओर दिया गया हो कि उनका विषय समस्त जन समुदाय के मनोरञ्जन की सामग्री हो। दूसरी बात इन पुस्तकों में यह होनी चाहिये कि वे किसी निश्चित ढंग में लिखी गई हों तथा वह ढंग पूर्व परिचित हो तथा उसमें जनसाधारण की रुचि हो। इस तरह से हम गणित, विज्ञान, ज्योतिष इत्यादि के ग्रन्थों को साहित्य में नहीं गिन सकते क्योंकि ये ग्रन्थ विषय के विशेषज्ञों के लिये रचे जाते हैं। साहित्य/जनसाधारण का ज्ञान बढ़ता है लेकिन यह उसका प्रधान उद्देश्य नहीं है। साहित्य का ध्येय मानव समाज को आन्तरिक सुख तथा शान्ति प्रदान करना है।

साहित्य हमें क्यों पढ़ना चाहिये? साहित्य हमें कोई ऐसा उपदेश अथवा ऐसी सूचनाएँ नहीं देता जो हमारी व्यवसायिक उन्नति में सहायक हो सके।

फिर हम क्यों साहित्य की चिन्ता करें ? इस प्रश्न के उत्तर में यहीं कहा जा सकता है कि साहित्य हम इसलिये पढ़ते हैं कि इसका मानव हृदय पर गहरा तथा चिरस्थायी प्रभाव पड़ता है। एक बहुमूल्य पुस्तक का निर्माण जीवन की आहुति देकर होता है। अतएव पुस्तक के अध्ययन से हम जीवन के निकटतम तथा नवीन पहलुओं से परिचय प्राप्त करते हैं। साहित्य उसका तथ्य है जो मनुष्य ने जीवन में देखा है, जो उसने जीवन में अनुभव किया है अथवा जिस पर उसने गम्भीरता पूर्वक विचार किया है तथा जिसने उसके हृदय पर चोट पहुँचाई है और जो हम सब पर तुरन्त ही स्थायी प्रभाव डालने वाला है। सारांश यह है कि साहित्य जीवन का स्पष्टीकरण है जो भाषा के माध्यम द्वारा किया गया है। यह स्पष्टीकरण साहित्यिक कला के अनुसार विभिन्न भागों में बटा हुआ है और साहित्य के विद्यार्थी इसे उन्हीं नामों से पुकारते हैं। साहित्य का जीवन उस जीवन पर निर्भर है जिसको उसने अपना आधार बनाया है। इसको भलीभाँति समझ लेने से हम समस्त असाहित्यिक पुस्तकों से साहित्यिक पुस्तकों को पृथक कर सकते हैं।

साहित्य का निर्माण जीवन की घटनाओं से ही होता है। अतएव हमें साहित्य के साधन ढूँढ़ने को जीवन की ओर ही दृष्टि डालनी पड़ेगी। यही कारण है कि साहित्य का विभाजन जीवन की घटनाओं से ही सम्बन्ध रखता है। साहित्योत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाली मुख्य रूप से मनुष्य की चार भावनायें हैं। (१) अपने भावों को दूसरों पर प्रकट करने की भावना (२) दूसरे लोगों में तथा उनकी रहन-सहन में रुचि तथा उसे उन्नत बनाने की भावना (३) वास्तविक संसार जिसमें हम रहते हैं तथा काल्पनिक संसार जिसमें हम रहना चाहते हैं, दोनों में हमारी रुचि तथा दोनों को उत्पन्न बनाने की भावना (४) हमारा किसी विशेष शैली अथवा प्रणाली से प्रेम तथा उनके अनुकरण की भावना।

कभी-कभी हमारे हृदयों के अन्दर दूसरों को अपने विचार तथा अनुभव समझाने की भावना बड़ी तीव्र हो जाती है। वह समस्त साहित्य जो लेखक के विचार व मानसिक कल्पनाओं का वर्णन करता है इसी का परिणाम है। मनुष्य तथा स्त्रियों के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानने की भावना प्रत्येक मनुष्य के हृदय में रहती है और उसका परिणाम समस्त साहित्य है

जो जीवन के नाटक से सम्बन्ध रखता है। हमारी सदैव ही दूसरों से उन सब बातों के कहने की इच्छा होती है जो हमने देखी या सोची है। विभिन्न वस्तुओं के वर्णनों से सम्बन्ध रखनेवाला साहित्य इसी का परिणाम है। बहुत सी वस्तुओं को सौन्दर्यमय ढंग से सजा कर रखने की प्रवृत्ति मनुष्य में पाई जाती है। साहित्य को कला के रूप में देखने तथा निर्माण करने का यही कारण है। मनुष्य स्वभावतः मिल जुल कर रहना पसन्द करता है तथा इसी कारण से वह अपने अनुभव, विचार, भावनाएँ तथा भाव अपने ही अन्दर छिपा कर रखने में असमर्थ है। इसके विपरीत उसके हृदय में एक प्रेरणा सदैव ही इस प्रकार की रहती है कि वह इन को बतलावे जिन्हें वह जानता है। इससे यह प्रत्यक्ष है कि साहित्य के विभिन्न अङ्ग वे मार्ग हैं जिनके द्वारा मनुष्य अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकता है।

ऊपर लिखी साहित्य की जन्मदात्री ४ भावनाओं में से चौथी सभी साहित्य में पाई जाने के कारण साहित्य को कई भागों में बाँटने में सहायक नहीं हो सकती। जिस प्रकार जीवन में एक भावना पर दूसरी भावना अधिकार जमाती रहती है, उसी प्रकार साहित्य के भेद भी एक दूसरे से अधिक बातों में भिन्न नहीं हो सकते। यही कारण है कि हम किसी भी साहित्यिक कृति को किसी विशेष नाम अर्थात् नाटक, उपन्यास आदि से पुकारने में यह देखते हैं कि इसमें कौन सी भावना प्रधान है। हमारे विभाजन का आधार किसी भावना की प्रधानता होती है।

साहित्य को विभिन्न भागों में बाँटने में केवल भावना का ही ख्याल नहीं किया जाता प्रत्युत यह भी देखना पड़ता है कि यह किस विषय पर लिखा गया है। साहित्य के विषय चूँकि अगणित हो सकते हैं क्योंकि जीवन का हर एक पहलू साहित्य की सामग्री है। इस तरह से विभाजन कुछ कठिनाई उपस्थित कर सकता है। फिर भी हम साहित्य के विषयों को मोटे मोटे भागों में बाँट सकते हैं। (१) किसी का व्यक्तिगत अनुभव (२) किसी मनुष्य का मनुष्य की हैसियत से अनुभव, जीवन, मरण, पाप, पुण्य, मनुष्य और ईश्वर का संबंध इत्यादि, जो कि व्यक्तिगत न होकर समस्त मानव समुदाय से संबंध रखते हैं (३) व्यक्ति-विशेष का अपने साथियों से संबंध—सामाजिक संसार तथा उसकी समस्यायें (४) प्रकृति तथा मनुष्य का उससे संबंध (५) मनुष्य के कला

तथा साहित्य के विभिन्न रूपों में अपने को प्रकट करने के यत्न। साहित्य को इन्हीं पाँच दृष्टिकोणों से देखने पर तथा इन्हीं विषयों की ओर ध्यान देने पर हम पाँच प्रकार का साहित्य पा सकते हैं। इस तरह से पहले प्रकार के साहित्य में मुक्तक काव्य, निबन्ध जिनमें उत्तम पुरुष का प्रयोग किया जाता है। साहित्य-समालोचना जो कि व्यक्तित्व से विशेष संबंध रखती है, आते हैं। दूसरे प्रकार के साहित्य में लेखक अपने आप से बाहर निकल कर बाहरी दुनिया के मानव-जीवन पर दृष्टि डालता है। उस प्रकार के साहित्य में इतिहास, जीवनी, महा-काव्य, खण्ड-काव्य, उपन्यास तथा नाटक गिने जाते हैं। तीसरा भाग वर्णन करने की प्रवृत्ति से संबंध रखता है तथा इसके अन्तर्गत वर्णात्मक निबन्ध तथा कवितायें तथा अन्य इसी प्रकार की सामग्री समझी जाती है।

साहित्य का प्रभाव हमारे ऊपर उसी समय पड़ता है जब कि इसके अध्ययन से हममें वैसी ही सहानुभूति तथा वैसी ही शक्ति उत्पन्न हो जावे जो कि उसको जन्म देते समय लेखक में थी। साहित्य की उत्पत्ति में सर्व-प्रथम मानव-जीवन का हाथ है। दूसरा काम लेखक का है जो आदमी की रुचि के अनुसार इस मसाले को साँचे में ढालता है। लेखक की बुद्धिमत्ता सर्व-प्रथम लेखक में किसी विषय विशेष पर विचार उत्पन्न कराती है। लेखक इन विचारों को अपनी रचना में स्थान देता है। दूसरी सहायता लेखक को उसकी भावुकता में मिलती है। भावुक होने के कारण लेखक के हृदय में किसी विशेष विषय के कारण भावनाओं का उद्रेक होता है और इन भावनाओं का वह पाठकों में भी उद्रेक करना चाहता है। तीसरी सहायता लेखक को उसकी सूझ से मिलती है। अपनी सूझ की प्रचण्डता को लेखक पाठकों तक पहुँचाने के लिये बहुत उत्सुक होता है। लेखक में पाये जाने वाले इन तीन गुणों से सत्-साहित्य की सृष्टि होती है। यह वह कच्चा माल है जिससे अच्छे से अच्छे भवन निर्माण किये जा सकते हैं। इन सब के होते हुए भी यदि किसी बात की कमी रह जाती है तो वह है कारीगरी की कसौटी। मसाला कितना ही अच्छा क्यों न हो, लेखक के विचार, भाव तथा सूझ कितनी ही उत्तम क्यों न हो, जब तक उसमें शैली रूपी कारीगर की हथौटी न होगी तब तक साहित्य उच्च कोटि का न होगा। मसाले को सुन्दर तथा आकर्षक साँचों में

ढाला जाता है तथा इस प्रकार लेखक में एक चौथी बात की आवश्यकता है—वह है उसकी शैली। साहित्य क्या है यह समझने के लिये इतना जानना पर्याप्त है कि कौन सी पुस्तक किन कारणों से साहित्यिक समझी जाती है।

(२)

अँग्रेजी के सुप्रसिद्ध आलोचक मैथ्यू आर्नल्ड का कहना है कि साहित्य जीवन की आलोचना है। इसका अर्थ यही होता है कि साहित्य जीवन का स्पष्टीकरण है तथा यह स्पष्टीकरण लेखक के दिमाग में जैसा कुछ जीवन का चित्र बनाता है उस पर निर्भर रहता है। इसीलिये साहित्य पर लेखक के व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ती है। वह शीशा, जिसके द्वारा लेखक अपने आस-पास के संसार को देखता है उसके व्यक्तित्व का ही होता है।

कोई भी महान् पुस्तक लेखक के हृदय तथा दिमाग की उपज होती है, इसीलिए हम पुस्तक से लेखक को भली भाँति समझ सकते हैं। किसी महान् पुस्तक का गौरव सर्वप्रथम उस व्यक्ति के गौरव पर अवलम्बित रहता है जिसने उस पुस्तक को जन्म दिया हो। वास्तव में महान् कृति वही है जो किसी नवीन तथा मौलिक विषय को नवीन तथा स्वतन्त्र ढंग से वर्णन करे। ऐसी कृति को वही मनुष्य जन्म दे सकता है जो स्वयं उस जीवन से निकटतम सम्बन्ध रख चुका हो,जिसे उसने अपनी कृति में स्थान दिया है। इसी आधार पर हम साहित्य को दो भागों में बाँटते हैं। वह साहित्य जिसका आधार व्यक्तिगत अनुभव होता है, उस साहित्य से जो दूसरों द्वारा सुनी सुनायी घटनाओं के आधार पर रचा जाता है, कहीं श्रेष्ठतर है। तुर्गनेव का कहना है कि दूसरे प्रकार के साहित्य में केवल साहित्य की गन्ध आती है; वह वास्तविक साहित्य नहीं है।

प्लेटो का कथन है कि साहित्य की समस्त अच्छी तथा स्थायी सामग्री का आधार लेखक की सचाई है। जीवन के व्यक्तिगत अनुभव तथा उनको अपने विशेष दृष्टिकोण से देखना तथा उनको सचाई के साथ प्रकट करना यही लेखक का काम है। हम साहित्य का अध्ययन इस प्रकार बहुत ही साधारण ढंग से कर सकते हैं। किसी पुस्तक को पढ़कर

हम अधिक से अधिक उस वर्णित जीवन को समझना चाहते हैं। हम इस अध्ययन के द्वारा लेखक तथा अपने बीच में सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं। हम लेखक के कथनों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं तथा पूरी सहानुभूति के साथ उसके विचारों तथा उसकी भावनाओं को अपनाते हैं। हम देखते हैं कि लेखक ने जीवन को किस रूप में देखा, उसने जीवन को कैसा पाया तथा उसने जीवन से क्या सीखा। हम देखते हैं कि सांसारिक अनुभव का उस पर क्या प्रभाव पड़ा तथा उसके व्यक्तित्व के द्वारा वह किस रूप में प्रकट किया गया। हम लेखक को उसकी पुस्तक के माध्यम द्वारा पहचानने लगते हैं। पुस्तक जन्म जन्मान्तर तक लेखक के व्यक्तित्व का प्रकाश लेकर जीवित रहती है।

साहित्य के अध्ययन के लिये यह आवश्यक है कि वह किसी क्रम से किया जावे। एक पुस्तक यहाँ की, एक पुस्तक वहाँ की पढ़ लेना अध्ययन नहीं कहा जा सकता। अध्ययन का सब से अच्छा ढंग है कि जिस क्रम से लेखक ने अपनी सब रचनाओं को लिखा है, उन्हें उसी क्रम से पढ़ा जावे। इस तरह के अध्ययन में आप व्यक्ति विशेष के जीवन सम्बन्धी विभिन्न परिवर्तनों का पूरा पूरा परिचय प्राप्त कर लेते हैं। इसके बाद दूसरी सीढ़ी लेखकों के तुलनात्मक अध्ययन की होती है। यह निर्विवाद है कि साहित्य के अध्ययन में व्यक्तित्व की तह तक पहुँचना होता है। तुलनात्मक अध्ययन से हमें इस कार्य में विशेष सहायता मिलती है।

किसी लेखक की रचना पढ़ कर उसके जीवन की अन्य घटनाओं का परिचय पाने की भावना प्रत्येक अध्ययन-शील व्यक्ति के हृदय में होती है। लेकिन उच्च-कोटि की जीवनी ही इसमें सहायक हो सकती है। स्वनाम धन्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने जैसी पं० सत्यनारायण जी कविरत्न की जीवनी लिखी है, वैसी जीवनी लेखक के व्यक्तित्व को स्पष्ट करती है। साहित्याध्ययन का यह भी एक अङ्ग है। साहित्य के विद्यार्थी में लेखक के प्रति सहानुभूति होना अत्यन्त आवश्यक है। साहित्य हमें बहुत से व्यक्तियों से परिचित बनाता है, इसीलिये हमें सभ्य बनाने में साहित्य का बड़ा हाथ है। लेकिन इस लाभ के पाने के लिये लेखक के प्रति सहानुभुति होनी चाहिये।

लेखक का व्यक्तित्व साहित्य में कुछ और भी काम करता है। लेखक

की शैली उसके व्यक्तित्व पर अवलम्बित रहती है। लेखक जिसे कि वास्तव में किसी व्यक्तिगत अनुभव का वर्णन करना होता है, वास्तव में किसी नवीन ढँग से कहता है। नवीन विचार नई शैली ही में प्रकट होंगे। शैली की नकल इस बात की द्योतक है कि विचार कहाँ से लिये गये हैं, शैली की नकल में भी व्यक्तित्व की छाप अवश्य रहती है। साधारण भाषा में भी महान् लेखक क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देते हैं। वास्तव में शैली लेखक के मानसिक, आत्मिक तथा कला सम्बन्धी ज्ञान के विकास का चित्र है। वे सब बातें जिन्होंने मनुष्य को व्यक्तित्व दिया है, मनुष्य की शैली बनाती हैं। इस तरह से मनुष्य के व्यक्तित्व और शैली में घनिष्ठ संबंध स्थापित हो जाता है।

(३)

किताबें तो सभी पढ़ते हैं परन्तु सभी व्यक्ति अध्ययनशील नहीं कहे जा सकते। साहित्य के विद्यार्थी और साधारण पुस्तक के पाठक में भेद होता है। साधारण पाठक के लिए कोई पुस्तक क्षणिक मनोरञ्जन का काम देती है। साहित्य का विद्यार्थी प्रत्येक पुस्तक से बहुत कुछ सीखता है। पुस्तक से लेखक तक—लेखक से उस युग तक—उस युग से उस राष्ट्र तक पहुँच जाना साहित्य के विद्यार्थी का ही काम है। कोई भी महान् साहित्यिक साहित्य-संसार से प्रथक नहीं होता। उसका भूत तथा भविष्य से पूरा पूरा सम्बन्ध होता है। इसलिए साहित्य का विद्यार्थी प्रत्येक कृति में राष्ट्रीय जीवन की झलक तथा उसका उत्थान व पतन देखता है।

किसी राष्ट्र का साहित्य उसके युग के समाज के चरित्र तथा विचारों का स्पष्टीकरण होता है। साहित्य का विद्यार्थी एक यात्री के समान है। वह अपने अध्ययन द्वारा भिन्न भिन्न देशों के विचारवान मनुष्यों के सम्पर्क में आता है। इस यात्रा की एक विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य बीते हुये समय में भी यात्रा कर सकता है। अध्ययन में हमें केवल वर्तमान युग के समाज का ही चित्र नहीं मिलता परन्तु हमें भिन्न भिन्न युगों के समाजों का परिचय प्राप्त होता है। साहित्यिक अध्ययन इसीलिए इतिहास के अध्ययन का पूरक समझा जाता है। इतिहास द्वारा हम केवल वाह्य घटनाओं का हाल

जानते हैं। साहित्य हमें उस राष्ट्र की आन्तरिक भावनाओं का परिचय देता है।

प्रत्येक युग के लेखकों में कुछ विशेषतायें होती हैं। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से उनकी कृति कितनी ही प्रथक क्यों न हो उसमें युग की विशेषतायें अवश्य रहती हैं। इसलिये साहित्य के अध्ययन में हमारा प्रधान उद्देश्य साहित्य की विभिन्न शैलियों के उत्थान व पतन का अध्ययन होता है। साहित्य का जीवन से जो घनिष्ठ सम्बन्ध है उसके कारण हमें उस युग के समाज पर दृष्टि डालनी पड़ती है। साहित्य के अध्ययन में जहाँ हम यह देखते हैं कि किसी युग विशेष का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा, वहाँ हमें यह भी देखना पड़ता है कि युग विशेष ने लेखक पर क्या प्रभाव डाला ? बिना इन बातों पर ध्यान दिये हुए पुस्तकें अजायब घरों में रखी हुई मृत जानवरों की हड्डियों के समान होती हैं। बहुत सी पुस्तकें जो पहले ख्याति प्राप्त कर चुकी होती हैं—पढ़ने में अत्यन्त साधारण प्रतीत होती हैं। लेकिन जब हम उन्हें उस युग का ध्यान रखते हुये पढ़ते हैं तो उनमें फिर वही जीवन मिलता है जो कि पहले युग के पाठकों को मिल चुका होता है।

साहित्य के अध्ययन का उपर्युक्त ढंग एक प्रकार से ऐतिहासिक अध्ययन है। दूसरी प्रकार से साहित्य पढ़नेवाले किसी भी कृति को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हैं।

इस प्रकार के विद्यार्थी इस खोज में रहते हैं कि किसी एक विषय पर भिन्न भिन्न युगों में क्या लिखा गया तथा कैसे लिखा गया ? किसी भी लेखक की कृतियों का रसास्वादन करने के लिए केवल उसी की कृति पढ़ कर पूरा-पूरा आनन्द नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसके अध्ययन में हमें बार बार दूसरे लेखकों का स्मरण आता है। हम यह भी देखते हैं कि किस युग के तथा किस भाषा के साहित्य को कब और क्या सहायता मिली। शैली के विकास का इतिहास भी मनन करना साहित्याध्ययन का एक भाग है।

साहित्याध्ययन का प्रधान ध्येय मानसिक आनन्द की प्राप्ति है। साहित्य ललित कला है तथा इसके अपने स्वतंत्र नियम हैं। अतएव साहित्याध्ययन का एक और ढंग साहित्यिक कला का अध्ययन भी है। मान लीजिए कि हम किसी नाटक, उपन्यास अथवा कविता का अध्ययन कर रहे हैं। सर्वप्रथम तो हमें उनके

भाव, भाषा तथा शैली का आनन्द मिलेगा। धीरे धीरे हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित होगा कि यह रचना कैसे तैयार हुई। हम प्रत्येक कच्चे माल की जाँच करेंगे जिसके द्वारा वह रचना हुई है। कलाकार को क्या कठिनाइयाँ थीं—उसने कैसे और कहाँ तक उन पर विजय पाई। कलाकर क्या प्रभाव डालना चाहता था और उसमें वह कितना सफल हुआ इत्यादि प्रश्नों पर विचार करते करते हम कह उठेंगे कि उक्त रचना अच्छी है अथवा बुरी। प्रत्येक रचना का आधार खोजना भी साहित्याध्ययन का एक अङ्ग है। यदि हम यह जान सकते हैं कि कलाकार ने शैली परिवर्तन करते समय किन नियमों का पालन किया तो हम उसका सच्चा अध्ययन कर लेते हैं। कलाकार का काम कला को छिपाना होता है—आलोचक का कार्य उसे खोज निकालना है।

अच्छा अध्ययन समस्त अनुसंधानों से श्रेष्ठतर है तथा अपने आप में अच्छे अध्ययन की कला का विकास कर लेना सब दूसरी योग्यताओं से उत्तम है। साहित्याध्ययन का कोई भी रूप क्यों न हो, इसका फल रुचिकर तथा अधिकाधिक आनन्द प्रदान करना होना चाहिये। यदि साहित्याध्ययन हमें लोकोत्तर आनन्द प्रदान कर सकता है तो हमारा अध्ययन सफल है। यदि हम इससे कुछ आनन्द नहीं उठा सकते तो हम विद्या के आगार भले ही बन जावें किन्तु साहित्याध्ययन व्यर्थ ही समझा जायगा।

[लेखक की अप्रकाशित पुस्तक "साहित्य" का प्रारम्भिक अंश]

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

तीन वर्ष पहले जब वर्धा का अध्यापन मंदिर शुरू किया गया था, उस समय अन्य अहिन्दी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा प्रचारक तैयार करने की कोई दूसरी व्यवस्था न थी। लेकिन अब कई प्रान्तों में अध्यापन मंदिर खुल गये हैं या खुल रहे हैं। इसलिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने वर्धा अध्यापन मंदिर का पुनः संगठन करने का निश्चय किया है। अब इस अध्यापन मंदिर द्वारा साधारण राष्ट्रभाषा प्रचारक तैयार करने की आवश्यकता नहीं रही है। लेकिन चूँकि हमारे अहिन्दी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा की उच्च शिक्षा के लिये कोई प्रबंध नहीं है, इसलिये यह कमी राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर, वर्धा द्वारा पूरी करने का निश्चय हुआ है। अगले सबसे ऊपर दिये हुए सात अहिन्दी प्रान्तों से कुल १५ तक छात्र चुने जायँगे जिनमें से १० को १०) मासिक की छात्रवृति भी दी जावेगी। वे ही छात्र चुने जा सकेंगे जो कम से कम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी "कोविद" परीक्षा अथवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की "मध्यमा" परीक्षा उत्तीर्ण हों और सामान्य शिक्षा में जिन्होंने कालेज की शिक्षा कुछ-न-कुछ प्राप्त की हो।

राष्ट्रभाषा प्रचार का केवल एक नयी भाषा सिखाने का काम नहीं है वरन् राष्ट्रभाषा के द्वारा समूचे भारत के अन्यान्य प्रान्तों का संगठन करके राष्ट्रीय एकता मजबूत करने का प्रयत्न है। हम आशा करते हैं कि कालेज की शिक्षा जिन्हें प्राप्त हुई है और जो देशसेवा का कोई अच्छा क्षेत्र ढूँढ़ते हैं, ऐसे नवयुवक सेवाभाव से इस कार्य को पसंद करेंगे और अध्यापन मंदिर की इस उच्च शिक्षा में शरीक होंगे। हमारा आग्रह अँग्रेजी पर नहीं है किन्तु जो नवयुवक अच्छे संस्कार प्राप्त कर चुके हैं, देशस्थिति को समझ सकते हैं और जिनमें कुछ साहित्यिक योग्यता भी है, ऐसे ही लोगों को हम लेना चाहते हैं। कालेज की शिक्षा जिन्हें मिली है, ऐसे बहुत से नवयुवक देश-सेवा में जुट जाना चाहते; ऐसी श्रद्धा से ही यह अध्यापन मन्दिर नये ढंग से चलाना निश्चय किया है किन्तु कालेज की परीक्षा पास होने का आग्रह नहीं रखा है। सब एक वर्ष का होगा और अध्यापन मंदिर का कार्य १५ जून, १९४० से शुरू किया जायगा।

अध्यापन मंदिर में भर्ती होने से लिये छपे हुये आवेदन-पत्र भर कर १५ मई तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के कार्यालय में आ जाना चाहिये। ये छपे हुये आवेदन-पत्र व्यवस्थापक, राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर, वर्धा से मुफ्त प्राप्त हो सकते हैं।

(२)

तीन वर्ष से राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर, वर्धा में महाराष्ट्र, गुजरात, बम्बई, सिन्ध, आसाम, बंगाल और उत्कल के लिये राष्ट्रभाषा प्रचारक तैयार किये जा रहे हैं। चूँकि अब विभिन्नि प्रान्तों में राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर खुल गये हैं, इसलिये वर्धा में साधारण प्रचारक तैयार करने के बजाय राष्ट्रभाषा के उच्च अध्ययन का प्रबन्ध किया जा रहा है।

अध्यापन मंदिर के साथ साथ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से राष्ट्रभाषा अध्ययन और प्रचार सम्बन्धी साहित्य निर्माण करने के लिये भी एक विभाग रहेगा। जिसमें विभिन्न अहिन्दी प्रान्तों के लिये कोष, स्वबोधिनी, अनुवादमाला इत्यादि तैयार की जावेंगी। पाठ्यग्रन्थ के तौर पर प्रान्तीय भाषाओं का तथा उनके साहित्य का इतिहास, उनके चुने हुए साहित्य का राष्ट्रभाषा में और राष्ट्रभाषा का चुना हुआ साहित्य प्रान्तीय भाषा में अनूदित करने की योजना भी है। इस कार्य के लिये राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर के शिक्षकों तथा छात्रों से पूरी सहायता ली जायेगी।

राष्ट्रभाषा के हित चिन्तकों से प्रार्थना है कि वे हमारे अध्यापन मंदिर और साहित्यनिर्माण विभाग के लिये सुयोग्य व्यक्तियों के नाम सूचित करें; जिनको हम अध्यापन तथा साहित्यनिर्माण की जिम्मेदारी दे सकें। इस तरह की सूचनायें हमारे पास १० मई १९४० तक आनी चाहिये।

हिन्दी साहित्य का जिन्हें अच्छा ज्ञान है, उर्दू भाषा और साहित्य में भी जिनकी गति है और जो राष्ट्र सेवा समझ कर इस कार्य को अपनाना चाहते हैं, ऐसे लोगों की ही हमें आवश्यकता है। केवल नौकरी के लिहाज से स्थान ढूँढने वाले अर्जियाँ भेजने का कष्ट न करें। राष्ट्रभाषा के और राष्ट्र के सच्चे सेवकों द्वारा जिनकी सिफारिश होगी उन्हीं ही लोगों को चुना जायगा।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल,
मंत्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
के
हिन्दी-विश्व विद्यालय की

संवत् १९९६ (सन् १९३९) की परीक्षाओं का परीक्षा फल

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय-हिन्दी साहित्य

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५	५५३	श्री ब्रज किशोर शर्मा 'ब्रजेश'	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २१८
६	५५४	" ठा० गन्धर्व सिंह वर्मा	"	" " १६९
८	५५५	" भौरू लाल	"	द्वितीय श्रेणी ३८७
९	५५६	" गयाप्रसाद गुप्त	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७१
१३	३६८	" भट्ट मुकुन्द चक्रवर्ती	"	द्वितीय श्रेणी ४५४
२०	५६३	" हरिभगवान दीक्षित	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७६
२४	५६७	" होतीलाल शर्मा	"	" " १७०
२५	३७२	" शिवराम सिह कुशवाहा	"	द्वितीय श्रेणी ३७४
२६	५६८	" हरस्वरूप सारस्वत	"	" ४८१
२७	५६९	" ब्रजराज सिंह	"	" ४५३

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३०	५७२	श्री देवकीनन्दन प ालीवाल	आगरा	द्वितीय श्रेणी ४४७
३१	५७३	" शिवसिंह	"	" ३८८
३२	५७४	" सीताराम शास्त्री	"	" ४२२
३३	५७५	" दौलतराम चतुर्वेदी	"	" ४३८
३४	५७६	" हरिदत्त शर्मा	"	" ४४१
३६	५७८	" विष्णुदयाल वर्मा	"	" ४४६
३७	५७९	" नरोत्तमलाल गुप्त 'नरेन्द्र'	"	" ४२३
३८	५८०	" भारतभूषण 'सरोज'	"	" ५३९
४२	५८४	" ओ३म् प्रकाश सक्सेना 'प्रकाश'	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९५
४५	५८६	" महीपालसिंह चौहान	"	द्वितीय श्रेणी ३६७
४६	५८७	" शर्मनलाल अग्रवाल	"	" ४६६
४८	५८८	" रामबाबू शर्मा	"	" ३७१
५०	५९०	" रामनारायण जोशी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०१
५९	५९८	" विश्वनाथ जोशी	"	द्वितीय श्रेणी ४०१
६३	६०२	" हरिहर शर्मा	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७१
६४	६०३	" चेतराम तोमर	"	द्वितीय श्रेणी ४४३

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६६	६०५	श्री हनुमानप्रसाद वाजपेयी	आगरा	द्वितीय श्रेणी ४४९
६९.	६०८	,, घीसालाल नागोरी	इन्दौर	,, ४२२
७१	६१०	,, सुभाषचन्द्र जैन बया 'रसाल'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९०
७२	६११	,, कन्हैयालाल दक 'नीरज'	,,	,, ,, १६९
७३	६१२	,, रत्नकुमार जैन 'रत्नेश'	,,	,, ,, १७१
७५	६१४	,, केशरीकिशोर 'केशव' जैन	,,	,, ,, १६१
७८	६१७	,, गणपति लाल जोशी	,,	,, ,, १९९
८०	६१९	,, इन्द्रजीत शर्मा	,,	,, ,, १६४
८१	६२०	,, दुर्गाशङ्कर पाण्डेय	,,	,, ,, १६४
८२	४१२	,, गोविन्द राम	,,	द्वितीय श्रेणी ३९२
८३	६२१	,, आनन्दी लाल	,,	,, ३८०
८४	६२२	,, जय किशन	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०१
८५	४२१	,, महेन्द्रनाथ नागर	,,	द्वितीय श्रेणी ३७२
८८	४१६	,, मन्नालाल गंगवाल	,,	,, ४७५
९०	६२५	,, गुलाबचन्द्र जैन	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०४
९१	४२३	,, नन्दलाल कासलीवाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४१०

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९२	६२६	श्री सुरेन्द्र सिंह वर्मा	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी ४१९
९३	६२७	” सूरजमल गर्ग 'सूर्य'	”	” ४५०
९५	६२९	” दीपचन्द्र	”	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६८
९७	४०२	” शङ्करलाल मेहरोत्रा	”	द्वितीय श्रेणी ४०५
९९	६३२	” आचारीप्रसाद पाठक 'पुनीत'	काशी (ट्रे० का०)	” ३८८
१००	६३३	” सत्यनारायण चतुर्वेदी	”	” ३७१
१०२	६३५	” शिवशरण पाण्डेय	”	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८९
१०४	६३७	” राजबलि त्रिपाठी शास्त्री	”	द्वितीय श्रेणी ४१३
१०५	६३८	” छबिनाथ त्रिपाठी	”	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८५
१०७	६४०	” जगतनारायण सिंह	”	” १७७
१०८	४३५	” जंगबहादुर मिश्र 'रंजन'	”	द्वितीय श्रेणी ४२५
१०९	६४१	” रमणरेतविहारी त्रिपाठी 'रवि'	”	” ४५३
१११	६४३	” जगदीशनारायण राय	”	” ४१७
११५	६४७	” बेचन सिंह 'वचनेश'	”	” ४२७
११६	६४८	” विन्ध्येश्वरीप्रसाद गुप्त 'विनोद'	”	” ४२९
११८	६५०	” झेंगट प्रसाद (वीरेन्द्र नाथ)	”	” ३७२

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२०	६५२	श्री देवेन्द्र सिंह	काशी (ट्रे० का०)	द्वितीय श्रेणी ४४१
१२२	४३७	,, रामनक्षत्र मिश्र	,,	,, ३७०
१२३	६५४	,, श्यामदेव द्विवेदी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७४
१२५	६५६	,, रामप्रवेश राय	,,	,, १६५
१२८	६५८	,, कृष्णाचार्य वाशिष्ट	,,	द्वितीय श्रेणी ४०७
१३०	६६०	,, ब्रजमोहन दास अग्रवाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८५
१३१	६६१	,, सूर्यमंगल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३९५
१३२	६६२	,, देवतादीन पाण्डेय	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६९
१३५	६६५	,, परमहंस मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४२१
१३६	६६६	,, गंगाधर मिश्र	,,	,, ३७९
१३८	६६८	,, गोरक्षनाथ शुक्ल	,,	,, ४१९
१४२	६७२	,, विजय शंकर	,,	,, ३६९
१४३	६७३	,, उमादत्त मिश्र	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९९
१४४	६७४	,, श्रीपति शर्मा त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ४६७
१४५	६७५	,, ब्रजविहारी ओझा	,,	,, ३८०
१४६	६७६	,, वीरेन्द्रकुमार सिंह	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८५

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४७	६७७	श्री रामाधार शुक्ल	काशी (ट्रे० कालेज)	द्वितीय श्रेणी ३६३
१५१	६८१	,, टीकाराम बेलवाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७९
१५२	६८२	,, मथुरादत्त पन्त	,,	,, ,, १९४
१५३	६८३	,, रामेश्वर पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४७९
१५५	६८५	,, अम्बिका प्रसाद तिवारी	,,	,, ,, ३९५
१५७	६८७	,, राम परीक्षा सिंह	,,	,, ,, ४४४
१५८	६८८	,, सत्य नारायण हर्ष	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८७
१६०	६९०	,, लक्ष्मी कान्त त्रिपाठी	कानपुर (स० धर्म० का०)	,, ,, १६६
१६४	६९४	,, चन्द्र शेखर वाजपेयी	,,	,, ,, १८६
१६६	४६०	,, गिरिजा शङ्कर द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६६
१६८	६९७	,, अम्बिकालाल श्रीवास्तव	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६४
१७४	७०३	,, रमेश शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४००
१७५	७०४	,, अयोध्या प्रसाद शास्त्री	,,	,, ३९९
१७६	७०५	,, हर नारायण गौड़	,,	,, ४०८
१७७	७०६	,, गोपाल व्यास	कानपुर (स०धर्मका०)	,, ५३८ [वि० यो० द्वितीय प्रश्न पत्र और निबन्ध]
१७८	७०७	,, दयाशङ्कर मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४७६

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१८०	७०९	श्री भँवरलाल शर्मा	कानपुर (स० धर्मका०)	द्वितीय श्रेणी ५०६ [वि० यो० निबन्ध]
१८२	७१०	,, प्रह्लाददास काकानी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०८
१८३	७११	,, प्रेमनारायण सक्सेना	,,	,, ,, १७०
१८४	७१२	,, धर्मनाथ शर्मा	,,	,, ,, २०८
१८७	७१५	,, गिरिराजप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४२६
१८८	४६८	,, हरिहर गौड़	,,	,, ४५२
१९३	७२०	,, रामयतनसिंह 'भ्रमर'	,,	,, ३९२
१९६	७२३	,, मथुराप्रसाद सिंह	पटना	,, ४३५ [वि० यो० पंचमप्रश्नपत्र]
१९७	७२४	,, वैद्यनाथ पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४४१
२०९	७३५	,, कृष्णप्रसाद	,,	,, ४१३
२१०	७३६	श्रीमती मिथिलेश कुमारी श्रीवास्तव	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९२
२१२	७३८	श्री महेश्वर मिश्रौलिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३८५
२१३	७३९	,, शान्ति नवरंगी	,,	,, ४१७
२१४	७४०	,, पारसनाथ शर्मा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६१
२१५	७४१	,, विश्वप्रकाश दीक्षित	,,	,, ,, २१४ [वि० यो० निबन्ध]
२१९	७४४	,, सुखमङ्गल शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ३९२

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२२०	७४५	श्री रामसमुझ द्विवेदी	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४१२
२२१	७४६	" विद्यासागर 'निराला'	"	" ४२१
२२३	७४८	" इन्द्रदेव सिंह रावत 'इरेश'	"	" ४०९
२२४	७४९	" जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय 'कौशिक'	"	" ३७७
२२५	७५०	" श्री निवास राय	"	" ३६८
२२६	७५१	" बाबूराम द्विवेदी 'गीता-ध्यायी'	"	" ३९८
२२८	७५३	" जयराम मिश्र	"	" ४६१ (वि० यो० निबन्ध)
२२९	७५४	" मौजी सिंह	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८३
२३०	७५५	" रामचन्द्र भिखाजी महाजन	"	द्वितीय श्रेणी ३६९
२३१	७५६	" ठा० घूरन सिंह चौहान	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८८
२३२	७५७	श्रीमती भागीरथी पोद्दार	"	द्वितीय श्रेणी ४३०
२३३	७५८	श्री शिवकुमार शास्त्री त्रिपाठी	"	" ३८४
२४०	७६३	श्री गङ्गाधर इन्दूरकर 'पूर्ण'	"	" ४३७
२४१	७६४	कु० मैनावती माटे	"	" ४६२
२४५	७६८	कु० चन्द्रकला	"	" ४४६
२४८	७७१	" कालीदत्त मिश्र	"	" ३६६

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२५०	५४२	श्री ओंकारनाथ अवस्थी	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६०
२५२	७७४	" काशीप्रसाद श्रीवास्तव	"	" १६१
२५८	७७९	" रामरक्षा त्रिपाठी	"	" १७९
२५९	७८०	" त्रिवेणीदत्त त्रिपाठी	"	" १७८
२६५	७८६	" हर्ष नारायण	"	" १८३
२६६	७८७	" जनार्दन स्वरूप अग्रवाल	"	" २०८
२७५	७९६	" रामप्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ४५०
२७९	८००	श्रीमती सगुणा जैनाबादकर	"	" ४१८
२८४	८०३	श्री रमाकान्त त्रिपाठी	"	" ४४४
२८७	८०६	श्री पति नारायणसिंह	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २२७
२९४	८१२	" गजाधर मिश्र	"	" १७०
३००	८१८	" गोवर्द्धनदास त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ३८२
३०१	३८९	" बाबूसिंह	"	" ४०६
३०३	८१९	" ताराचन्द सिंह	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६२
३०४	८२०	" दीपनारायणमणि त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ३६८
३०७	८२३	" कृष्णकुमार	"	" ३७०

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३१८	८२८	श्री बलदेवप्रसाद शर्मा इन्दौरिया	लाहौर	द्वितीय श्रेणी ४००
३१९	८२९	" बालकृष्ण व्यास	"	" ३९५
३२१	८३१	" के० गोविन्द हरिदास	"	" ३९५
३२२	८३२	" बी० एस० शर्मा	"	" ४३१
३२३	८३३	" विश्वमोहनी व्यास	"	" ४२४
३२४	८३४	" गुरदयालसिंह शर्मा	"	" ४२१
३३१	८४१	" गुलाबचन्द कानजीवशा	वर्धा	" ४४८
३३६	८४५	" गोरखप्रसाद	पटना	" ३६८

उत्तमा परीक्षा (विज्ञान रत्न) विषय—कृषि शास्त्र

९८	६३१	श्री कुञ्जीलाल	इन्दौर	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८३

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय—राजनीति

१५९	६८९	श्री शिवप्रसाद द्विवेदी	काशी (ट्रेनिङ्ग का०)	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
३१५	८२६	" रामनारायण श्रीवास्तव	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४७६
३३५	८४४	" कालूराम विरूलकर	"	" ५०४

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय—संस्कृत

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३०८	५३३	श्री गोपालदास गङ्गा	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४३०

उत्तमा परीक्षा (आयुर्वेद रत्न) विषय—वैद्यक

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३१०	५३६	श्री कान्त शास्त्री	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४८२ (वि० यो० मौखिक)
३१२	८२४	,, ज्ञानदत्त मिश्र	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २४० (वि० यो० निबन्ध)
३१४	५३५	,, हरिश्चन्द्र शुक्ल	,,	प्रथम श्रेणी ५६० (वि० यो० निबन्ध और मौ०)
३१७	८२७	,, जाह्नवी शङ्कर शुक्ल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०१

वैद्य विशारद परीक्षा

क्रम संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८	श्री कृष्णदास गुप्ता	उज्जैन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९	,, कन्हैयालाल शर्मा	,,	,,
१६	,, महेशचन्द्र	कानपुर (डी० ए० वी० का०)	द्वितीय श्रेणी ४८७ (वि० यो० शरीर वि०)
१७	,, शिवकुमार शर्मा	कान्धला	विभाजित प्रणाली के अनुसार

क्रम संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८	श्री गालवनन्दन वारिदत्त गौड़	कान्धला	तृतीय श्रेणी ४४
२०	,, धनेश्वर शर्मा	गौहाटी	द्वितीय श्रेणी ४५५
२५	,, राम सुन्दर सिंह	जौनपुर	विभजित प्रणाली के अनुसार
२६	,, मुन्नूलाल बिसवारी	झाँसी	,,
३०	,, भवानीशंकर विस्सा	नागपुर (हि० भा० हा० स्कू०	,,
३८	,, द्वारिका प्रसाद दीक्षित	प्रयाग (सम्मेलन कार्या०)	,,
४२	,, पुरुषोत्तम दास	,,	,,
५०	,, शिवकुमार शर्मा	पाढ़म	द्वितीय श्रेणी ४६५ (वि० यो० रोग वि०
५१	,, गंगासहाय दीक्षित	,,	द्वितीय श्रेणी ४७ (वि० यो० रोग वि०
५२	,, भगवान शरण मिश्र	पीली भीत	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५६	,, मनोहरलाल शर्मा	बीकानेर	,,
६१	,, सूरजभान कौशिक	मथुरा (गो० हि० वि०)	द्वितीय श्रेणी ४५८
७६	श्रीमती सत्यवती देवी	सीतापुर	द्वितीय श्रेणी ४९
७७	श्री हरदत्त मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८०	,, मोती लाल जेतली	हैदराबाद (ना० आयु० वि०)	,,
८१	,, टेकचन्द्र ओझा	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८५	श्री धर्मदत्त गौड़	कान्धला	विभाजित प्रणाली के अनुसार

कृषि विशारद परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५	श्री रामचन्द्र	खरगोन	द्वितीय श्रेणी ३७८
९	" चुन्नीलाल यादव	पोठिया	तृतीय श्रेणी २९२
१०	" झारखण्डी प्रसाद 'यादवेन्दु'	"	" ३४२
११	" खूबलाल मण्डल	"	" ३०३
१२	" बाबूसिंह चौहान	बुलन्द शहर	" ३११
१४	" रामकृत सिंह	हण्डिया (प्रयाग)	" ३१३
१५	" रामसेवक	"	" ३०९

मध्यमा (विशारद) परीक्षा

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१	४७१९	श्रीमती कुमारी शकुन्तला उपाध्याय	अजमेर	तृतीय श्रेणी ३२६
२	४७२०	" कुमारी विद्या 'विभा'	"	" ३२५
१०	४७२८	श्री चन्द्रदीप सिंह	अयोध्या गंज	" ३५८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११	४७२९	श्री भूदेव झा	अयोध्या गंज	उत्तीर्ण ३११
१२	४७३०	" गौरीकान्त झा	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५	४७३३	" केशवदत्त पाण्डेय	अल्मोड़ा	तृतीय श्रेणी ३४२
१८	४७३६	,, पीताम्बर शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४४६
२०	४७३८	,, भैरवदत्त उप्रेती	,,	तृतीय श्रेणी ३९५
२१	४७३९	,, फकीरचन्द्र शर्मा	अलवर	विभाजित प्रणाणी के अनुसार
३१	४७४९	,, बाबूलाल भारद्वाज	अलीगढ़	द्वितीय श्रेणी ४०९
३२	४७५०	,, जानकीप्रसाद बिलावट 'किशोर'	,,	तृतीय श्रेणी ३७५
३५	४७५३	,, लीलाधर शर्मा तिवारी 'विमल'	,,	,, ३८१
३७	४७५५	श्रीमती कमला बाई 'विदुषी'	अहमदाबाद	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४१	४७५९	श्री गौतम शर्मा	आगर	तृतीय श्रेणी ३१७
४३	४७६१	,, हजारीलाल जैन विद्यार्थी	आगरा	,, ३३७
५०	४७६८	,, मगनलाल चतुर्वेदी	,,	,, ३७७
५१	४७६९	,, गणेशप्रसाद	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५२	४७७०	,, जगदीशचन्द्र वसु	,,	तृतीय श्रेणी ३७९
५३	४७७१	,, अमरचन्द्र बापना	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५५	४७७३	श्री संकठाप्रसाद सिंह	आगरा	द्वितीय श्रेणी ४१५
५६	४७७४	,, जंगवहादुर सिंह	,,	,, ४०१
५८	४७७६	,, जागेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	,,	तृतीय श्रेणी ३८२
६१	४७७९	,, चिन्तामणि शर्मा	,,	,, ३७४
६४	४७८२	,, गयाप्रसाद उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ४५३
६५	४७८३	,, राधेश्याम दुबे	,,	तृतीय श्रेणी ३५४
६७	४७८५	,, ताराचन्द्र शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४४२
७०	४७८८	श्रीमती सुरेन्द्रवती रावत	,,	तृतीय श्रेणी ३४६
७२	४७९०	श्री लक्ष्मीनारायण दुबे 'ललित'	,,	,, ३६२
७४	४७९२	,, मदन गोपाल सारस्वत	,,	,, ३२३
७५	४७९३	,, दानसहाय शर्मा	,,	,, ३३९
७६	४७९४	,, पीताम्बर गुप्त	,,	,, ३४८
८१	४७९९	,, दुर्गाप्रसाद शर्मा	,,	,, ३२९
८४	४८०२	,, वेदप्रकाश कुलश्रेष्ठ	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८५	४८०३	,, मुरारीलाल सारस्वत	,,	तृतीय श्रेणी ३३५
९२	४८१०	,, शिवनारायण सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१००	४८१८	श्री फूलसिंह शर्मा	आगरा	तृतीय श्रेणी ३२६
१०२	४८२०	,, क्षमानन्द	आजमगढ़	,, ३५८
१०३	४८२१	,, दशरथ	आजमगढ़	तृतीय श्रेणी ३२५
११२	४८३०	,, रामबालक प्रसाद	आरा	,, ३३८
१२३	४८४१	,, मोतीलाल गुप्त	इन्दौर	,, ३३४
१२५	४८४३	,, रामचरण गर्ग	,,	,, ३४४
१२८	४८४६	श्रीमती कमला देवी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३१	४८४९	श्री रामकृष्ण मीढ़	,,	तृतीय श्रेणी ३२१
१३३	४८५१	,, मन्नालाल	,,	उत्तीर्ण ३१०
१३७	४८५५	,, बाबूलाल पुरे	,,	तृतीय श्रेणी ३२५
१४६	४८६४	,, दत्तूप्रसाद पाराशर	,,	,, ३४१
१४७	४८६५	,, नवीनप्रसाद	ईशीपुर	द्वितीय श्रेणी ४२६
१४८	४८६६	,, देवचन्द्र नोनियाँ	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४९	४८६७	,, तेजनारायण राम	,,	,,
१५२	४८७०	,, मदनलाल द्विवेदी	उज्जैन	तृतीय श्रेणी ३७३
१५३	४८७१	,, शम्भूलाल रावल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५४	४८७२	श्री चन्दूलाल श्रीवास्तव	उज्जैन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६१	४८७९	,, गहेरीलाल नन्दवाणा	उदयपुर (हि.वि.पी.)	तृतीय श्रेणी ३२४
१६६	४८८४	,, माधोदास शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३७४
१६८	४८८६	,, भैरवलाल गौड़	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१८४	४९०२	,, श्यामानन्द सिंह	एकमा	,,
१८५	४९०३	,, रामलक्षण तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३४७
१८७	४९०५	,, विश्वनाथ द्विवेदी	,,	,, ३८५
१९२	४९१०	,, सुदर्शन मिश्र	कटक	,, ३३४
१९७	४९१५	,, कृष्ण कुमार दवे	कटनी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१९९	४९१७	,, विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डेय	,,	,,
२०३	४९२१	,, रघुनन्दन प्रसाद तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३६३
२०५	४९२३	,, चन्द्र प्रकाश पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२०६	४९२४	,, बेचूराय	कटया	तृतीय श्रेणी ३६४
२०८	४९२६	,, खडग गोप	कदम कुआँ	,, ३७८
२१३	४९३१	,, रंगनाथ क्षीरसागर 'वसंत'	कन्नौद	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२१४	४९३२	,, रामदयाल व्यास	,,	तृतीय श्रेणी ३५९

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२१६	४९३४	श्री गंगाराम मारोठे	कन्नौद	तृतीय श्रेणी ३२९
२१७	४९३५	" नन्दराम शर्मा	"	" ३२५
२२०	४९३८	" रघुबरदयाल कौर्मि-क्षत्रिय	कर्वी	" ३३०
२२२	४९४०	" रामकृपाल द्विवेदी	कराँची	" ३८९
२३९	४९५७	श्रीमती कृष्णाकुमारी धवले	कलकत्ता (तु० सा० वि.)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२४०	४९५८	श्री कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३३८
२४१	४९५९	" चन्द्र शेखर त्रिपाठी	"	" ३२७
२४६	४९६४	" कामताप्रसाद वर्मा	"	" ३३९
२४९	४९६७	" महेन्द्रनाथ तिवारी	"	" ३४४
२५१	४९६९	" महानन्द दुबे	"	" ३३५
२५४	४९७२	" जगन्नाथ सिंह	"	" ३७७
२५६	४९७४	" पारसनाथ तिवारी	"	" ३३३
२६०	४९७८	श्रीमती विद्योत्तमा देवी शर्मा	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२६३	४९८१	श्री जगदीशप्रसाद पोद्दार	"	उत्तीर्ण ३१२
२६४	४९८२	" संतराज द्विवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३३३
२७०	४९८८	" रघुवंश तिवारी	"	" ३४०

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२७२	४९९०	श्री लक्ष्मी शंकर मिश्र	कलकत्ता (तु० सा० वि.)	उत्तीर्ण ३१३
२७५	४९९३	,, अवध विहारी मिश्र	,,	,, ३१८
२७६	४९९४	,, रामसुन्दर राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४३१
२७७	४९९५	,, रामपति प्रसाद	,,	उत्तीर्ण ३१८
२७८	४९९६	,, राम शकल राय शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३५२
२७९	४९९७	,, शिवचन्द्र तिवारी	,,	,, ३६५
२८१	४९९९	,, हरिप्रसाद राय	,,	,, ३६६
२८२	५०००	,, दुर्गा प्रसाद राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४६३
२८५	५००३	,, रामदेव मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३९१
२८७	५००५	,, श्रीकान्त शुक्ल	,,	,, ३८५
२८८	५००६	,, शिवपल्टन सिंह	,,	,, ३७५
२८९	५००७	,, रामजी लाल	,,	,, ३७७
२९१	५००९	श्रीमती भगवती देवी	कलकत्ता (मा० वि०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२९३	५०११	श्री राजेन्द्र नाथ राय	,,	तृतीय श्रेणी ३९७
२९४	५०१२	,, श्री किशन बुवना	,,	,, ३५९
२९७	५०१५	,, मानिकलाल डागा	,,	द्वितीय श्रेणी ४१०

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२९८	५०१६	श्री विजयपालसिंह	कलकत्ता (मा० वि०)	तृतीय श्रेणी ३७१
३००	५०१८	" वृजमोहन अवस्थी	"	द्वितीय श्रेणी ४४६
३०२	५०२०	" रामधन शर्मा	कान्धला	तृतीय श्रेणी ३६१
३०५	५०२३	" उमाचरण दीक्षित	कानपुर (डी० ए०वी०का०)	" ३८१
३०६	५०२४	" कृष्णदत्त मिश्र	"	" ३९९ (विं० यो० संस्कृत)
३०८	५०२६	" मिश्रीलाल त्रिपाठी	"	
३०९	५०२७	" रामसहाय पुरवार	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार प्रथम श्रेणी ४९६
३१२	५०३०	" नाथूराम त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३३७
३१३	५०३१	" खुन्नीलाल शर्मा	"	" ३७३
३१४	५०३२	" कृपाशङ्कर द्विवेदी	"	" ३४०
३१६	५०३४	" जगतप्रसाद शर्मा	"	
३१८	५०३६	" विक्रमसिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार तृतीय श्रेणी ३७५
३१९	५०३७	" रघुबरदयालु शर्मा	"	
३२२	५०४०	" कृष्णकुमार मिश्र	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार तृतीय श्रेणी ३६०
३२३	५०४१	" श्यामबहादुर श्रीवास्तव	"	
३२५	५०४३	" राजमणि द्विवेदी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार तृतीय श्रेणी ३४९

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३२६	५०४४	श्री शिवप्रसाद शुक्ल	कानपुर (डी० ए०वी०का०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३२७	५०४५	श्रीमती कीर्तिकुमारी वर्मा	कानपुर(एस० डी० का०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३३१	५०४९	श्री द्वारका प्रसाद मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३३३
३३६	५०५४	,, जयनारायण नागर	,,	,, ,, ३८६
३३७	५०५५	,, शिवस्वरूप वाजपेयी	,,	,, ,, ३५४
३३९	५०५७	,, बालचन्द्र शर्मा	काशी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३४०	५०५८	,, सत्यनारायण माहेश्वरी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३४४	५०६२	,, राधेश्याम पाठक	,,	तृतीय श्रेणी ३५०
३४६	५०६४	,, विजयशंकर तिवारी	,,	,, ३६७
३५३	५०७१	,, गयाप्रसाद सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३५८	५०७६	श्री शंकरकृष्ण वर्मा	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३५९	५०७७	,, बलराम प्रसाद	,,	,, ,,
३६८	५०८६	,, केशवचन्द्र मिश्र	,,	उत्तीर्ण ३१६
३७०	५०८८	,, अष्टभुजा प्रसाद पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी ३७५
३७२	५०९०	,, रामाधार त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३७८	५०९६	,, हीरामणि मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३७७

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३८३	५१०१	श्री गणेश शर्मा	काशी	तृतीय श्रेणी ३३
३८४	५१०२	,, श्याम नारायण सिंह	,,	,, ३५
३८९	५१०७	,, श्रीदेव सिंह	,,	उत्तीर्ण ३०
३९०	५१०८	,, राम सूरत मणि त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी ३२
३९१	५१०९	,, गिरिजा शंकर गौड़	,,	,, ३२
३९२	५११०	,, रामलखन तिवारी	,,	अध्याय ३ नियम के अनुसार
३९६	५११४	,, महेन्द्र नाथ मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३९८	५११६	,, नृसिंह प्रसाद मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३७
३९९	५११७	,, गिरीश दत्त उपाध्याय	,,	,, ३५
४००	५११८	,, केदारनाथ शुक्ल	,,	,, ३८
४०४	५१२२	,, गुरुदेव प्रसाद वर्मा	,,	,, ३२
४०९	५१२७	,, शिव शंकर द्विवेदी	,,	अध्याय ३ नियम के अनुसार
४१०	५१२८	,, चन्द्र शेखर पाण्डेय	,,	,,
४१३	५१३१	,, सिद्धनाथ तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ४२६
४१७	५१३५	,, राम बहादुर त्रिपाठी	,,	,, ४१५
४१८	५१३६	,, सीताराम सिंह ज्योतिर्मय	,,	तृतीय श्रेणी ३६२

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४२२	५१४०	श्री रामायण पाण्डेय	काशी	तृतीय श्रेणी ३३१
४२४	५१४२	” के० आहिताग्नि	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४२६	५१४४	” जिवबोध लाल	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४२७	५१४५	” ठाकुर प्रसाद पाण्डेय	”	तृतीय श्रेणी ३७६
४२८	५१४६	” जयानन्द झा	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४२९	५१४७	” अनिरुद्ध शुक्ल	”	तृतीय श्रेणी ३५८
४३७	५१५५	” वंशराज सिंह	काशी (उ० प्र० का)	” ३८२
४३८	५१५६	” बचन सिंह	”	” ३९७
४३९	५१५७	” तेज बहादुर सिंह	”	” ३३५
४४०	५१५८	” राम उग्रह सिंह	”	” ३८४
४४१	५१५९	” चन्द्रवली सिंह	”	द्वितीय श्रेणी ४१९
४४३	५९६१	” नन्द किशोर त्रिपाठी	”	” ४२३
४४६	५१६४	” सीताराम गुप्त	”	तृतीय श्रेणी ३२५
४४८	५१६६	” नारायण प्रसाद दीक्षित	काशी (ओ० का०)	” ३३३
४५१	५१६९	” देवनाथ त्रिपाठी	”	” ३७२
४५२	५१७०	” हरिश्चन्द्र वर्मा	”	” ३८१

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तां[क]
४५३	५१७१	श्री बलराम पाण्डेय	काशी (ओ० का०)	तृतीय श्रेणी ३४[illegible]
४५४	५१७२	" ब्रह्मेश्वर उपाध्याय	"	" ३५[illegible]
४५५	५१७३	" माताप्रसाद द्विवेदी	"	" ३९[illegible]
४५८	५१७६	" श्रवण कुमार	"	" ३८[illegible]
४६१	५१७९	" रामप्यारे मिश्र	"	" ३७७
४६३	५१८१	" मनसिज शर्मा	"	" ३६१
४६४	५१८२	" छेदीराय	"	" ३९८
४६६	५१८४	" रोहिताश्व कुमार अग्रवाल	"	द्वितीय श्रेणी ४१०
४६७	५१८५	" नवरत्न तिवारी	"	उत्तीर्ण ३१७
४६८	५१८६	" रामानुग्रह शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३४६
४६९	५१८७	" आनन्द वल्लभ जोशी	"	" ३८८
४७१	५१८९	" भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र	"	" ३९९
४७३	५१९१	" जगन्नाथ त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण ३१६
४७४	५१९२	" राधाकृष्ण	"	तृतीय श्रेणी ३३३
४७८	५१९६	" यमुनादत्त भट्ट	"	द्वितीय श्रेणी ४२०
४८२	५२००	" कृष्ण नारायणसिंह	"	तृतीय श्रेणी ३७८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४८३	५२०१	श्री तुलसी प्रसाद	काशी (ओ० का०)	तृतीय श्रेणी ३४८
४८४	५२०२	" निद्धलाल	"	उत्तीर्ण ३१०
४८७	५२०५	" परमहंस पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३४७
४८९	५२०७	" आर० एन० प्रसाद वर्मा	"	" ३६४
४९०	५२०८	" प्रभुनाथ शुक्ल 'नैन'	"	" ३२८
५०५	५२२३	" गौरीसहाय गुप्ता	कोटा (भा० समिति)	" ३२७
५०६	५२२४	" कृष्णगोपाल शर्मा	"	" ३३७
५०९	५२२७	" सुरेन्द्रलाल जैन	"	द्वितीय श्रेणी ४६६
५१०	५२२८	" मांगीलाल	"	" ४२१
५१२	५२३०	श्रीमती विमला देवी माथुर	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५१६	५२३४	श्री ब्रजमोहन लाल	"	तृतीय श्रेणी ३३०
५३५	५२५३	" कालीमर्दन सिंह	गढ़वा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५३६	५२५४	" जगन्नाथ द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४६४
५३८	५२५५	" हरिहर तिवारी	"	" ४३४
५३८	५२५६	" नागेश्वरधर दुबे	"	" ४०३
५४०	५२५८	" रामसुन्दर सिंह	गया	" ४४८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५४३	५२६१	श्री लक्ष्मीप्रसाद शर्मा	गाड़रवारा	तृतीय श्रेणी ३५७
५४४	५२६२	,, भगवती प्रसाद द्विवेदी	,,	,, ३८६
५४५	५२६३	,, हरगोविन्द वर्मा	,,	,, ३२६
५४९	५२६७	,, श्रीराम शर्मा	गाजियाबाद	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५५४	५२७२	,, नारायणप्रसाद शर्मा	गोरखपुर	तृतीय श्रेणी ३४७
५५७	५२७५	,, लक्ष्मी नारायण सिंह	,,	,, ३८०
५५९	५२७७	,, हरिप्रसाद शाही	,,	,, ३९२
५७८	५२९६	,, धनराज राम	छपरा	उत्तीर्ण ३१६
५८०	५२९८	,, श्रीनिवास उपाध्याय	,,	,, ३०३
५८१	५२९९	,, पुरेन्द्र नारायण सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५८५	५३०३	,, अनुरुद्धप्रसाद राय	,,	तृतीय श्रेणी ३७४
५९०	५३०८	,, नारायण मोरेश्वर मोघे	छिन्दवाड़ा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५९१	५३०९	,, देवनारायण शुक्ल	छीते पट्टी	द्वितीय श्रेणी ४४६
५९२	५३१०	,, राजाराम चौबे	,,	प्रथम श्रेणी ४८२
५९३	५३११	,, अम्बिकाप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३७६
५९४	५३१२	,, राम केदार दुबे	,,	,, ३८८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५९५	५३१३	श्री मानसिंह जैन	छोटी सादड़ी	तृतीय श्रेणी ३३२
५९७	५३१५	" कन्हैयालाल मेहता	"	" ३७१
५९८	५३१६	" नानालाल वया	"	" ३२०
६०२	५३२०	" भुवनेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	जबलपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६०६	५३२४	" नवलकिशोर तिवारी	"	उत्तीर्ण ३१७
६१०	५३२८	" हेमन्त कुमार मिश्र	"	" २९६
६१६	५३३४	" भगवानसिंह मुस्ताजर	"	तृतीय श्रेणी ३५१
६२५	५३४३	" बलदेव शर्मा	जयपुर (सं० कालेज)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६२७	५३४५	" रामकरण शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३३०
६२९	५३४७	" शिवचरण	जावद	" ३५०
६३०	५३४८	" शंकरलाल नागदा	"	उत्तीर्ण ३०८
६३१	५३४९	" शम्भूदयाल त्रिपाठी	जोधपुर	तृतीय श्रेणी ३५१
६३८	५३५६	" श्रीनाथसिंह	जौनपुर	उत्तीर्ण ३१४
६४०	५३५८	" सूर्यवलीसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४१३
६४३	५३६१	" हरिहरनाथ तिवारी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६५३	५३७१	" ईश्वरलाल शर्मा 'रत्नाकर'	झालरापाटन	"

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६७०	५३८८	श्री रमानाथ पाण्डेय	डाल्टेन गंज	तृतीय श्रेणी ३६१
६७८	५३९६	,, सीताराम मिश्र	डुमराँव	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६८०	५३९८	,, अंजनीकुमार श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
६८५	५४०३	,, श्रीकान्त द्विवेदी	तिलौथू	उत्तीर्ण ३१४
६९२	५४१०	,, भगवानदास त्रिपाठी 'वत्स'	दतिया	तृतीय श्रेणी ३२०
६९३	५४११	,, महेन्द्रसिंह सेंगर	,,	,, ३२४
६९४	५४१२	,, रामस्वरूप श्रीवास्तव	,,	उत्तीर्ण ३१०
६९६	५४१४	मुंशी शम्भु दयाल श्रीवास्तव 'ब्रजेश'	,,	तृतीय श्रेणी ३३८
६९९	५४१७	,, युगेश्वर प्रसाद शर्मा	दार्जिलिङ्ग	,, ३२३
७०८	५४२६	,, सूर्यप्रताप शर्मा	देव	,, ३३२
७१५	५४३३	,, शारदाप्रसाद	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७१६	५४३४	,, कालिकादत्त वाजपेयी	देवबन्द	द्वितीय श्रेणी ४०३
७१७	५४३५	,, लक्ष्मीचन्द	,,	उत्तीर्ण २९७
७२१	५४३९	,, अनिरुद्ध शुक्ल	देवरिया	तृतीय श्रेणी ३५३
७३२	५४५०	,, राजेश्वरप्रसाद सिंह 'शुभ्रांशु'	धमदाहा	,, ३३२
७३३	५४५१	,, उमाकान्त शर्मा	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७३५	५४५३	श्री जीवछ प्रसाद सिंह	धमदाहा	तृतीय श्रेणी ३५२
७३६	५४५४	" आ० ति० श्यामा चार्य	धारवाड़	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७४०	५४५८	" भगवानप्रसाद	धूसी	तृतीय श्रेणी ३२५
७४२	५४६०	" महावीरप्रसाद	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७४३	५४६१	" द्वीप नारायण	"	तृतीय श्रेणी ३४८
७४५	५४६३	" सत्य स्वरूप त्रिवेदी	धौलपुर	" ३४७
७५१	५४६९	" शम्भूप्रसाद	नवादा	" ३६०
७५२	५४७०	" जगदेव उपाध्याय	"	" ३७६
७५७	५४७५	" विजय पाल सिंह	नागपुर (हि० भा.सं.हा.स्कू.	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७५८	५४७६	" लक्ष्मी नारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५१
७५९	५४७७	" सूर्यलाल शुक्ल	नानपारा	उत्तीर्ण ३०३
७६३	५४८१	" कालूराम	नारायण गढ़	" ३१८
७६४	५४८२	" केशवराम	"	तृतीय श्रेणी ३३३
७६५	५४८३	" भँवर लाल	"	उत्तीर्ण ३०१
७७३	५४९१	" चाँद मल बाँकिया	नाहर गढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७७८	५४९६	" देव सृष्टि द्विवेदी	निरंजन पुर	"

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७८२	५५००	श्री धर्मदेवसिंह	निरंजनपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७८८	५५०६	,, पंढरीनाथ शर्मा	निसरपुर	,,
७९३	५५११	,, राफायलपौल येसुसमाजी	पटना कालेज	तृतीय श्रेणी ३९४
८००	५५१८	,, राधाकान्त पाठक	पटना सिटी	,, ३९९
८०८	५५२६	,, श्यामलाल मिश्र	पन्ना	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८१५	५५३३	,, शुकदेव त्रिपाठी	परसागढ़	,,
८१७	५५३५	,, राधेश्याम छापरिया	पचम्बा	तृतीय श्रेणी ३८८
८२०	५५३८	,, रामकृपाल शर्मा	प्रयाग (दारागंज)	,, ३७३
८२२	५५४०	,, राजकेश्वर त्रिपाठी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८२३	५५४१	,, केदारनाथ त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८२५	५५४३	,, विश्वनाथ त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ४८४
८२७	५५४५	,, मनबोध नारायण	,,	तृतीय श्रेणी ३३३
८३०	५५४८	,, हीराप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४४०
८३१	५५४९	,, केशवसिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९४
८३२	५५५०	,, रामेश्वरसिंह	,	,, ३८१
८३३	५५५१	,, गौरीशंकर त्रिपाठी	,,	,, ३७४

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८३५	५५५३	श्री अवध नारायण पाण्डेय	प्रयाग दारागंज	द्वितीय श्रेणी ४६२
८३७	५५५५	" शारदा प्रसाद मिश्र	"	तृतीय ३९२
८३८	५५५६	" नरेश दत्त पाण्डेय 'कमलेश'	प्रयाग (सम्मेलन कार्या०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८४०	५५५८	श्रीमती नलिनी घोष	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८४५	५५६३	श्री सत्यदेव सक्सेना	"	तृतीय श्रेणी ३४७
८४९	५५६७	" मदन मोहन अग्रवाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८५१	५५६९	" पन्नालाल गर्ग	"	द्वितीय श्रेणी ४५०
८५२	५५७०	" राजकिशोर सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३६०
८५३	५५७१	" लक्ष्मीनारायण गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४०६
८५८	५५७६	" हृदयनारायण शुक्ल	"	" ४१३
८६३	५५८१	" हंसराज पाण्डेय 'क्रौंचेश'	"	तृतीय श्रेणी ३५१
८६४	५५८२	" गंगाधर द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४१८
८६६	५५८४	" रामदुलार द्विवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३३७
८६८	५५८६	" राजाराम पाण्डेय	"	" ३५०
८६९	५५८७	" द्वारकाप्रसाद पाण्डेय	"	" ३८४
८७०	५५८८	" अमर बहादुर सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४००

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८७३	५५९१	श्री भुवनेश्वर प्रसाद पाण्डेय	प्रयाग (स० का०)	द्वितीय श्रेणी ४७७
८७४	५५९२	" कृष्णचन्द्र वर्मा	"	उत्तीर्ण ३०४
८७५	५५९३	" कृष्णकान्त तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३८२
८७८	५५९६	" अवधविहारी त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८८५	५६०३	श्रीमती गायत्री अवस्थी	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८९०	५६०८	श्री गयाप्रसाद त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण ३१२
८९४	५६१२	" सरयूप्रसाद श्रीवास्तव	"	द्वितीय श्रेणी ४२५
८९५	५६१३	" रामेश्वरदयाल श्रीवास्तव	"	तृतीय श्रेणी ३७२
८९६	५६१४	" नेमचन्द्र जैन	"	" ३६४
९०२	५६२०	श्रीमती विष्णुकान्ता देवी 'उषा' अवस्थी	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९०४	५६२२	श्री श्रीनाथ मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३५४
९०८	५६२६	" जम्बूप्रसाद जैन	"	" ३४४
९०९	५६२७	" रामजी उपाध्याय	"	प्रथम श्रेणी ५२५
९१२	५६३०	" रामपाल त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३७२
९१४	५६३२	" राजाराम	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९१६	५६३४	" रामखिलावन शुक्ल	प्रयाग (हिन्दी वि०)	द्वितीय श्रेणी ४४९

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९१७	५६३५	श्री हरिकृष्ण पाण्डेय	प्रयाग (हि० विद्या०)	द्वितीय श्रेणी ४१८
९१८	५६३६	,, श्यामनारायण मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३५१
९२०	५६३८	,, पंचमप्रसाद यादव	,,	,, ३९६
९२२	५६४०	,, सुदर्शन सिंह	,,	,, ३५२
९२३	५६४१	,, बद्रीनारायण सिंह	,,	,, ३५५
९२४	५६४२	,, सी० शंकर	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९२५	५६४३	,, भिक्षुसुमन वात्स्यायन	,,	द्वितीय श्रेणी ४२२
९२६	५६४४	,, हरिशंकर गौतम	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९२९	५६४७	,, शिवानन्द त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ४०३
९३०	५६४८	,, रामकृष्ण मिश्र	,,	उत्तीर्ण ३०५
९३२	५६५०	,, नरसिंह नन्द शर्मा 'उत्कल'	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९३४	५६५२	,, सदानन्द ठाकुर	प्रसण्डो	तृतीय श्रेणी ३३२
९३७	५६५५	,, बलदेव चौधरी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३९	५६५७	,, अशर्फ़ीलाल यादव	पाढ़म	तृतीय श्रेणी ३६८
९४०	५६५८	,, केशवचन्द्र शर्मा	,,	,, ३२२
९४४	५६६२	,, रामगोपाल सक्सेना	,,	,, ३६१

१०

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९४५	५६६३	श्री शिवकुमार शर्मा 'सरोज'	पारू	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९४६	५६६४	" राधामोहन सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५७
९४७	५६६५	" राम चरित्र सिंह	"	" ३४४
९४८	५६६६	" जयमंगलप्रसाद शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४३२
९४९	५६६७	" महातमप्रसाद तिवारी	पांचाली	तृतीय श्रेणी ३३२
९५२	५६७०	" रामजीलाल जोशी	पिलानी	" ३८६
९५६	५६७४	श्रीमती रामचन्द्री बाई	पिपलौदा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९६६	५६८४	श्री प्रभुदास रामचन्द्र भुपटकर	पूना	"
९६७	५६८५	" महादेव करमर कर	"	"
९६९	५६८७	" भीमाशंकर गुरु	"	"
९७२	५६९०	" मधुसूदन सदाशिव बर्वे	"	"
९७३	५६९१	" दत्तात्रय गोविन्द दसनूरकर	"	"
९७५	५६९३	" सन्तप्रसाद गुप्त	पुपरी	तृतीय श्रेणी ३८९
९७६	५६९४	" सुशील पाठक	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९७९	५६९७	" जगदीशनारायण चौधरी	पोढिया	तृतीय श्रेणी ३४२
९८३	५७०१	" सन्तलाल यादव	"	" ३४०

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९९१	५७०९	श्री घनश्याम त्रिवेदी	पोहरी (आदर्श वि०)	तृतीय श्रेणी ३६०
९९२	५७१०	,, हरिनारायण श्रीवास्तव 'हरि'	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१००५	५७२३	,, मिश्रीलाल त्रिवेदी	पोहरी (सर्व० हि० वि०)	तृतीय श्रेणी ३४१
१००८	५७२६	,, हरिनारायण अग्निहोत्री	फर्रुखाबाद	द्वितीय श्रेणी ४०७
१०११	५७२९	,, शिवनारायण मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०१२	५७३०	,, रामबाबू मिश्र	,,	,,
१०१३	५७३१	,, राधेश्याम दीक्षित	फीरोजाबाद (रा०इं०स्कू०)	तृतीय श्रेणी ३६६
१०१९	५७३७	,, मनोराम मिश्र	फैजाबाद (सर० वि०)	,, ३८५
१०२२	५७४०	,, रामअक्षयवर तिवारी	,,	,, ३७२
१०२३	५७४१	,, रामाश्रय मिश्र	,,	,, ३८७
१०२४	५७४२	,, गिरधरप्रसाद त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०२५	५७४३	,, रामप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३५४
१०३५	५७५३	,, शिवकुमारदास	बड़हरा	उत्तीर्ण २९६
१०४६	५७६४	,, दिनेशलाल पाठक	,,	तृतीय श्रेणी ३६५
१०४९	५७६७	,, माँगीलाल सोलंकी	बड़मेर	,, ३५६
१०५५	५७७३	,, गङ्गाशरण शर्मा	बदायूँ	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०५८	५७७६	श्री उमाशंकर चतुर्वेदी	बदायूँ	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०५९	५७७७	" पतञ्जली 'हर्ष' सांख्योद्धार	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०६५	५७८३	" ब्रह्मनन्दन प्रसाद सक्सेना	बड़वाह	तृतीय श्रेणी ३२८
१०७१	५७८९	" बच्चालाल सिंह	बलिया (जु० संस्कृत का०)	" ३३३
१०७८	५७९६	" रमाशंकर तिवारी	बलिया	द्वितीय श्रेणी ४१४
१०८८	५८०६	" शशिशेखर (काशीनाथ आठल्ये)	बम्बई (मा० वि०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०८९	५८०७	" कन्हैयालाल गुप्त	"	तृतीय श्रेणी ३५६
१०९२	५८१०	श्रीमती शान्तीदेवी अग्रवाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०९४	५८१२	" श्यामकुमारी अग्रवाल	"	"
१०९८	५८१६	श्री हरिशंकर चतुर्वेदी	"	तृतीय श्रेणी ३७८
१११२	५८३०	" रामलौट सिंह	बरहज	" ३४३
१११४	५८३२	" राधाकृष्ण सिंह	"	" ३७२
१११७	५८३५	" बेनीमाधोलाल श्रीवास्तव 'माधव'	"	उत्तीर्ण ३१८
१११८	५८३६	" लल्लनप्रसाद द्विवेदी 'सत्य'	"	तृतीय श्रेणी ३६१
१११९	५८३७	" कोमलप्रसाद पाण्डेय	"	" ३८८
११२०	५८३८	" इन्द्रासन सिंह	"	" ३२८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११२१	५८३९	श्री विन्ध्याचल सिंह	बरहज	तृतीय श्रेणी ३२९
११२५	५८४३	,, दिवाकर मिश्र	,,	,, ३४१
११२६	५८४४	,, रामबचन सिंह	,,	,, ३५६
११२७	५८४५	,, महेन्द्र पाण्डेय	,,	,, ३९४
११३४	५८५२	,, चौथीप्रसाद	,,	,, ३४१
११३७	५८५५	,, रघुराज सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११३९	५८५७	श्रीमती कुमारी कुमुदिनी मिश्र	बरेली (स० वि.हा. स्कूल)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११५३	५८७१	श्री सेतूराम उपनाम घनश्याम	बस्ती	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११५४	५८७२	,, सत्यव्रत सिंह	,,	,,
११५५	५८७३	,, राममिलन उपाध्याय	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११५६	५८७४	,, सरस्वतीप्रसाद शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११७२	५८९०	,, परमेश्वरप्रसाद सिंह	बहदुरा	तृतीय श्रेणी ३२६
११७५	५८९३	,, साधोप्रसाद सिंह	,,	,, ३४४
११८०	५८९८	,, परमेश्वर सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११८५	५९०३	,, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय	बाढ़	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११९३	५९११	,, इन्द्र वर्मा कुलश्रेष्ठ	बाँदा	तृतीय श्रेणी ३८४

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
११९४	५९१२	श्री बाबूलाल मिश्र 'कमलेश'	बाँदा	तृतीय श्रेणी ३२८
११९५	५९१३	" विश्वम्भरनाथ वर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४२६
१२०६	५९२४	" घासीलाल	बामनिया	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२०७	५९२५	" नटवरलाल चतुर्वेदी	"	"
१२१२	५९३०	" जगदीशप्रसाद नाई	बीकानेर	तृतीय श्रेणी ३६८
१२१३	५९३१	" रेखाराम वर्मा	"	" ३३८
१२१४	५९३२	" रावतमल सारस्वत	"	द्वितीय श्रेणी ४१८
१२१५	५९३३	" जीवनदत्त पुरोहित	"	तृतीय श्रेणी ३६०
१२१६	५९३४	" दाऊदयाल गोस्वामी	"	" ३३५
१२२७	५९४५	" रामसिंहासन सिंह	भगवानपुर	" ३४७
१२२८	५९४६	" चन्द्रदीप पाण्डेय	"	" ३७१
१२२९	५९४७	" त्रिगुणसिंह	"	" ३२५
१२३४	५९५२	" रघुनाथप्रसाद	भरतपुर	" ३४५
१२२४	५९६२	" गोबर्धनदास मेहता	भेलसा	" ३३४
१२४६	५९६४	" नर्मदाप्रसाद	"	" ३४२
१२४७	५९६५	श्रीमती कुँवारी अंजनादेवी लूम्बाँ	"	" ३२७

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२५०	५९६८	श्री किसनलाल ओसवाल	भोपाल गढ़	तृतीय श्रेणी ३४८
१२५१	५९६९	” चंम्पालाल कर्णावत	”	” ३४६
१२५२	५९७०	” फूलचन्द्र जैन	”	” ३५५
१२५४	५९७२	” रामदुलार द्विवेदी	मड़ियाहू	उत्तीर्ण ३१३
१२६०	५९७८	” रामनाथ तिवारी	मथुरा (गो० हि०वि०पीठ)	द्वितीय श्रेणी ४१४
१२६२	५९८०	” राधेश्याम गुप्ता	”	तृतीय श्रेणी ३२७
१२६३	५९८१	” लल्लोमल पचोरी	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२६५	५९८३	श्रीमती अनमोलकुमारी भाटिया	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२७३	५९९१	श्री रविनन्दन झा	”	तृतीय श्रेणी ३५४
१२७४	५९९२	” केदारनाथ चतुर्वेदी	”	” ३४२
१२७५	५९९३	” हरेकृष्ण तिवारी	”	” ३७९
१२७६	५९९४	” महावीरप्रसाद शर्मा	”	” ३४४
१२७७	५९९५	” सुन्दरसिंह वर्मा	”	उत्तीर्ण ३१९
१२८०	५९९८	” हरिपालसिंह चौहान	”	” ३१३
१२८३	६००१	” ठाकुर वीरेन्द्रपाल सिंह	”	तृतीय श्रेणी ३३८
१२८४	६००२	” बेनीमाधव अग्रवाल	”	उत्तीर्ण ३०६

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२८६	६००४	श्री प्रेमचन्द्र रायजादा	मथुरा (गो० हि० वि०पीठ)	तृतीय श्रेणी ३६५
१२८९	६००७	,, हरनारायण शर्मा	,,	,, ३४१
१२९२	६०१०	,, विदुरदत्त चतुर्वेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२९४	६०१२	,, चतुरीराम शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३८९
१२९६	६०१४	श्रीमती विद्यावती भार्गव	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२९७	६०१५	श्री ब्रजभूषण शर्मा	मद्रास	उत्तीर्ण ३१४
१२९८	६०१६	,, भैरवप्रसाद गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४३६
१३००	६०१८	,, वासिरेवड्डि भास्करराव	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३०१	६०१९	,, मालेम्पाटि धर्माराव	,,	,,
१३०३	६०२१	,, राधाकान्त झा	मधीपुरा	,,
१३०४	६०२२	,, श्यामाप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३५५
१३०५	६०२३	,, जगदानन्द झा	महदेवा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३०६	६०२४	,, नन्दलाल	,,	,,
१३०७	६०२५	,, बाबूलाल प्रसाद	महाराजगञ्ज	,,
१३१०	६०२८	,, रामकृपाल सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३८६
१३१७	६०३५	,, रामचन्द्र गुप्ता	माँगरोल	,, ३२४

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३१९	६०३७	श्री गौरीशंकर शुक्ल	मिर्जापुर	तृतीय श्रेणी ३४४
१३२४	६०४२	” शुकदेव प्रसाद शर्मा	मुकुन्दगढ़	” ३८९
१३२७	६०४५	” नरनारायण पाठक	मुगरा बादशाहपुर	” ३५३
१३२८	६०४६	” लालबहादुर उपाध्याय	”	उत्तीर्ण ३१९
१३२९	६०४७	” शोभनाथ त्रिपाठी	”	तृतीय श्रेणी ३६०
१३३२	६०५०	” धर्मकिशोर लाल	”	” ३२९
१३३३	६०५१	” रामचन्द्रप्रसाद अम्बष्ट	मुंगेर	” ३८१
१३३४	६०५२	” दिलमोहन मित्र	”	द्वितीय श्रेणी ४२८
१३३७	६०५५	श्रीमती कुमारी सीता देवी अग्रवाल	”	तृतीय श्रेणी ३६०
१३३९	६०५७	” कुमारी शारदा देवी अग्रवाल	”	” ३३०
१३४०	६०५८	श्री गदाधरप्रसाद उपाध्याय	”	” ३५८
१३४१	६०५९	श्रीमती शान्ती देवी	मुजफ्फर नगर	” ३७३
१३४४	६०६२	श्री केशरी सिंह	मुजफ्फरपुर (सुहृद संघ)	” ३८२
१३४५	६०६३	” रामकृपाल शर्मा	”	” ३५१
१३४६	६०६४	श्रीमती शकुन्तला	”	” ३८४
१३५१	६०६९	श्री रामचन्द्र त्रिपाठी	”	” ३४५

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१३५२	६०७०	श्री जगदीश झा	मुजफ्फरपुर (सुहृदय संघ)	अध्याय ३ नियम के अनुसार
१३५५	६०७३	,, रामेश्वरलाल गुप्त	मुरादाबाद	द्वितीय श्रेणी ४०३
१३५६	६०७४	,, दयाव्रत शर्मा	,,	,, ४४१
१३५८	६०७६	,, तेजपाल सिंह	,,	,, ४०७
१३५९	६०७७	,, रामविहारी शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३३७
१३६०	६०७८	,, वीरेन्द्रकुमार मिश्रा	,,	,, ३२१
१३६२	६०८०	,, सत्यव्रत जनार्दन	,,	प्रथम श्रेणी ४८३
१३६५	६०८३	,, दिनेशचन्द्र पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३६७	६०८५	,, शालिग्राम द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ४०६
१३६८	६०८६	श्रीमती मूर्ति देवी	मेरठ	अध्याय ३ नियम के अनुसार
१३६९	६०८७	श्री कर्णदेव शर्मा	,,	,,
१३७२	६०९०	,, कृष्णगोपाल दास	मैनपुरी	द्वितीय श्रेणी ४०५
१३७४	६०९२	,, सुरेन्द्रचन्द्र शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३५६
१३७५	६०९३	,, विश्वम्भर सिंह भदौरिया	,,	उत्तीर्ण ३११
१३८०	६०९८	,, रामलखन सिंह	मोस्सराड	द्वितीय श्रेणी ४३८
१३८१	६०९९	,, कृष्णगोपाल सिंह	,,	,, ४३२

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३८२	६१००	श्री रामदेव सिंह	मोरसंड	तृतीय श्रेणी ३७३
१३८४	६१०२	" सहदेव सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४६४
१३८५	६१०३	" रामचन्द्र प्रसाद शाही	"	तृतीय श्रेणी ३९२
१३८६	६१०४	" गंगासागर तिवारी	मौरावाँ	" ३७८
१३८७	६१०५	" तुलाराम गुप्त	"	" ३९७
१३९०	६१०८	" सुखेनप्रसाद ठाकुर	रक्सौल	द्वितीय श्रेणी ४५८
१३९१	६१०९	" रामानन्त सिंह	"	" ४४१
१३९२	६११०	" ब्रजवंश उपाध्याय	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३९४	६११२	" प्रेमचन्द्र	"	"
१३९८	६११६	" हरीन्द्रदत्त शर्मा	रतनगढ़	द्वितीय श्रेणी ४४६
१३९९	६११७	" नित्यानन्द सारस्वत	"	" ४१०
१४००	६११८	" नारायण सिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४०४	६१२२	" कैलाशचन्द्र माहेश्वरी	रतलाम	"
१४०८	६१२६	" इन्द्रदेव सिंह	रतसण्ड	तृतीय श्रेणी ३२१
१४०९	६१२७	" यमुना सिंह	"	" ३२५
१४१०	६१२८	" गनपत सिंह	"	" ३४४

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४१२	६१३०	श्री गुलाबचन्द्र विजय	राजगढ़	उत्तीर्ण ३१२
१४१४	६१३२	,, कृष्णलाल बाघेला	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४२२	६१४०	,, बैजनाथ वर्मा	राज़ापुर (बाँदा)	तृतीय श्रेणी ३७०
१४२५	६१४३	,, देवदत्त मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४५५
१४२६	६१४४	,, सुन्दरसिंह	राँची	तृतीय श्रेणी ३३८
१४३२	६१५०	,, अवध नारायणसिंह	रानीपुर (आज़मगढ़)	,, ३७१
१४३६	६१५४	,, सरयूप्रसादसिंह	रानीगंज (पूर्णियाँ)	,, ३५७
१४३७	६१५५	,, अनन्तप्रसाद यादव 'अनन्त'	,,	,, ३७३
१४३८	६१५६	,, देवनन्दन पाण्डेय	,,	,, ३६०
१४४०	६१५८	,, सदानन्द झा	,,	,, ३६८
१४४१	६१५९	,, धर्मेश्वरलाल दास	,,	द्वितीय श्रेणी ४१२
१४४५	६१६३	,, शिवनारायणसिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४४६	६१६४	,, चन्द्रधर झा 'चन्द्र'	,,	तृतीय श्रेणी ३८३
१४४७	६१६५	,, रागदेव सिंह	,,	,, ३५५
१४४८	६१६६	,, भीमकुलाल	,,	,, ३५९
१४४९	६१६७	,, लालजी भगत	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४५१	६१६९	श्री सूर्यनाथ मिश्र	रानीगंज (पूर्णियां)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४५२	६१७०	" सिद्धेश्वर प्रसाद मण्डल	"	द्वितीय श्रेणी ४०३
१४५४	६१७२	" भूषणलाल तिवारी	रायपुर	" ४३२
१४५५	६१७३	" सखाराम साव	"	" ४३१
१४५६	६१७४	" क्लाईव आर लौज	"	उत्तीर्ण ३०७
१४५८	६१७६	" भगवतप्रसाद आर्य	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४५९	५१७७	" बाबूलाल श्रीवास 'कवि भूषण'	"	तृतीय श्रेणी ३४२
१४६०	६१७८	" हुक्मचन्द्र जैन	रीवाँ (बाल समिति)	" ३३८
१४६६	६१८४	" शिवदयाल सक्सेना	"	द्वितीय श्रेणी ४२९
१४६७	६१८५	" भैरवदीन मिश्र 'मार्तण्ड'	"	तृतीय श्रेणी ३५२
१४६९	६१८७	" जगमोहन निगम	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४७४	६१९२	" काशीराम भीखाजी धुले	"	"
१४७५	६१९३	" भगवानप्रसाद त्रिपाठी	"	"
१४७६	६१९४	" मदनमोहन मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४०२
१४७७	६१९५	श्रीमती सोमवती चौहान	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४७९	६१९७	श्री गुरुराम प्यारे अग्निहोत्री	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४८३	६२०१	श्री रमाकान्त शर्मा	रीवाँ (बाल समिति)	तृतीय श्रेणी ३२७
१४८४	६२०२	" रामशिरोमणि शर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४८५	६२०३	" अम्बिकाप्रसाद द्विवेदी	"	"
१४९१	६२०९	" काशीप्रसाद द्विवेदी	लखनऊ	तृतीय श्रेणी ३५५
१५०४	६२२२	" चन्द्रकान्त मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४१०
१५०५	६२२३	" लक्ष्मीशङ्कर मिश्र	"	" ४४४
१५०६	६२२४	" शिवकैलाश पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३६९
१५०८	६२२६	श्रीमती सरस्वती शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ४३७
१५०९	६२२७	" कुमारी विद्या श्रीवास्तव	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५१०	६२२८	" मोहिनी देवी चतुर्वेदी	"	तृतीय श्रेणी ३५९
१५१३	६२३१	श्री जमनाप्रसाद	"	उत्तीर्ण ३१७
१५१४	६२३२	" शान्तीस्वरूप दीक्षित	"	तृतीय श्रेणी ३४०
१५१६	६२३४	श्रीमती राजकुमारी भार्गव	"	द्वितीय श्रेणी ४१५
१५२२	६२४०	" उमा देवी	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५२३	६२४१	श्री ब्रह्मदत्त तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ४७५
१५२७	६२४५	" बासुदेव शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३७५

क्रम संख्या	विशा० संख्या	परीक्षार्थी का नाम	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५२८	६२४६	श्री यमुनाप्रसाद उपाध्याय	लखनऊ	तृतीय श्रेणी ३४९
१५३०	६२४८	" जयदत्त पन्त	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५३२	६२५०	श्रीमती वसन्त कुमारी टण्डन	"	द्वितीय श्रेणी ४१६
१५३५	६२५३	श्री शिवप्रसाद	"	तृतीय श्रेणी ३३४
१५४१	६२५९	,, राधेश्याम अग्रवाल	लश्कर	,, ३७८
१५४३	६२६१	,, फुलजारीलाल चतुर्वेदी	,,	,, ३४५
१५४४	६२६२	,, काशीराम शर्मा	,,	,, ३२६
१५४५	६२६३	,, रामस्वरूप श्रीवास्तव 'पथिक'	,,	द्वितीय श्रेणी ४०२
१५४८	६२६६	,, रामनारायण गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी ३२०
१५४९	६२६७	,, त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ४१०
१५५०	६२६८	श्रीमती राजकुमारी सक्सेना	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५५२	६२७०	श्री काशीराम श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी ३८२
१५५३	६२७१	,, शंकरराव कापसे	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५५५	६२७३	,, हरीशंकर सक्सेना	"	तृतीय श्रेणी ३७६
१५५७	६२७५	,, वंशीधर शर्मा	,,	,, ३२९
१५५९	६२७७	,, शिवशंकर मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४६८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६८७	६४०५	श्री शुकदेवप्रसाद सिंह	सेवदह	तृतीय श्रेणी ३५९
१६९०	६४०८	" अर्जुन सिंह	"	" ३८९
१६९१	६४०९	" छोटूप्रसाद सिंह 'चन्द्रमौलि'	"	" ३७७
१६९८	६४१६	" वासुदेवप्रसाद सिंह 'देव'	"	" ३७७
१६९९	६४१७	" लक्ष्मीकान्त सिंह 'कान्त'	"	" ३२२
१७०२	६४२०	" हरिनन्दनप्रसाद सिंह	"	" ३३३
१७२१	६४३९	" आत्माराम शर्मा	सोनकच्छ (ए. वी.एम.स्कू०)	" ३२०
१७२२	६४४०	" नन्दराम मालवीय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७२५	६५४३	" कमल सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३९७
१७२७	६४४५	" कन्हैयालाल टकसाली	"	" ३२८
१७२८	६४४६	" लक्ष्मीनारायण	"	" ३३१
१७२९	६४४७	" श्री वल्लभ व्यास	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७३१	६४४९	" कृपाशंकर भरथरी	"	तृतीय श्रेणी ३५०
१७३२	६४५०	" रामाधार	सोराम	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७३४	६४५२	" सूर्यनारायण त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३६४
१७३५	६४५३	" काशीनाथ चौरे	हरदा	" ३६०

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७३६	६४५४	श्री कृष्ण शाकल्य	हरदा	तृतीय श्रेणी ३५
१७३८	६४५६	,, बलदेवप्रसाद उपाध्याय 'विनीत'	,,	,, ३८
१७३९	६४५७	,, रामभाऊ गौड़	,,	,, ३८
१७४५	६४६३	,, रघुबीर सहाय	हरदोई	प्रथम श्रेणी ४८
१७४६	६४६४	,, ब्रजकिशोर द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ४३
१७४७	६४६५	,, गङ्गासहाय शर्मा	हाथरस	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७४८	६४६६	,, लक्ष्मीनारायण शास्त्री	,,	द्वितीय श्रेणी ४१
१७६३	६४८१	,, सुदामा पाण्डेय	हिराजपट्टी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७६४	६४८२	,, अवधविहारी तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३९
१७६६	६४८४	,, बसन्तकुमार माथुर	होलीपुरा	,, ३५
१७६७	६४८५	,, रामविलास गुप्त	,,	,, ३३
१७६९	६४८७	,, हरिपाल सिंह	हंडिया	,, ३२
१७७६	६४९४	,, सम्पूर्ण सिंह	रंगून	अध्याय ३ नियम के अनुसार
१७८३	६५०१	,, गिरधरप्रसाद	खोपापार	तृतीय श्रेणी ३३
१७८६	६५०४	,, विश्वनाथ राय	,,	,, ३८
१७८९	६५०७	,, भुवनेश्वरराय शर्मा	पूसा (हा० इं० स्कूल)	,, ३८

क्रम संख्या	विशा० संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७९०	६५०८	श्री महावीर गोप	पोठिया	तृतीय श्रेणी ३४९
१७९३	६५११	" शिवप्रसाद पाण्डेय	प्रयाग (दारागंज)	प्रथम श्रेणी ५१९ (वि० यो० गणित)
१७९४	६५१२	" कन्हैयालाल पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४०५
१७९६	६५१४	" रामअवध उपाध्याय	सिंगरामऊ	तृतीय श्रेणी ३७७
१७९९	६५१७	" देवीरत्न अवस्थी 'करील'	प्रयाग (स० कार्या०)	" ३३५
१८००	६५१८	श्रीमती प्रकाशरानी वकाया	अमृतसर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८०८	६५२५	श्री रामकिशोर पाण्डेय	प्रयाग (स० कार्या०)	तृतीय श्रेणी ३५८

प्रथमा परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२	श्री परशुराम दुबे	अकबरपुर (फ़र्रुखाबाद)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३	" रामेश्वरदयाल दुबे	"	"
४	" भीम सिंह	"	"
६	" राजनारायण दुबे	"	तृतीय श्रेणी २६८
७	" रामसनेही यादव	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४७	श्री श्रीराम	आगरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४८	,, मोहनलाल शर्मा	,,	,,
५०	,, बाबूलाल सारस्वत	,,	,,
५१	,, महेन्द्र सिंह	,,	,,
५४	,, चोखेलाल	,,	,,
५५	,, प्रेमदयाल गुप्त	,,	,,
५६	श्रीमती प्रतिमारानी मिश्रा	,,	द्वितीय श्रेणी ३६२
५७	श्री रघुनाथप्रसाद वंसल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६१	,, बाबूराम दौनेरिया	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३	,, पन्नालाल	,,	,,
६५	,, लक्ष्मीनारायण	,,	,,
६६	,, मानिकचन्द्र शर्मा	,,	,,
६७	,, मंगलदेव	आज़मगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६८	श्रीमती सत्यवती देवी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४८
६५	,, विद्यावती देवी	,,	,, ४०५ (वि०यो०इति०गणि०)
७१	,, विद्याधरी देवी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६६

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७३	श्री नरसिंह गिरि	आरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७५	श्रीमती मोहनी देवी भटनागर	"	"
७८	श्री जगन्नाथप्रसाद	इच्छावर	द्वितीय श्रेणी ३३३
८०	,, अनोखी लाल	"	" ३६६ (वि० यो० इति०)
८१	,, छगनलाल गुप्ता	"	द्वितीय श्रेणी ३२६
८५	,, आत्माराव	इटारसी	" ३९५
८६	,, बालकृष्ण शर्मा	"	" ४०३
८७	,, उदितनारायण पाण्डेय	"	" ४१६
८८	,, गुलाबचन्द	"	तृतीय श्रेणी २७८
८९	,, त्रिलोकचन्द वर्मा	"	,, २९९
९०	,, रेवाशङ्कर दुबे	"	द्वितीय श्रेणी ३४९
९१	,, चन्द्रशेखर शुक्ल	"	,, ३६०
९३	,, राम राव	"	तृतीय श्रेणी २७१
९४	,, रामनारायण दुबे	"	द्वितीय श्रेणी ३७४
९५	,, उमाकान्त	"	तृतीय श्रेणी २६०
१०३	श्रीमती जमना बाई	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्त
१०६	श्री कन्हैयालाल शर्मा	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी ४०
१०७	” रामफल ग्वाल	”	” ४० (वि० यो० गणि
१०८	” सीताराम अजमेरा 'बाग़ी'	”	अध्याय २ नियम के अनुसार
१०९	” बद्रीनारायण गुप्त रस्तोगी	”	”
११०	” रामगोपाल झँवर	”	”
१११	” चुन्नीलाल चतुर्वेदी	”	”
११२	” मिट्ठूलाल मिश्र	”	”
११३	” पुनमचन्द्र जौहरी	”	”
११७	” सहदेवप्रसाद चौबे	ईशीपुर	”
११८	श्रीमती कौशल्या देवी	”	द्वितीय श्रेणी ३८
११९	श्री नर्मदेश्वर पाण्डेय	”	अध्याय २ नियम के अनुसार
१२०	श्रीमती सुशीला देवी	”	द्वितीय श्रेणी ४० (वि०यो०गणित, ड्र
१२३	” लीलावती देवी	उज्जैन	द्वितीय श्रेणी ३
१२४	श्री गौरीशङ्कर जोशी	उदयपुर (सा० वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२८	” विजयनाथ	उदयपुर (हि० वि० पी०)	द्वितीय श्रेणी ३९
१२९	” सोहनलाल	”	” ३४

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३०	श्री मोडीलाल	उदयपुर (हि० वि० पी०)	द्वितीय श्रेणी ३४१
१३६	,, अवधविहारी वाजपेयी	,,	,, ३१७
१४०	,, चैनसुख अजमेरा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४२	,, श्यामसुन्दर फतहपुरिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३४१
१४४	,, हीरालाल खाव्या (जैन)	,,	,, ३५२
१४६	,, सुन्दरलाल महता	,,	प्रथम श्रेणी ४४३ (वि०यो० गणित,राज)
१४७	श्रीमती हंगामी देवी गौड़	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४८	श्री भवानीशंकर त्रिपाठी 'दुखित'	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५१	,, मनोहरलाल	उरई	,,
१५२	,, मेवालाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४०० (वि० यो० गणित)
१५६	श्रीमती य० वसवम्मा देवी	एतानगरप्पाले	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५८	,, क० सत्यनारायण	,,	,,
१६०	,, क० पिच्चय्या	,,	,,
१६१	,, गो० वेंकटरामय्या	,,	,,
१६२	,, अ० नागेश्वर राव	,,	,,
१६३	,, को० कूर्मि राव	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६५	श्री य० नागवसव पुन्नय्या	एत्सनगरप्पाले	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६९	" लक्ष्मी नारायण	करेलीगंज	द्वितीय श्रेणी ३२४
१७३	" द्वारकाप्रसाद नायक	कटनी	अध्याय २ नियम ५ अनुसार
१७५	" वसंतराव गणेश सीले	"	"
१७७	" प्यारे मोहन श्रीवास्तव	"	"
१७८	" जयकुमार जैन	"	"
१७९	" रामकृष्ण तिवारी	"	"
१८०	" विनोदकुमार वर्मा	"	"
१८१	" दिनकरराव पुरुषोत्तम गोखले	"	"
१८२	" अमरचन्द्र जैन	"	"
१८४	" हरिहरमणि त्रिपाठी	कटया	द्वितीय श्रेणी ३६८ (वि० यो० गणित)
१८५	" कमलाप्रसाद राय	"	द्वितीय श्रेणी ३९३ (वि० यो० गणित)
१८६	" रमाकान्त मिश्र	कटनी	द्वितीय श्रेणी ३६० (वि० यो० गणित)
१८७	" युगलकिशोर प्रसाद सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३९२ (वि० यो० गणित)
१८८	" माधवप्रसाद द्विवेदी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१९०	" त्रिवेणी नायक	कटिहार	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९१	श्री कामेश्वरप्रसाद	कटिहार	तृतीय श्रेणी २६०
१९२	,, भागीरथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५२ (वि० यो० गणित)
१९३	,, धर्मानन्द झा	,,	तृतीय श्रेणी २९१
१९८	,, रासविहारी चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६१
१९९	,, रामलखनसिंह	कड़सर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२०२	,, भगवतीप्रसाद लाल	,,	,,
२०३	,, कमलाचन्द उपाध्याय	,,	,,
२०४	,, राजदेव शर्मा	कदम कुँआ	द्वितीय श्रेणी ३२५
२०६	,, अवधकिशोर नारायण सिंह	,,	,, ३४२
२०७	श्रीमती सरस्वती देवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२०८	,, राधिका देवी	,,	,,
२०९	श्री रोहनलाल शत्रुहनसहाय	,,	,,
२१०	,, अनन्त	कन्नौद	,,
२११	,, बसन्त	,,	,,
२१५	,, यमुनाप्रसाद सिंह	करनौती	द्वितीय श्रेणी ३१५
२१७	,, रामवरण सिंह	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२१८	श्री दुलारीशरण सिंह	करनौती	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२१९	" बाबू झारखण्डे राय	करसियांग	"
२२५	" कामताप्रसाद शुक्ल	करांची	द्वितीय श्रेणी ३९७ (विशेष योग्यता ग०)
२३२	" मुरारीलाल गुप्त	करौली	द्वितीय श्रेणी ३६९
२३४	" गिर्राज किशोर शर्मा	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२३५	" विश्वनाथप्रसाद सिंह	कलकत्ता (जैन श्वेता०तारा.वि.)	"
२३६	" पन्नालाल जैन	"	"
२३७	" कन्हैयालाल वैद	"	"
२३९	" ऊमचन्द्र दूगड़	"	"
२४०	" उमराव सिंह कोचर	"	"
२४१	" दीपचन्द नाहासा	"	"
२४२	" केवलचन्द बोथरा	"	"
२४३	" आसकरन सोमानी	"	"
२४४	" भँवरलाल सुराणा	"	"
२४५	" शोभाचन्द सुराना	"	"
२४६	" कन्हैयालाल दूगड़	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२५०	श्री नरसिंहलाल जी श्रावास्तव	कलकत्ता (तु० सा० वि०)	द्वितीय श्रेणी ३२१
२५३	" बच्चन राय	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२५४	" जगजीवन पाण्डेय	"	"
२५५	" कन्हैयालाल वैद	"	"
२५८	" रामवृक्ष पाण्डेय	"	"
२५९	" जगतबहादुर सिंह	कलकत्ता (मा० वि०)	"
२६०	" मोहनलाल सोनी	"	"
२६२	" माधवप्रसाद सराफ	"	"
२६३	" साँवलराम मोदी	"	तृतीय श्रेणी २६९
२६६	" भगवतीप्रसाद राय	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२६८	" शम्भूनारायण राय	"	"
२७१	" रुद्रदेव सिंह	कसाप	"
२७२	" ज्वालाप्रसाद सिंह	"	"
२७३	" राधाकान्त मिश्र	"	"
२७४	" प्रयागदत्त पाडेण्य	कालाकांकर	द्वितीय श्रेणी ३८४ (वि० यो० गणित)
२७५	" सच्चिदानन्द पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ३८१ (वि० यो० गणित)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२७६	श्री सूर्य्यदीन शुक्ल	कालाकांकर	तृतीय श्रेणी २८१
२७७	,, रामनारायण त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३९६ (वि० यो० गणित)
२७८	,, शिवदत्तबहादुर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५४ (वि० यो० गणित)
२७९	,, अयोध्याप्रसाद चौबे	,,	तृतीय श्रेणी ३०९
२८१	,, सूर्यनाथ पाण्डेय	,,	प्रथम श्रेणी ४५० (वि० यो० गणित)
२८२	,, प्रभाकर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४८
२८४	,, शिवकण्ठलाल शर्मा	कानपुर (डी० ए० वी० का०)	,, ३६०
२८९	,, गोपीप्रसाद गुप्त	,,	,, ३५५ (वि० यो० गणित)
२९०	,, शालिकराम पाण्डेय	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२९१	श्रीमती शान्ति देवी श्रीवास्तव	कानपुर (एस० डी० का०)	,,
२९२	श्री रामभजन द्विवेदी	,,	,,
२९३	,, परमेश्वरदीन द्विवेदी	,,	,,
३०२	,, कविराज भगवान शर्मा	कालिम्पोङ्ग	द्वितीय श्रेणी ४१२
३०३	,, रामप्रकाश राय	,,	तृतीय श्रेणी २५४
३०६	,, बलदेवराज 'गुलशन'	काशी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३०८	श्रीमती कुमारी सावित्री देवी	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३११	श्री बटुककृष्ण शर्मा	काशी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३१५	,, मेवादास	,,	तृतीय श्रेणी २८८
३१६	,, तेजनाथ मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३३८
३१७	,, कृष्णमोहन अष्ठाना	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३१९	,, बासुदेव सिंह चन्देल	काशी (उ० प्र० का०)	द्वितीय श्रेणी ३९४ (वि० यो० गणित)
३२०	,, अम्बिका पाण्डेय	,,	प्रथम श्रेणी ४२६ (वि० यो० गणित)
३२२	श्रीमती पार्वती देवी	काशी (श्रो० का०)	तृतीय श्रेणी २६३
३२७	श्री बद्रीप्रसाद जैन	किरावली	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३३०	,, जयदेव झा	कुँआगढ़ी	तृतीय श्रेणी ३१४
३३१	,, हरिकिशोर झा	,,	,, ३०२
३३६	,, रमाकान्त झा	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
३३८	,, सुरेश मिश्र	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३३९	,, रसिकलाल झा	,,	,,
३४०	,, विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २६६
३४२	,, मांगीलाल	कुकड़ेश्वर	,, २८६

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३४४	श्री रामचन्द्र	कुकड़ेश्वर	द्वितीय श्रेणी ३१२ (वि० यो० गणित)
३४५	,, कुँजबिहारी राय	कुशी नगर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३४७	,, गोपालप्रसाद द्विवेदी	,,	,,
३४९	,, रामचन्द्र प्रसाद	,,	,,
३५०	,, हकीम	,,	,,
३५३	,, गोविन्दराम स्वामी	कोटरा	,,
३५४	,, रूपनारायण पाण्डेय	,,	,,
३५५	,, रामस्वरूप दुबे	,,	,,
३५६	,, गौरीशंकर द्विवेदी	,,	,,
३५७	,, शिवाधर त्रिपाठी	,,	,,
३५८	,, शिवनारायण	,,	,,
३५९	,, काशीराम शर्मा 'कौशिक' गौड़	,,	,,
३६०	,, आनन्दीप्रसाद यादव	खगड़िया	,,
३६६	,, सूरजपाल सिंह	खड़गपुर (मेदिनीपुर)	द्वितीय श्रेणी ३३८
३६७	,, दुलीचन्द अग्रवाल	,,	तृतीय श्रेणी २९६ (वि० यो० गणित)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३६९	श्री प्रयागदत्त दुबे	खपड़ाडीह	द्वितीय श्रेणी ३५०
३७०	,, सुखराज मिश्र	,,	,, ३२४
३७१	,, शिवराम पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३५७ (वि० यो० गणित)
३७२	,, रामअचल त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३५० (वि० यो० गणित)
३७३	,, श्यामसुन्दर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७९ (वि० यो० गणित)
३७६	,, लषन सिंह	गगहा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३७७	,, लालजी मल	,,	द्वितीय श्रेणी ३४२ (वि० यो० गणित)
३७८	,, दुखमोचन ठाकुर	गढ़वनैली	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३८०	,, नागेश्वर मिश्र	,,	,,
३८१	,, मदनेश्वर मिश्र	,,	,,
३८२	,, रामचरित्र महतो	गया	,,
३८३	,, रामस्वरूप सिंह 'वीर'	,,	,,
३८४	,, प्रदीपनारायण	,,	,,
३८५	,, गङ्गाप्रसाद	,,	,,
३८७	,, रामदयाल विजौरहा	गाड़रवारा	द्वितीय श्रेणी ३३६
३८८	,, बाबूलाल साहू	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३९०	श्रीमती कुमारी शैलवाला रस्तोगी	गोरखपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३९२	श्री सदाशिव शेल गाँवकर	गङ्गधार	द्वितीय श्रेणी ३८२
३९६	,, ईश्वरीप्रसाद	चतरा (हाई इं० स्कूल)	तृतीय श्रेणी २७६
३९७	,, गणपतिराम	,,	द्वितीय श्रेणी ३३७
४०६	,, केदारनाथ शर्मा	चिड़ावा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४०७	,, सीताराम भारतीय	,,	,,
४०८	,, रामशरण पण्डित	चिरौरा	,,
४१५	,, रामयश सिंह	छपरा	,,
४१६	,, गोपाल जी	,,	,,
४१८	,, लग्नदेव सिंह	,,	,,
४१९	,, मृत्युञ्जय सिह	,,	,,
४२०	,, सूर्यबली सिंह	,,	,,
४२१	,, विन्ध्यवासिनी प्रसाद	,,	,,
४२४	,, गोकुलप्रसाद तिवारी	छीते पट्टी	,,
४२५	,, दयाराम त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६१ (वि० यो० गणित)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४२६	श्री कोमलचन्द्र जैन	जगदलपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४२७	" देवीप्रसाद	"	"
४२८	" नत्थूलाल तिवारी	"	"
४२९	" श्रीनिवास	"	"
४३०	" राममूर्ति शुक्ल	"	"
४३२	" हरिप्रताप सिंह	जमुनीपुर	"
४३३	" दूधनाथ मिश्र	"	"
४३४	" काशीप्रसाद द्विवेदी	"	"
४३५	" अरविन्दबहादुर सिंह	"	"
४३६	श्रीमती एलिज़ाबेथ हरजीवन परमार	जबलपुर	"
४३७	श्री मोहनकुमार निगम	"	"
४३९	" गोविन्ददेव दुबे	"	"
४४०	" हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव	"	"
४४१	" गोकुलप्रसाद शुक्ल	"	"
४४२	" शिवकुमार शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३६४
४४४	" राधामोहन शर्मा	जयपुर (संस्कृत का०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४४९	श्री जयदेव पाठक	जयपुर (संस्कृत का०)	द्वितीय श्रेणी ३३३ (वि० यो० गणित)
४५२	,, यमुनाप्रसाद शर्मा	जहानाबाद	अध्याय २ नियम १ के अनुसार
४५३	श्रीमती वेद कुमारी गार्ग्य	जालौर	द्वितीय श्रेणी ४०४ (वि. यो. ग. और भू०)
४६२	श्री अ० सत्यनारायण	जुगसलाई	अध्याय २ नियम १ के अनुसार
४६३	,, रामरत्न मिश्र	,,	,,
४६४	,, हरिहरप्रसाद साह	जैतपुर	,,
४६५	,, सत्यदेव सिंह	,,	,,
४६६	,, विद्यापति वर्मा	,,	,,
४६७	,, रुद्रनारायण प्रसाद सिंह	,,	,,
४६९	,, सत्यनारायण सिंह	,,	,,
४७०	,, ऋतुराजप्रसाद यादव	,,	,,
४७२	,, सूर्यदेव नारायण	,,	,,
४७४	,, श्रीकृष्ण सिंह	,,	,,
४७५	,, सत्यदेव नारायण ओझा	,,	,,
४७७	,, देवराज जैन	जोधपुर	प्रथम श्रेणी ४३४ (वि. यो. भू. और इ.)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४७८	श्री मूलचन्द संचेती	जोधपुर	द्वितीय श्रेणी ३२७
४७९	,, वेंकट शर्मा	,,	,, ३७७
४८०	,, गौतमदास मुणोयत	,,	तृतीय श्रेणी २९१
४८१	श्रीमती सावित्री देवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४८३	,, चम्पावती देवी	,,	,,
४८४	श्री चन्द्रभूषण पाण्डेय	जौनपुर	द्वितीय श्रेणी ३४८
४८५	,, रामअजोर मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३०२
४९३	,, रघुनाथप्रसाद केडिया 'मधुर'	झाझा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४९६	,, वामनदास त्रिपाठी	झालरापाटन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४९७	,, गोपीचन्द खेतान	झुँझनू	द्वितीय श्रेणी ३५३ (वि० यो० गणित)
४९९	,, प्रभुदयाल खण्डेलिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३९३
५००	,, मदनगोपाल शर्मा	,,	,, ३५६
५०१	,, महाबीरप्रसाद जोशी	,,	तृतीय श्रेणी २५४
५०२	,, महाबीरप्रसाद शर्मा	,,	,, २८९
५०३	,, मोहनलाल शर्मा	,,	,, २६०
५०४	,, रतनमोहनलाल 'माथुर'	,,	द्वितीय श्रेणी ३२३

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५०५	श्री विद्याधर जोशी	झुंझनू	द्वितीय श्रेणी ३६६
५०७	,, सूरजमल शर्मा	,,	,, ४०१
५०८	,, हरगोविन्द प्रसाद	,,	,, ३११
५१०	,, चन्दूलाल वर्मा	,,	,, ३६१ (वि० यो० गणित)
५१४	,, राजपति पाण्डेय	टांडा	तृतीय श्रेणी २६३
५१५	,, जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८
५१७	,, रामलखन वर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५१९	,, त्रिभुवनदत्त शुक्ल	,,	,,
५२२	,, पंचम सिंह	टीकमगढ़	द्वितीय श्रेणी ३२०
५२३	,, गंगानाथ चौधरी	टीकापट्टी	,, ३३४
५२४	,, द्रोणकुमार सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २३१
५२५	,, महेन्द्रप्रसाद चौधरी	,,	,, २६३
५२६	,, सुरेन्द्रप्रसाद	,,	,, २४३
५२७	,, रघुनन्दनप्रसाद चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी ३११
५२८	,, गोविन्दप्रसाद जोशी	टेहरी	तृतीय श्रेणी २७१
५२९	श्रीमती पारवती देवी पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५३१	श्री बाबूनन्दन तिवारी	ठकरहा	द्वितीय श्रेणी ३५२ (वि० यो० गणित)
५३२	" रामशरण चौबे	"	द्वितीय श्रेणी ३६० (वि० यो० गणित)
५३३	" मुरलीपति तिवारी	डिब्रूगढ़	द्वितीय श्रेणी ३८४ (वि०यो०गणि०,सं०)
५३७	" मदनलाल	"	तृतीय श्रेणी २८५
५३९	" छगनमल छावड़ा (जैन)	"	प्रथम श्रेणी ४३१ (वि० यो० संस्कृत)
५४०	" ठा० भारतशरण	डिहरी औन सोन	द्वितीय श्रेणी ३३८ (वि० यो० गणित)
५४१	" कुँवर कृष्णकुमार सिंह	"	प्रथम श्रेणी ४४९ (वि० यो० भू० गणित)
५४२	" रामप्रसाद सिंह	डुमरी	द्वितीय श्रेणी ३५३
५४३	" दुक्खन सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५४४	" रामविलास सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३२८
५४५	" श्यामनाराण सिंह	"	प्रथम श्रेणी ४२५
५४६	" राघवशरण सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६४
५४७	" बासुदेव सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५४८	" केवलपति सिंह	"	"
५४९	" रामचन्द्र सिंह	"	"
५५१	" रामेश्वर सिंह	"	

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५५२	श्री सीताराम सिंह	डुमरी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५५५	,, चन्द्रिका सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७२ (वि० यो० गणित)
५५६	,, जगदेवप्रसाद गुप्त	ढिंगवस	प्रथम श्रेणी ४५५ (वि.यो.भू. गणि.कृषि
५५७	,, रामकिशोर सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४३१ (वि.यो.भू.गणि.कृषि)
५५८	,, सूर्यनारायण त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ४१५ (वि०यो०गणित,कृषि-
५५९	,, जगतनारायण शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ३८२ (वि०यो०गणित,कृषि
५६०	,, सुधाकर शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ३७ (वि० यो० गणित)
५६१	,, रामकृपाल मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३९ (वि०यो०गणित, कृषि
५६२	,, भूनरेन्द्र प्रताप सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४४७ (वि०यो०गणित,कृषि
५६३	,, रमाशंकर सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४५ (वि०यो०गणित,कृषि
५६४	,, सदाशिव मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४१ (वि०यो०गणित,कृषि
५६५	,, बटुकपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७ (वि०यो०गणित,कृषि
५६६	,, रामकृपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४ (वि० यो० गणित
५६८	,, भीष्मराय	तिलौथू	अध्याय २ नियम के अनुसार
५६९	,, गुप्तनाथ चौबे	,,	,,
५७२	,, जगदेव पाण्डेय	,,	,,

क्रम संख्या
५७
५७५
५७६
५७७
५७८
५७९
५८०
५८१
५८२
५८३
५८६
५८८
५८९
५९०
५९१
५९२

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५७३	श्री पारस सिंह	तिलौथू	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५७५	" रामनन्दन प्रसाद	"	"
५७६	श्रीमती रामकिशोरी देवी	"	"
५७७	" सुशीला सिनहा	"	"
५७८	श्री रामलखन चौधरी	"	"
५७९	" हंसराज राम	"	"
५८०	" रघुनाथप्रसाद गुप्त	"	"
५८१	" केशवप्रसाद	"	"
५८२	" नन्दलाल राम	"	"
५८३	श्रीमती कुमारी कनकलता सहाय	"	"
५८६	श्री यदुनाथ सिंह	"	तृतीय श्रेणी २६५
५८८	" श्रीराम तिवारी	दतिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५८९	" अवधकिशोर खरे	"	"
५९०	" गोस्वामी भैयालाल	"	"
५९१	" भैयालाल व्यास	"	"
५९२	" श्यामस्वरूप श्रीवास्तव	"	द्वितीय श्रेणी ३६९

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५९३	श्री रामनारायण मुड़िया	दतिया	द्वितीय श्रेणी ३१७
५९४	,, किशोरीलाल गोस्वामी	,,	,, ३२२
५९८	,, रामभरोसे पाठक	दबोह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५९९	,, कृष्णाबाबू श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी २७९
६००	,, कामताप्रसाद श्रीवास्तव	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६०२	,, बाबूलाल श्रीवास्तव	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६०३	,, रसिकलाल शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६०४	,, द्वारिकाप्रसाद श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ३४१
६०७	,, कुंवरलक्ष्मण सिंह कुशवाहा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६०८	,, भगवानदास मास्टर	,,	,,
६१२	,, अशर्फीलाल बरेठा	दार्जिलिङ्ग	तृतीय श्रेणी २८८
६१४	,, राजदेव सिंह	दिघबारा	प्रथम श्रेणी ४३७ (वि० यो० गणित)
६१५	,, विश्वनाथ भक्त	,,	तृतीय श्रेणी २७०
६१९	,, हीरालाल	,,	,, २९०
६२०	,, प्रयाग शर्मा	,,	,, २६४
६३४	,, सुबोधनारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७३

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६२५	श्री बलदेव रावत	दिघवारा	द्वितीय श्रेणी ३७४
६२६	,, रघुनाथप्रसाद सिंह	,,	,, ३३७ (वि० यो० गणित)
६२७	,, माखनलाल गुप्ता	दुर्ग	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६२९	,, बङ्गालीप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३१७
६३०	,, प्रद्युम्नप्रसाद	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३१	,, सरयूप्रसाद सिंह	देव (गया)	द्वितीय श्रेणी ३५९ (वि० यो० गणित)
६३२	,, जगदीशप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४१५ (वि० यो० गणित)
६३३	,, चन्द्रदीप सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८ (वि० यो० गणित)
६३४	,, रघुपति सिंह	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३७	,, विन्ध्येश्वरीप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३५२
६३८	श्रीमती तारा देवी सिनहा	,,	,, ३३९
६४०	श्री बनारसी मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी २९१ (वि० यो० गणित)
६४१	,, बजरङ्गप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३३९ (वि० यो० गणित)
६४२	,, कृष्णकुमार वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०५
६४३	,, श्यामसुन्दर पाठक	,,	प्रथम श्रेणी ४५३ (वि० यो० गणित)
६४४	,, तेजबहादुर सिंह	देवरिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६४५	श्रीमती देवकुमारी	देवरिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६४६	" शान्ता देवी चतुर्वेदी	देहरादून (कन्या गु०)	"
६४७	" यमुना देवी	"	"
६४८	श्री बालकृष्ण पन्त	देहरादून (डी० ए०वी०का०)	"
६४९	" अनन्तराम बहुगुना	"	"
६५०	" वेदप्रकाश	"	तृतीय श्रेणी ३१२
६५१	" शिशुपाल सिंह रावत	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६५२	" तोताराम	"	"
६५३	" रामप्रसाद	"	"
६५४	" सूर्य्यकृपाल	"	"
६५५	" नरसिंह प्रसाद झा	धमदाहा	"
६५८	" मदनमोहन झा	धमौरा	"
६५९	" विश्वनाथप्रसाद	"	"
६६०	" रामनाथ गिरि	"	"
६६१	" कामताप्रसाद	"	"
६६२	" जगदीशनारायण	धूसी	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६६७	श्री छक्कूराम भारद्वाज	धौलपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६६९	" बाबूलाल	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६७९	" दीनदयाल उर्फ केदारनाथ	धौलागढ़	"
६८२	" पूर्णचन्द्र	नजीबाबाद	द्वितीय श्रेणी ३९०
६८४	" सूर्यप्रसाद	नरकटिया गञ्ज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६८५	" रामनिरंजन जोशी	"	"
६८६	" यमुना शर्मा	"	"
६८७	" महादेवप्रसाद चौधरी	"	"
६८८	श्रीमती ताराबाई	नागपुर (हि० भा०स०हा० स्कू)	द्वितीय श्रेणी ३६२ (वि० यो० ग०)
६८९	" श्यामसुन्दर	नागौद	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६९०	" लालमहादेव सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३०२
६९२	" रामसेवक	"	अध्याय २ नियम ५ अनुसार
६९४	" धर्मेन्द्र त्रिपाठी	नानपरा	"
६९५	" गोविन्दप्रसाद अग्रवाल	"	"
६९६	" कृष्णप्रसाद	"	"
६९७	" कुंजविहारी लाल	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६९८	श्री मानवेन्द्रनाथ मिश्र	नानपारा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६९९	,, बनवारीलाल अग्रवाल	,,	,,
७००	,, गौरीशंकर	,,	,,
७०१	,, मुहम्मद हसन	,,	,,
७०२	,, भगवतशरण	,,	,,
७०४	,, शिवनारायण लाल	,,	,,
७०५	,, सूर्य्य प्रसाद	,,	,,
७०९	,, प्रहलाद मिश्र	नालन्दा	,,
७१०	,, सूर्यदेव गोप	निरंजनपुर (नि० न०हा०हा०स्कू.)	द्वितीय श्रेणी ३२६ (वि० यो० गणित)
७११	,, मुहम्मद यासीन	,,	द्वितीय श्रेणी ३३५ (वि० यो० गणित)
७१२	,, नवरत्न ठाकुर	,,	तृतीय श्रेणी २९३ (वि० यो० गणित)
७१३	,, रामप्रताप सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१ (वि० यो० गणित)
७१४	,, रामप्यार सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७७ (वि० यो० गणित)
७१६	,, मोहनलाल साहु	,,	द्वितीय श्रेणी ३७८ (वि० यो० गणित)
७१७	,, विश्वनाथ सहाय	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८ (वि० यो० गणित)
७१९	,, शिवदास बनर्जी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७२०	श्री नन्दलाल कैडिया	पचम्बा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७२१	" प्रह्लादराम विद्यार्थी	"	"
७२२	" मोहनलाल शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३२७
७२३	" भगनलाल जैन	पछार	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७२४	" मगनलाल जैन	"	"
७२५	" गेंदालाल जैन	"	"
७२७	" अमोलकचन्द जैन	"	"
७२८	" नेमीचन्द जैन	"	"
७२९	" कुन्दनलाल जैन	"	"
७३३	श्रीमती राजेश्वरी देवी	पटना कालेज	तृतीय श्रेणी २५८
७३६	श्री बासुदेव सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७३८	" जगन्नाथ सिंह	पड़रौना	द्वितीय श्रेणी ३५२
७३९	" गुरुमुख सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७४०	" चन्द्रिकाप्रसाद मल्ल	"	"
७४२	" सीताराम लाल	"	"
७४३	" सन्तप्रसाद मल्ल	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तां
७४४	श्री राजवंशी गोविन्दराव	पड़रौना	अध्याय २ नियम के अनुसार
७४५	,, रामविनोद सिंह	,,	,,
७५०	,, लाल जंगबहादुर सिंह	पन्ना	,,
७५१	,, लक्ष्मीनारायण राय	परसागढ़	द्वितीय श्रेणी ३३
७५२	,, चन्द्रदेव सिंह	,,	,, ३५
७५३	,, लक्ष्मण उपाध्याय	,,	,, ३५
७५४	,, रघुनाथ सिंह	,,	,, ३२
७५७	कुमारी शान्ती वर्मा	परासिया	,, ३४
७५८	श्री नन्हें सिंह राजपूत	,,	,, ३४
७६४	,, सोहनलाल	प्रयाग (दारागञ्ज)	अध्याय २ नियम के अनुसार
७६५	,, प्रेमचन्द्र	,,	,,
७६६	,, रामबली मिश्र	,,	,,
७६७	,, बद्रीप्रसाद गुप्ता	,,	,,
७६९	,, रामचन्द्र पौराणिक	,,	,,
७७०	,, पन्नालाल चौबे	प्रयाग (स० कार्या०)	प्रथम श्रेणी ४७ (वि० यो० गणित)
७७१	श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तव	,,	अध्याय २ नियम के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७७४	श्री वशिष्ट मुनि द्विवेदी	प्रयाग (स० कार्या०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७७७	,, उमाकान्त मिश्र	,,	,,
७७८	,, राजेश्वरप्रसाद तिवारी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७७९	,, रूद्रनारायण शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६
७८०	,, ईश्वरचन्द्र मिश्र	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७८१	,, बलदेव प्रसाद	,,	प्रथम श्रेणी ४२३ (वि० यो० गणित)
७८२	,, पारसनाथ पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१२
७८४	,, द्वारका प्रसाद	प्रयाग (हि० वि० पी०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७८६	,, दुर्लभभाई त्रिवेदी	,,	,,
७८७	,, अम्बिकाप्रसाद सिंह	प्रसण्डो	,,
७८९	,, कार्तिक सिंह	,,	,,
७९०	,, अभयनारायण सिंह	,,	,,
७९१	,, जनार्दन राय	,,	,,
७९२	,, अनिरुद्ध सिंह	,,	,,
७९३	,, हर्षितनारायण चौधरी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७९५	,, श्यामदेव प्रसाद सिंह	पारू	तृतीय श्रेणी २८८

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७९६	श्री राम लागन शर्मा	पारू	तृतीय श्रेणी ३०[illegible]
७९७	" श्रीधर शर्मा	"	" ३०[illegible]
७९९	" वैद्यनाथप्रसाद यादव	पांचाली (डिब्रूगढ़)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८०१	" गजानन्द सांखोलिया	पिलानी	द्वितीय श्रेणी ३६[illegible]
८०२	" बासुदेव शर्मा	पिपलौदा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८०६	" सुजानमल नादेचा	"	"
८०८	श्रीमती सत्यवती देवी	पीलीभीत	"
८०९	श्री रामचन्द्रप्रसाद साही	पुपरी	"
८१०	" रामस्नेहीप्रसाद	"	"
८११	" नीरस झा	"	"
८१२	" नागेश्वरलाल	"	द्वितीय श्रेणी ३३[illegible]
८१३	" सहदेव राय	"	तृतीय श्रेणी २८[illegible]
८१४	" कार्तिकेश झा	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८१५	" बालेश्वर मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३०[illegible]
८१७	" रामवल्लभ प्रसाद	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८१८	" मुनीन्द्रनारायण लाल	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८१९	श्री राशोमण्डल मायेश	पोठिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८२०	" शिवप्रसाद महलिया	"	"
८२२	" कल्पनाथ आर्य	"	"
८२३	" अनूपलाल स्वर्णकार	"	"
८२५	" लक्ष्मण सिंह राजपूत	पोहरी (आदर्श वि०)	"
८२६	" गोविन्द सिंह	"	"
८२७	" श्रीकृष्ण पौराणिक	"	"
८२८	" ज्ञानीचन्द्र गुप्ता	"	"
८२९	" हजारीलाल गुप्ता	"	"
८३०	" पन्नालाल गुप्ता	"	"
८३२	" रमेशदत्त मिश्र	"	"
८३३	" सीताराम शर्मा	"	"
८३४	" हरस्वरूप	पोहरी (सर्व० हि०)	"
८३५	" अब्दुल करीम	"	"
६३६	" रुद्रपाल सिंह	"	"
८३७	" श्रीलाल शर्मा	"	तृतीय श्रेणी २४७

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८३८	श्री शिवमंगल सिंह	पोहरी (सर्व हि० वि०)	तृतीय श्रेणी २५२
८४०	,, रामनन्दन सिंह यादव	फतुहा (दया० ए० वै० स्कू०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८४१	,, वेदू महतो	,,	,,
८४३	श्रीमती प्रभालक्ष्मी देवी	फैजाबाद (स० विद्या०)	,,
८४४	श्री रामदास राम	बलिया	द्वितीय श्रेणी ३७८ (वि० यो० गणित)
८४५	,, रामदेव पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३३५
८४६	,, वीरेन्द्रप्रताप वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३०६
८४७	,, ब्रजेशकुमार सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४१२ (वि. यो. भूगो, धर्म.)
८४९	,, केदारनाथ मिश्र	बलिया (जु० सं० का०)	तृतीय श्रेणी ३१२ (वि० यो० गणित)
८५०	,, रामजन्म सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५९ (वि० यो० गणित)
८५१	,, हरेराम तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३५० (वि० यो० गणित)
८५३	,, रामनाथप्रसाद	बक्सर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८५४	,, जगन्नाथप्रसाद	,,	,,
८५५	,, राधा दुबे	,,	,,
८५६	,, सच्चिदानन्द चौबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१ (वि० यो० गणित)
८५७	,, नर्वदेश्वर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०६

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८५८	श्री मुक्तानन्द चौबे	बक्सर	द्वितीय श्रेणी ३२०
८५९	,, भूपेन्द्रनाथ मिश्र	,,	,, ३३३ (वि० यो० गणित)
८६४	श्रीमती लीलावती देवी	बगड़ (जयपुर)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८६५	श्री वीरसिंह वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३०५
८६६	,, लादूराम शर्मा	बगड़	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८६७	,, हरद्वार सिंह वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २५५
८६८	,, श्रीराम शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८६९	,, जगदीशचन्द्र चौमाल	,,	,, [illegible]
८७१	,, घनश्यामदास शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८७३	,, बाबूलाल	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८७८	,, लीलाधर जोशी	बड़मेर	द्वितीय श्रेणी ३८९ (वि० यो० गणित)
८८१	,, मांगीलाल निगम	बड़वानी	तृतीय श्रेणी ३०४
८८२	,, देवराम नागदेव वंशी	,,	,, २१२
८८३	,, अवधनारायण सिंह	बड़हरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८८४	,, उमानन्द मिश्र	,,	[illegible]
८८५	,, शोभानन्द झा	,,	[illegible]

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८८६	श्री विश्वनाथ सिंह	बड़हरा	अध्याय २ नियम के अनुसार
८८७	" आनन्दप्रसाद सिंह	"	"
८८८	" देवनारायण गोसायं	"	"
८८९	" बासुदेव लाल दास	"	"
८९०	" सुन्दरलाल मण्डल	"	"
८९१	" नत्थन साहु	"	"
८९२	" परमेश्वरप्रसाद सिंह	"	"
८९३	" शिवशरण सिंह	"	"
८९४	" योगानन्द सिंह	"	"
८९५	" सरयूप्रसाद सिंह	"	"
८९६	" शोखीलाल मण्डल	"	"
८९८	" तुरन्तीलाल दास	"	"
८९९	श्रीमती सरलादेवी मेहता	बड़ौदा	"
९००	" सत्यवती देवी	बदायूँ	"
९०१	श्री राममूर्त्ति	"	"
९०२	" जगदीश चौधरी	बनमनखी	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९०३	श्री बलराम सिंह	बनमनखी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९०४	" दशरथप्रसाद यादव	"	"
९०६	" रमाकृष्ण दास	"	"
९०७	" बालकृष्ण यादव	"	"
९०८	" रामेश्वरप्रसाद सिंह	"	"
९०९	" श्यामसुन्दरप्रसाद यादव	"	"
९१०	" कुशेश्वरप्रसाद यादव	"	"
९११	" कामताप्रसाद तिवारी	बम्बई (मा० वि०)	"
९१२	श्रीमती बसंती ह्वेन	"	"
९१३	" सुप्रभा ह्वेन	"	"
९१४	" शशि कला पित्ती	"	
९१६	श्री कुन्दन सिंह	"	"
९१७	श्रीमती सरला कुमारी	"	"
९१८	" विमला कुमारी	"	"
९१९	श्री रामलषण पाण्डेय	बम्बई (मार० कम० हा० स्कू०)	प्रथम श्रेणी ४५० (वि० यो० गणित)
९२०	" नाथूराम व्यास	"	द्वितीय श्रेणी ३९५

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९२१	श्री गजानन्द बागला	बम्बई (मार० कम० हा० स्कू०)	द्वितीय श्रेणी ३८[illegible] (वि० यो० गणित)
९२२	,, प्रयागनारायण	,,	द्वितीय श्रेणी ३५[illegible]
९२३	,, रामदास सिंह	,,	,, ३३[illegible]
९२४	,, कृष्णगोपाल	,,	,, ३५[illegible]
९२६	,, सुन्दरलाल	,,	,, ३९[illegible] (वि० यो० गणित)
९२७	,, भीखालाल धुत	,,	प्रथम श्रेणी ४[illegible] (वि० यो० गणित)
९२८	,, पन्नालाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४०[illegible]
९२९	,, ललताप्रसाद शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३०	,, भगवतीप्रसाद सिंह	ब्यावर	द्वितीय श्रेणी ३३[illegible]
९३२	,, केशवप्रसाद सिंह	बरहज	अध्याय २ नियम [illegible] के अनुसार
९३३	श्रीमती सीता देवी	,,	तृतीय श्रेणी ३०[illegible]
९३५	श्री रोशन सिंह	बरेली (स० वि० हा० स्कू०)	अध्याय २ नियम [illegible] के अनुसार
९३६	श्रीमती सुभाषिणी	,,	,,
९३७	,, शकुन्तला देवी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३९	श्री युगलकिशोर सिंह	बहदुरा	अध्याय २ नियम [illegible] के अनुसार
९४२	,, माधवप्रसाद सिंह	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९४४	श्री शुकदेव सिंह	बहदुरा	तृतीय श्रेणी २९१
९४६	,, जगदीश झा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९४८	,, नेमनारायण सिंह	,,	,,
९४९	,, रामधारीप्रसाद सिंह	,,	,,
९५०	,, सहदेवप्रसाद सिंह	,,	,,
९५१	,, राधेमोहन मिश्र	बहराइच	,,
९५६	,, विध्येश्वरी प्रसाद मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३१९ (वि० यो० गणित)
९५७	,, शिवजगतपाल सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २६८
९५९	,, रामचन्द्र प्रसाद	बाढ़	द्वितीय श्रेणी ३८६
९६०	,, जगन्नाथ प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
९६४	,, रामविलास सिंह	,,	,, २९९
९६६	श्रीमती शकुन्तला सिनहा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९६८	श्री सुरेशचन्द्र प्रसाद	,,	,,
९७०	,, ठाकुरराम प्रवेश सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
९७२	श्रीमती कुमारी शान्ति रानी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९७४	श्री रामकुमार त्रिपाठी	बासगाँव (ए० वी० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ३२

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९७८	श्री अली मुहम्मद	बिसाऊ	द्वितीय श्रेणी ३३६
९७९	,, रघुनाथ शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २८२
९८४	,, प्रेमनारायण	बीना (म्यू० हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ३२८
९८५	,, प्रहलाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९५
९८६	,, पूरनलाल नायक	,,	,, २९४
९८८	,, मोहर सिंह	बुलन्दशहर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९८९	,, आनन्दप्रकाश गुप्ता	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
९९१	,, दशरथ चौधरी	बेगूसराय	तृतीय श्रेणी २८७
९९३	,, लोकनाथ चौधरी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९९५	,, रामव्रत प्रसाद	बेलागंज (गया)	,,
९९६	,, चन्द्रिकाप्रसाद सिंह	,,	,,
९९७	,, सिद्धेश्वर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९६ (वि० यो० गणित)
९९९	,, देवताचरण शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २८२ (वि० यो० गणित)
१००१	,, शंकर महादेव वद्दी	बैतूल	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१००२	,, प्रहलाददास खण्डेलवाल	,,	,,
१००३	,, गङ्गाधर राव	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१००४	श्री जगन्नाथप्रसाद वर्मा	बैतूल	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१००५	,, राधारमण	,,	,,
१००७	,, नारायण सिन्नरकर	,,	,,
१००८	,, कृष्णा	,,	,,
१००९	,, वत्सराज	,,	,,
१०१०	,, जगतनन्दन सिंह	भगवानपुर	तृतीय श्रेणी २४७
१०१२	,, रामरत्न चौधरी	भवानीपुर (पूर्णियाँ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०१३	,, जगदीशप्रसाद यादव	,,	,,
१०१४	,, मोहनलाल चौधरी (शिक्षक)	,,	,,
१०१५	,, यमुनाप्रसाद चौधरी 'वीर'	,,	द्वितीय श्रेणी ४०० (वि० यो० गणित)
१०१६	,, जयगोविन्द झा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०१७	,, रामसूरत झा	,,	,,
१०१८	,, बद्रीनारायण सिंह	,,	,,
१०२०	,, गुप्ता कमलाप्रसाद	,,	,,
१०२१	,, महेश्वरप्रसाद गुप्त	,,	,,
१०२२	,, विभूतिप्रसाद वर्मा	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०२३	श्री भुवनेश्वर झा	भवानीपुर (पूर्णियाँ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०२४	,, मोहनलाल चौधरी	,,	,,
१०२६	,, बङ्किमचन्द्र बनर्जी	भागलपुर	द्वितीय श्रेणी ४०१
१०२८	,, रामनारायण आमेटा	भिन्डर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०२९	,, शिवनाथ शर्मा आमेटा	,,	,,
१०३०	,, हरिवल्लभ आमेटा	,,	,,
१०३२	,, रामगोपाल शर्मा	भेलसा	द्वितीय श्रेणी ४१९ (वि० यो० गणित)
१०३३	,, श्यामदास वैरागी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०३६	,, शिवशंकरसहाय माथुर	,,	,,
१०३७	,, देवेन्द्रकुमार सक्सेना	,,	,,
१०३९	,, जबरचन्द्र सुराणा	भोपालगढ़	तृतीय श्रेणी २६४
१०४०	,, बासुदेव मिश्र	मतलूपुर	द्वितीय श्रेणी ३३२
१०४१	,, शिवनन्दन सहाय	,,	तृतीय श्रेणी २४५
१०४२	,, नन्दकिशोर मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३१९
१०४३	,, रामदिनेशप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०५
१०४५	,, सहदेव शर्मा	,,	,, २७६

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०४६	श्री ब्रह्मदेवप्रसाद सिंह	मतलूपुर	तृतीय श्रेणी २९७
१०४७	,, नन्दकिशोरप्रसाद राय	,,	,, ३०१
१०४९	,, गयाप्रसाद त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८
१०५०	,, चन्द्रभान शर्मा	मथुरा (गो० वि० पी०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०५१	,, कन्हैयालाल शर्म्मा	,,	,,
१०५२	,, राधारमन अग्रवाल	,,	,,
१०५३	,, बाबूलाल गुप्ता	,,	,,
१०५४	,, मुहर सिंह	,,	,,
१०५६	,, राधेश्याम वर्मा	,,	,,
१०५७	,, नारायणदास गुप्ता	,,	,,
१०५८	,, राम भरोसे शर्मा	,,	,,
१०५९	,, मोहनलाल गुप्ता	,,	,,
१०६०	,, डूँगर सिंह वर्मा	,,	,,
१०६२	,, प्रेम सिंह	,,	,,
१०६३	,, पन्नालाल शर्मा	,,	,,
१०६४	,, कृष्णगोपाल शर्मा	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०६५	श्री रघुनाथ शर्मा	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०६६	,, रोशनलाल शर्मा	,,	,,
१०६७	,, केशव देव	,,	,,
१०७१	,, हरस्वरूप शर्मा	,,	,,
१०७५	,, लाल सिंह वर्मा	,,	,,
१०७६	,, अम्बाप्रसाद वर्मा	,,	,,
१०७७	,, चन्दनसिंह 'आर्य'	,,	,,
१०७९	,, डोरीलाल शर्मा	,,	,,
१०८८	,, धीरानन्द मिश्र शर्मा	मधुबनी (दरभङ्गा)	तृतीय श्रेणी ३१०
१०८९	,, सूर्यनारायण चौधरी	,,	,, ३०५
१०९१	,, परमेश्वरीप्रसाद मण्डल	मधीपुरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११०१	,, हरगोविन्दलाल दास	,,	,,
११०२	,, धीरज सिंह	महदेवा	,,
११०५	,, लाखपति चौधरी	,,	,,
११२४	श्रीमती गोपीबाई	मांगरोल	तृतीय श्रेणी २८२
११२५	श्री नाथूलाल शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११२६	श्री रावीन्द्रनाथ तिवारी	माण्डले	अध्याय २ नियम ५ अनुसार
११२७	” हेमराज	”	”
११३३	” सुरेन्द्रनाथ वर्मा	”	”
११३८	” राजनारायण शुक्ल	मुङ्गरा बादशाहपुर	द्वितीय श्रेणी ३६१
११४२	” राजमूर्त्ति तिवारी	”	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११४८	” अवध नारायण तिवारी	”	”
११४९	” प्रभुनाथ तिवारी	”	”
११५०	” राजमणि त्रिपाठी	”	”
११५१	” बंशीलाल हलवाई	”	”
११५२	” राधेश्याम चौबे	”	”
११५४	” कुञ्ज बिहारी मिश्र	”	”
११५६	श्रीमती कुमारी कृष्णा कान्ता देवी	मुँगेर	द्वितीय श्रेणी ३३२
११५७	श्री महावीर लहेरी	”	तृतीय श्रेणी ३०५
११५८	” विश्वनाथ सिंह	”	” ३०१
११६४	श्रीमती सुमित्रा देवी	मुजफ्फरपुर (सुहृद संघ)	प्रथम श्रेणी ४३२
११६५	” सरस्वती देवी	”	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

१८

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११९२	श्री रामनिवास जोशी	मौलासर	तृतीय श्रेणी ३०१
११९४	" लक्ष्मीनारायण शर्मा जोशी	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११९५	" कजोड़ीमल शर्मा	"	"
११९६	" परमानन्द सिंह	रक्सौल	"
१२००	" यदुनन्दनप्रसाद पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४०५
१२०१	" राजदेव मिश्र	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२०५	" श्रीनिवास त्रिपाठी	रंगून	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२०७	,, अर्जुन सिंह वर्मा	रतनगढ़	"
१२०८	,, कृष्णकान्त शर्मा	"	"
१२१४	श्रीमती ऊषा देवी	रतसण्ड	द्वितीय श्रेणी ३८३ (वि० यो० गणित)
१२१५	श्री रणजीत सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६२ (वि० यो० गणित)
१२१६	" माँगी लाल	राजगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार.
१२१७	" बंशीलाल चौधरी	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२२०	" रामचरन दुबे	"	तृतीय श्रेणी ३०७
१२२१	" जगन्नाथप्रसाद सक्सेना	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२२६	" सूर्यकान्त जोशी	"	तृतीय श्रेणी २७६

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२२८	श्री जमनाप्रसाद मास्टर जोशी	राजगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२३०	" गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव	"	तृतीय श्रेणी २८०
१२३४	" नर्मदाप्रसाद श्रीवास्तव	राजनाँदगाँव	द्वितीय श्रेणी ३४
१२३५	" राधेश्याम अग्रवाल	"	" ३६१
१२५०	" भुवनेश्वरप्रसाद सिंह	रानीगंज (पूर्णियाँ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२५१	" तारिणीप्रसाद तिवारी	"	"
१२५२	" लालराय	"	"
१२५३	" वासुदेवप्रसाद राय	"	"
१२५४	श्रीमती यमुना बाई	रामपुरा	"
१२५५	" भँवरी बाई	"	"
१२५८	" कुमारी सरस्वती बघेल	रायपुर	तृतीय श्रेणी २८
१२५९	श्री शिवप्रसाद त्रिपाठी	रीवाँ (बाल समिति)	अध्याय २ नियम के अनुसार
१२६०	" शेषमणि शर्मा 'मणि' रायपुरी	"	"
१२६१	" हनुमानप्रसाद श्रीवास्तव	"	"
१२६२	" रामसिंह तिवारी	"	"
१२६३	" भगवान प्रसाद	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२६४	श्री गयाप्रसाद त्रिवेदी	रीवाँ (बाल समिति)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२६८	" केदारनारायण मिश्र	लखनऊ	"
१२७१	" प्रह्लाद सरन	लखावटी	तृतीय श्रेणी २६३
१२७२	" मिश्रीलाल	"	" ३०२
१२७५	" अमीचन्द्र	"	" २८१
१२७८	" विद्यासागर श्रीवास्तव	लश्कर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२७९	" विद्या स्याल	"	"
१२८०	" रामनारायण सक्सेना	"	"
१२८१	" शिवचन्द्र मोहन सक्सेना	"	द्वितीय श्रेणी ३३७
१२८२	" प्रकाशचन्द सक्सेना	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२८८	" गुट्टूमल शर्मा	लक्ष्मणगढ़	तृतीय श्रेणी २९५
१२८९	" मदनलाल शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३२४
१२९३	" रमाकान्त शुक्ल	लालगञ्ज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२९६	" रामप्रसाद चौधुर	वसन्तपुर	तृतीय श्रेणी २९३
१२९७	" देवनाथ तिवारी	"	" २८३
१२९९	" दशरथ	वर्धा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३००	श्री नारायण जी	वर्धा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३०१	,, सूरजमल निहालचन्द जैन (दोसी)	,,	,,
१३०२	,, सूरजमल शर्मा (जोशी)	,,	,,
१३०३	,, बृजविहारीलाल श्रीवास्तव	,,	,,
१३०५	,, श्री किशोरीलाल	,,	,,
१३०६	,, सुमेर सिंह वर्मा	,,	,,
१३०७	,, मदनलाल दुबे	,,	,,
१३०८	,, कृष्णगोपाल गुप्ता	वृन्दावन	तृतीय श्रेणी २८५
१३००	,, खेमचन्द स्वामी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३१५	,, रघुनाथ प्रसाद शर्मा	वैनी	द्वितीय श्रेणी ३३३ (वि० यो० गणित)
१३१८	,, दर्शनप्रसाद पाण्डेय	वैद्यनाथ धाम (सा० वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३१९	,, वी० वी० गोपाल	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३२२	,, भगीरथ झा	शकरपुरा	,,
१३२३	,, जगदेवप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४
१३२७	,, शिवनारायण राय	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३२९	,, हरिनन्दनप्रसाद सिंह	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३३०	श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह	शकरपुरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३३१	,, प्रभुनारायण प्रसाद वर्मा	,,	,,
१३३४	,, दयाशंकर शर्मा	शिकारपुर	द्वितीय श्रेणी ३१८
१३३६	श्रीमती रामश्री देवी	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
१३४०	श्री अमृतलाल	शिकोहाबाद	,, २८७
१३४१	,, रामचन्द्र	,,	,, २९४
१३४२	,, प्रेमशंकर	,,	द्वितीय श्रेणी ३६१ (वि० यो० गणित)
१३४३	,, हरिनारायन	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१ (वि० यो० गणित)
१३४५	,, रामभरोसे लाल तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी २५५
१३४६	,, सिद्धनाथ सिंह	सलकिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३४७	,, जगदम्बाप्रसाद सिंह	,,	,,
१३४८	,, राजकुमार सिंह	,,	,,
१३५०	,, सीताराम चौखामी	,,	,,
१३५१	,, उमाशंकर सिंह	,,	,,
१३५२	,, जगदीशप्रसाद शर्मा	,,	,,
१३५३	,, मेघराज भोजनगर वाल	,,	

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३५५	श्री लालमणि तिवारी	सलकिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३५८	" मदनलाल टांटिया	सरदार शहर	तृतीय श्रेणी ३०
१३६०	" शिवकुमार शर्मा	सरधना	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३६१	" लौतीराम गुप्ता	"	"
१३६६	" जगन्नाथप्रसाद जायसवाल	सारनाथ	"
१३६८	" राममूर्त्ति पाण्डेय	"	"
१३७०	" हरीशंकर	सहपऊ	"
१३७१	" रामप्रसाद	"	"
१३७२	" बालकृष्ण	"	"
१३७३	" विजयपाल सिंह	"	"
१३७४	" राजकुँवार	"	"
१३७५	" भगवत स्वरूप	"	"
१३७६	" रघुराज शाह	"	"
१३७७	" शीतलप्रसाद जैन	"	"
१३७८	" तुलाराम	"	"
१३८०	" अनुसूया हर्देकर	सागर	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३८१	श्री सिन्धु प्रधान	सागर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३८३	,, गायत्री प्रसाद	सिरसा	द्वितीय श्रेणी ३३५ (वि० यो० गणित)
१३८४	,, साँवरेलाल	,,	तृतीय श्रेणी २७१
१३८५	,, राजनारायण	,,	द्वितीय श्रेणी ३२६
१३८६	,, वशिष्टराम द्विवेदी	,,	,, ३५६
१३८७	,, सुधाकर द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी २९०
१३८९	,, कैलाशचन्द्र ओझा	,,	द्वितीय श्रेणी ३६७ (वि० यो० गणित)
१३९१	,, बनारसीदास कुलश्रेष्ठ	सिरसागंज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३९२	,, बलवीरप्रसाद चतुर्वेदी	,,	,,
१३९४	,, जगदेव सिंह	,,	,,
१३९५	,, रामसरन गुप्ता	,,	,,
१३९७	,, सीताराम गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३०३
१३९८	,, महेंन्द्रदत्त पालीवाल	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३९९	,, सूरजप्रसाद शर्मा	सिवनी (छिन्दवाड़ा	,,
१४००	,, शरदकुमार तिवारी	,,	,,
१४०१	,, रेवतीप्रसाद	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४०२	श्री राजवन्त सिंह	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३६६ (वि० यो० गणित)
१४०३	,, रामदेव सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४६१ (वि० यो० ग० कृषि)
१४०४	,, रामदौर राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१० (वि० यो० गणित)
१४०५	,, वंशबहादुर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३६२ (वि० यो० गणित)
१४०६	,, शिवप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८ (वि० यो० गणित)
१४०७	,, सीताराम सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३६१ (वि० यो० गणित)
१४०८	,, सुखईराम	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१ (वि० यो० गणित)
१४०९	,, रामनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४७ (वि० यो० गणित)
१४१०	,, श्रीनाथ सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४४० (वि० यो० गणित)
१४११	,, रामफेर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३६३ (वि० यो० गणित)
१४१२	,, सुरेन्द्रप्रताप सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४१८ (वि०यो०ग०, धर्म)
१४१३	,, शंकरबख्श सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७८ (वि० यो० गणित)
१४१४	,, काशीदीन यादव	,,	द्वितीय श्रेणी ३७८
१४१५	,, विश्वम्भरदत्त शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६
१४१६	,, देवराज सिंह	,,	,, ३३७ (वि० यो० गणित)
१४१७	,, राजाराम पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३४०

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१४१८	श्री रामअधार गुप्त	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३९३ (वि० यो० धर्म)
१४१९	,, राजदेव सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०२
१४२१	,, रामाचार्य उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३३४
१४२२	,, हरिहर प्रसाद पाण्डेय	,,	,, ३९४ (वि० यो० गणित)
१४२३	,, रामअकबाल त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६५ (वि० यो० गणित)
१४२४	,, रामबचन त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६ (वि० यो० गणित)
१४२६	,, रामखेलावन तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८ (वि० यो० गणित)
१४२७	,, फूलचन्द्रलाल	,,	प्रथम श्रेणी ४३० (वि.यो. गणि. धर्म)
१४२८	,, राम पलट लाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३२९ (वि० यो० गणित)
१४३१	,, गयाप्रसाद पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३५९ (वि० यो० गणित)
१४३४	,, उमापति पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६ (वि० यो० गणित)
१४३६	,, राजदेवलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३२३ (वि० यो० गणित)
१४३७	,, ललन त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३१६
१४३९	,, रामप्रसाद गुप्ता	,,	प्रथम श्रेणी ४२५ (वि० यो० गणित)
१४४०	,, राजबहादुरलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३८४ (वि० यो० गणित)
१४४१	,, रामप्यारे सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८ (वि० यो० गणित)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४४२	श्री विद्याशंकर उपाध्याय	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३४७ (वि० यो० गणित)
१४४४	,, नवलकिशोर लाल	,,	प्रथम श्रेणी ४५३ (वि० यो० गणित)
१४४५	,, रामबली राम	,,	द्वितीय श्रेणी ३४५ (वि० यो० गणित)
१४४६	, वीरेन्द्र देवनारायण	सीवान	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१४४७	,, ब्र० काली चरणप्रसाद	,,	,,
१४४८	,, ठाकुर सिंह	,,	,,
१४४९	,, युगलकिशोर सिंह	,,	,,
१४५१	,, जगन्नाथ दीक्षित	,,	,,
१४५२	,, दिनेश्वर सिंह	,,	,,
१४५३	,, बद्रीनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४९ (वि० यो० गणित)
१४५४	,, अजमत अली	,,	द्वितीय श्रेणी ४०३ (वि० यो० गणित)
१४५५	,, फुलेश्वर पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी २८४
१४५७	,, अभयचन्द्र सिनहा	,,	द्वितीय श्रेणी ३२७ (वि० यो० गणित)
१४६९	,, कन्हैयालाल वर्मा	सीकर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१४७१	,, भरत सिंह	सीताकुण्ड	,,
१४७२	,, कपिलदेव तिवारी	,,	,,

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४७७	श्री श्रीनिवास शर्मा	सुखेड़ा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१४७८	" शंकरराव खटके	"	तृतीय श्रेणी २९४
१४७९	" सूर्यनारायण राय	सुरही (बलिया)	द्वितीय श्रेणी ३९० (वि० यो० गणित)
१४८१	" रामसनेही राम	"	प्रथम श्रेणी ४२६ (वि० यो० गणित)
१४८५	" केदारनाथ लाट	सुरसण्ड	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१४८८	" इन्द्रदेव सिंह	सुहवल	तृतीय श्रेणी ३१२
१४८९	" दुर्गादत्त तुलस्यान	सूरजगढ़	" ३१२
१४९२	" परमेश्वर लाल	"	" २८७
१४९३	" सुगनचन्द्र शर्म्मा	"	" २७२
१५०३	" त्रिलोकीनाथ वर्मा	सूरजपुरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५०४	" जगदीशनारायण शर्मा	"	तृतीय श्रेणी २९७
१५०५	" वंशलोचन सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५०६	" राधारमण तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ३७८ (वि० यो० गणित)
१५०७	श्रीमती चन्द्रकला देवी	सेवदह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५११	श्री मङ्गलदयाल सिंह 'रत्नाकर'	"	"
१५२३	" रामआसरे सिंह 'विनोद'	"	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५२४	श्री देवेन्द्रप्रसाद सिंह	सेवदह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५२९	" बाबूलाल विद्यार्थी	"	द्वितीय श्रेणी ३४८
१५३६	" रामबली सिंह	"	तृतीय श्रेणी २५०
१५३९	" नवलकिशोर प्रसाद सिंह	"	" २५१
१५४०	" रामदास सिंह	"	" २८१
१५४१	" शुकदेवप्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी २९५
१५४५	श्रीमती सौ० बृजविलास बाई पँवार	सोनकच्छ (ए० वी० एम०)	द्वितीय श्रेणी ३४३
१५४६	श्री दरयाव सिंह	"	तृतीय श्रेणी २६८
१५४७	" सय्यद मेंहदी हसन	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५४९	" रतनलाल	"	"
१५५१	" गोपाल लाल	"	तृतीय श्रेणी २९९
१५५२	" राधेश्याम भूतड़ा	"	" २८०
१५५३	" दुर्गाशंकर	सोनकच्छ	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५५६	" अमरबहादुर सिंह	सोराम	तृतीय श्रेणी २८६
१५५७	" छैलबिहारीलाल श्रीवास्तव	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५६०	" विश्वनाथ सिंह तोमर	हरदा	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५६२	श्री हरीप्रसाद	हरदा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१५६४	,, लक्ष्मीनारायण सिंह ठाकुर	,,	,,
१५६६	,, रामनारायण सिंह	,,	,,
१५६८	,, हरीशंकर	,,	,,
१५७१	,, द्वारकादास पनपालिया	,,	,,
१५८२	,, ओम्प्रकाश शर्मा	हाथरस	द्वितीय श्रेणी ३९७ (वि० यो० गणित)
१५८३	,, प्रेमप्रकाश	,,	तृतीय श्रेणी ३१३
१५८५	,, धर्मपाल वार्ष्णेय	,,	,, ३०७
१५८६	,, पन्नालाल मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४०६ (वि० यो० गणित)
१५८७	,, सन्नूलाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८९ (वि० यो० गणित)
१५९०	,, रघुवीरशरण गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी ३१३
१५९१	,, पूर्णचन्द्र शर्मा	हापुड़	,, २८४
१५९२	,, चन्द्रसैन	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८ (वि० यो० गणित)
१५९३	,, शिवधनी राम	हिराजपट्टी	द्वितीय श्रेणी ३४९
१५९४	,, जगदम्बा पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी ३१२
१५९५	,, चतुर्भुज शर्मा	हैदराबाद (धन्वन्तरि पा०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६०८	श्री रामाधर द्विवेदी	हँडिया	द्वितीय श्रेणी ३७७
१६०९	,, ताराचन्द द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी २७६
१६१०	,, धर्मनारायण त्रिपाठी	,,	,, २८७
१६११	,, धनुषधारी सिंह	,,	,, २८७
१६१२	,, लालबहादुर सिंह	,,	,, २५१
१६१५	,, मदनकिशोर लाल	,,	,, २८२
१६१७	,, रामधारी द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी २८५
१६१८	,, भोलानाथ टण्डन	,,	द्वितीय श्रेणी ३२१
१६१९	,, रामयज्ञ द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी २८८
१६२०	,, महादेवप्रसाद जायसवाल	,,	,, २९०
१६२१	,, गुलाब सिंह	,,	,, २४१
१६२२	,, रामचरण शुक्ल	,,	,, २८४
१६२३	,, सरयूप्रसाद मिश्रा	,,	,, २९६
१६२४	,, रामनेवाज	,,	,, २८८
१६२५	,, छैलूराम	,,	,, २९७
१६२६	,, नारायणदास मिश्रा	,,	,, २८२

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६२८	श्री लालसाहब सिंह	हँडिया	तृतीय श्रेणी ३०४
१६२९	" मथुराप्रसाद नायक	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६३१	" वैद्यनाथ दुबे	रंगून	"
१६३५	" ग्यारसीलाल चतुर्वेदी	बड़नगर	"
१६३७	" व्रजविहारी सिंह चन्देल	खगौल	"
१६३८	" वासुदेव नारायण	मुकामाघाट	"
१६३९	" राजबली दुबे	प्रयाग (दारागंज)	"
१६४०	" उमापति द्विवेदी	"	"
१६४१	" विद्याभूषण मिश्र	"	"
१६४४	" रामपूजन सिंह	गोरिया कोठी	तृतीय श्रेणी २६६
१६४६	" रघुनाथप्रसाद सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३४२ (वि० यो० गणित)
१६४७	" सुखदेव सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३०२
१६४८	" विक्रमादित्य प्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३१९
१६४९	" बहादुरप्रसाद सिंह	"	" ३८२
१६५०	" जमादार सिंह	"	" ३८१ (वि० यो० गणित)
१६५१	" छुट्टूप्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३२७

२०

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१६५३	श्री गनेशप्रसाद	गोरिया कोठी	द्वितीय श्रेणी ३३८
१६५४	" अवधविहारी शरण	"	" ३२७
१६५६	" रामचन्द्रप्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३०४ (वि० यो० गणित)
१६५८	" राजकेश्वर पाठक	कोआथ	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६५९	" हरिहर चौधरी	"	"
१६६०	" शालिग्राम दुबे	"	"
१६६१	" मुनाका प्रसाद	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६६२	" रामअधार ओझा	"	"
१६६३	" यदुवंश मिश्र	"	"

मुनीमी परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१	श्री छोटालाल मेहता	ओसियाँ	तृतीय श्रेणी १५०
३	" शेषमल	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४	" लक्ष्मीलाल पारख	"	तृतीय श्रेणी १७६
५	" भँवरलाल लूनावत	"	" १७४
६	" कृष्ण खण्डेलवाल	इन्दौर	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
८	" प्रभूलाल विजय	कोटा (भा० सा०)	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९	श्री सबलचन्द	जालौर	तृतीय श्रेणी १६०
२०	,, मुन्नीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी १९२
२४	,, रामदयाल नीखरा	दतिया	तृतीय श्रेणी १६३
२९	,, ताराचन्द गोयल	नसीराबाद	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
३१	,, बाबूलाल	पन्ना	तृतीय श्रेणी १५३
३६	,, रुद्रप्रसाद मिश्र	बहराइच	द्वितीय श्रेणी २१३
३८	,, प्रेमचन्द्र	ब्यावर	,, २३६
३९	,, दयाचन्द	,,	तृतीय श्रेणी १७२
४०	,, हरकचन्द	,,	द्वितीय श्रेणी १८५
४१	,, सूरजकरण	,,	तृतीय श्रेणी ३५६
४२	,, जौहरीलाल	,,	,, १७६
४६	,, जगन्नाथप्रसाद शर्मा	रतनगढ़	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार.
४७	,, बद्रीप्रसाद श्रीवास्तव	रीवाँ (बाल समिति)	द्वितीय श्रेणी १८२
५२	,, कन्हैयालाल त्रिपाठी	सीकर (हिन्दी विद्याभवन)	,, १८२
५३	,, नारायणदास गुप्त	हँडिया	,, १९३

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मंत्री
हिन्दी विश्व विद्यालय, प्रयाग

सं० १९९६ (सन् १९३९) की पदक सूची

संवत् १९९६ (सन् १९३९) की परीक्षाओं के परीक्षा फल के अनुसार निम्नलिखित परीक्षार्थियों को पदक दिये जायँगे :—

उत्तमा परीक्षा

श्रीधर पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ३८ श्री भारत भूषण 'सरोज', केन्द्र—आगरा।

सारस्वत पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ३१४ श्री हरिश्चन्द्र शुक्ल, केन्द्र—प्रयाग।

मोहन लाल चौबे पदक (रौप्य)—क्रम सं० ८८ श्री मन्ना लाल गंगवाल, केन्द्र—इन्दौर।

मध्यमा परीक्षा

भट्ट पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० १६३५ श्री राजेश्वरसहाय त्रिपाठी, केन्द्र—सिंगरामऊ।

मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति पदक (रौप्य) —क्रम सं० १२५ राम चरण गर्ग, केन्द्र—इन्दौर।

श्रीमती भगवान देवी बाजोरिया पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० १५०८ श्रीमती सरस्वती शुक्ल, केन्द्र—लखनऊ।

आगरा नागरी प्रचारणी सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ६४ श्री गया प्रसाद उपाध्याय, केन्द्र—आगरा।

त्रिलोकी नाथ वर्मा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ११९५ श्री विश्वम्भर नाथ वर्मा केन्द्र—बाँदा।

भारतेन्दु पदक (रौप्य)—क्रम सं० ५०९ श्री सुरेन्द्र लाल जैन, केन्द्र—कोटा (भारतेन्दु समिति)।

प्रथमा परीक्षा

पूर्ण पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ५४१ श्री कुंअर कृष्ण कुमार सिंह, केन्द्र—डेहरी आन सोन।

शिव देवी पदक (रौप्य)—क्रम सं० १०६ श्री कन्हैयालाल शर्मा केन्द्र—इन्दौर।

" " " " " १०७ श्री रामफल ग्वाल, केन्द्र—इन्दौर।

विजयेन्द्र पदक (रौप्य)—क्रम सं० १२२० श्री रामचरन दुबे, केन्द्र—राजगढ़।

हनुमन्त पदक (रौप्य)—क्रम सं० ५६ श्रीमती प्रतिमा रानी मिश्र, केन्द्र—आगरा।

वैद्य विशारद परीक्षा

आयुर्वेद प्रचारणी सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० १६ श्री महेश चन्द्र, केन्द्र—कानपुर (डी० ए० बी० कालेज)।

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मंत्री
हिन्दी विश्व विद्यालय, प्रयाग

हिन्दी विश्व विद्यालय

की

संवत् १९९६ की परीक्षाएँ

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भिन्न भिन्न उपायों से सर्व मान्य राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करना और उसके साहित्य को सब प्रकार से समुन्नत करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्मेलन द्वारा संस्थापित हिन्दी विश्व विद्यालय की ओर से उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा, वैद्य विशारद, कृषि विशारद, शीघ्र लिपि विशारद, मुनीमी, आरायज़ नवीसी और राष्ट्रभाषा प्रचार इत्यादि परीक्षाएँ ली जाती हैं। उत्तमा और मध्यमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को क्रमशः रत्न और विशारद की उपाधियाँ दी जाती हैं। इन परीक्षाओं की एक विशेषता यह है कि ये हिन्दी माध्यम द्वारा ही ली जाती हैं। अतः अँग्रेजी न जानने वाले व्यक्तियों को भी इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अपनी योग्यता बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त होता है।

राष्ट्र भाषा प्रचार परीक्षाओं की व्यवस्था परीक्षा समिति की उप समिति द्वारा वर्धा से होती है। इन परीक्षाओं को छोड़कर इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन की समस्त परीक्षाएँ ता० १८ नवम्बर सन् १९३९ को आरम्भ होकर ता० २५ नवम्बर सन् १९३९ को समाप्त हुईं। परीक्षाफल पर विचार करने के लिए परीक्षा समिति की बैठक ता० १८ फरवरी को हुई। मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं के कुछ परीक्षकों से उनकी अस्वस्थता के कारण परीक्षाफल हमें अधिक विलम्ब से प्राप्त हुआ। अतः उसे हम क्रमशः ता० ५ मार्च और ता० १९ मार्च को पत्रों में प्रकाशित कर सके। राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं को छोड़कर संवत् १९९५ में सम्मेलन परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या ३००९ थी। इस वर्ष (संवत् १९९६) के परीक्षार्थियों की संख्या ३९६१ रही। गत वर्ष परीक्षा शुल्क की आय १५१२७) थी। इस वर्ष शुल्क की आय १७८१४) रही। संवत् १९८२ तक तो कुछ न कुछ वृद्धि होती ही रही किन्तु संवत् १९८३ से परीक्षार्थियों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। संवत् १९८३ से लगाकर संवत् १९९६ तक के परीक्षार्थियों की संख्या हम नीचे दे रहे हैं। इससे पाठकों को परीक्षाओं की प्रगति का ज्ञान भली भाँति हो जायगा :—

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या	
	जिनके आवेदन पत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८३	१५५६	१०३५
१९८४	२०५६	१३२६
१९८५	२३६६	१४३५
१९८६	२४५८	१६९२
१९८७	१७८३	१२६९
१९८८	१४७१	११६६
१९८९	१३७०	१११६
१९९०	१४१९	१२३१
१९९१	१५३५	१३१८
१९९२	१६५९	१४४९
१९९३	२०४७	१७७३
१९९४	२५२४	२०२८
१९९५	३००९	२४१७
१९९६	३९६१	३१७५

इस कोष्टक के देखने से स्पष्ट है कि परीक्षार्थियों की संख्या और परीक्षा शुल्क में जैसी वृद्धि सम्वत् १९९६ में हुई है वैसी सम्मेलन के इतिहास में कभी भी नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यह है कि सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार के लिए इस वर्ष सब प्रकार के उपायों से उद्योग किया गया है। इस कार्य में हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों ने भी गतवर्ष से अधिक हमारी सहायता की। परीक्षा विभाग से जो सूचनाएँ प्रकाशनार्थ उनके पास भेजी गईं उन्होंने अपने पत्र में उन्हें सहर्ष स्थान देने की कृपा की। इस कृपा के लिए सम्मेलन की ओर से हम उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार की कृपा भविष्य में करते रहेंगे।

संवत् १९९६ में ३९६१ परीक्षार्थियों में से ३१७५ परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित हुए और १९१९ उत्तीर्ण हुए। भिन्न-भिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार थी :—

परीक्षा	आवेदन पत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
उत्तमा	३३७	२३८	१५५	६५
मध्यमा	१८०७	१३९७	७३७	५३
प्रथमा	१६६३	१४१३	९७८	७०
वैद्य विशारद	८५	६५	२१	३२
कृषि विशारद	१५	११	७	६३
मुनीमी	५३	५०	२१	४२
आरायज़ नवीसी	१	१	×	×
	३९६१	३१७५	१९१९	६०

सब परीक्षाओं में मिला कर इस वर्ष ६० प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। परीक्षाओं के स्टैण्डर्ड को ऊँचा रखते हुए जितना उत्तम परीक्षाफल गत चार वर्षों से हो रहा है उतना पिछले वर्षों में कभी नहीं रहा। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि गत चार वर्षों से परीक्षाओं प्रचार के लिए प्रत्येक उपाय से प्रयत्न किया जा रहा है। उत्तमा परीक्षा में भी जितने अधिक परीक्षार्थी गत चार वर्षों से सम्मिलित हो रहे हैं और जितना अच्छा परीक्षाफल गत चार वर्षों से हो रहा है उतना कभी नहीं हुआ। हमें यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि गत वर्ष सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा यू० पी० के इन्टर-मी० बोर्ड द्वारा

सम्मानित हो ही चुकी है। अर्थात् मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी यू० पी० बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा केवल अँग्रेजी विषय लेकर दे सकेंगे। इस वर्ष बिहार सरकार ने सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा को हाई स्कूल के बराबर, मध्यमा को इंटर के बराबर और उत्तमा परीक्षा को बी० ए० के बराबर स्वीकार कर लिया है। अर्थात् बिहार सरकार सरकारी नौकरियों में जो सुविधाएँ हाई स्कूल, इंटर और बी० ए० परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देती है वे ही सुविधाएं वह क्रमशः सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देगी। मध्य प्रान्त की सरकार, जोधपुर दरबार तथा झालावाड़ और छतरपुर राज्यों ने भी सम्मेलन परीक्षाओं में उत्तीर्ण अध्यापकों के वेतन में वृद्धि करने का निश्चय किया है। हमें आशा है कि राजपूताना बोर्ड और अन्य देशी राज्यों से भी इसी प्रकार की सुविधाएँ शीघ्र मिलेंगी। अतः परीक्षार्थियों को अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार कार्य में हमारा हाथ बँटाना चाहिये।

उत्तमा परीक्षा के भारतवर्ष भर में ९ केन्द्र हैं। आगरा, इन्दौर, कलकत्ता, काशी, कानपुर (एस० डी० कालेज), पटना, प्रयाग, लाहौर और वर्धा। आगरा तथा इन्दौर में तो परीक्षार्थियों की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध पहिले ही से था। पिछले चार वर्षों से प्रयाग में भी परीक्षा के दिनों में परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए भिन्न भिन्न विषयों के व्याख्यान कराये जाते हैं।

उत्तमा परीक्षा में पहिले निबन्ध लिखने का प्रतिबन्ध था। संवत् १९८४ से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया है। संवत् १९८४ तक केवल वे ही परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकते थे जो सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण होते थे। अब उन परीक्षार्थियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया जाता है जो भारतीय विश्वविद्यालयों से हिन्दी लेकर बी० ए० अथवा किसी भी विषय में एम० ए०, एम० एस-सी०, संस्कृत कालेज काशी के आचार्य और पंजाब की हिन्दी प्रभाकर परीक्षाएं उत्तीर्ण होते हैं। अतः इस सुविधा के कारण परीक्षार्थियों की संख्या में और भी वृद्धि हो गई है। हम उत्तमा परीक्षा का स्टैण्डर्ड ऊँचा बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। युक्तप्रांत की सरकार द्वारा उसे एम० ए० के बराबर स्वीकार किये जाने के लिये

२१

प्रयत्न जारी है। नीचे दिए हुए अङ्कों से पाठकों को विदित होगा कि गत १३ वर्षों से उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों की संख्या में किस प्रकार वृद्धि हुई है।

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१९८४	३२
११८५	२९
१९८६	५४
१९८७	२५
१९८८	३७
१९८९	४१
१९९०	३८
१९९१	४८
१९९२	७३
१९९३	९४
१९९४	११०
११९५	२११
१९९६	३३७

परीक्षा केन्द्रों की संख्या में भी बराबर वृद्धि हो रही है। संवत् १९८४ से लगाकर संवत् १९९६ तक में परीक्षा केन्द्रों की संख्या में क्रमशः जो वृद्धि हुई है उसकी तालिका नीचे दी गई है:—

संवत्	केन्द्रों की संख्या
१९८४	१९०
१९८५	२२०
१९८६	२८०
१९८७	२७२
१९८८	२६७
१९८९	२५५
१९९०	२५१
१९९१	२५७

१९९२	२५७
१९९३	४१०
१९९४	५३४
१९९५	५६२
१९९६	५१४

इस वर्ष केन्द्रों की संख्या और भी अधिक होती, यदि वे ४८ केन्द्र न तोड़ दिये गए होते जिनमें गत दो वर्षों से पाँच से कम विद्यार्थी सम्मिलित हुये हैं।

प्रत्येक प्रान्त के अनुसार इस समय परीक्षा केन्द्रों की संख्या नीचे लिखे अनुसार है :—

संयुक्त प्रान्त	२०१	केन्द्र
बिहार	१३४	"
मध्य प्रान्त	४१	"
बङ्गाल	७	"
मद्रास	६	"
आसाम	१	"
ब्रह्मा	२	"
पञ्जाब	६	"
बम्बई	४	"

मध्य भारत

इन्दौर राज्य	३९	"
ग्वालियर राज्य	१९	"
बड़नगर, रीवां और भोपाल	१०	"

राजपूताना

बीकानेर राज्य	९	"
जयपुर राज्य	९	"
झालावाड़	३	"
अन्य राज्य	२३	"

केन्द्रों की तालिका से स्पष्ट है कि अभी भारत के कई प्रान्त और देशी राज्यों में सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कर उनके प्रचार की बहुत आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दी प्रेमी सज्जन इस कार्य में हमारी यथेष्ठ सहायता करें। इस वर्ष के लिये नवीन केन्द्र स्थापित कराने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई सन् १९४० है। जो सज्जन सम्मेलन परीक्षाओं के इस प्रचार कार्य में हमारी सहायता करना चाहते हैं वे यथासम्भव शीघ्र ही हमें लिख कर केन्द्र स्थापन के लिए आवेदन-पत्र का फार्म मँगा लें। यहाँ हम यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र अब किसी प्रतिष्ठित स्कूल या कालेज में उसके प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में ही स्थापित किये जाते हैं। अतः आवेदन-पत्र का फ़ार्म भरते समय प्रार्थियों को इसका ध्यान रखना चाहिये।

परीक्षा केन्द्रों का सञ्चालन और उनकी सुव्यवस्था केन्द्र व्यवस्थापकों की कार्य तत्परता पर ही निर्भर रहती है। पाठकों से यह छिपा नहीं है कि व्यवस्थापकों का कार्य कितना महत्वपूर्ण होता है। प्रश्न पत्रों को परीक्षा भवन में ठीक समय में खोलना, उत्तर पुस्तकों को समयानुसार यथास्थान भेजना और परीक्षा-भवन में परीक्षार्थियों को अनुचित सहायता न लेने देना व्यवस्थापक के मुख्य कर्तव्य हैं। मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमारे व्यवस्थापकों ने अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति निबाहा है। इसके लिये मैं उन्हें परीक्षा समिति की ओर से अनेक धन्यवाद देता हूँ।

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ७५ केन्द्रों में निरीक्षक भेजकर परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कराया गया था। जिन केन्द्रों में त्रुटियाँ पाई गई थीं वे परीक्षा समिति के आदेशानुसार तोड़ दिये गये हैं।

हमारे परीक्षकों ने भी बड़ी तत्परता और लगन के साथ इस वर्ष हमारी सहायता की है। परीक्षक का कार्य कितना उत्तरदायित्व पूर्ण, कठिन और नीरस होता है उसे वे ही सज्जन जानते हैं जिन्होंने कभी इस कार्य को किया है। हमारे परीक्षकों ने अवैतनिक रूप से जिस तत्परता और लगन के साथ हमारी सहायता की है उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं और परीक्षा समिति की ओर से उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं। इस वर्ष ब्रज माधुरी सार, महात्मा टालस्टाय के सिद्धान्त, महात्मा-गान्धी के निजीपत्र और राष्ट्रभाषा

नामक चार पुस्तकें प्रत्येक परीक्षक को भेंट रूप में दी गई हैं। कुछ परीक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में परीक्षार्थियों का ध्यान कुछ ख़ास ख़ास बातों की ओर आकर्षित किया है। परीक्षार्थियों की सुविधा और जानकारी के लिए हम उनका सारांश इसी पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं। उसे हम यथा सम्भव शीघ्र ही पत्रों में भी प्रकाशित करेंगे।

सम्मेलन की ओर से हिन्दी विद्यापीठ में पढ़ाई की व्यवस्था

सर्व साधारण को सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है कि महेवा-विद्यापीठ, प्रयाग, महेवा के प्रसिद्ध आश्रम में गत वर्ष से पुनः खुल गया है। यह आश्रम ६० एकड़ भूमि में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर अवस्थित है। इसकी प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय है। उपाध्यायों तथा विद्यार्थियों के रहने के लिए सुन्दर आवास बने हुये हैं। यहाँ प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा तीनों परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध है। विद्यार्थियों के लिए केवल निःशुल्क शिक्षा तथा छात्रावास का प्रबन्ध है। अभी विद्यापीठ के पास इतना द्रव्य नहीं है कि वह विद्यार्थियों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता और छात्रवृत्ति आदि दे सके। अतः भोजनादि तथा अन्य सब आवश्यक व्यय उन्हें अपने पास से ही करना होता है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे सम्मेलन द्वारा दी गई इस सुविधा से लाभ उठावें।

दयाशङ्कर दुबे
परीक्षा मन्त्री।

हिन्दी विश्व विद्यालय

के

परिक्षकों के वक्तव्यों का सारांश

उत्तमा (साहित्य)

बहुत कम परिक्षार्थियों ने पाठ्य पुस्तकों का ठिकाने से अध्ययन किया था। दिये हुए पद्यांशों के अर्थ लिखने में परीक्षार्थियों ने असन्तोषजनक असफलता का परिचय दिया है।

अधिकांश परीक्षार्थियों के उत्तरों से ऐसा जान पड़ता है कि उन्हें लिखने का अभ्यास बिलकुल नहीं है। व्याकरण तथा हिज्जे की भद्दी अशुद्धियां साहित्य-रत्न के परीक्षार्थियों की प्रतिष्ठा पर सब से अधिक आघात पहुँचाने वाली हैं।

निबन्ध लिखने में परिक्षार्थियों को निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :—

(१) निबन्ध के निर्वाचन में परीक्षार्थियों को विशेष सावधानी से काम लेना चाहिये।

(२) निबन्ध का एक खाका पहले से बना लेना चाहिये और उसी क्रम से विषय का प्रति पादन करना चाहिये।

(३) निबन्ध परीक्षार्थी की योग्यता की कसौटी है। अतएव जो कुछ लिखा जाय वह समझ बूझ कर, व्यवस्थित और क्रम बद्ध हो। प्रारम्भ और अंत विषय से सम्बन्धित और उसके अनुसार ही होना चाहिये।

(४) सुन्दर लेख और शुद्ध भाषा अधिक अङ्क प्राप्त करने में सहायक होती है।

मध्यमा परीक्षा

साहित्य १—उत्तर लिखते समय परीक्षार्थियों का ध्यान वाक्य-विन्यास की ओर नहीं रहता। अधिकांश परीक्षार्थियों की वाक्य रचना अच्छी

नहीं थी। 'ने' का प्रयोग ठीक नहीं था। हिज्जे की भूलें अधिक थीं। यथा (१) अयोद्धा प्रसाद उपाध्या (२) व्यवहिति (३) प्रिये प्रवास (४) प्रिय परवास (५) विलशेषण (विश्लेषण)।

साहित्य २— बहुत कम विद्यार्थियों के उत्तर उच्च श्रेणी के थे। गद्य का अर्थ समझाने में बहुत कम परीक्षार्थी सफल हुए हैं। आलोचनात्मक ढंग के प्रश्न भी बहुत कम लोगों ने संतोषजनक किया है। परीक्षार्थियों को लिखने का अभ्यास अधिक करना चाहिये। नाट्य-शास्त्र का ज्ञान बहुत कम परीक्षार्थियों को है। व्याकरण और भाषा सम्बन्धी भूलें अधिक की गई हैं।

साहित्य ३—परीक्षार्थी भाषा और लिपि में भेद नहीं समझते हैं। उर्दू भाषा और उर्दू लिपि तथा हिन्दी भाषा और हिन्दी लिपि को एक बात समझते हैं।

(क) साहित्य भाग के उत्तर संतोषजनक थे परन्तु (ख) भाषा और (ग) लिपि भागों के उत्तर असंतोषप्रद थे। बहुत से परीक्षार्थी हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्य में भेद नहीं समझते हैं।

साहित्य ४— (१) परीक्षार्थियों को अपने चुने हुए विषय पर भली-भाँति सोचकर और ढांचा बनाकर निबन्ध लेखन प्रारम्भ करना चाहिये। अनावश्यक बातों की भरमार से निबन्ध का कलेवर व्यर्थ न बढ़ाना चाहिये। निबन्ध में विचारों को क्रम से लिखना चाहिये। पुनरुक्ति न होनी चाहिये। भाषा की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। प्रान्तीय प्रयोगों से बचना चाहिये।

इतिहास—इस वर्ष के उत्तर गत वर्ष की अपेक्षा अधिक संतोषजनक हैं। परीक्षार्थियों को घटनाओं का ज्ञान उचित मात्रा में नहीं है। स्वयं सोच विचार कर लिखने की शक्ति अधिकांश परीक्षार्थियों में नहीं है। ऐतिहासिक पुस्तकों का अध्ययन उचित रूप से नहीं किया गया है। प्रश्न १ का उत्तर बहुत ही कम परीक्षार्थियों ने संतोषजनक दिया है। इस प्रश्न के उत्तर में मंहजोदड़ो और हरप्पा की खोदाई का उल्लेख दो चार व्यक्तियों ने ही किया है। इन खोदाइयों से पूर्वैतिहासिक भारत पर जो प्रकाश पड़ता है उसे समझना आवश्यक है।

हिन्दी विश्व विद्यालय

के

परिक्षकों के वक्तव्यों का सारांश

उत्तमा (साहित्य)

बहुत कम परिक्षार्थियों ने पाठ्य पुस्तकों का ठिकाने से अध्ययन किया था। दिये हुए पद्याशों के अर्थ लिखने में परीक्षार्थियों ने असन्तोषजनक असफलता का परिचय दिया है।

अधिकांश परीक्षार्थियों के उत्तरों से ऐसा जान पड़ता है कि उन्हें लिखने का अभ्यास बिलकुल नहीं है। व्याकरण तथा हिज्जे की भद्दी अशुद्धियां साहित्य-रत्न के परीक्षार्थियों की प्रतिष्ठा पर सब से अधिक आघात पहुँचाने वाली हैं।

निबन्ध लिखने में परिक्षार्थियों को निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :—

(१) निबन्ध के निर्वाचन में परीक्षार्थियों को विशेष सावधानी से काम लेना चाहिये।

(२) निबन्ध का एक खाका पहले से बना लेना चाहिये और उसी क्रम से विषय का प्रति पादन करना चाहिये।

(३) निबन्ध परीक्षार्थी की योग्यता की कसौटी है। अतएव जो कुछ लिखा जाय वह समझ बूझ कर, व्यवस्थित और क्रम बद्ध हो। प्रारम्भ और अंत विषय से सम्बन्धित और उसके अनुसार ही होना चाहिये।

(४) सुन्दर लेख और शुद्ध भाषा अधिक अङ्क प्राप्त करने में सहायक होती है।

मध्यमा परीक्षा

साहित्य १—उत्तर लिखते समय परीक्षार्थियों का ध्यान वाक्य-विन्यास की ओर नहीं रहता। अधिकांश परीक्षार्थियों की वाक्य रचना अच्छी

नहीं थी। 'ने' का प्रयोग ठीक नहीं था। हिज्जे की भूलें अधिक थीं। यथा (१) अयोद्धा प्रसाद उपाध्या (२) व्यवहिति (३) प्रिये प्रवास (४) प्रिय परवास (५) विलशेषण (विश्लेषण)।

साहित्य २— बहुत कम विद्यार्थियों के उत्तर उच्च श्रेणी के थे। गद्य का अर्थ समझाने में बहुत कम परीक्षार्थी सफल हुए हैं। आलोचनात्मक ढंग के प्रश्न भी बहुत कम लोगों ने संतोषजनक किया है। परीक्षार्थियों को लिखने का अभ्यास अधिक करना चाहिये। नाट्य-शास्त्र का ज्ञान बहुत कम परीक्षार्थियों को है। व्याकरण और भाषा सम्बन्धी भूलें अधिक की गई हैं।

साहित्य ३—परीक्षार्थी भाषा और लिपि में भेद नहीं समझते हैं। उर्दू भाषा और उर्दू लिपि तथा हिन्दी भाषा और हिन्दी लिपि को एक बात समझते हैं।

(क) साहित्य भाग के उत्तर संतोषजनक थे परन्तु (ख) भाषा और (ग) लिपि भागों के उत्तर असंतोषप्रद थे। बहुत से परीक्षार्थी हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्य में भेद नहीं समझते हैं।

साहित्य ४— (१) परीक्षार्थियों को अपने चुने हुए विषय पर भली-भाँति सोचकर और ढांचा बनाकर निबन्ध लेखन प्रारम्भ करना चाहिये। अनावश्यक बातों की भरमार से निबन्ध का कलेवर व्यर्थ न बढ़ाना चाहिये। निबन्ध में विचारों को क्रम से लिखना चाहिये। पुनरुक्ति न होनी चाहिये। भाषा की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। प्रान्तीय प्रयोगों से बचना चाहिये।

इतिहास—इस वर्ष के उत्तर गत वर्ष की अपेक्षा अधिक संतोषजनक हैं। परीक्षार्थियों को घटनाओं का ज्ञान उचित मात्रा में नहीं है। स्वयं सोच विचार कर लिखने की शक्ति अधिकांश परीक्षार्थियों में नहीं है। ऐतिहासिक पुस्तकों का अध्ययन उचित रूप से नहीं किया गया है। प्रश्न १ का उत्तर बहुत ही कम परीक्षार्थियों ने संतोषजनक दिया है। इस प्रश्न के उत्तर में मंहजोदड़ो और हरप्पा की खोदाई का उल्लेख दो चार व्यक्तियों ने ही किया है। इन खोदाइयों से पूर्वैतिहासिक भारत पर जो प्रकाश पड़ता है उसे समझना आवश्यक है।

अर्थ शास्त्र—प्रश्नों को पूर्णतया समझ कर उत्तर लिखना चाहिये। देश की वर्तमान आर्थिक स्थिति का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है।

कृषि शास्त्र—कृषि शास्त्र के उत्तर अधिकतर निबन्ध के रूप में हुआ करते हैं और निबन्ध के पहिले ढाँचा तैयार करना आवश्यक होता है। ऐसा बहुत कम परीक्षार्थियों ने किया है। परीक्षक को जब मुख्य मुख्य बातें ढूंढ़ कर लेख में निकालनी पड़ती हैं तो यह स्वाभाविक हो जाता है कि परीक्षार्थी उतने अधिक अङ्क प्राप्त नहीं कर सकता जितना कि ढांचा बनाने वाला प्राप्त कर सकता है।

राजनीति—परीक्षार्थी पाठ्य पुस्तकें बिलकुल नहीं पढ़ते। अटकलपच्चू उत्तर लिखते हैं। परीक्षार्थियों को राजनीतिक सिद्धान्तों का ज्ञान बिलकुल नहीं है।

धर्मशास्त्र—अधिकांश विद्यार्थियों के उत्तर अप्रासंगिक और अनुपयुक्त हैं। परीक्षार्थियों ने पाठ्य-ग्रन्थों का अध्ययन सुचारु रूप से नहीं किया है। अधिक उत्तर कल्पना से ही दिये गए हैं।

संस्कृत—परीक्षार्थियों में समास एवं व्याकरण की बहुत कमी है। अनुवाद को अधिकांश परीक्षार्थियों ने व्याख्या रूप में दिखाया है। श्लोकों की व्याख्या में संदर्भ लिखने के पश्चात् व्याख्या करके भावार्थ लिखना चाहिये। परन्तु यह न करके बहुतों ने व्याख्या न करके भावार्थ ही लिखा। कथा का पूर्ण परिचय बहुत कम परीक्षार्थियों के लेख में पाया गया है।

अंग्रेजी— इस वर्ष अधिकांश परीक्षार्थियों के उत्तर असंतोषप्रद थे। पुस्तकों का ज्ञान भी परीक्षार्थियों को नहीं है। अपठित काफी सरल होने पर भी अधिकांश के समझ में नहीं आया।

वैद्यक—परीक्षार्थियों ने पाठ्य-ग्रन्थों का अध्ययन भली भांति नहीं किया। उन्हें चाहिये कि जब एक प्रश्न का उत्तर समाप्त हो जाय तब दूसरे प्रश्न का उत्तर वे नये पृष्ट पर आरम्भ करें।

ज्योतिष—ह्रस्व और दीर्घ की भूलें अधिकांश परीक्षार्थियों ने की हैं।

गणित—अधिकांश विद्यार्थियों के उत्तर साधारणतः अच्छे हैं। कुछ छात्रों के उत्तर असंतोषजनक हैं। क्रिया शुद्ध और स्पष्ट नहीं है।

भूगोल—अधिकांश विद्यार्थियों ने बिहार और उड़ीसा को अब भी एक समझ कर बिहार के ही भूगोल का वर्णन किया है। मानचित्र का सर्वथा अभाव है। उत्तर बहुत ही असम्बद्ध लिखे गए हैं।

दर्शन—परीक्षार्थियों ने पाठ्य-ग्रंथों का अध्ययन सुचारु रूप से नहीं किया।

वैद्य विशारद परीक्षा

अधिकांश परीक्षार्थी प्रचलित लवण भास्कर भी नहीं जानते। फल घृत के उत्तर में फलों को कुचलकर घृत बनाने की क्रिया लिखी है। स्वास्थ्य के भारतीय सिद्धान्तों की ओर परीक्षार्थियों ने विशेष मनोयोग पूर्वक अध्ययन बहुत कम किया है।

कृषि विशारद परीक्षा

कई परीक्षार्थी प्रायः उत्तर लिखने की शीघ्रता में प्रश्नों को ठीक ठीक पढ़कर समझने का प्रयत्न नहीं करते। सामयिक साहित्य का अध्ययन जो कि इस विषय के ज्ञान के लिए अनिवार्य है, बहुत कम परीक्षार्थियों में पाया गया।

प्रथमा परीक्षा

परीक्षार्थियों ने ह्रस्व और दीर्घ की बड़ी भूलें की हैं। जैसे— सुरदास आदि। 'ने' का प्रयोग कम परीक्षार्थियों का ठीक है। 'कि' 'की' की अधिक त्रुटियाँ हैं। परीक्षार्थियों ने संदर्भ की ओर कम ध्यान दिया है।

साहित्य २—परीक्षार्थी संदर्भों का ठीक अर्थ नहीं समझा सकते। विराम चिन्ह और व्याकरण पर ध्यान ही नहीं दिया गया। वाक्यों का भी सम्बन्ध ठीक नहीं पाया गया।

साहित्य ३—अधिकांश छात्रों ने निबन्ध की रूप रेखाएँ नहीं बनाई। कई परीक्षार्थियों ने आधुनिक कविता के स्थान पर आधुनिक हिन्दी काल पर ही लेख लिखा है। विरामों के प्रयोग की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया

है। वाक्यों का प्रयोग परिमार्जित शब्दों द्वारा सुगठित एवं ललित होना चाहिये। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग सम्बन्धी बहुत भूलें हुई हैं।

इतिहास—प्रश्न पत्र ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिये। किन्हीं किन्हीं परीक्षार्थियों ने ५ प्रश्न करने के स्थान पर ६-७ या इससे भी अधिक प्रश्न किया है। अधिकांश परीक्षार्थियों को शुद्ध शब्दों का भी ज्ञान नहीं है। कुछ अशुद्ध शब्दों के उदाहरण:—स्त्रीयों, आक्रमर, प्रायच्ति, शंक्राचार्य...... आदि। संवत् १९१४ (सन् १८५७) को कुछ छात्रों ने सन् १९१४ (महायुद्ध) समझा है। अन्त में 'कृपया इस बच्चे को पास कर दीजियेगा' आदि वाक्य लिखना अनुचित है।

भूगोल—नकशों के खींचने में अधिक सफाई और शुद्धता होनी चाहिये। सामयिक भौगोलिक घटनाओं का परीक्षार्थियों को कुछ भी ज्ञान नहीं है।

गणित—अधिकांश परीक्षार्थी प्रश्नों के नम्बर लिखने में असावधानी करते हैं। क्रिया स्पष्ट और शुद्ध होनी चाहिये। परन्तु परीक्षार्थी अङ्कों के लिख देने में ही संतोष करते हैं।

संस्कृत—परीक्षार्थियों ने भाषा लिखने में बहुत भूलें की हैं।

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल० एल० बी०
परीक्षा मंत्री
हिन्दी-विश्व-विद्यालय, प्रयाग।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

कार्य समिति की बैठक

कार्य समिति की बैठक, रविवार, चैत्र सौर २४ संवत् '९६, तदनुसार तारीख ७ अप्रैल १९४० को ४ बजे दिन कार्यालय में हुई। नीचेलिखे सदस्य उपस्थित थे। सर्वश्री पुरुषोत्तमदास टंडन, दयाशंकर दुबे, व्रजराज, लक्ष्मीधर वाजपेयी, उदयनारायण तिवारी, रामलखन शुक्ल और बाबूराम सक्सेना (प्रधान मंत्री)।

१—नियमानुसार श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् प्रधानमंत्री ने पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधान मंत्री ने सभापति-निर्वाचन के विषय में आए हुए मतों की गणना का प्रश्न उपस्थित किया। सम्मेलन सभापति तथा राष्ट्रभाषा-परिषद् के सभापति पद के लिये श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी का नाम भी प्रस्तावित था। जब श्री टंडन जी को मालूम हुआ कि उनका नाम भी सभापति-पद के लिये प्रस्तावित है तो उन्होंने उसे वापस ले लिया। तत्पश्चात् सम्मेलन के सभापति-पद के लिये निम्नलिखित छः नाम प्रथम आए। सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, रामचन्द्र शुक्ल, राहुल सांकृत्यायन, लक्ष्मीधर वाजपेयी, विनायक दामोदर सावरकर और सम्पूर्णानन्द।

शेष सातवें स्थान के लिए श्री गिरिधर शर्मा, श्री श्यामसुन्दरदास, तथा श्री धीरेन्द्र वर्मा इन तीन सज्जनों के लिए बराबर बराबर मत आए। चिट्ठी डाल कर सातवाँ स्थान श्री श्यामसुन्दरदास जी के लिए निर्णय किया गया।

साहित्य-परिषद् के लिए निम्नलिखित चार नाम गणना में प्रथम आये। सर्वश्री धीरेन्द्र वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, मैथिलीशरण गुप्त और श्रीनारायण चतुर्वेदी।

शेष पाँचवें स्थान के लिये श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी, श्री शिवपूजनसहाय तथा श्री बनारसीदास चतुर्वेदी इन तीन सज्जनों को बराबर मत मिले। चिट्ठी द्वारा पाँचवा नाम श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का निश्चित किया गया।

समाज-शास्त्र परिषद् के लिए नीचे लिखे तीन नाम गणना में प्रथम आये। सर्वश्री नरेंद्रदेव, लक्ष्मीचन्द जैन, सम्पूर्णानन्द।

शेष दो स्थानों के लिए सर्वश्री बेनीप्रसाद, जयप्रकाशनारायण, भगवानदास तथा दत्तोवामन पोद्दार इन चार सज्जनों के बराबर मत आए। चिट्ठी डालकर श्री जयप्रकाशनारायण तथा श्री भगवानदास जी के नाम निश्चित किए गए।

दर्शन-परिषद् के लिए नीचे लिखे पाँच सज्जन गणना में प्रथम आए। सर्वश्री गंगानाथ झा, गुलाबराय, भगवानदास, भिक्खनलाल आत्रेय और राधाकृष्णन।

विज्ञान-परिषद् के लिए निम्नलिखित पाँच नाम गणना के अनुसार प्रथम आए। सर्वश्री गोपालस्वरूप भार्गव, गोरखप्रसाद, नीलरतन धर, फुलदेवसहाय वर्मा और सत्यप्रकाश।

राष्ट्रभाषा-परिषद् के लिए मत-गणना के अनुसार निम्नलिखित तीन नाम प्रथम आए। सर्वश्री अमरनाथ झा, काका कालेलकर, बाबा राघवदास और वेंकटेशनारायण तिवारी।

बराबर मत पाए हुए नीचे के आठ सज्जनों के नाम चिट्ठियाँ डाली गईं। सर्वश्री जमनालाल बजाज, राजेन्द्रप्रसाद, सम्पूर्णानन्द, बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, बेनीप्रसाद, श्यामसुन्दरदास और श्रीकृष्णदत्त पालीवाल।

चिट्ठी द्वारा श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल का नाम निश्चित हुआ।

३—प्रधान मंत्री ने सहायक मंत्री एवं रजिस्ट्रार की नियुक्ति विषयक उपसमिति की सिफारिश तथा इस विषय में श्री टंडन जी की आज्ञा उपस्थित की। निश्चय हुआ कि श्री नारायणदत्त पांडे, एम० ए०, एल० एल० बी०, उपसमिति की सिफारिश के अनुसार सौर चैत्र संवत् १९९६ से सहायक मंत्री तथा रजिस्ट्रार के समन्वित पद पर नियुक्त किए जायँ।

४—सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी कहानियाँ' और 'कहानी कुंज' नाम के संग्रह ग्रन्थों में संग्रहीत श्री सुदर्शन जी की कहानियों पर उनको ६०) और पारिश्रमिक दिया जाय इस विषय का उनका पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि वर्तमान संस्करणों के विषय में जो नीति 'कहानी कुंज' के

सम्बन्ध में निर्धारित हुई है वही 'हिन्दी कहानियाँ' के लिए भी बर्ती जाय और पूर्व संस्करणों के विषय में प्रधानमन्त्री जी अपनी सिफारिश अगली बैठक में पेश करें।

समिति का ध्यान इस ओर भी गया कि श्री सुदर्शन जी से जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसमें लेखक की असावधानी से 'कहानी कुंज' और 'हिन्दी-कहानियाँ' के बारे में स्पष्टीकरण नहीं हुआ है। श्री प्रधानमंत्री जी फाइल को देखकर श्री सुदर्शन जी को उत्तर देने में इस विषय में सब बातों का स्पष्टीकरण कर दें और यह भी लिख दें कि पहले जो रुपए उनको दिए गये थे वह 'कहानी कुंज' के थे, 'हिन्दी कहानियाँ' के नहीं।

५—सम्बद्धता के विषय में प्राप्त तरुण पुस्तकालय, कफेन तथा हिन्दी साहित्य संघ, उरई के आवेदन-पत्र उपस्थित किए गए। निश्चय हुआ कि दोनों संस्थाएँ सम्बद्ध कर ली जायँ।

६—कार्यालय के चपरासियों की वेतन-वृद्धि तथा मँहगाई के कारण भत्ते की माँग पर विचार करने के लिये प्रश्न उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि इस विषय के सब कागज-पत्र उपस्थित नहीं हैं इसलिए वृद्धि का प्रश्न अगली समिति में पेश किया जाय।

७—प्रधानमंत्री ने पूना की महाराष्ट्र साहित्य परिषद के अगली मई में होने वाले वार्षिक अधिवेशन में सम्मेलन की ओर से प्रतिनिधि भेजने का विषय पेश किया। निश्चय हुआ कि श्री काका कालेलकर तथा श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल उक्त कार्य के लिए नियुक्त किए जाते हैं। इन दोनों सज्जनों से निवेदन किया जाय कि ये लोग अधिवेशन में उपस्थित हों।

८—प्रधानमंत्री ने २८वें अधिवेशन, काशी की स्वागत समिति का आय-व्यय का विवरण उपस्थित किया। चिट्ठा नीचे लिखे अनुसार स्वीकार हुआ।

स्वागत समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलन काशी के आय-व्यय का ब्योरा

आय		व्यय	
११५२)	टिकटों की बिक्री	४२७।=)	छपाई
२५८७।।=)	विशेष सहायता	१३३।।=)।।	डाक व्यय

१४३१)	स्वागत समिति के सदस्यों का चंदा	३९१)	नाटक
		४६७=)॥।	पंडाल
२१॥)	फुटकर	७६९।-)॥	फुटकर
१८४।=)॥	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (घाटा जो सभा ने दिया)	६१३)	अतिथि सत्कार
		२६६॥-)	रोशनी पानी
		६७६≡)	वेतन, खोराकी आदि
		७२-)॥	स्वयंसेवक
		२५०॥-)	कवि सम्मेलन
		६९।=)	कहानी सम्मेलन
		५९।-)	महिला सम्मेलन
		४७५॥-)॥	कला प्रदर्शनी
		३९)	नवयुवक सम्मेलन
		१०३)॥।	सभापति का जुलूस
		२०५)	लाउड स्पीकर
		३००)	सम्मेलन कार्यालय, प्रयाग को रिपोर्ट की छपाई के लिए।
		१५)	राष्ट्रभाषा सम्मेलन
		२९)	साहित्य परिषद
		१४)	विज्ञान परिषद
५३७६॥)॥		५३७६॥)॥	

बैजनाथ केडिया
अर्थ मंत्री

रामनारायण मिश्र
प्रधान मंत्री

गुलाबदास नागर
आय-व्यय निरीक्षक

साथ ही प्रधान मंत्री जी ने स्वागत-समिति के मंत्री का पत्र कि कार्य-विवरण की छपाई शुरू कर दी गई है, छपाई के लिए ३००) भेज दिये जायँ, उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि छपाई का बिल कार्य-विवरण छपने के बाद भेज दें, यहाँ से बिल चुकता कर दिया जायगा।

९—प्रधान मंत्री ने संग्रहालय के लिए हस्तलिखित पुस्तकों की फोटो लेने के लिए कैमरा खरीदने का विषय पेश किया तथा तद्विषयक डा० गोरखप्रसाद जी की सम्मत्ति उपस्थित की। निश्चय हुआ कि नीचे लिखे सज्जनों की समिति विचार करके अन्तिम प्रस्ताव उपस्थित करे।

श्री डा० गोरखप्रसाद
" रामचन्द्र टंडन
" प्रधान मंत्री (संयोजक)

१०—कार्यालय के कर्मचारियों की छुट्टी के नियमों के स्पष्टीकरण का विषय उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि (१) आकस्मिक (कैजुअल) छुट्टी के बीच में यदि कोई नियमित छुट्टी पड़े तो वह उक्त छुट्टी में शामिल कर ली जाय अन्यथा नहीं। परन्तु प्रत्येक दशा में छुट्टी पाया हुआ कर्मचारी जो नगर से बाहर जाना चाहता है वह बिना इस विषय की स्वीकृति प्राप्त किये नहीं जायगा। (२) आकस्मिक छुट्टी रियायती छुट्टी के साथ शामिल नहीं की जायगी। (३) आकस्मिक छुट्टी के साथ यदि साधारण छुट्टी किसी सिरे पर जुड़ती हो तो छुट्टी लेने वाले कर्मचारी का कर्त्तव्य होगा कि वह इसकी सूचना अपने प्रार्थनापत्र में दे दे।

११—प्रधान मंत्री ने नाभा राज्य की संस्था सेवा समिति जैतो के मंत्री का आर्थिक सहायता के सम्बन्ध का पत्र उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि पहिले वह अपने यहाँ सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र खुलवायें और संस्था को सम्मेलन से सम्बद्ध करा लें तो इस विषय पर कुछ दिन बाद विचार किया जा सकता है।

बाबूराम सक्सेना,
प्रधान मंत्री।

स्वर्गीय आचार्य गिजुभाई स्मारक-कोष

देश के कई गण्यमान्य नेताओं ने हमारे पास निम्न लिखित अपील प्रकाशनार्थ भेजी है—

स्वर्गीय आचार्य श्री गिजुभाई बालकों को ही अपना उपास्य-देव समझते थे। बालकों की शिक्षा के पीछे उन्होंने अपने आप को मिटा दिया था। बाल-शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है, उससे न सिर्फ गुजरात और काठियावाड़ बल्कि समस्त भारत के शिक्षा-प्रेमी परिचित हैं।

श्री गिजुभाई के जीवन-कार्य को अखण्ड रूप से चलाने, उसका पूरा-पूरा विकास करने और उनके द्वारा प्रवर्त्तित नूतन बाल-शिक्षा-पद्धति के अनुसार सारे देश के बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए बाल-शिक्षा का एक सर्वाङ्गपूर्ण केन्द्र स्थापित होना चाहिए। हमारी राय में श्री गिजुभाई का इससे बढ़कर और कोई स्मारक हो नहीं सकता। हम समझते हैं कि इस केन्द्र में नीचे लिखे कामों का प्रबन्ध होगा, और इस केन्द्र के द्वारा बाल-शिक्षा के कार्य का नियमन, प्रवर्द्धन और संचालन किया जा सकेगा। इस प्रकार बाल-शिक्षा के एक सर्वाङ्गपूर्ण केन्द्र की स्थापना के लिए हमारे विचार में कम से कम ५ लाख रुपयों की जरूरत होगी; परन्तु फिलहाल काम शुरू करने के लिए हम गुजरात से और गुजरात के बाहर के मित्रों से एक लाख रुपये की आशा रखते हैं।

इस कोष की रकम इकट्ठा करने के लिए और इस सम्बन्ध में जिन जिन कामों की जरूरत मालूम हो, उन-उन कामों को करने के लिए हम अपनी तरफ से श्री पोपटलाल लवजीभाई चुडगर और श्री इन्दुप्रसाद भट्ट को अधिकार देते हैं और उन्हें स्मारक-कोष का मंत्री नियुक्त करते हैं। कोष में जमा होने वाली निधि की रक्षा और प्रबन्ध के लिए हम श्री हीरालाल अ० शाह (बम्बई) और श्री परमानन्द कुँवरजी झवेरी (बम्बई) को संयुक्त रूप से कोषाध्यक्ष नियुक्त करते हैं।

ऊपर लिखे अनुसार हमारे मंत्री श्री पोपटलाल लवजीभाई चुडगर को एवं जिनको श्री चुडगर लिखित अनुमति दें, सिर्फ उन्हीं को इस कोष की निधि एकत्र करने और उसकी रसीद देने का अधिकार रहेगा।

—प्रधान मंत्री

पूना-सम्मेलन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पिछले अधिवेशन में, जो गत अक्तूबर में काशी में हुआ था, अगला अधिवेशन महाराष्ट्र में करने के लिये श्री काका कालेलकर का निमंत्रण स्वीकृत करने का निश्चय हुआ था। काका जी सम्मेलन की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के प्राण हैं। इस समिति का कार्य सम्मेलन की ओर से उन प्रदेशों में हिन्दी का संगठन करना है जहाँ साधारणतः हिन्दी मातृभाषा के रूप में बोलचाल की भाषा नहीं है। समिति का कार्यालय वर्धा में है, और गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र, उत्कल तथा आसाम में शाखायें हैं। श्री काका कालेलकर ने राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की महाराष्ट्र शाखा को पूना में सम्मेलन के अगले अधिवेशन के लिये तैयारियाँ करने के हेतु एक स्वागत समिति संगठित करने का कार्य सौंपा। उक्त शाखा ने एक संयोजक समिति का संगठन किया जिसमें अधिकांशतः पूने की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के कार्य कर्ता थे। इसी समिति ने संयोजक समिति को प्रारम्भिक कार्य के लिये ५००) भी दिया। दो सदस्यों ने स्वागत समिति के सदस्य बनाने तथा रुपया इकट्ठा करने के लिये महाराष्ट्र में दौरा किया। कुछ महीने तक प्रचार कार्य किया गया। अन्त में १४ अप्रैल को स्वागत समिति की पहिली बैठक हुई। उस दिन पदाधिकारियों के निर्वाचन में मुख्य पद उन लोगों को प्राप्त हुये जिनका राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति से, जिसकी देख रेख में अब तक कार्य हो रहा था, कोई सम्बन्ध न था। यह बात श्री काका कालेलकर, श्री शंकरराव देव तथा उनके सहकारियों को अच्छी नहीं लगी, और उन्होंने अपना सहयोग वापस ले लिया। श्री काका कालेलकर ने सम्मेलन कार्यालय, प्रयाग को तार भेजकर काशी में दिये हुये निमंत्रण को वापस ले लिया। दूसरी ओर स्वागत समिति के नये निर्वाचित पदाधिकारियों ने तार से अपना निमंत्रण भेजा और अधिवेशन की सफलता का विश्वास दिलाया। यह सब स्वागत समिति के संगठन के एक सप्ताह अन्दर ही घटित हुआ। इस प्रकार एक ऐसी परिस्थिति आ गई जिस पर सम्मेलन की स्थायी समिति को, जिसे नियमानुसार ऐसे सब विषयों पर नियन्त्रण का अधिकार है, विचार करना पड़ा। स्थायी समिति का अधिवेशन अप्रैल २८ और २९ को हुआ। दोनों दिन स्वागत समिति द्वारा प्रेषित एक प्रतिनिधि समिति में उपस्थित था। श्री काका कालेलकर भी २९ अप्रैल की बैठक में

उपस्थित थे। स्थायी समिति की यह राय हुई कि पूना के हिन्दी कार्य-कर्ताओं के दोनों दलों का सहयोग प्राप्त करने के लिये मार्ग तथा साधनों का अन्वेषण किया जाय। अतः इस कार्य के लिये एक छोटी उपसमिति नियुक्त की गई जिसे अपनी रिपोर्ट स्थायी समिति की ५ मई को नियत की गई बैठक के सामने उपस्थित करने का आदेश दिया गया। समिति की इस बैठक में उक्त उपसमिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की, जिसमें यह बतलाया गया कि समझौते के कुछ प्रस्तावों पर बातचीत हुई किन्तु कुछ निश्चय न हो सका। इसलिये उपसमिति ने यह सिफारिश की कि अगले अधिवेशन के लिये निश्चित तिथियां (मई २४—२७) अभी हटाई जायं और भविष्य के लिये तिथियों का निश्चय पीछे हो, और इस बीच पूने में अगला अधिवेशन करने के लिये महाराष्ट्र के दोनों दलों का सहयोग प्राप्त करने के हेतु नये सिरे से प्रयत्न किया जाय। स्थायी समिति ने इस सिफारिश को स्वीकार किया और आवश्यक कार्यवाही करने के लिये कार्य-समिति को अधिकार दे दिया। स्थायी समिति की बैठक के बाद ही कार्य-समिति की बैठक हुई जिसमें स्थायी समिति के निश्चय पर कार्यवाही करने के लिये एक छोटी उपसमिति नियुक्त की गई।

यह दुःख की बात है कि सम्मेलन का अगला अधिवेशन स्थगित करना पड़ा है। उद्योगात्मक कार्य क्षेत्रों में दलबन्दी समय का लक्षण है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य परमार्थतः रचनात्मक है। लगभग अट्ठाईस वर्ष के जीवन काल में सम्मेलन हमेशा अपने को कड़ुवे मतभेदों से अलग रखने का और हिन्दी-प्रचार तथा हिन्दी साहित्य की समृद्धि के लिये यथाशक्ति योग देने का प्रयत्न करता रहा है। रचनात्मक कार्य में अधिक से अधिक सहयोग से काम हो यही उसकी नीति रही है। हमें पूर्ण आशा है कि महाराष्ट्र के हिन्दी कार्य-कर्ताओं के दोनों दलों में समझौता हो जायगा और सम्मेलन का अगला अधिवेशन सफलतापूर्वक पूने में हो सकेगा। इस बीच सम्मेलन सभी हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध करता है कि वे संयम से काम लें और इस या उस दल के सदस्यों के प्रति कोई व्यक्तिगत आक्षेप न करें।

प्रधान मंत्री,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

बुद्ध-चरित—रचयिता—पं० रामचन्द्र शुक्ल; नवीन संस्करण; मूल्य २॥); महात्मा बुद्ध का उज्वल चरित्र, सुन्दर ब्रजभाषा काव्य; महत्व-पूर्ण भूमिका में ब्रज, खड़ी और अवधी भाषाओं का व्याकरण विवेचन।

सोवियत भूमि—लें०—महापंडित राहुल सांकृत्यायन; मू० ५); वर्तमान रूस के संबंध में यह एक विश्वकोश है।

हिन्दी रस-गंगाधर (दूसरा भाग)—अनुवाद—पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी; मूल्य ३॥)। यह संस्कृत के उद्भट विद्वान पंडितराज जगन्नाथ के ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। अलंकार संबंधी स्वतंत्र आलोचनाओं से भरा हुआ संस्कृत साहित्य का पांडित्यपूर्ण और अत्यन्त प्रामाणिक लक्षण ग्रंथ है।

प्रेमसागर—सम्पादक—बाबू ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी०; पृष्ठ संख्या ४७०; नवीन संस्करण; मूल्य १॥)। यह हिंदी गद्य साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं; परन्तु यह सर्वोपरि संशोधित और मूल प्रेमसागर के आधार पर तैयार किया गया है।

भारतीय मूर्तिकला—लें० राय कृष्णदास; मू० साधारण सं० १); विशिष्ट सं० १।)। भारतवर्ष मूर्तिकला की अथ से इति तक सचित्र तात्विक व्याख्या। इस विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है।

भारत की चित्रकला—लेखक—राय कृष्णदास; मू० साधारण संस्करण १); विशिष्ट सं० १।)। भारतवर्ष की महान् चित्रकला का मार्मिक निरीक्षण। समस्त भारतीय भाषाओं में अपने ढंग की सर्वश्रेष्ठ रचना।

बाल-मनोविज्ञान—लें० प्रो० लालजी राम शुक्ल, एम्० ए०, बी० टी०; मूल्य १।)। हिन्दी में बाल-मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

बिहार में हिन्दुस्तानी—लें०—पं० चंद्रबली पांडे, एम०ए०; मूल्य।); बिहार प्रान्त में हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या की मार्मिक व्याख्या।

भाषा का प्रश्न—लें०—पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए०; मूल्य ॥।); भाषा संबंधी प्रश्नों का विस्तृत और विवेचनापूर्ण उत्तर।

कचहरी की भाषा और लिपि—लें०—पं० चंद्रबली पांडे, एम्० ए०; मूल्य ॥।)। अदालतों में प्रयुक्त होने वाली भाषा और लिपि की गंभीर आलोचना।

मिलने का पता—**नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा

प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ-साहित्य-माला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≋)
४ राष्ट्र भाषा ॥)
५ शिवाबावनी ≋)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास भाग १ २॥)
८ " " " " २ २।)
९ ब्रजमाधुरी सार २॥)
१० पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
११ सत्य हरिश्चन्द्र ।-)
१२ हिन्दी-भाषा सार ।॥)
१३ सूरदास की विनय पत्रिका ≋)
१४ नवीन पद्य-संग्रह ।॥)
१५ कहानी-कुञ्ज ॥=)
१६ बिहारी-संग्रह ≋)
१७ कवितावली ।॥)
१८ सुदामा चरित्र ।)
१९ कबीर पदावली ।॥=)
२० हिन्दी गद्य-निर्माण १॥)
२१ हिन्दी साहित्य की रूप-रेखा ।)
२२ सती कर्णकी ॥)
२३ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव ॥=)
२४ पार्वती मङ्गल ।)
२५ सूर पदावली ॥=)
२६ नागरी अंक और अक्षर ≋)
२७ हिन्दी कहानियाँ १॥)
२८ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)
२९ तुलसी दर्शन २॥)
३० भूषण-संग्रह भाग १ ।-)
३१ भूषण-संग्रह भाग २ ॥=)

(२) साधारण-पुस्तक-माला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)
२ प्रथमालंकार निरूपण ≋)

(३) वैज्ञानिक-पुस्तकमाला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ।॥)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल-साहित्य-माला

१ बाल पञ्चरत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ

१६)

मुद्रक—गिरिजा प्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्य-मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

ज्येष्ठ, आषाढ़, सम्वत् १९९७

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २७, संख्या १०, ११]

संपादक

श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल,

साहित्य मंत्री।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

प्रयाग।

एक प्रति ।)

वार्षिक

१)

विषय-सूची

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है।

२—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) है।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्रव्यवहार साहित्यमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका संबन्धी पत्रव्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए अन्यथा आवश्यक अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

सम्मेलन पत्रिका

भाग २७] ज्येष्ठ, आषाढ़ १९९७ [संख्या १०, ११

सम्मेलन क्या करे क्या न करे ?

[लेखक—श्री बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन को स्थापित हुए करीब तीस साल हुए। इस थोड़े से काल में उसने देश की राष्ट्रीय संस्थाओं में जो गौरव का स्थान प्राप्त किया है वह सर्वविदित है। भाषा सम्बन्धी किसी प्रश्न के विचार के समय सम्मेलन की ओर सभी राष्ट्रवादी नेतृत्व की आशा से देखते हैं। अपनी परीक्षाओं द्वारा उसने हिन्दी साहित्य के पठनपाठन को जो प्रोत्साहन दिया है वह उन विस्मृतिशील सज्जनों की आँख के तले भले न आए जो आज हिन्दी को भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में देखते हैं परन्तु उन लोगों ने जिन्होंने धीरे धीरे अँग्रेज़ी के सर्वथा प्रयोग को घटते और देश के सर्वव्यापी कार्य में हिन्दी को क़दम जमाते देखा है, उन्हें सन्तोष और उल्लास होता है। ऐसे लोगों का स्वप्न है कि अँग्रेज़ी इस देश में केवल अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के लिए रह जाय। यह स्वप्न भी कभी न कभी वस्तुस्थिति में हमारे सामने आ जायगा यह हमारा विश्वास है और सम्मेलन इस विषय में विशेष सहायता कर सकेगा ऐसी आशा है। देश के अहिन्दीभाषाभाषी प्रान्तों में हिन्दी का प्रचार भी सम्मेलन के इतिहास में विशेष गौरव की चीज़ है। आज देश के कोने कोने में जो हिन्दी पढ़े लिखे लोग मिल जाते हैं इसका श्रेय अधिकांश में सम्मेलन को ही है। यह कार्य महात्मा गान्धी और उनके अनुयायियों के विशेष सहयोग से हो सका है, इस बात को उन्हें भी मानना पड़ेगा जो आज गान्धी जी की राजनीति से मतभेद रखते हैं।

ऊपर लिखे कार्य से जो सन्तोष है उसके नीचे ही नीचे एक असन्तोष की धारा भी बह रही है और मेरा अनुमान है कि इधर वह कुछ प्रबल होती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में हमें अपनी संस्था के कार्यक्रम और उसके संचालन पर एक बार नज़र डाल लेनी चाहिए। सम्मेलन की प्राणशक्ति हिन्दीभाषाभाषी जनता और अहिन्दीभाषाभाषी राष्ट्रीय प्रवृत्ति वाले हिन्दी हितैषियों से ही मिलती है। यदि इनका कोई प्रभावशाली समुदाय सम्मेलन से असन्तुष्ट हो जाय तो सम्मेलन की शक्ति क्षीण हो जायगी। उसका प्रभाव कम हो जायगा और धीरे धीरे वह अपनी उपयोगिता खो बैठेगा।

साहित्यिक की अवहेलना ?

कुछ हिन्दी प्रेमियों का विचार है कि सम्मेलन हिन्दी साहित्यिकों की अवहेलना करता है। उनकी प्रतिष्ठा और मान मर्यादा की रक्षा नहीं करता और उन्हें ठेल ठेल कर सम्मेलन के बाहर फेंकता है। और दूसरी ओर सम्मेलन राजनीतिकों को आश्रय देता है, राजनीतिक नेताओं को मान प्रदान करता है और उन्हीं की उँगलियों पर नाचता है। "वीणा" तो इतनी हताश हो गई है कि उसकी सलाह है कि सम्मेलन राजनीतिकों के सुपुर्द कर के साहित्यिक उससे हाथ खींच लें। साहित्यिकों को अलग ही संगठन में लाने के कई प्रयत्न हो चुके हैं। कलाकार-श्रेष्ठ श्री निराला जी ने एक बार इसी आशय से कुछ उद्योग किया था किन्तु वह आगे नहीं बढ़ सका। श्री जैनेन्द्रकुमार जी ने भी हिन्दी परिषद् की आयोजना की थी किन्तु वह भी कुछ दिन चल कर बन्द हो गई। प्रयाग में कुछ उत्साही हिन्दी प्रेमियों ने भी साहित्यिकों का एक महत्वाकांक्षी संगठन बनाया था पर वह भी अधिक उपयोगी सिद्ध न हुआ। साफ़ बात यह है कि कलाकार निरंकुश जीव है और वह किसी विशेष संगठन के बन्धन में नहीं पड़ना चाहता। उसका ध्येय, कर्तव्य, दैनिक चर्या है कला की सुन्दर कृतियाँ उपस्थित करना। उसको इसी से तृप्ति हो जाती है। उसे अधिक से सरोकार नहीं।

सम्मेलन से कविवर मैथिलीशरण गुप्त असन्तुष्ट हैं ऐसा कुछ लोग समझे बैठे हैं परन्तु हमें इसका पता नहीं। सम्मेलन ने उन्हें और आचार्य

रामचन्द्र शुक्ल तथा श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय को मंगलाप्रसाद पारितोषिक भेंट कर जहाँ अपना गौरव बढ़ाया है वहाँ उनकी भी तुच्छ सेवा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया है। स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी को सम्मेलन के पूर्वकालीन कार्यकर्ताओं से जो असन्तोष रहा हो, उसके विषय में हम नहीं जानते पर देहान्त के पूर्व सम्मेलन से सन्तुष्ट होकर, उसकी तुच्छ भेंट "साहित्यवाचस्पति" स्वीकार करके और उसे अपना आशीर्वाद देकर वह इस लोक से गए हैं। सम्मेलन के कार्य संचालन में राजनीतिकों के प्रभाव के विरुद्ध आवाज़ सम्मेलन प्रेमियों में इधर १९३५ वाले अधिवेशन के उपरान्त आरम्भ हुई है। लगातार तीन वर्ष तक राजनीतिकों का ही सभापति होना उनको खल गया और १९३७ में तो सीमा पहुँच गई जब श्री मैथिलीशरण जी ऐसे सुयोग्य विद्वान सभापति न चुने जा सके। इन पंक्तियों का लेखक उस समय कार्य समिति का सदस्य होने के नाते मतों की गणना के समय उपस्थित था और उसको साहित्यिकों की दयनीय दशा का अनुभव हुआ। साहित्यिक और उनके अनुयायी तो यह जानते हैं कि सम्मेलन का सभापति पद ऐसा फल है जो इच्छा करने मात्र से उनके मुँह में गिर पड़ना चाहिए। दूसरी ओर राजनीतिक कार्यकर्ता सार्वजनिक प्रजासत्तात्मक संस्थाओं का अनुभव रखता है। जो बात वह थोड़ा ही हाथ पैर हिलाने से प्राप्त कर लेता है वह साहित्यिक को नसीब नहीं होती। सम्मेलन सार्वजनिक संस्था है और उसमें वही सब गुण अवगुण वर्तमान हैं जो सार्वजनिक लोकमत पर चलने वाली संस्थाओं में होते हैं। फिर खीजना बेकार है। कुछ लोगों की धारणा है कि सभापति निर्वाचन अथवा अन्य निर्वाचनों में सम्मेलन के प्रधान मन्त्री आदि अपना प्रभाव डाल कर हस्तक्षेप करते हैं। यह धारणा निर्मूल है। इधर तीन वर्ष से, जब से मैं प्रधान मन्त्री हूँ, मैं हिन्दी प्रेमियों को विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने किसी के पक्ष या विपक्ष में किसी को इशारा भी नहीं किया है। मन्त्रियों में से किसी ने किसी को, किसी ने दूसरे को, तीसरे ने तीसरे को मत दिया है। कार्यालय को केन्द्र बनाकर कोई नीति नहीं बर्ती गई। जो भी निर्वाचित हो गया उसके साथ श्रद्धा-पूर्वक कार्यालय ने सहयोग किया है। श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी के बारे में भी इसी प्रकार की धारणा बनाना अन्याय है। वह सार्वजनिक लोकमत के

पक्के पोषक हैं और लोकमत के अनुकूल झुकते हैं। जिन सम्मेलन प्रेमियों के पास इस प्रकार का प्रोपैगैंडा पहुँचा है उनसे हमारा विनम्र निवेदन है कि वे इस बारे में उचित जांच करके अपने विचार बनावें। और मेरा निजी विचार है कि राजनीतिकों में भी बहुतेरे साहित्य प्रेमी और साहित्यसेवी हैं। क्या कोई राजनीतिक कार्यकर्ता हो जाने से साहित्य अथवा साहित्यिकों का विद्रोही हो जाता है ? हमारे देश की परिस्थिति—और इस समय तो समस्त संसार की परिस्थिति—ऐसी है कि राजनीति में हाथी के पांव की तरह, सभी बातें समा जाती हैं। राजनीति ने इस समय हमारे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्यकर्ता घसीट रक्खे हैं। सामान्य परिस्थिति में इनमें से कितने ही अन्य क्षेत्रों में काम करते होते।

सम्मेलन का सभापति कौन हो ?

कुछ लोग इस बीसवीं सदी में भी सम्मेलन के सभापति पद को केवल गौरव और प्रतिष्ठा की चीज़ समझते हैं। वे मन्दिर में मूर्ति की स्थापना करना चाहते हैं जिस पर फलफूल चढ़ाकर अपना आदर भाव प्रदर्शित किया जा सके। मेरी समझ में यह दृष्टि ठीक नहीं। सम्मेलन एक कार्यशील संस्था है। उसका सभापति ऐसा होना चाहिए जो अपना विशेष समय सम्मेलन को प्रदान करके उसका बल बढ़ा सके। उसका उद्देश सम्मेलन का उद्देश हो। उसकी महत्वाकांक्षा हिन्दी भाषा को उसके जन्मसिद्ध अधिकार की प्राप्ति कराना हो। यदि राजनीतिक कार्यकर्ता से यह काम चले तो अच्छा; यदि कोरे साहित्यिक से चले तो और भी अच्छा। पर इतना निश्चय है कि हमें चाहिए कार्यशील पुरुष न कि कोई प्रतिमा।

सवाल उठता है कि साहित्यिक है कौन ? क्या केवल कविता लिखने वाला, या गद्य काव्य करने वाला, या काव्य समीक्षा करने वाला ही साहित्यिक है ? अथवा वैद्यकशास्त्र पर अच्छी सामग्री जुटाने वाला, राजनीति अथवा समाजशास्त्र पर उत्तम ग्रन्थ उपस्थित करने वाला, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, दर्शन आदि विभागों में पथ प्रदर्शन करने वाला भी साहित्यिकों में अपनी गिनती कराने की लालसा रख सकता है ? फिर साहित्य का उत्पादन करना एक वस्तु है और उसका अध्यापन, प्रचार, प्रकाशन दूसरी। दोनों

आवश्यक हैं और दोनों को आगे बढ़ाने वाले कार्यकर्ताओं की उपयोगिता है। ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक और असाहित्यिक का व्यर्थ बखेड़ा खड़ा करना क्या हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए श्रेयस्कर है ?

हिन्दी और उर्दू

एक समय था जब हिन्दी वाले उर्दू को कोई भाषा ही न स्वीकार करके उसे हिन्दी की केवल एक शैली मानते थे और उर्दू वाले भी हिन्दी को मरी हुई संस्कृत का रूपान्तर मात्र जानते थे। अब भी अलीगढ़ युनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में हिन्दी का कोई स्थान नहीं। हाँ "भाखा" की रामायन का उल्लेख है। उर्दू के सरपरस्त 'पंडत' सर तेजबहादुर सप्रू को अभी कल तक यही नहीं मालूम था कि हिन्दी में भी कोई काव्य संभव है। परन्तु अब नीति और कार्यशैली अधिक स्पष्ट होती जा रही है।

अब नागरी प्रचारिणी सभा, काशी भी उर्दू को भाषा स्वीकार करके उसके विरुद्ध आन्दोलन करती है और सम्मेलन को भी लोग उसी पथ पर घसीटे ला रहे हैं। अभी तक सम्मेलन पूर्वनिश्चित नीति से कार्य करता रहा है। उसकी दृष्टि राष्ट्रीय रही है और इस कारण वह व्यर्थ के वाग्जाल में नहीं पड़ना चाहता। उसको कौन सी भाषा अभीष्ट है यह उसके कार्य और प्रकाशनों से मालूम कर लेना चाहिए। राष्ट्रभाषा के विषय में उसने जो २४वें अधिवेशन में छूट दे रक्खी है उसे वह साहित्य के क्षेत्र में नहीं देना चाहता—यह २७वें अधिवेशन के निश्चय से स्पष्ट है। दोनों निश्चय नियमावली के पृ० २ पर अंकित हैं। यहां प्रश्न उठता है कि क्या सम्मेलन दो विभिन्न भाषाओं का विकास देखना चाहता है अथवा क्या राष्ट्रभाषा केवल बोल-चाल की चीज़ रहेगी और साहित्य की भाषा दूसरी। प्रश्न गंभीर हैं। इनका उत्तर मांगने वाले देश की परिस्थिति की ओर ठंडे दिल से दृष्टिपात नहीं करते। सिन्ध, सीमाप्रान्त, पंजाब में संस्कृतगर्भित शैली का अभी चल पाना संभव नहीं जान पड़ता। विवश होकर हमें इस समय एक बीच का रास्ता लेना पड़ा है। भविष्य की बात भविष्य निश्चय करेगा अथवा कांस्टि-टुएंट असेम्बली। उसके लिए हमें बल संचित करते रहना चाहिये।

लिपि के बारे में सम्मेलन की नीति दृढ़ और अटल है—देव नागरी। और माहत्मा गान्धी के विचार सर्वथा इसके ही पक्ष में हैं। सम्मेलन के किसी

विभाग ने न कभी उर्दू लिपि का प्रचार किया और न विदेशी शब्दगर्भित भाषा का। जो लोग इस प्रकार की धारणा बनाए हुए हैं उन्हें वस्तुस्थिति का ज्ञान प्राप्त करके अपनी शंकाओं का निवारण कर लेना चाहिए।

उच्चकोटि का साहित्य

कोई कोई मनचले यह भी आक्षेप करते हैं कि सम्मेलन ने उच्चकोटि के साहित्य की सृष्टि नहीं की। ऐसे आलोचक यह भूल जाते हैं कि उत्तम साहित्य की सृष्टि व्यक्तियों के वश की चीज़ है, संस्थाओं की नहीं। संस्थाएँ केवल उत्तम कृतियों और कलाकारों को प्रोत्साहित और सम्मानित कर सकती हैं। सम्मेलन भी अपनी शक्ति भर यह करने का उद्योग करता है। पारितोषिकों का आयोजन इसी अभिप्राय से है। यदि पूर्वकाल में किसी महानुभाव का समादर नहीं हो सका है अथवा वर्तमानकाल में कुछ श्रेष्ठ कलाकार अब भी पारितोषिक से वंचित रहे हैं तो इसमें सम्मेलन का विशेष अपराध नहीं। सम्मेलन को धन, जन की और शक्ति मिले तो अधिक सेवा कर सके। इस विषय में कभी कभी दबी ज़बान से अन्याय का आक्षेप भी किया जाता है। कहते हैं कि प्रेमचन्द जी को पारितोषिक न देकर सम्मेलन सदा के लिए अपयश का भागी बन गया। मैं फिर विनयपूर्वक सार्वजनिक संस्थाओं के गुण दोषों की ओर आलोचकों का ध्यान आकर्षित करता हूँ। बहुत से हिन्दी के दिग्गज चिरकाल तक प्रेमचन्द जी को हिन्दी का लेखक ही नहीं स्वीकार करते थे। संभव है यह बात पक्षपात से प्रेरित रही हो। परन्तु इस प्रकार की एकाध त्रुटियाँ सभी संस्थाओं के जीवन में आ सकती हैं। उनसे संस्था दूषित नहीं होती, किन्तु उस समय के त्रुटि करने वाले परिवर्तनशील कार्यकर्ता ही दूषित होते हैं। हमने हमेशा यह कोशिश की है कि पारितोषिकों के लिये उत्तम से उत्तम रचनाएँ प्रतियोगिता में आएँ। निर्णायक भी पक्षपातशून्य लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों को रखने का ही उद्योग रहा है। परन्तु प्रतियोगिता में उत्तम रचनाएँ लाने के प्रयत्न में कभी कभी व्यक्तियों के असहयोग के कारण हतोत्साह होना पड़ता है। एक महानुभाव से हमने अनुरोध किया कि अपनी कृति की प्रतियाँ पारितोषिक में प्रतियोगिता के लिए भेजने की कृपा करें। उन्होंने ऐसा कृपापूर्ण उत्तर दिया कि आज भी मैं अपनी टोपी अपने दोनों हाथों में थाँभे बैठा हूँ।

उच्चकोटि का साहित्य तय्यार करने के लिए पारिभाषिक शब्दों के एक उत्तम कोष से बड़ी सहायता मिल सकती है। इसीलिये दो वर्ष पूर्व ऐसा कोष बनाने का एक प्रस्ताव शिमला वाले अधिवेशन में स्वीकार हुआ। स्थायी समिति ने एक उपसमिति के सुपुर्द यह काम किया और उसके संयोजक बनने को एक चतुर्मुख (चार शास्त्रों के एम्० ए०) विद्वान ने अपनी सेवाएँ सेवाभाव से स्वयं अर्पित की और कहा कि १००) प्रारम्भिक व्यय के लिए हमको दे दिया जाय और आगे के लिए हम धनादि संग्रह का स्वयं प्रबन्ध कर लेंगे। उनकी इच्छानुसार १००) उनके पास भेज दिये गए। परन्तु उन्होंने ही एक वर्ष के उपरान्त मंच पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से घोषित कर दिया कि सम्मेलन ने धन की सहायता नहीं की और काम जहाँ का तहाँ रुका पड़ा है।

इस परिणाम को उन महानुभाव की प्रभावगरिमा की मिथ्या धारणा कहा जाय या हिन्दी वालों की अवहेलना। और ऐसे लोग सम्मेलन को सुमार्ग पर ले आने का दावा करते हैं ! एक और उच्च कोटि के साहित्यिक हैं जिनको सम्मेलन में "अन्धेरगर्दी", "चुनाव में चालाकी" आदि ही दृष्टिगोचर होती है और आए दिन आक्षेपात्मक प्रस्ताव स्थायी समिति में भेजना ही अपना कर्तव्य समझते हैं और चाहते हैं सम्मेलन के वैतनिक कर्मचारियों पर रोब गाँठ कर अनुचित लाभ उठाना ! यदि इसी प्रकार के साहित्यिकों को शिकायत है कि सम्मेलन ठीक काम नहीं करता तो इनको सन्तुष्ट करना हमारी शक्ति के बाहर है और हम अपने को दोषी मानते हैं।

सम्मेलन सत्साहित्य के अच्छे ग्रन्थों का प्रकाशन करना चाहता है। सौभाग्य से उसके पास इस समय कुछ रुपया इस निमित्त है। हम अच्छे ग्रन्थों की खोज में हैं। यदि इस बहाने हम किसी साहित्यिक का उपकार कर सकें तो हम अपने को धन्य समझेंगे।

साहित्यिक अंगों की पूर्ति

सम्मेलन ऐसी संस्थाओं का यह भी एक कार्य हो सकता है कि समय समय पर वर्तमान साहित्य के अंगों की समीक्षा करके ऐसे अंगों की ओर हिन्दी संसार का ध्यान आकर्षित करे जिनकी पूर्ति के लिए विशेष उद्योग वांछनीय है। इसी अभिप्राय से सम्मेलन ने वार्षिक अधिवेशनों के अवसर

पर होने वाली परिषदों की आयोजना की थी। परन्तु यह परिषदें अभी इतनी सफल नहीं हो सकीं जिससे भविष्य के कार्य में कोई मार्गप्रदर्शन हो सके। हां यदि यही हिन्दी के साहित्यिकों का हार्दिक सहयोग प्राप्त कर सकें तो सफलता मिल सकती है। पर सहयोग मिले कैसे ? गिने चुने साहित्यिकों को इकट्ठा करके विचार विनिमय करने की बात हमें सुझाई गई है। परन्तु पूर्व इसके कि हम कुछ लोगों को निमन्त्रित करें, मेरा अनुरोध है कि सहृदय कलाकार स्वयं विचार करें कि किस किस दिशा में क्या क्या कार्य सम्मेलन को करना चाहिए और अपने विचारों को व्यवहारिक रूप में लिख कर हमारे पास भेजने का अनुग्रह करें। ऐसे कुछ प्रस्ताव आ जाने पर हम इस सम्बन्ध में आवश्यक उद्योग करेंगे।

प्रामाणिक रूप

हिन्दी भाषा के रूपों की विभिन्नता दूर करके प्रामाणिक (स्टैंडर्ड) रूप उपस्थित करना भी सम्मेलन ऐसी संस्था का कर्तव्य होना चाहिए और ऐसी हर एक बात के बारे में उसकी एक नीति होनी चाहिए। इसकी आवश्यकता का अनुभव तो हर एक विचारशील हिन्दी वाले को होता है। पग पग पर इस प्रकार के प्रश्न आते हैं। जिनको स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों के देखने का अवसर प्राप्त हुआ है अथवा परीक्षार्थियों की पुस्तकें आँकने का काम पड़ा है वे तो इसकी आवश्यकता का और भी अनुभव करते हैं। कारक सूचक शब्द संज्ञाओं के साथ मिलाकर लिखे जायं या अलग, जावेंगे लिखें या जायंगे इत्यादि उदाहरण हैं। परन्तु इस प्रकार के प्रामाणिक रूप उपस्थित करने के मार्ग में बड़ी कठिनाइयां हैं। हमें अपने लेखकों और अध्यापकों का एकमत प्राप्त करना कठिन जान पड़ता है। और बहुमत से कोई बात तय की गई तो कल को ही अल्पमत वाले अपनी अलग खिचड़ी पकाने को उद्यत हो जायंगे। सम्मेलन ने लिपि सुधार का प्रश्न उठाकर इसी प्रकार का झंझट मोल लिया। तीन साल तक बराबर यह विषय जनता के संमुख रहा। आलोचनाएँ, प्रत्यालोचनाएँ हुईं। अन्त में एक योजना सम्मेलन द्वारा स्वीकृत हुई—अच्छी या बुरी। जब कार्यरूप में परिणत करने का प्रश्न आया तो हमारी इच्छा हुई कि अन्य हिन्दी संस्थाओं का सहयोग प्राप्त कर लिया जाय। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी को साथ लेने की कोशिश

की गई। सभा ने मालूम नहीं विचार किया या नहीं पर हमें उनका साथ न मिल सका और फलस्वरूप सम्मेलन के काशी अधिवेशन में इस विषय की जो छीछालेदर हुई उसके बारे में क्या कहा जाय! वहाँ भाषा विज्ञान और लिपि विज्ञान का ऐसा पांडित्य देखने को मिला कि बुद्धि चकित हो गई! और हम अब भी हैं जहां के तहां!

अक्षर विन्यास के सुधार की कितनी ज़रूरत है इसका भी विचारशील सज्जनों को अनुभव होगा। कई प्राचीन ध्वनियों का उच्चारण हिन्दी से सदा के लिए मिट गया है परन्तु उनके द्योतक वर्ण अब भी हमारी वर्णमाला में चले आ रहे हैं—जैसे ऋ और ष। इनको हिन्दी वर्णमाला से हटा कर ऐसे शब्दों को जिनमें यह वर्ण आते हैं उन ध्वनियों से अंकित करना चाहिए जो हम वस्तुतः बोलते हैं, जैसे ऋषि को रिशि लिखना श्रेयस्कर है। इस प्रकार के परिवर्तन के पक्ष में डा० धीरेन्द्र वर्मा ऐसे परिवर्तनभीरु पथप्रदर्शक ने फ़ैज़ाबाद के प्रान्तीय सम्मेलन में प्रस्ताव रक्खा था परन्तु वह टाल दिया गया। ऐसी परिस्थिति में कैसे क़दम आगे बढ़ाया जाय?

अन्य शिकायतें

कुछ दिन हुए एक समाचार पत्र में श्री राधादेवी गोयेनका का एक पत्र प्रकाशित हुआ था जिसमें उन्होंने शिकायत की थी कि सम्मेलन निर्जीव है, उसमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर ऐसी आत्मा की तपस्या नहीं लगी है। सम्मेलन का संगठन कांग्रेस के समान व्यापक हो जाना चाहिए इत्यादि। शिकायत सद्भावना से की गई थी, इसलिए हम उक्त देवी जी के अनुगृहीत हैं। सम्मेलन में जीवन की कमी भले हो पर वह निर्जीव नहीं है। उसमें श्री पुरुषोत्तमदास टंडन की सारे जीवन की तपस्या है। उनको यह संस्था संतानवत् प्रिय है और वह सदा इसका ध्यान रखते हैं। कुछ लोगों को शिकायत है कि टंडन जी जिधर चाहते हैं सम्मेलन को उंगलियों पर नचाते हैं। उन्होंने यह संस्था बनाई है, तब यदि उनका नेतृत्व और अनुभव हमें मिलता है और कार्यकर्ता और सदस्य उनकी बात मानते हैं तो इसमें क्या बुराई है? श्री टंडन जी ने एक बार भी नियमों का उल्लंघन नहीं किया। नियमानुकूल सदस्यों को साथ ले चलते हैं और यदि कभी बहुमत उनके विरुद्ध हुआ तो उसे वह सहर्ष स्वीकार करते हैं। इसके अनेक उदाहरण मौजूद हैं। फिर सम्मेलन पर

डिक्टेटरशिप का लांछन करना अनुचित और असंगत है।

हमारे नित्यप्रति के कार्य में कभी कभी शिकायतें उठती हैं। श्री राधादेवी जी ने परीक्षाओं के संचालन के बारे में कुछ आक्षेप किए हैं। हमारा उनसे तथा अन्य हितैषियों से अनुरोध है कि इस प्रकार की कोई त्रुटि उनकी दृष्टि में आए तो कृपा कर तुरन्त उसके बारे में हम लोगों को सचेत करें। उत्तर सन्तोषजनक न मिले तो प्रधान मन्त्री को अलग से पत्र लिख कर सूचित करें। हमें शिकायत है कि हिन्दी जनता चुप बैठ कर अपनी और अपने संगठन की कमज़ोरी दिखाती है।

सम्मेलन में अधिकार प्राप्त करने का उपाय

सम्मेलन समस्त हिन्दी जनता को मताधिकार देकर उसका सहयोग प्राप्त करना चाहता है। १) वार्षिक चन्दा देने से वोट के सभी अधिकार प्राप्त हो जाते हैं और वर्तमान समय में तो 'सम्मेलन पत्रिका' भी जिसका वार्षिक मूल्य १) है सब सदस्यों को बिना मूल्य मिलती है। सदस्यता का शुल्क इतना कम रखने का अभिप्राय ही यह है कि हिन्दीहितैषी सम्मेलन में प्रवेश पाकर अपने सहयोग से इस संस्था को उन्नति के उच्च शिखर पर बिठा दें। परन्तु हिन्दी वालों की उदासीनता देखकर क्षोभ और ग्लानि होती है। उदासीनता तो नितान्त अक्षम्य है। ग़ालिब का एक शेर है—

क़िता ताअल्लुक़ न कीजिए हम से
कुछ नहीं है तो अदावत ही सही।

आप हमारे साथ रहिए चाहे हर समय आलोचना करते रहिए। यदि आलोचना सद्भाव से है तो कभी न कभी हम अपनी बात आप को या आप अपनी बात हमें समझा सकेंगे।

सहयोग के विषय में हिन्दी पत्रकारों का विशेष उत्तरदायित्व है। उनसे निवेदन है कि वह हिन्दी भाषा और साहित्य के बारे में अपने पत्रों में अधिक से अधिक चर्चा करें। ज़रा सी हिन्दी के अहित की बात सुन पाएँ तो आन्दोलन द्वारा अत्याचारी की नाक में दम कर दें। तभी हमारी शक्ति बढ़ेगी। साथ ही जनता को ठीक राष्ट्रीय मार्ग का प्रदर्शन करावें और व्यक्तियों के लड़ाई झगड़े से संस्थाओं को ऊपर बनाए रखने का उद्योग करते रहें।

इन पंक्तियों में मैंने उच्च स्वर से सोचने की कोशिश की है जिसको अंग्रेज़ी में 'लाउड थिंकिंग्' कहते हैं। किसी का दिल दुखाने का ज़रा भी अभिप्राय नहीं है। लोगों को उनके कर्तव्य की ओर प्रेरित करना ही ध्येय है। इच्छा है कि हिन्दी संसार जाग उठे। पत्र सम्पादकों से अनुरोध है कि वे इस लेख को अपने पत्रों में उद्धृत करके इस विषय में अपने विचार प्रकट करने का अनुग्रह करें।

नागरी भाषा या बोलचाल

[लेखक—स्वर्गीय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन']

यह वह विषय है कि जिसमें बड़े २ बुद्धिमानों ने अपने शक्त्यानुसार दिल दौड़ा और बुद्धि को बहुत श्रम दे, कलम को घिस डाला और बड़े २ लम्बे चौड़े तख़्तों की गड्डियाँ की गड्डियाँ रंग डालीं, आज हम भी उसी विषय की विवेचना पर तत्पर हो कलम उठाते हैं।

देखना चाहिए कि बहुतेरों का मत है कि नागरी भाषा अथवा हमारी आर्य्य भाषा यह कदाचित् यहाँ की भाषा नहीं, और न देश के किसी भाग व प्रान्त में कभी बोली चाली जाती थी, और न अब भी ठीक कहीं बोली जाती है; यह केवल यारों की इजादेजदीद और नवीन कल्पना है।

कितनों की यह राय है कि ज़बान उर्दू को हिन्दी हर्फ़ों में लिखने से नागरी नाम होता है और कोई कहता है कि यह खिचड़ी पँचमेल है, और बेबुनियाद और निर्मूलक वस्तु का नमूना है। अनेक अनेक भाषाओं के जैसे अरबी, फ़ारसी, तुर्की, ईरानी, तूरानी के शब्दों से इसकी शोभा बतलाते, बल्कि इसके व्याकरण में अरबी की गर्दान, और तमाम जहान् के ज़बान की, पूरी योग्यता होने पर वर्णमाला पढ़ने के योग्य होना योग्य ठहराते हैं।

और कोई ऐसे हैं कि वे दूसरी भाषा के लफ़्ज़ों से कसम खा, चाहे आठ शब्द से भी कठिन से कठिन, खुद जिसे कोश या लोग़त् देख कर निकाल-निकाल लिखेंगे, चाहे पढ़ने वाला न समझे; पर प्रचलित और आमफ़हेम भी हों, तो भी दूसरी भाषा के शब्द न रखकर अवश्य उसका अनुवाद (तर्जुमा) करके लिखने को भाषा कहते हैं। कोड़ियों कृपानिधान कुढ़ित हो कहते हैं,

कि भाषा बनाई नहीं जाती, किन्तु जो हमारे लड़के बाले औरतों से मिले, और जिसे हम भी उनके साथ बोलते चालते हैं, वही भाषा है, यों आप लोग आक़बत का डर छोड़ आज कल के अदालत के इज़हार की तरह जो चाहिये कह डालिये।

ख़ैर! अब मैं पूछता हूँ कि यदि यह भाषा यहाँ की नहीं तो क्या योरोप, अमेरिका या अफ्रीका के किसी जंगली वा पहाड़ी असभ्य जाति की है, वा काबुल के मोग़लों की, वा दुनिये के बाहर कहीं के शैतानों की बोली है, और वहीं रायज़ है। बङ्गाल देश की बोली बँगला, गुजरात की गुजराती, ओड़ीसा की ओड़िया, और तैलङ्ग की तैलङ्गी, महाराष्ट्रों की महाराष्ट्री, इसी प्रकार अँग्रेज़ी की अँग्रेज़ी जर्मनियों की जर्मनी, और अरब की भाषा अरबी के होने में क्या प्रमाण है? अन्त को इस प्रश्न का यही उत्तर है कि "हाथ के कङ्गन को कहा आरसी" जो भाषा जहाँ की है वहाँ बोली और बर्ती जाती है, समाचार पत्र और किताबें उसी बोली में लिखी जाती हैं।

तो फिर क्या कारण कि हमारी भाषा जिसका कि अर्थ ही बोली है हमारी भाषा न समझी जाय; और आर्य्य भाषा अनार्य्यों की वा हिन्दी, हिन्दुओं की छोड़ मुसलनानों की ठहराई जाय।

रहा यह कि यह (ईजाद जदीद) अर्थात् नवीन निर्मित है, और आज कल के लोगों ही से इसने जन्म पाया, तो पहले हमैं इतना ही कह देना काफ़ी होगा, कि भाषा तो बनाई नहीं जा सकती किन्तु स्वम् बन जाती हैं, और यदि यह भाषा नवीन है तो आगे के लोगों की बोली फ़ारसी थी वा अर्बी? या अगले मनुष्य गूँगे थे? या बोलने की आवश्यकता ही न थी? और सहस्त्रावधि ग्रन्थ जो आज इस भाषा में मिलते हैं, और तुलसीदास, सूरदास को छोड़ चन्द इत्यादि कवियों की कविता प्राचीन नहीं क्या आज बनाई गई हैं; लोग चट कह बैठेंगे कि हज़रत आप वृजभाषा को क्यों साने डालते हैं?

तो जानना चाहिये कि प्रथम जब संस्कृत यहाँ की मुख्य सभ्य समाज, राजपाट और सरकार दरबार में बोली चाली या वर्ती जाती थी, गद्य पद्यमय कवितामात्र इसी भाषा में बनती नृत्यादि में संस्कृत गान और संस्कृत के नाटकों के अभिनय सर्वसाधारण न केवल देखते किन्तु उनके गूढ़ार्थ को

समस्त प्रकार से समझते थे। रात दिन की बोलचाल के फेरफार में, ग्राम्य, और स्त्रियादिकों से उसके अशुद्ध उच्चारण, और लाघव के कारण प्रकृति से सिद्ध प्राकृत प्रचलित भई, अर्थात् नागरिक और सभ्यजनों के अतिरिक्त ग्राम्य और असभ्य, ग्राम और दिहातों की घरऊ बातचीत की भाषा और प्रायः स्त्रियों के नाज़ व अन्दाज़ के कारण नज़ाकत व वजःदारी से रहित न हो प्रचलित थी कि आज तक संस्कृत के नाटकों में स्त्रियों की बोली प्राकृत ही रहती है, और इसी प्रकार सूरसेनी, मागधी, पैशाची, इत्यादि प्राचीन भाषा देशकाल के अनुसार प्रचलित और नष्ट होती गईं। सारांश यह कि सदा से एक नागरी और दूसरी ग्राम्य भाषा प्रचलित रहीं।

परन्तु अत्यन्त आदि काल में जिसे सृष्टि का आदि कहो वा सत्ययुग, मनुष्यों के पूर्व अवस्था का प्रथम समय अथवा सभ्यता की पहिली झलक देख पड़ने की वेला उस समय केवल एक बोली बोली जाती थी; क्योंकि वह इसके प्रादुर्भाव का समय था, मानो तब इस बीज अर्थात् सार्थक शब्द ने केवल एकही अंकुर निकाला था कि जिसका नाम देववाणी अर्थात् वेद भाषा है। इस वेद भाषा अर्थात् देववाणी का संस्कृत से बहुत कम सम्बन्ध था, बल्के उसको पहली अथवा पुरानी संस्कृत कहना योग्य है कि जिसे अब के संस्कृत के बड़े २ विद्वानों को (सो भी केवल वे कि जिन्हें उस पूर्वोक्त अर्थात् वेद भाषा के ज्ञान की समस्त सामग्री और अङ्गों से ज्ञान है) छोड़ कदापि साधारण संस्कृत के पण्डित नहीं समझ सक्के; राजपाट, सर्कार दर्बार, हाट बाजार और सर्व साधारण या आम व ख़ास, क्या सभ्य और क्या असभ्य, क्या नागरिक और क्या ग्राम्य, सब इसी को बोलते और बर्तते, क्या कविता क्या साधारण लेख वा धर्म्म पुस्तकें सब इसी में लिखी जाती थीं। सारांश यह कि समस्त संसार मात्र की भाषाओं की माँ कहो या दादी, खान कहो वा मूल (जड़) अथवा मूल का बीज रूप सब पूर्वोक्त रीति और वर्णन के अनुसार प्रथम ही अकेली इस पवित्र भूमि भरत खण्ड में, अखण्ड प्रताप से युक्त हो जन्म ग्रहण कर अपना राज्य स्थापन किया, और समस्त प्रकार के मनुष्यों के उपकार और ज्ञान की उदय कराने वाली और लाभ पहुँचानेवाली लौकिक और पारलौकिक अशेष विद्याओं को इसने प्रकाश में किया। इसी भाषा के बोलने वाले ऋषियों ने बाँसों की पोपियों और केवल नेत्रों ही के द्वारा निरजन

जङ्गलों और पर्वतों के शृङ्गों पर अकेले अपने बुद्धि की तीक्ष्णता से सब तारागणों और नक्षत्रों को पहचाना, उनकी गति और चाल के महा कठिन और असंख्य हिसाबों को उँगलियों पर गिन २ कर ठीक ऐसा शुद्ध बताया कि आज तक पाव रत्ती का विरोध कहीं से न आया कि जिनको आधुनिक बड़े २ भारी अङ्गरेज़ विद्वान् लाखों क्या करोड़ों रुपये लगा लगा दुर्बीन और कलों के ढड्‌ढे खड़ाकर उसे जाँचते और मिलाते, और उस समय के उनके दिखाये दरों के देखने को इतने आलङ्काल और मकान क्या किन्तु हाते के हाते भरी हुई पुस्तकों और यन्त्रों को उलट पुलट करते और सोचते २ दाँत तले उँगली दबाते पर अन्त को उसे ठीक और यथार्थ पाते हैं। न केवल यही विद्या किन्तु जितने सूत्र हमारे महामान्य पूज्यपादारविन्द ऋषियों के हैं अथवा और भी जो आर्ष ग्रन्थ हैं, उनके देखने ही से यह निश्चय हो जायगा कि ये काम उन्हीं के थे जिन्होंने किये और यह भाग वा हिस्सा विद्या का उन्हीं के बाँटे में भगवान ने दे दिया, फिर न केवल एक विद्या किन्तु क्या ज्योतिष, क्या व्याकरण, क्या न्याय, और क्या मीमांसा, क्या सांख्य, और क्या योग, क्या वेदान्त, क्या शिक्षा, कल्प, निरुक्त, वैद्यक, शास्त्र, काव्य, रसायन, सङ्गीत, शिल्प, तन्त्र, मन्त्र, भूगोल, गणित, और नीतिशास्त्र, धर्म्मशास्त्र, इतिहास, पुराण, नाटक, प्रहसन, भँड़ और कहाँ तक कहें क्या न था ; इन पूर्वोक्त विद्याओं में जो बड़ी हैं बड़ा मज़ा है कि वेई प्राचीन हैं।

यद्यपि अब महात्मा मुहम्मदीयमतावलम्बी बादशाहों की कृपा से हमैं उस समुद्र का एक चुल्लू पानी मिला वा बच कर शेष रह गया कि जिसके इतने बच रहने का भी आश्चर्य्य है। ईश्वर की सृष्टि जो कभी किसी वस्तु से रहित नहीं होती, अतएव लाख उपद्रव अग्नि से जली रस्सी की ऐंठन से उसके पूर्व रूपका अनुमान करना पड़ा, तिस पर ये सब आज मौजूद और प्रस्तुत मिलते फिर उस संस्कृत के चमकीली चमक की क्या दशा रही होगी स्थाली पुलक न्याय से जानने योग्य है।

निदान जब वह देववाणी अर्थात् शब्द भाषा जो मनुष्य के सृष्टि के साथ स्वयम् सृष्टि पाई, अथवा सृष्टि में आई अर्थात् मनुष्य के आत्मीय विषयों में गणना योग्य हुई, वा नेत्र में दृष्टि और नासिका में गन्ध के तुल्य रसना इन्द्री में रस ज्ञान के संग वाक्शक्ति भी आई अर्थात् बोल निकली

और स्वाभाविक उत्पत्ति से उत्पन्न हुई, जैसे कि घोड़े का हिनहिनाना, हाथी का चिंघाड़ना, गदहे का रेंकना, कुत्ते का भौंकना, एवम् मोर का कूकना, सारस का चीखना इसी रीति भुजङ्गियों का 'ठाकुर जी' 'नवीजी मेजो' इत्यादि की रीति जैसे प्रायः बहुतेरी चिड़ियाओं का सार्थक शब्द तथा पद और वाक्य का कहना; अथवा ईश्वर की स्वाभाविक शिक्षा से शिक्षित हो अपने कंठ वा जिह्वा से उसके प्रयोजन के अनुसार तथा रूप गुण के तुल्य बोली का बोलना सीखना वा आरम्भ किया, मनुष्य भी अपनी बोली बोलने लगा। लोग कहेंगे कि इस बोल को तो आप अपनी ओर से सार्थक बनाते हैं और आपके मानने से वे सार्थक होती हैं, किन्तु हैं वे निरर्थक, नहीं तो वे भला अज्ञानी जीव सार्थक शब्द क्या जानें ? परन्तु ऐसा समझना ठीक नहीं है क्योंकि मानने ही से शब्द सार्थक होते हैं, यदि न मानें जावें तो क्या चारा है, घट का अर्थ घड़ा न मानने वाले को कौन समझा सकता है, लड़का यदि रोटी को टोटी पुकारै जब तक हम उसे रोटी का वाची न मानें कैसे काम चलेगा, वा किसी पञ्जाबी के कोड़ा कहने को घोड़ा वा बंगाली के लोख्खी कहने को लक्ष्मी न मानै तो कभी ठीक न होगा; क्योंकि जिस शब्द को जिस वस्तु के अर्थ के लिए एक मंडली के मनुष्यों ने नियत किया है वही उस अर्थी का अर्थ है; रहा यह कि वे अज्ञानी जीव केवल निष्प्रयोजन और व्यर्थ बोलते हैं वस्तुतः उनसे कुछ अर्थ से सम्बन्ध नहीं रहता, तो यह सन्देह केवल इसी बात पर ध्यान देने से जाता रहता है कि प्रायः देखने में आया है कि एक चिड़िया एक बोली बोली, और सब वहाँ पहुँच चारा चुगने लगीं, किसी प्रबल पक्षी को देख एक बोली बोली कि सब एक साथ उड़ गईं, तो इससे निश्चय हुआ कि पशुपक्षी आदि भी केवल व्यर्थ बोली नहीं बोलते किन्तु बचन द्वारा अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने कार्य्य को साध्य कर सकते हैं। निदान इसी रीत मनुष्य भी प्रथम ही प्रथम जो स्वाभाविक सार्थक वचन बोलने लगे उसी का नाम देववाणी अर्थात् देवताओं की बोली अथवा ईश्वरी बोली या अमानुषी भाषा, वा जिसकी रचना मनुष्य द्वारा न हो केवल दैवी कृपा और कर्त्तव्य से हुई है; क्योंकि यदि वह कहै कि भाषा मनुष्य ने बनाया, और जो २ वस्तु देखते गये एक २ शब्द उसके लिए नियत करते गये, तो यह बात ध्यान में नहीं जँचती, क्योंकि मनुष्य की तो

इस रीति पर व्यवस्था हुई, परन्तु भुजङ्गी को ठाकुर जी वा इसके तुल्य वाक्य बोलने का किसने नियम किया कि जिसमें आज तक कुछ भी हेर फेर न हुआ; इससे निश्चय हुआ कि ऐसा नहीं है। देखिये प्रथम जब लड़का बोलना आरम्भ करता है माँ ऐसा शब्द उच्चारण करता है, यही कारण है कि प्रायः माता शब्द मकार से अधिक सम्बन्ध रखता है, यथा मां, माई, माता मातर, मादर, मांमां, अम्मा, अम्बा इत्यादि; परन्तु जैसे शुक सारिकादि पक्षी मनुष्य के सिखाने के अनुसार शिक्षित हो बात चीत करने लगतीं हैं, और आश्चर्य्य जनक व्यापार और बोलियां बोलती हैं, इसी रीति मनुष्य में अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि और चतुर जनों तथा देवता, ऋषि, मुनि, द्वारा वह स्वाभाविक भाषा अर्थात् देववाणी वा वेद भाषा संस्कार पाकर अर्थात् सुधर कर और सुडोल तथा नियम वद्ध होकर, वा नूतन सभ्यों की सभ्यता के संस्कार से संस्कृत नाम धारण किया, और नवीन दुति के कारण चमक दमक में देववाणी से भिन्न शोभा को प्राप्त भई मानों जटाम (अर्थात् वे साफ़ किये रेशम यी जटा) से शुद्ध साफ़ किये रेशम के लच्छे के तुल्य हुई, कि मानों तभी प्रथमतः मनुष्य ने भाषा में काट छाँट आरम्भ किया, और उस ईश्वरी भाषा देववाणी रूपी वीज से प्रथम हीं यह संस्कृत रूपी अङ्कुर निकला जिसके पल्लवित वृक्ष की नागरी एक प्रमुख शाखा है।*

---

* स्वर्गीय प्रेमघन जी ने यह लेख भाद्रपद संवत् १९३८ वि० में लिखा था। इसका मूल ज्यों का त्यों रखा गया है। सं० स० प०

———

राष्ट्रभाषा का स्वरूप

(लेखक—श्री चन्द्रवली पांडे, एम्० ए०)

[प्रयाग विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् की ओर से गत २३ नवम्बर ३९ को एक सभा हुई थी जिसमें "राष्ट्रभाषा का स्वरूप" इस विषय पर कई विद्वानों के व्याख्यान हुए थे। सभापति थे डा० धीरेन्द्र वर्मा। सर्व श्री काका कालेलकर, पुरुषोत्तमदास टंडन, जवाहरलाल नेहरू, रंजीत पण्डित, वेंकटेश नारायण तिवारी, कृष्णकान्त मालवीय, डा० ताराचन्द, डा० बाबूराम सक्सेना तथा चन्द्रवली पाँडे जी ने अपने अपने मत प्रकट किये थे।

विचार था कि ये व्याख्यान पुस्तकाकार छपा दिए जायँ और इसी दृष्टि से वक्ता महोदयों से प्रार्थना की गई थी कि अपने व्याख्यानों को लिख कर भेज दें। खेद है कि अभी तक अन्य महोदयों के व्याख्यान प्राप्त नहीं हुए हैं। केवल श्री चन्द्रवली पांडे जी ने अपना व्याख्यान भेजा है जो यहां पाठकों के सामने है। इससे हिन्दी के विषय में कई भ्रान्तियां दूर हो जाती हैं। हम पांडे जी के आभारी हैं।

प्रधान मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग]

राष्ट्रभाषा के स्वरूप के संबंध में अब तक बहुत कुछ कहा गया है पर उस बहुत कुछ में वह कुछ कहाँ है जो हमारे राष्ट्रजीवन का ज्योतिस्तम्भ अथवा हमारे राष्ट्रहृदय का आदर्श है। किसी भी भाषा के प्रसंग में उसकी प्रकृति और प्रवृत्ति की उपेक्षा हो नहीं सकती फिर चाहे वह कोई देशभाषा हो चाहे कोई राष्ट्रभाषा। हो सकता है कि कुछ सज्जन हमारे इस कथन से भरपूर सहमत न हों और भाषा के प्रवाह में उसके स्रोत को उतना महत्त्व न दें जितना कि उसके लक्ष्य को। ठीक है। यही सही। हम भी आज राष्ट्र-भाषा की प्रकृति को उतना महत्त्व नहीं देते जितना कि उसकी प्रवृत्ति को दे रहे हैं। परन्तु इसके विषय में भी हमें आप लोगों से कुछ निवेदन कर देना है। इसमें तो तनिक भी सन्देह नहीं कि हमारी सच्ची राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जिसकी प्रवृत्ति राष्ट्र की प्रवृत्ति हो और जो राष्ट्र के साथ सती

होने के लिये सदा तैयार रहे। जिस भाषा को राष्ट्र की परम्परा से प्रेम नहीं, जिस भाषा को राष्ट्र के गौरव का ध्यान नहीं, जिस भाषा में राष्ट्र की आत्मा नहीं, वह भाषा राष्ट्र की भाषा क्यों कर कही जा सकती है। किसी भी राष्ट्र-भाषा के लिए यह अनिवार्य है कि उसके शब्द शब्द राष्ट्र राष्ट्र की पुकार मचाने वाले और अराष्ट्रीय भावों को धर दबाने वाले हों। यदि उसके शब्दों में यह राष्ट्रनिष्ठा और यह राष्ट्रशक्ति नहीं तो वह राष्ट्रभाषा तो है ही नहीं और चाहे जो कुछ हो।

जो लोग भारत को एक राष्ट्र ही नहीं समझते अथवा भारत की राष्ट्र-भावना को कल की चीज समझते हैं उनसे कुछ निवेदन करना व्यर्थ है। पर जो लोग भारत की एकता के कायल हैं और पदपद में उस एकता की व्यापक व्यंजना पाते हैं उनसे यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं रही कि उस एक भारत की एक भाषा भी बहुत दिनों से चली आरही है। इसलाम के आ जमने से पहले जिसे हम अपभ्रंश या नागरापभ्रंश कहते थे उसी को अब 'रेखता' या 'नागरी' कहने लगे और आगे चल कर परदेशियों के प्रताप से वह उर्दू भी निकल आई जो यहाँ की परंपरागत राष्ट्रभाषा को 'सौत' समझने लगी। यहाँ की परंपरागत राष्ट्रभाषा का नाम हिन्दी है। हिन्दी नाम हमारा नहीं हमारे घर का नहीं; फिर भी हमारे अपनालेने से वह हमारा हो गया और अब उससे उन लोगों का कोई नाता नहीं रहा जिनके बाप दादों ने हमारी राष्ट्रभाषा को यह नाम दिया। ऐसा क्यों हुआ! इसका कारण प्रत्यक्ष है। बात यह है कि हमने द्वेषवश अपनी भाषा को वही नाम दे दिया जो हमारे परदेशी भाइयों को अत्यन्त प्रिय था। फिर हमारे परदेशी भाई हमारी 'हिन्दी' को किस तरह अपना सकते हैं। इसलिए उनको खुश करने के लिये 'हिन्दुस्तानी' का नाम चालू किया गया। पर हिन्दुस्तानी का राग निराला निकला। वह गँवारों की ओर मुड़ निकली। अब उस पर भी परदेशियों की गहरी दृष्टि पड़ी और शब्दों के लिये बटवारा होने लगा। राष्ट्रभाषा का प्रश्न शब्दों का प्रश्न बन गया और परदेशी शब्दों के लिये कठोर आग्रह होने लगा।

उर्दू के लोगों का दावा है कि उर्दू ही राष्ट्रभाषा है और वही हिन्दू मुसलिम मेल से बनी है। उसी का नाम हिन्दुस्तानी भी है। पर 'उर्दू' का

इतिहास पुकार कर कहता है कि सच्ची बात कुछ और ही है। उर्दू की असलियत क्या है, इसका जान लेना कुछ कठिन नहीं है। पहले मौलाना शिबली नुमानी जैसे परम खोजी की बात सुन लीजिए और देखिए तो सही कि उर्दू का रङ्ग क्या है? वह किस ओर मुड़ी चली जा रही है। उनका विवाद है—

"इस मौक़ा पर यह नुक्ता ख़ास लेहाज़ के क़ाबिल है कि अगरचे हमारे इंशापरदाज़ों ने संस्कृत और व्रजभाषा के इल्मअदब के नुक्तानुक्ता को समझा और उससे बहुत फ़ायदा उठाया, लेकिन उसके फ़ैज़ से वही महरूम रह गया जो सबसे ज़्यादा हक़दार था। यह ज़ाहिर है कि उर्दू भाषा से निकली और उसके दामन में पली लेकिन भाषा से जो सरमाया उसको मिला, सिर्फ़ अल्फ़ाज़ थे। मज़ामीन और ख़यालात से उसका दामन ख़ाली रहा। बख़िलाफ़ इसके अरबी ज़बान, जिसको भाषा से किसी क़िस्म का तआरुफ़ न था, वह संस्कृत और भाषा दोनों से मुस्तफ़ीद हुई।"

हिन्दी 'मज़ामीन' और हिन्दी 'ख़यालात' से विलायती अरबी का दामन तो भर गया पर हिन्द की 'मुल्की ज़बान' यानी घर की उर्दू का दामन उनसे ख़ाली रहा। क्यों? क्या राष्ट्रनिष्ठा, देशप्रेम अथवा दीन या मज़हब के कारण? नहीं। उर्दू का राष्ट्र या दीन से कोई संबंध नहीं। उसमें हिन्द और इसलाम दोनों की छीछालेदर है। उर्दू का दावा है—

"मेरा हाल बहरे ख़ुदा देखिए, ज़रा मेरा नश्वोनुमा देखिए।
मैं शाहों की गोदों की पाली हुई, मेरी हाय यों पायमाली हुई।
निकाले ज़बाँ फिरती हूँ बावली, ख़ुदाया मैं दिल्ली की थी लाड़ली।
अदाएँ बला की सितम का जमाल, वह सजधज क़यामत वह आफ़त की चाल।
मेरे इश्क़ का लोग भरते थे दम, नहीं झूठ कहती ख़ुदा क़सम।"

इस दावे की पुष्टि जनाब 'अरशद' गोरगानी यों करते हैं—

"किताबें जितनी हैं आसमानी ज़बाने उम्दा हैं सब की लेकिन ख़ुदा ने हरगिज़ न की इनायत किसी को इनमें ज़बाने उर्दू।" उर्दू किस सौभाग्यशाली भाल पर नाज़िल हुई—इसके बारे में उनका कहना है—

"जनाबे शाहबे क़ेरॉ प नाज़िल फ़क़त यह निआमत ख़ुदा ने की थी,

२

उन्हीं की औलद है इनकी वारिस वही हैं पैग़म्बराने उर्दू ।"
और "ज़बाने उर्दू के हमीं हैं वाली हमीं हैं मूजिद हमीं हैं बानी,
मकीं नहीं हम तो देख लेना रहेगा वीरां मकाने उर्दू ।"

किन्तु आजकल बहुत से लोग ऐसे निकल आए हैं जो अपने आप को उर्दू का वारिस समझते हैं और उर्दू को अपनी 'मादरी' ज़बान तक कह जाते हैं। उनकी इस चेष्टा को देखकर फ़रहंग आसफ़िया के विधाता मौलवी सैयद अहमद देहलवी को यह घोषणा करनी पड़ी कि—

"हम अपनी ज़बान को मरहठी बाज़ों लावनी बाज़ों की ज़बान, धोबियों के खंड, जाहिल ख़्याल बन्दों के ख़्याल, टेसू के राग यानी बे सर व पा अल्फ़ाज़ का मजमूआ बनाना कभी नहीं चाहते, और न उस आज़ादाना उर्दू को ही पसन्द करते हैं जो हिन्दुस्तान के ईसाइयों, नव मुसलिम भाइयों, ताज़ा विलायत साहब लोगों, ख़ानसामाओं, ख़िदमतगारों, पूरब के मनहियों, कैम्प ब्वायों, और छावनियों के सत बेझड़े बाशिन्दों ने आख़्तियार कर रक्खी है। हमारे ज़रीफ़ुल्तबा दोस्तों ने मज़ाक से इसका नाम पुड़दू रख दिया है।" (फ़रहंग आसफ़िया, सबब तालीफ़)

याद रहे 'फरहंग आसफ़िया' के उदार लेखक ने नवमुसलिम भाइयों को भी उर्दू के टाट से बाहर कर दिया है और उनकी ज़बान को भी पुड़दू ही माना है। यह पुड़दू और कुछ नहीं हमारी आपकी हिन्दी है। वह हिन्दी है जिसके सम्बन्ध में एक उर्दू के हिमायती ने लिखा है कि—

'हिन्दी की दबे पाँव मगर निहायत मुस्तक़िल तरक्क़ी दरअस्ल उर्दू के गले की छुरी है जो एक दिन उसका ख़ून करके रहेगी। हुकूमत भी रंगे ग़ालिब का साथ देगी।' (एफ़दाते मेहदी, मारिफ़ प्रेस, आज़मगढ़, पृष्ठ ३२८)

पर हिन्दी है किसकी ज़बान? उन्हीं हिन्दू मुसलमानों और ईसाइयों की जो हिन्दी हैं अहिन्दी या परदेशी नहीं। परदेशी मुसलमानों ने क्या किया ज़रा इसे भी सुन लें। वही सैयद अहमद फ़रमाते हैं कि—

"उर्दू नज़्म ने भी फ़ारसी ही की तर्ज़ एख़्तयार की क्योंकि यह लोग तुर्की-उल् नस्ल थे या फ़ारसी-उल् नस्ल या अरबी-उल् नस्ल। यह हिन्दी की मुताबक़त किस तरह कर सकते थे।" (फ़रहंग आसफ़िया, मुक़द्दमा, पृ० ८)

कहना न होगा कि यह इसी 'नस्ल' का नतीजा है कि शाह हातिम ने

'भाषा' को खदेड़ कर उसकी जगह 'मुग़ली' ज़बान उर्दू को चालू कर दिया और निहायत दिलेरी के साथ अपने 'दीवानजादा' के दीबाचे में लिख दिया कि—

"सिवाय आँ, ज़बान हर दयार, ता बहिंदवी, कि आँ रा भाका गोयंद मौक़ूफ़ नमूदः"

और उर्दू के एक दूसरे उस्ताद जनाब 'सौदा' ने यहाँ तक निश्चय कर लिया कि हिन्दुस्तान उनके लिए रौरव नरक बन गया। यदि विवश न होते तो क्या करते ? सुनिए तो सही, कितने पते की बात है—

'गर हो कशिशे शाहे ख़ुरासान तो सौदा, सिजदा न करूँ हिन्द की नापाक ज़मीं पर।'

उर्दू के तीसरे उस्ताद 'मीर' भी कुछ कम न निकले। उन्हें मार्मिक दुख है कि धुनियाधक्कड़, बनियाबक्काल सभी शायरी में मग्न हैं और इस तरह उनकी पाक ज़बान को नापाक कर रहे हैं। आप कुढ़ कर फ़रमाते हैं—

"दख़्ल इस फ़न में न था अजलाफ़ को, क्या बताते थे यह सो अशराफ़ को।
थे जो इस अय्याम में उस्तादे फ़न, नाकसों से वे न करते थे सखुन।
नुक्तापरदाज़ी से अजलाफ़ों को क्या, शेर से बज़ाज़ों नद्दाफ़ों को क्या।"

मतलब यह कि उर्दू के आदि के तीनों उस्तादों ने मिल कर उर्दू की ज़बान को पक्की उर्दू बना दिया और फिर उस पर हम हिन्दियों का कोई अधिकार नहीं रह गया। हममें जो इसलाम के नामलेवा और सच्चे मुसलमान थे उनको भी इसी हिन्दियत के नाते ज़बान की सनद न मिली और फलतः उर्दू धीरे धीरे हिन्दी को सच्ची सौत समझने लगी। सौत भी कैसी फूहड़! 'अँगोछे' और 'धोतियों' पर रीझनेवाली और माँग में सेंदूर लगाने वाली—

'अँगोछे की अब तुम फबन देखना, खुली धोतियों का चलन देखना।
वह सेंदूर बालों में कैसी जुटी, किसी पार्क में या कि सुर्ख़ी कुटी।'

इस अप्रिय प्रसंग को और अधिक बढ़ाना हमको इष्ट नहीं। यदि उर्दू अपने इतिहास को छिपा कर आज तरह तरह का अड़ंगा न लगाती और अपनी शान पर सती होती तो कोई बात न थी। पर इस राष्ट्रचेतना और इस विश्वसंकट के समय तो हमें उसी देवी की उपासना ठीक जँचती है जिसके 'सेंदुर' के विषय में मलिक मुहम्मद जायसी का दावा है—

"सेंदुर परा जो सीस उघारा, आगि लागि चह जग अँधियारा।"

अस्तु, हमें यदि संसार के अँधकार को नष्ट करना है तो इस सिंदूर का स्वागत अवश्य करना है और करना है उस 'अँगोछे' और 'धोती' का सत्कार जिसमें विश्व का सारा चमत्कार सिमट कर खिल रहा है। उसकी अवहेलना तो भारत कर नहीं सकता। भारत को तो सदा से 'लँगोटी' का गर्व रहा है। वह 'गाढ़े' और 'खद्दर' को पूज्य समझता है, घृणित या हेय नहीं। उसकी दृष्टि में बी उर्दू का 'गाढ़े की गोट' या 'गाढ़े की सारियों' से नफ़रत करना ठीक नहीं। 'दुलाई में अतलस की गाढ़े की गोट' तो पुरानी पड़ गई। एक साहबेकलाम का कहना है—

"अगर हिन्दी ने रफ़्ता रफ़्ता हाथ पाँव निकाले तो यह ऐसा ही होगा जैसे वज़ादार बीबियों में बड़े पायँचों की जगह जो ख़ुशअदाई से खोंसे जाते हैं गाढ़े गज़ी की सारियों को खाज दिया जाय जिसे देहात की कसीफ औरतें निस्फ़ साक़ तक लपेट लेती हैं।" (एफ़ादाते मेहदी, मारिफ़ प्रेस, आज़मगढ़, पृष्ठ ३२९)

अब तो आपने भी देख लिया कि वस्तुतः आज हमारे सामने न तो राष्ट्रभाषा का प्रश्न है और न हिन्दू मुसलमान का झगड़ा। है तो केवल हिन्दी और अहिन्दी का विवाद। राजनीति के क्षेत्र में भी और भाषा के क्षेत्र में भी एक ओर तो देश के परदेशी मुसलमान हैं और दूसरी ओर राष्ट्र की सनातन जनता। नवमुसलिम मज़हब के हिसाब से उनके साथ हैं पर दुनिया के ख़्याल, ख़ून के विचार और ज़बान के बारे में हमारे साथ। अतएव भाषा के क्षेत्र में कोई हिन्दूमुसलिम द्वन्द्व नहीं। हाँ, हिन्दी और अहिन्दी अवश्य है। अहिन्दी होने के कारण उर्दू हमारी राष्ट्रभाषा हो ही नहीं सकती। फिर उसके लिये प्रयत्न करना व्यर्थ है।

उर्दू की स्थिति स्पष्ट हो जाने के बाद हिन्दुस्तानी का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता। वह तो यों ही एक बीच की चीज़ समझ ली गई है। राजनीति के क्षेत्र में जो काम फिरंगी करते हैं भाषा के क्षेत्र में वही काम हिन्दुस्तानी कर रही है। मौलाना शिबली ने ठीक ही कहा है कि—

"हमेशा एक कशमकश रहेगी। निसाब बनाने में हिन्दू और मुसलमान, दोनों अपनी अपनी क़ौमी ज़बान यानी अरबी और संस्कृत की तरफ़दारी करेंगे;

और कभी कोई और कभी कोई फ़रीक़ कामयाब होगा।" (मक़ालात शिबली, जिल्द दोयम, पृ० ७५)

प्रतिदिन हो भी यही रहा है। फिर किया क्या जाय। यदि दोनों को अलग अलग छोड़ दिया जाय तो फिर राष्ट्र का उद्धार किस तरह होगा ? एक दूसरे को किस तरह समझ सकेंगे ? निवेदन है कि दोनों में एकता है। दोनों ही हिन्दी हैं। जो अपने आप को आज भी अहिन्दी समझते हैं उन्हें हिन्दी बनाने का प्रयत्न करना होगा। उन्हीं की भाषा कल फ़ारसी थी। समय के फेर से उन्हीं की भाषा आज उर्दू हो गई है। कोई कारण नहीं कि उन्हीं की भाषा उन्हीं की कृपा से कल हिन्दी न हो जाय। यदि वे सचमुच हिन्द की सन्तान हैं तो हिन्दी होकर रहेंगे और यदि फ़ारस, तुर्क या अरब की सच्ची सन्तान हैं तो भी वही करेंगे जो उनके सगे संबंधी अपने देश के लिये कर रहे हैं। रही मज़हब की बात। सो ख़ुद क़ुरान शरीफ़ का फ़तवा है कि—

"व मा अर्सल्ना मिन् रसूलिन् इल्ला बेलेसाने क़ौम ही" (सूरा इब्राहीम की आयत ४)

यानी 'और हमने तमाम (पहले) पैग़म्बरों को (भी) उन्हीं की क़ौम की ज़बान में पैग़म्बर बना कर भेजा है।" (अशरफ़ अली थानवी)

अच्छा, तो हमारी क़ौमी ज़बान क्या है ? उर्दू ? नहीं। वह तो हिन्दी तुर्कों, फ़ारसों और अरबों की ज़बान है। उसमें हिन्द की हिन्दियत कहाँ ? तो फिर वह क़ौमी जबान कौन सी है ? वही, वही जिसके लिये 'गाढ़े गन्नी' की सारी है। वही हिन्दी है जिसके बारे में हैं 'बहरी' ने स्पष्ट कहा है कि—

"हिन्दी तो ज़बान है हमारी, कहते न लगे हमन भारी।"

यदि आपको हिन्दी का कोई शब्द भारी जान पड़ता है तो उसका प्रयोग न करें। खुशी से उसकी जगह किसी और अपने प्रिय शब्द का प्रयोग करें पर कृपया भूल न जायं कि वह इस देश की कमाई है। क्या आप के कानों तक उनकी पुकार नहीं पहुंचती जो आप के बापदादों की ज़बान के जौहर थे ? सुनो। बात बात में तुम्हें वे कितने इतिहास बता देते हैं। यदि उनकी पुकार कान में पड़ गई और आप सचेष्ट हो गए तो आप ही नहीं आप का राष्ट्र भी धन्य हो गया और फिर किसी में ताब न रही कि आप को आँख दिखाए और एक तरह से जंगली सिद्ध करे। क्या कोई भी भारत का सच्चा सपूत परम

खोजी मौलाना शिबली नुमानी की इस खोज की दाद दे सकता है और क्षोभ तथा ग्लानि के मारे गल कर भस्म नहीं हो जाता कि—

"हिन्दू तो आज यह शिकायत कर रहे हैं कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में आकर मुल्क को तबाह कर दिया, लेकिन इन कोताह नज़रों को मालूम नहीं कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान उफ़्तादा ज़मीन को चमनज़ार बना दिया था। दुनिया जानती है कि हिन्दू पहले पत्तों पर रख कर खाना खाते थे। नंगे पाँव रहते थे। ज़मीन पर सोते थे। बिन सिले कपड़े पहनते थे। तंग मकानों में बसर करते थे। मुसलमानों ने आकर उनको खानेपीने, रहनेसहने, वज़ालिबास, फ़र्शफ़रोश, जेब व ज़ीनत का सलीक़ा सिखलाया। लेकिन यह मौक़ा इस मज़मून के फैलाने का नहीं।" (मक़ालात शिबली, दर अनवाकल्मताबा लखनऊ, पृ० १६८)

मौलाना शिबली के परम शिष्य अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी ने इस 'मज़मून' को कुछ फैलाते हुए लिखा है कि "इन मिसालों से मक़सूद यह है कि मुसलमानों ने जब यहाँ क़दम रखा तो अपने पूरे तमद्दुन व मुआसिरत, साज़ व सामान और अपनी इस्तलाहात व ईजादात को साथ लेकर यहाँ वारिद हुए; और इन सब के लिये नाम व इस्तलाहात व अल्फ़ाज़ भी अपने साथ लाए और चूँकि यह हिन्दुस्तान में बिल्कुल नई चीजें थीं इसलिए हिन्दुस्तान की बोलियों में इनके मुरादिफ़ात की तलाश बेकार थी। और वही अल्फ़ाज़ हिन्दुस्तान में रायज हो गए।" (मुक़ालाते उर्दू, अंजुमने उर्दू ए मुअल्ला, मुसलिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़, सन् १९३४ ई० पृ० ८)

हमारे घर के भाइयों और राष्ट्र के दोस्तों की यह खोज और भी आगे बढ़ी। प्रोफ़ेसर मुहम्मद अजमल खाँ को पंडित जवाहिरलाल नेहरू के कहने से 'बुनियादी हिन्दुस्तानी' की चिन्ता हुई और उन्होंने खोज निकाला कि—

"यहाँ लिबास, खोराक और मकानों की क़िस्में लिखने की गुंजायश नहीं लेकिन इनमें से जितनी क़िस्में हैं वह सब और अगर सब नहीं तो ९९ फ़ी सदी ग़ैर हिन्दुस्तानी हैं। इनमें से अक्सर ईरानी, तातारी और तुर्की तमद्दुन की याद दिलाती हैं। इसमें शक नहीं कि इनकी आमद का ज़रिया मुसलमान हुए लेकिन इस तमद्दुन को हिन्दुस्तान के बाशिन्दों ने हिन्दुस्तान ही के रुपया से हिन्दुस्तान ही के सन्नाओं और मज़दूरों की मेहनत से तरक़्क़ी

दी। मुसलमानों का अगर यह ख़्याल हो कि इसलामी तमद्दुन किसी ख़ास तर्जे लिबास व ख़ोराक व मकान से वाबस्ता है तो क़तयी ग़लत है। इन चीज़ों का ताल्लुक़ ज़्यादातर मुक़ामी आबोहवा और जुग़राफ़िया हालात से नशोनुमा पाता है।" (उर्दू सन् १९३९ ई० पृ० ३८२)

ख़ोराक के बारे में 'ख़ाँ' महोदय का दावा है—

"ख़ोराक और ग़िज़ा के सिलसिला में संस्कृत में रोटी तक के लिये कोई लफ़्ज़ नहीं है। इसे गेहूँ से बनी हुई ग़िज़ा कहते थे। मुख़्तलिफ़ सूबों में इसके अलहदा अलहदा नाम हैं। अब तक हिन्दुस्तान के देहातों में खाने की आम इस्तेमाल की चीज़ भुना हुआ ग़ल्ला है। चूँकि कच्ची और पक्की ग़िज़ा का ताल्लुक़ हिन्दू धरम से है इसलिये किसी ऐसी ग़िज़ा का नाम पुरानी ज़बानों में नहीं पाया जाता जो छूतछात के असरात से ख़ाली हो और इसके साथ साथ इंसानी शिनअत का भी इसमें दख़ल हो। हिन्दुस्तान के अलावा रोटी हर जगह तनूर में पकती है और नानबाई, हलवाई, कबाबची, क़हवाफ़रोश वग़ैरह का तख़ैय्युल ही ऐसी अक़वाम से वाबस्ता है जिनमें छूतछात न हो।" (वही पृ० ३८०)

रोटी के इस घोर युग में रोटी की बात यदि यहीं समाप्त हो जाती तो राष्ट्रभाषा के स्वरूप के संबन्ध में हम इसे इतना महत्व नहीं देते और इसे भी एक ख़ुदाई शान समझ कर कुछ आगे की बात बताते। पर करें क्या ! राष्ट्रभाषा के परम भक्त देशरत्न राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र बाबू तक पर भी असत्य जन श्रुतियों का प्रभाव पड़ गया। आप कहते हैं—

"कौन कह सकता है कि 'रोटी' जिसके बिना हम रह नहीं सकते, हिन्दुस्तान में कहाँ से आई और इसका असली रूप क्या था ? सुना है कि यह तुर्की शब्द है।" (ना० प्र० पत्रिका संवत् १९९६ पृ० ३०५ पर उद्धृत)

'तुर्की शब्द' के संबंध में तो इतना संकेत कर देना ही प्रर्याप्त था कि तुर्की भाषा में टवर्ग नहीं। परन्तु जब हमारे एक सपादलक्षी हिन्दी आलोचक भी 'रोटी' और 'नायक' को अहिन्दी सिद्ध करने पर तुले हुए हैं तब इतने से ही काम न चलेगा। उन्हें दिन दहाड़े बताना होगा कि अमीर ख़ुसरो (?) ने 'ख़ालिकबारी' में लिख दिया है कि रोटी हिन्दवी है। प्रत्यक्ष देखिए—

"नान बताज़ी ख़ुब्ज़ रोटी हिन्दवी।" (ख़ालिकबारी)।

यही नहीं बाबर बादशाह को भी यहाँ का 'रोटीपानी' ही बहुत दिखाई देता है। उसका कितना साफ़ कहना है—

"मुजका न हुआ कुछ हवस मानिक व मोती, फ़ुक़रा हलीग़ बस बूलगो सैदूर पानी व रोती।"

याद रहे उर्दू के कोषकारों ने भी रोटी को हिन्दी शब्द ही लिखा है और 'मुसलमान मुरदे के चहलुम का खाना' भी बताया है। रही 'संस्कृत में रोटी तक के लिये कोई लफ़्ज नहीं है' की बात। सो उसके विषय में निवेदन है कि ध्यान से पढ़ें और तनिक देखें तो सही कि माजरा क्या है! भाव प्रकाश का कहना है —

शुष्क गोधूमचूर्णेन किञ्चित् पुष्टाञ्च पोलिकाम्।
तप्तके स्वदयेत् कृत्वा भूयोऽङ्गारेऽपि तां पचेत्॥
सिद्धैषा रोटिका प्रोक्ता गुणानस्याः प्रचक्ष्महे॥
रोटिका बलकृद्रुच्या बृंहणी धातुवर्द्धिनी।
वातघ्नी कफकृद् गुर्वी दीप्ताग्नीनां प्रपूजिता॥

कहने का तात्पर्य यह कि 'रोटिका' स्वतः संस्कृत है; फ़ारसी, अरबी, तुर्की या तातारी कदापि नहीं। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि 'शष्कुलीशब्दमात्रेण किं दूरं योजनत्रयं' की कहावत आज भी इसी रूप में चली जा रही है। पाककला के विषय में इससे अधिक और क्या कहा जाय कि—

"रसवती, पाकस्थान, महानस, ये तीन नाम रसोईघर के हैं और जो कि उस रसोई के स्थान का अध्यक्ष है वह 'पौरोगव' संज्ञिक है। सूपकार, बल्लव, आरालिक, आंधसिक, सूद, औदनिक, ये पौरोगव सहित सात नाम रसोई बनाने वाले के हैं। आपूपिक, काँदविक, भक्ष्यकार; ये तीन नाम भक्ष्यकार यानी पुआ आदि पकवानों के बनाने वाले के हैं। इसको हलवाई भी कहते हैं।" (अमरकोशः, मुंबई वैभवाख्ये मुद्रितः पृ० १६९ भाषाटीका)

अब तो आपकी समझ में यह बात आ ही गई होगी कि किसी भी राष्ट्र के जीवन में शब्दों का क्या महत्त्व है और क्यों भारत में शब्द ब्रह्म की इतनी प्रतिष्ठा है। फिर भी परदेशी संस्कृति प्रेमियों के हृदय को अच्छी तरह समझने के लिये उनके 'मतरुक' और 'मुब्तज़ल' के सिद्धान्तों को

भलीभाँति हृदयंगम कर लेना चाहिए। अच्छा हो, इसे भी किसी कुलीन देहलवी मुसलमान के मुँह से सुन लीजिए। उसका कहना है—

"आतिश व नासिख़ ने तो इतना ही किया कि जो अल्फ़ाज़ क़रीबुल्मर्ग थे उनको अमदन् तर्क कर दिया। तरकीब नई थी। लोगों को पसन्द आई। दूसरों ने उन अल्फ़ाज़ को भी तर्क करना शुरू कर दिया जो रोज़मर्रा में जारी थे। मौलवी अली हैदर साहब तबातबाई लिखते हैं कि लखनऊ में एक साहब मीर अली औसत रश्क थे 'जिन्होंने चालीस पैंतालीस लफ्ज़ शेर में बांधने तर्क कर दिए थे और इस पर उनको बड़ा नाज़ था।'...शेख़ इजो शरफ़ मीर अली औसत से भी बढ़े हुए थे। उन्होंने असी बयासी लफ़्ज़ छोड़ दिए।" (तसहीहुल्वलग़ात, सज्जाद मंज़िल, देहली, पृ० ४२)

इतने पर भी हमारी 'मुल्की' और 'मुश्तरका' ज़बान के उस्तादों को राहत न मिली। इन्हें इस क्षेत्र में कुछ और भी करना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि मुसलिम संस्कृत के प्रकांड पंडित अल्लामा शिबली को भी खीझ कर कहना ही पड़ा कि "उर्दू ज़बान में चूँकि एक मुद्दत तक बेहूदा मुबालिग़ा और ख़्यालबन्दी की गर्मबाज़ारी रही, इसलिये वाक़आत के अदा करने के लिये जो अल्फ़ाज़, तरकीबें, इस्तलाहात, मुक़र्रर हैं इस्तेमाल में नहीं आईं। इसलिये आज नए सिरे से उनको इस्तेमाल किया जाय तो या इब्तज़ाल यानी आमियानापन, या ग़राबत यानी रूखापन पैदा हो जाता है, नज़ीर अकबरबादी के कलाम जो सूक़ियानापन है इसका यही राज़ है।" (मवाज़ेनः अनीस व दबीर, अल्नज़िर प्रेस, लखनऊ, १९२४ ई०, पृ० १६०)

'मतरूक' और 'मुब्तज़ल' के 'फ़रमानों' से पूरा पड़ते न देख कर 'फ़तवा' से काम लिया गया और हिन्द के ठेठ मुसलमानों को जो दिव्य पाठ पढ़ाया गया उसका परिणाम यह हुआ कि उर्दू और मुसलमान एक हो गए। उर्दू 'नबी की ज़बान' होकर ही रुक जाती तो भी ग़नीमत थी। बेचारे ठेठ मुसलमानों को कुछ तो नसीब होता। पर वहाँ तो वह रंग ग़ालिब हुआ कि कुछ कहते ही नहीं बनता। एक घटना आप के सामने है। समझ हो तो स्थिति को अच्छी तरह समझ लें और फिर राष्ट्रभाषा का स्वरूप स्थिर करें। घटना हैदराबाद के निज़ाम राज्य की है। वहाँ के स्वर्गीय डिप्टी-कमिश्नर मौलवी मुहम्मद अज़ीज़ मिर्ज़ा साहब फ़रमाते हैं कि—

"मेरा गुज़र एक बहुत ही छोटे गाँव में हुआ । वहाँ आसामियों को तलब करके उनके हालात दरियाफ़्त किए गए तो एक मुसलमान भी लंगोटी बाँधे आया और उसने अपना नाम अशवन्त ख़ाँ बताया । मैंने उससे उर्दू में गुफ़्तगू करनी चाही । मगर जब वह अच्छी तरह न समझ सका तो मरहठी में बातचीत की जिसमें वह ख़ूब फ़र्राटे उड़ाता था और यह देख कर मैंने उससे पूछा कि आया वह अपने घर में भी मरहठी बोला करता है । यह सुनते ही उसका चेहरा सुर्ख़ हो गया और कहने लगा "साहब मैं मरहठी क्यों बोलने लगा! क्या मैं मुसलमान नहीं ?" ऐसी ही हालत ब्रह्मा में भी देखी कि गो मुसलमानों की मादरी ज़बान ब्रह्मी है लेकिन वह उर्दू को अपनी क़ौमी और मज़हबी ज़बान समझते हैं" (ख़्यालाते अज़ीज़, पृ० १७१, ज़माना प्रेस, कानपुर।

मतरूक मुब्तज़ल और मज़हब की त्रिपुटी में अलख जगाने वाली उर्दू ज़बान की माया आपके सामने है । उसका सच्चा हाल यह है कि—

"हिन्दुओं के अदब में जो ख़ूबियाँ हैं उर्दू ज़बान उनसे महरूम रही। संस्कृत ज़बान दुनिया की वसीअतरीन ज़बानों में हैं और उसका दरजा लातनी, यूनानी और अरबी से कम नहीं है । यूरप की ज़बानों ने जो तरक़्क़ीयाफ़्ता कहलाती हैं लातनी और यूनानी ज़बानों के अदब से फ़ायदा उठाया है क्योंकि लातनी और यूनानी उसी बर्रेआज़म की ज़बानें थीं जिनमें यह तरक़्क़ीयाफ़्ता ज़बानें बोली जाती हैं । मगर हमारी ज़बान ने जिस बर्रेआज़म यानी एशिया में नश्वोनुमा हासिल की उसकी दो बड़ी ज़बानों यानी अरबी और संस्कृत में से सिर्फ़ अरबी ज़बान के अदब से कुछ फ़ैज़ हासिल किया है । संस्कृत के अदब से उसने कोई फ़ायदा नहीं उठाया । लातनी और यूनानी की तरह संस्कृत ज़बान भी मर गई यानी कहीं बोली नहीं जाती मगर जो ज़बानें इससे मुश्तक़ हुईं, यानी हिन्दी, मरहठी, गुजराती, बंगाली वग़ैरह, उनके अदब का असर भी उर्दू ज़बान पर नहीं पड़ा । हालां कि उर्दू के रक़बा के साथ उन ज़बानोंका रक़बा इत्तेसाल रखता है और इन ज़बानों के बोलने वाले उर्दू बोलने वालों के साथ बराबर मिलते जुलते और आपस में रस्मोराह रखते हैं । अगर इन ज़बानों के अदब का असर हमारी ज़बान पर पड़ता तो, इसमें ज़रा शक नहीं उर्दू ज़बान को सहीह मानों में मुल्की ज़बान होने का फ़ख़ हासिल हो जाता और हिन्दुओं को मुसलमानों की तरह इस ज़बान

के मालिक होने का एकसाँ हक़ होता।" (उर्दू, सन् १९२५ ई०, पृ० ३७८)

उर्दू के परदेशीपन और अराष्ट्रीय प्रवृत्ति का परिचय आवश्यकता से अधिक दे दिया गया। अब यहाँ यह स्पष्ट कर देना है कि जिस प्रकृति के आधार पर वह अपने आप को देशी या 'हिन्दुस्तानी' ज़बान कहती है वह वस्तुतः हिन्दी है। अतएव प्रकृति की दृष्टि से उसकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं। अब प्रश्न यह उठता है कि इस प्रकृति का नाम हिन्दी रहे या हिन्दुस्तानी ? जहाँ तक पता है हिन्दुस्तानी के पक्ष में अब तक एक भी ऐसी दलील सामने न आई जो उसे हिन्दी से बढ़ कर सिद्ध कर दे। सच पूछिए तो 'उर्दू' की तरह 'हिन्दुस्तानी' शब्द भी हिन्दिओं के लिये अपमानजनक हो गया है और फिरंगियों की रंगसाज़ी की गवाही देता है। मज़हब की दृष्टि से देखा जाय तो 'हिन्दी' अरबी ज़बान का लफ्ज़ है और हिन्दुस्तानी ख़ुरासानी या फ़ारसी। हिन्दुस्तानी का 'हिन्दू' तो यारों को नहीं खटकता पर वह 'हिन्दी' उनकी पाक निगाह में गड़ जाती है जो सच पूछिए तो उन्हीं की देन है। इसका भी एक रहस्य है। 'हिन्दी' में वह जादू है और है वह राष्ट्र गौरव जो लड़ाकू अरबों को भी यह सबक़ सिखा सकता है कि 'हिन्दी तलवार' और 'हिन्दी नेज़ा' का गुण कीर्त्तन किस तरह इसलाम के पूर्व पुरुष किया करते थे और 'मसहफ़' उठाने वाले मियां 'मसहफ़ी' भी अभी उस दिन अपनी अनोखी ज़बान को 'हिन्दवी' ही कहते थे। उनकी लाचारी पर ग़ौर तो कीजिए —

'मसहफ़ी फ़ारसी को ताक़ पर रख, अब है अशआर हिन्दवी का रवाज।'

लाचारी इसलिए कि—

'क्या रेख़ता कम है 'मसहफ़ी' का, बू आती है उसमें फ़ारसी की।'

अस्तु, यह इसी फ़ारसी की बू का असर है कि हज़रत 'अरशद' गोरगानी का तुर्रा है कि—

'ज़बाने उर्दू का था जो क़ुरआँ तो 'मसहफ़ी' उसके मसहफ़ी थे, ग़लीज़ लफ्ज़ों से मंतरों से भरी है वह ही ज़माने उर्दू।'

हिन्दी शब्द ही नहीं, हिन्दी भाषा में भी पाक इसलाम की पूरी पूरी प्रतिष्ठा है और नूर मुहम्मद ने तो साफ़ साफ़ कह भी दिया है कि—

"दीन जेंवरी करकस माजेउँ।'

जिसे इसमें तनिक भी सन्देह हो वह हिन्दी के सूफ़ी कवियों का अध्ययन करे और देखे कि सच्चे इसलाम की आत्मा कहाँ बोल रही है—'शराब' या 'सलात' में। फ़ारस या हिन्दुस्तान में। यही क्यों? यदि शीया और सुन्नी का समन्वय देखना हो तो हिन्दी का पाठ करो। जायसी के 'आख़िरी कलाम' को पढ़ो और देखो कि हिन्दी किस 'हुमा' का नाम है।

राष्ट्रभाषा के स्वरूप की चर्चा हो चुकी। यह भी बता दिया कि किसी भी राष्ट्र के जीवन में उसके शब्दों का क्या महत्व है। आप जानते हैं कि 'क्षौम' और 'कौशेय' किस बात की गवाही देते हैं। पर हमारे बड़े से बड़े मौलाना यह नहीं समझ सकते कि उनका अर्थ क्या है। उनके यहाँ तो इसका नाम लेना भी हराम है। पर हमारी राष्ट्रभाषा इनको छोड़कर अपने अतीत का गर्व नहीं कर सकती। वह अन्य भाषाओं के सामने डट कर यह सिद्ध नहीं कर सकती कि उसकी कोख के सपूत उस समय क्षुमा (अलसी) और कोश (रेशम के कोआ) से वस्त्र बनाया करते थे जब आजकल का सभ्य संसार बनचर की दशा में था। अतएव हमारा तो निश्चित मत है कि हम अपनी भाषापरम्परा को छोड़ नहीं सकते और हमारी राष्ट्रभाषा भी राष्ट्र की भाषा को तर्क कर फ़ारसी अरबी नहीं बन सकती।

फ़ारसी अरबी शब्दों का कोई झगड़ा हमारी राष्ट्रभाषा के सामने नहीं है। 'मतरूक' और 'मुब्तज़ल' से उसका दामन पाक है। उसका मौलवी बच्चा 'फ़ारसी अरबी' झाड़ सकता है पर उसका हर एक बच्चा उसके लिये विवश था बाध्य नहीं किया जा सकता। उसकी भाषा उसकी रुचि और विषय के अनुकूल होगी। किसी कोष या लुग़त के मुताबिक़ नहीं। यदि इतने से किसी को सन्तोष नहीं होता तो न सही। वह चाहे जिस 'कामकाजी' भाषा का प्रचार करे पर कृपया राष्ट्रभाषा का नाम बदनाम न करे। संसार की कोई भी राष्ट्रभाषा परदेशी शब्दों पर नाज़ नहीं करती बल्कि उलटे उन्हें 'धत्त' ही सुनाती है। हिन्दी तो 'धत्त' का नाम भी नहीं लेती। फिर उस पर यह आक्षेप कैसा?

राष्ट्रभाषा का कागदी स्वरूप यानी लिपि भी विवादग्रस्त है। जो लोग नागरी को अच्छी नहीं समझते—शौक़ से अपनी किसी अच्छी लिपि का

अपने अच्छों में व्यवहार करें और चाहें तो किसी प्रदर्शिनी में उसका उद्घाटन भी करते रहें पर कृपया भूल न जायँ कि यह वही लिपि है जिसमें लोदियों और सूरियों के फ़ारसी फ़रमान तक लिखे गए और अपनी साधुता की रक्षा करने में समर्थ हुये। आज अरबी लिपि के पुजारियों को जानना होगा कि क्यों डाक्टर हफ़ीज़ सैयद तथा उनके आलोचक स्वनामधन्य मौलाना डा० अब्दुल हक़ एक पद का अर्थ ठीक ठीक न समझ सके। देखिए कितना सीधा पद और कितना सादा अर्थ है पर वही लिपि की दुरूहता के कारण पिनाक हो रहा है। बहरी कहता है—

'परगट बुरा माने गुपुत बलि गए सो कहो वह कौन थे।'

डाक्टर हफ़ीज़ 'गुपुत' को 'कपट' पढ़ते हैं तो डाक्टर हक़ 'बलि' को 'बल'। 'बल' की बला में दोनों 'बल' रहे हैं। बलिहारी है ऐसी लिपि को और बलिहारी है उस बुद्धि को जो इसे राष्ट्रलिपि बनाना चाहती और निरक्षर जनता को इसी के द्वारा साक्षर बनाना चाहती है।

स्वर्गीय रत्नाकर जी का 'उद्धव शतक'

(लेखक—श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित, 'साहित्यरत्न')

स्वर्गीय बाबू जगन्नाथ दास जी 'रत्नाकर' ब्रजभाषा के उत्कृष्ट कवि थे। आप की रचना में ब्रजभाषा का वही माधुर्य है जो प्राचीन कवि घनानन्द, मतिराम, देव आदि की कविता में दृष्टिगोचर होता है। भाषा और शैली में भी अनूठापन प्रतीत होता है। आप की दो रचनाएँ "गंगावतरण" और "उद्धव शतक" प्रसिद्ध हैं। इनमें से "उद्धव शतक" की भाषा अधिक परिमार्जित है और ब्रजभाषा के उत्कृष्ट रूप को प्रगट करती है। परन्तु इसकी भाषा संबंधी कुछ बातें खटकने वाली भी हैं। उनके सुधार हो जाने पर ब्रजभाषा का स्वरूप सर्वमान्य और सर्वग्राह्य हो सकता था। रत्नाकर जी काशी के रहने वाले थे। उन्होंने ब्रजभाषा का अध्ययन वैष्णव सम्प्रदाय के शिष्यपरंपरा के अनुसार किया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सहयोग से उनकी प्रतिभा और भाषा को अधिक बल मिला और वे आधुनिक काल में ब्रजभाषा के कवियों में सर्वोच्च माने जाने लगे। ब्रजभाषा के अध्ययन के लिये कई बार मथुरा की उन्होंने यात्रा भी की और वहाँ रहे भी। वहाँ की बोलचाल की भाषा वर्तमान ब्रजभाषा के साहित्य की भाषा से बहुत भिन्न है।

साहित्यिक ब्रजभाषा सौरसेनी अपभ्रंश का विकसित रूप है। वह सैकड़ों वर्ष से परिष्कृत हो कर वर्तमान रूप में आई है। इस सौरसेन प्रान्त की प्राचीन राजधानी सौरपुर (वटेश्वर) में थी जो आज भी भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यह यमुना नदी के दाहिने किनारे पर आगरे और इटावे के बीच में स्थित है। यह स्थान बौद्धों और जैनियों का भी तीर्थ है। यहाँ पर राजा परमाल चन्देल महोबा नरेश के मंत्री सलक्षण के बनवाये दो मंदिर भी थे जो तेरहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने गिरवा दिये थे। उस मंदिर का एक शिलालेख लखनऊ म्यूज़ियम में अब सुरक्षित है। मेगस्थनीज ने इसे भारत के ६ बड़े नगरों में माना था। इस स्थान की बोली आज भी शुद्ध ब्रजभाषा के रूप में प्रचलित है और यही भाषा साहित्यिक प्रयोग में आती है। ब्रजभाषा का परिष्कृत रूप यहाँ पर

प्रत्येक व्यक्ति की वाणी में भली भाँति सुरक्षित है।

मथुरा में कर्म कारक के स्थान पर मोकूँ, तोकूँ, वाकूँ और पंचमी के स्थान पर मोसूँ, वासूँ, तोसूँ, रूप प्रयुक्त होते हैं परन्तु साहित्यिक ब्रजभाषा में मोकों, तोकों, वाकों कर्म के रूप में और मोसौं, वासौं, तोसौं, पंचमी विभक्ति के रूप में प्रयुक्त होते हैं। बटेश्वर के समीपवर्ती प्रान्त (भदावर) में भी ये ही रूप मिलते हैं। इसी प्रकार के और भी बहुत से रूपों के विषय में भी कहा जा सकता है जिनका ब्रजभाषा और सौरसेनी में अन्तर पाया जाता है। हाँ, उनका साहित्यिक रूप सौरसेनी से अधिक मिलता है। "चौरासी वैष्णवों की वार्ता" तथा "दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता" में ब्रजमंडल के उक्त रूप भी मिलते हैं, परन्तु पद्य साहित्य में नहीं।

हमारी समझ में रत्नाकर जी ने साहित्यिक ब्रजभाषा के प्रचलित रूप को नवीन रूप दिया है। इसका फल यह हुआ कि उनकी भाषा में कुछ कृत्रिमता दिखाई देती है। उदाहरण के लिये उनकी पुस्तक "उद्धव शतक" से कुछ नमूने दिये जाते हैं —

> आये भुजबंध दिये ऊधव सखा "कैं" कँध, (छन्द २)
> गोकुल की गैल गैल गैल गैल ग्वालिन की गोरस "कैं"
> काज लाज बस कै बहाइबो। (उद्धव शतक छन्द ८)
> उर घनस्याम "कैं" अधीर अकुलाने तैं।
> नीर कौ प्रवाह कान्ह नैननि 'कैं' तीर बह्यो। (उ० श० छ० १२)

इसी प्रकार के प्रयोग छन्द २०, २३, इत्यादि में भी हैं। उक्त छन्दों में 'कैं' का प्रयोग संदिग्ध है। रत्नाकर जी ने ये प्रयोग शुद्ध संबंध कारक के स्थान पर किये हैं। परन्तु सम्पूर्ण ब्रजभाषा साहित्य और भदावर प्रान्त में "कैं" का प्रयोग षष्ठ्यन्त पद लुप्ता सप्तमी के लिये होता है। जैसे —"राम कैं चोट आगयी" इसका भावार्थ है—राम के शरीर में चोट आ गयी। दूसरा उदाहरण और लीजिये। गोपाल श्याम कैं गये हैं—इसका अर्थ है—गोपाल श्याम के यहाँ गये हैं। इसमें भी षष्ट्यन्त लुप्ता पद सप्तमी है।

उद्धव शतक में "आँस" शब्द का भी प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसको कवि ने 'आँसू' के लिये प्रयुक्त किया है। बहुवचन में यह

शब्द 'आँसुनि' हो जाता है। ब्रज भाषा साहित्य में अधिकतर यह इसी रूप में प्रयुक्त होता है। काशी के आसपास आँसू के लिये 'आँस' शब्द का प्रयोग अवश्य होता है जो भोजपुरी का एक रूप है। इसी प्रकार 'नाय' शब्द 'नाव' के लिये प्रयुक्त हुआ है। ब्रजभाषा में 'नाव' के स्थान में 'नाउ' का प्रयोग तो होता है परन्तु 'नाय' का प्रयोग नहीं होता। अतः यह शब्द अभी अशुद्ध रूप में प्रयुक्त हुआ। रत्नाकर जी ने 'सनेस' शब्द का प्रयोग सन्देश के लिये किया है ब्रजभाषा साहित्य में इस स्थान पर 'संदेस' का प्रयोग किया जाता है। बटेश्वर में भी इसी रूप में इसका प्रयोग होता है। इसी प्रकार 'कौं' और 'कौ' के प्रयोग भी युक्तिसंगत नहीं है। वास्तव में 'कौं' द्वितीया और 'कौ' षष्ठी विभक्ति में प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार के और भी कुछ प्रयोग हैं।

इस रचना में रत्नाकर जी की भावुकता बहुत ही हृदयग्राहिणी और मनोमुग्धकारिणी है। अनेक छंद ऐसे दिखलाई देंगे जिनमें हृदय और मस्तिष्क दोनों का बड़ा उत्तम समन्वय हुआ है। देखिये श्रीकृष्ण जी गोपियों के प्रेम-वर्णन को किस प्रकार ऊधौ जी को समझाते हैं। वे कहते हैं —

> विरह बिथा की कथा अकथ अथाह महा,
> कहत बनै न जो प्रवीन सुकवीनि सौं ॥
> गहबरि आयौ गेरो भभरि अचानक त्यौं,
> प्रेम पर्‌यौ चपल चुचाइ पुतरीनि सौं ॥ उ० श० छन्द ४

इस कवित्त द्वारा कवि ने गोपियों के प्रति श्रीकृष्ण के प्रेम की बड़ी ही हृदयग्राहिणी व्यंजना की है। श्रीकृष्ण जी सन्देश देना चाहते हैं। कुछ थोड़ी ही बातें कही थीं कि प्रेम की तीव्रता से उनका गला भर आया और आँसू उनकी आँखो से टपक पड़े और सन्देश कहने से उनकी वाणी रुक गई। परन्तु उनके प्रेम की हार्दिक भावना को उनके आँसुओं और हिचकियों ने भलीभाँति व्यक्त कर दिया। कैसी सुन्दर भाव व्यञ्जना है। इस छन्द में भाषा भी शुद्ध और परिष्कृत है। उनके पूर्व दोषों से यह छन्द सर्वथा मुक्त है।

श्रीकृष्ण के प्रेम का एक उदाहरण और देखिये —वे राधिका से कितना प्रेम करते हैं इसका इस छन्द में बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है। अवलोकन कीजिये —

राधा-मुख-मंजुल सुधाकर के ध्यान ही सौं,
प्रेम रतनाकर हियैं यों उमगत है ।
त्योंही बिरहातप-प्रचंड सौं उमंडि अति,
उरध उसाँस कौ झकोर यों जगत है ॥
केवट बिचार कौ बिचारो पचि हारि जात,
होत गुन-पाल ततकाल नभ-गत है ।
करत गँभीर धीर-लंगर न काज कछू,
मन कौ जहाज डगि डूबन लगत है ॥
(उ० श० छन्द ११)

इस छन्द में जहाज का बड़ा ही सुन्दर रूपक बाँधा गया है। राधिका जी का सुन्दर मुख चन्द्रमा है जिसे देख कर श्रीकृष्ण जी का प्रेम रूपी समुद्र तरंगित होकर उमड़ पड़ता है। उनकी विरह जन्य उसाँसों के झकोरे से तरंगें और भी तीव्र रूप धारण कर लेती हैं। साथ ही विरह रूपी सूर्य की प्रचंड तेजी से उमड़ना और भी प्रबल हो जाता है। विचार रूपी मल्लाह परिश्रम करने से थकित हो जाता है और गुण रूपी पाल तुरन्त आकाश में विलीन हो जाता है। ऐसी दशा में श्रीकृष्ण जी का गंभीर धीरज़ रूपी लंगर भी मन रूपी जहाज के रोकने में कुछ सहायता नहीं देता और वह डगमगा कर डूबना चाहता है।

इस रूपक द्वारा राधिका और कृष्ण के प्रेम का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है। इस छन्द में रूपक का पूरा निर्वाह हुआ है। इसके द्वारा भावना को समझने में भी बड़ी सहायता मिलती है। जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र के आकर्षण द्वारा ज्वारभाटा का प्राबल्य होता है उसी प्रकार राधा के ध्यान और विरह के आतप से प्रेम-समुद्र का उमड़ना स्वाभाविक है। इस रूपक के द्वारा प्रेम की गंभीरता और स्निग्धता कितनी बढ़ गई है, इसे साहित्य-रसिक ही जान सकते हैं। एक उदाहरण और भी देखिये। इसमें कवि ने कृष्ण और गोपियों के प्रेम-यंत्र का रूपक बांध कर अत्यन्त हृदयग्राही वर्णन किया है—

हा ! हा ! इन्हें रोकन कौं टोक न लगावौ तुम,
बिसद-बिवेक-ज्ञान-गौरव दुलारे है।

प्रेम रतनाकर कहत इमि उधव सौं,
थहरि करेजौ थामि परम दुखारे है ॥
सीतल करत नैकुं हीतल हमारौ परि,
विषम-वियोग-ताप-समन पुचारे है ।
गोपिन के नैन नीर ध्यान-नलिका है धाई,
दृगनि हमारैं आइ छूटत फुहारे है ॥
(उ० श० छन्द १७)

उद्धव जी श्रीकृष्ण के प्रेम को उनके परम योगेश्वर और ज्ञानी होने की सुधि दिलाते हैं। इस पर वे गोपियों के प्रेम से विह्वल होकर कहते हैं कि गोपियों के आँसू ध्यान रूपी नलिका द्वारा हमारी आँखों में आकर विषय वियोग की ताप के लिये पुचारे का काम देता है। कैसी मनोहारिणी कल्पना है। 'ध्याननलिका' ने इस भाव को उत्कृष्ट बना दिया है।

गोपियों ने उद्धव जी को ज्ञानोपदेश पर जो उत्तर दिया है उसकी भी बानगी लीजिये। वे कहती हैं—

"जैहैं बनि-बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहैं बूँद निवस बिचारी की।"

अर्थात् जीवन फिर नहीं रहेगा, अतः हमें आप के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। इसमें सुन्दर दार्शनिक भावना को कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।

फिर गोपियाँ कहती हैं—

चिंतामनि मंजुल पँवारि धूरि धारन मैं,
कांच मनि-मुकुट सुधारि रखिबौ कहा।
कहै रतनाकर वियोग आग सारन कौ,
ऊधौ हाय हमकौं बयारि भखिबो कहा।
रूप-रस-हीन जाहि निपट निरूपि चुकीं,
ताको रूप ध्याइबौ औ रस चखियो कहा।
एते बड़े विस्व माहिं हेरैंहूँ न पैये जाहि,
ताहि त्रिकुटी में नैन मूँदि लखिबौ कहा ॥
(उ० श० छन्द ३९)

इसमें भी कवि ने योग की प्रक्रियाओं को व्यर्थ प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। पवन से अग्नि बढ़ती है, घटती नहीं। अतः प्राणायाम द्वारा वायु को भीतर रोकने से वियोग की अग्नि और भी तीव्र होगी, शान्ति नहीं मिलेगी। कैसा विवेक पूर्ण तर्क है। विश्व में व्याप्त वस्तु को त्रिकुटी जैसे लघुस्थल में भरना भी असम्भव है। इसी प्रकार रूप-रस-हीन का ध्यान करना भी कैसे हो सकता है! कवि ने इसी भाँति बड़ी ही अनूठी उक्तियों द्वारा गोपियों की प्रेम-भावना का वर्णन किया है। प्रेम को चिन्तामणि और योग को काँच-मणि कहना भी व्यंगपूर्ण भावना है।

छन्द नं० ४७ में वियोगी और योगी की तुलना भी दर्शनीय है। फिर छन्द नं० ६५ में गोपियाँ कहतीं हैं—

ऊधौ ब्रह्मज्ञान कौ बखान करते ना नैंकु,
देख लेते कान्ह जौ हमारी आँखियान तैं।

वास्तव में बात भी ऐसी ही है। गोपियों की आँखों से श्रीकृष्ण का जो प्रेममय रूप प्रतिभासित होता है वह अन्य आँखों द्वारा देखने से कैसे ज्ञात हो सकता है? फिर गोपियाँ दूर देश से संदेश द्वारा खबर देने पर कहती हैं—

'आनै उर अन्तर प्रतीति यह तातैं हम,
रीति-नीति निपट भुजंगिनि की नारी है।
आँखिन तैं एक तौ स्वभात सुनिवे कौ लियौ,
काननि तैं एक देखिबे की टेक धारी है॥

(उ० श० छन्द ७१)

साँप अपनी आँखों से सुना करता है। उसी भाव को लेकर कृष्ण पर गोपियाँ आक्षेप करती हैं। कवि ने आँखों से सुनने की और कानों से देखने की भावना द्वारा सर्पवत् कर्म की उद्भावना की है।

छन्द नं० ७८ में गणित सम्बन्धी महावरों का अच्छा समावेश हुआ है। छन्द नं० ८० —

"ज्यों ज्यों बसे जात दूरि दूरि प्रिय प्रान मूरि,
त्यों त्यों धँसे जात मन-मुकुर हमारे में।"

कह कर मन को दर्पण रूप में व्यक्त करना बड़ी ही मनोहारिणी उक्ति है।

छन्द नं० ८४ में 'गंगावतरण' का रूपक भी बहुत ही सुन्दर है। देखिये—

हरि तन पानप के भाजन दृगंचल तैं,
उमँग तपन तैं तपाक करि धावै ना।
कहै रतनाकर त्रिलोक ओक मंडल मैं,
वेगि ब्रह्मद्रव उपद्रव मचावै ना॥
फैले बरसाने में न रावरी कहानीं यह,
बानी कहूँ राधे आधे कान गुनि पावैना॥

इसमें अत्युक्ति की भावना के साथ कवि ने गंगावतरण का बहुत ही सुन्दर रूपक राधिका के आँसुओं से बाँधा है।

इसी प्रकार—

जास्यौ अंग अब तौ विधाता है इहां कौ भयौ,
तातैं ताहि जारन की ठसक ठनी रहै।

(छ० ८८)

में कामदेव की कैसी भर्त्सना की गई है। इस प्रकार लगभग ६५ छन्दों में गोपियों के विरह का बहुत ही भावपूर्ण, मनोमुग्धकारी एवं हृदयग्राही वर्णन किया गया है।

जब ऊधौ विदा होने लगे उस समय का दृश्य भी अत्यन्त आकर्षक एवं करुणाजनक है। गोपियाँ कृष्ण जी की प्रिय वस्तुओं को ले लेकर उनके पास भेंट भेजने के लिये उपस्थित हुई। वह दृश्य भी बहुत ही हृदय द्रावक है। उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण वस्तु जो ऊधौ को दी उसे रत्नाकर के शब्दों में ही सुनिये!

"दीन्यौ प्रेम-नेम-गरुवाई गुन ऊधव कौं,
हिय सौं हमें वह रुवाई वहिराइ कैं।"

छ० न० १०४ में "पारे" रूपी चंचल चित्त को मार कर जो रसायन प्रस्तुत की गई है वह भी बहुत ही अपूर्व है।

इस प्रकार ऊधौ "प्रेम रस रुचिर विराग तूमड़ी मैं पूरि ज्ञान गूदड़ी में अनुराग सौ रतन लै।" वापिस लौटते हैं। ज्ञान गूदड़ी में अनुराग रत्न लेने की व्यंजना बड़ी ही मनोहारिणी है।

उद्धव की लौटकर जो दशा श्रीकृष्ण के सामने जाने पर हुई तो वह और भी करुणोत्पादक है। उस समय उनके आँसुओं की धारा, उसाँसों का उभाड़ और हिचकियों का तार टूटता ही नहीं था। किसी प्रकार ढाढ़स बाँध कर वे कहते हैं—

"मधुपुर राखन कौ वेगि कछु ब्यौंत गढ़ौ,
धाइ चढ़ौ वट कै न जो पै गढ्यो आवै हैं।"
(उ० श० छ० ११४)

इस प्रकार ११७ कवित्तों में 'उद्धव शतक' समाप्त हुआ है।

भावना और रस-परिपक्वता की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्युच्च कोटि का है। इसमें ब्रजभाषा का माधुर्य भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। परन्तु भाषा में यत्र तत्र दोष हैं। कहीं कहीं ब्रजभाषा की उकारान्त शब्दों की प्रणाली भी लुप्त कर दी गई है। काशी वालों का कथन है कि उकारान्त शब्दों वाली प्रणाली मूल रूप में अवधी की ही है जो आज भी सारे प्रान्त में प्रचलित है। वास्तव में अवधी भाषा में ब्रजभाषा के अनुकरण की प्रणाली ली गयी है।

हिन्दी संसार

(श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, संग्रह मंत्री)

रेडियो में हिन्दी—आजकल रेडियों में जिस हिन्दी का उपयोग हो रहा है, वह न तो हिन्दी है और न हिन्दुस्तानी। इस सम्बन्ध में कई बार विरोध प्रकट किया गया है और लिखा भी गया है; परन्तु अब तक इसमें कोई सुधार नहीं हुआ है। प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय असेम्बली में पण्डित कृष्णकान्त जी मालवीय ने प्रश्नों के रूप में इस विषय को छेड़ा है और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है। सरकारी यातायात सदस्य सर एंड्रू क्लो ने इसे यह कह कर उड़ाने का प्रयत्न किया है कि सादा जबान की खातिर हिन्दी के मुश्किल शब्दों से बचा जाता है। फारसी में संगीत का प्रोग्राम तो कहा जाता है कि लोगों के मनोरंजन के लिये शामिल किया है; किन्तु संस्कृत संगीत के सम्बन्ध में कहा गया कि उसे शामिल करने का इरादा नहीं है। कहना नहीं होगा कि सादा जबान के नाम की ओट में जो काम हो रहा है वह सरल हिन्दी शब्दों के बदले फारसी शब्दों का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है। गेहूँ जैसे सरल शब्द के रहते 'गन्दुम' शब्द का प्रयोग किया जाता है। पिछले साल उर्दू के दो मुशायरे हुए जिनमें १७०) खर्च हुआ किन्तु हिन्दी का कवि सम्मेलन एक ही हुआ उसमें खर्च भी कम—केवल ६५) हुआ। तब भी हिन्दी का विरोध हो रहा है। यह तो मालूम पड़ता है कि संगठित प्रयत्न से उर्दू का प्रचार करने का काम हो रहा है। हिन्दी वाले समय से चेते हैं और इस भाषा का स्थान स्थान पर विरोध हो रहा है। यदि आन्दोलन जोरदार हुआ तो अवश्य भाषा का सुधार होने की आशा है।

काश्मीर में हिन्दी—काश्मीर हिन्दू राज्य है; वहां वालों की भाषा काश्मीरी है, तौ भी अभी भाषा के सम्बन्ध में वहां एक कमेटी बैठायी गयी थी, उसने अनुरोध किया है कि काश्मीर में राष्ट्रीयता के विचार से उर्दू का प्रचार किया जाय। अवश्य ही काश्मीर में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों की आबादी कुछ अधिक है। किन्तु इसके विपरीत हैदराबाद का उदाहरण

लीजिये। वहां मुसलमानी राज्य है, किन्तु वहां की प्रजा हिन्दू है, सैकड़ा ८७ हिन्दू हैं। किन्तु वहां के मुसलमान शासक प्रजा की भाषा हिन्दी, मराठी और तेलगू के प्रचार में कुछ भी उत्साह नहीं दिखालाते वहां उर्दू का प्रचार हो रहा है। वहां की उसमानिया यूनिवर्सिटी में भी उर्दू का माध्यम है। छुरा खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरे पर गिरे दोनों दशाओं में खरबूजा ही कटेगा वही हाल हिन्दी का हो रहा है। जहां की रियाया हिन्दू हैं किन्तु शासक मुसलमान है, वहां उर्दू का प्रचार होना चाहिये; क्योंकि वहां के शासक मुसलमान हैं। किन्तु जहां के शासक हिन्दू हैं किन्तु प्रजा मुसलमान है, वहां भी उर्दू का प्रचार होना चाहिये क्योंकि प्रजा के लिहाज से भाषा चलायी जाती है और राष्ट्रीयता की दुहाई दी जाती है। यह तर्क है, यह न्याय का खून है। काश्मीर में तो वह बात भी नहीं। वहां के प्रजा की भाषा काश्मीरी है। किन्तु राष्ट्रीयता की दृष्टि से उर्दू का प्रचार होना चाहिये। जिस तरह हो उर्दू का प्रचार करना उर्दू के हिमायतियों का उद्देश्य मालूम पड़ता है। देखें वहां की हिन्दू प्रजा और हिन्दू शासक कुछ सजीवता दिखलाते हैं या नहीं।

सिरोही में अंग्रेजी—सिरोही राजपूताने का एक हिन्दू राज्य है। वहां की भाषा हिन्दी है। अतएव अब तक अदालती भाषा भी वहां की हिन्दी ही है। किन्तु कोई मन चले जज वहां आये हैं। मालूम पड़ता है अपनी सुविधा के लिये उन्होंने कचहरियों की भाषा अंग्रेजी कर देने का हुक्म दिया है। जज के लिये लाखों प्रजा का बलिदान नहीं किया जा सकता। हमारी समझ में श्रीमान् सिरोही नरेश इस आज्ञा को चलने नहीं देंगे और सिरोही की प्रजा को तो इस अन्यायी आज्ञा के सामने कभी सिर झुकाना ही नहीं चाहिये। सिरोही की प्रजा जाग्रत अवस्था में है। अतएव वह अपना कर्तव्य समझ अवश्य उपाय चिन्तन करेगी।

राजपूताना साहित्य सम्मेलन—राजपूताने में यद्यपि साहित्य-सेवियों की कमी नहीं है। वहाँ के कई साहित्य सेवी तो भारत विख्यात उच्च श्रेणी के साहित्यिक हैं। तथापि अभी तक राजस्थान साहित्य सम्मेलन की आयोजना वहाँ नहीं हुई। कई बार कई स्थानों में प्रयत्न हुआ; किन्तु अभी तक कार्य सिद्धि नहीं हो पायी। अजमेर, व्यावर, जोधपुर और कोटा के

हिन्दी रसिकों ने उद्योग किया, उन्हें समर्थन भी मिला, किन्तु अभी तक अधिवेशन न हो पाया। अब अजमेर के "नव जीवन" से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उदयपुर मेवाड़ में आगामी आश्विन दशहरे के समय राजस्थान साहित्य सम्मेलन अवश्य होगा। आशा है, समस्त राजस्थान के हिन्दी प्रेमी मिलकर इसे सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे और ऐसा उद्योग करेंगे कि स्थायी रूप से इसका काम चलता रहे।

पञ्जाब में हिन्दी— विशाल भारत ने इस सम्बन्ध में एक लेख लिखकर बताया है कि पंजाब में ५०३६९४ मनुष्य देशी भाषाओं में शिक्षित हैं। इनमें से ३२६५५० मनुष्य उर्दू जानते हैं और १५९०६० मनुष्य हिन्दी जानने वाले हैं। युनिवर्सिटी के अंकों से मालूम पड़ता है कि हिन्दी सीखने वालों की संख्या वृद्धि पर है। सन् १९३१ में ५६४ विद्यार्थी मैट्रिक में हिन्दी माध्यम लेकर बैठे; किन्तु १९३९ में उनकी संख्या बढ़ गयी और १८३१ विद्यार्थियों ने हिन्दी माध्यम द्वारा परीक्षा दी। मैट्रिक में हिन्दी को एक विषय के रूप में सन् १९३४ में ३२७१ विद्यार्थियों ने लिया था; किन्तु १९३९ में ४४४० विद्यार्थियों ने लिया। मिडिल परीक्षा में गत वर्ष ४८०० लड़कियाँ बैठी थीं, इनमें २४०० हिन्दी वाली थीं। १५०० लड़कियों ने उर्दू और ८०० ने पंजाबी ली थी। पंजाब में हिन्दी रत्न, हिन्दी भूषण और प्रभाकर की परीक्षाएँ हिन्दी में होती हैं, इनमें गत वर्ष चार हज़ार विद्यार्थी बैठे थे। सन् ३८ में युनिवर्सिटी की संस्कृत परीक्षाओं से १० हजार रुपये, अरबी परीक्षाओं से २ हज़ार रुपये, पंजाबी परीक्षाओं से आठ हज़ार रुपये, फारसी परीक्षाओं से १० हज़ार रुपये, उर्दू परीक्षाओं से ४ हज़ार रुपये और हिन्दी परीक्षाओं से ३० हज़ार रुपये फीस में मिले थे। इतना होने पर भी पंजाब के उर्दू हिमायती कहते हैं, चाहते हैं और प्रयत्न करते हैं कि पंजाब के लड़कों और लड़कियों की शिक्षा उर्दू के द्वारा ही हो। वयस्क शिक्षा के लिये फारसी लिपि और पंजाबी में रीडर तैयार की गयी है; परन्तु हिन्दी अक्षरों में अब तक ऐसी रीडर नहीं बनी। लड़कों की प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी में होती ही नहीं है। जो लोग हिन्दी सीखना चाहते हैं वे पांचवी या सातवीं कक्षा से सीखना आरम्भ करते हैं। वर्नाक्युलर फाइनल परीक्षा में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी ली जा सकती है, माध्यम उर्दू का ही रहता है; क्योंकि सरकारी स्कूलों में

हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने का कोई प्रबन्ध नहीं है। इस पर भी अड़ंगा लगाने के लिये डाइरेक्टर की आज्ञा हुई है जिसके अनुसार कोई विद्यार्थी प्रथम भाषा के रूप में जो भाषा लेगा वही माध्यम रहेगी। इसका फल यह हुआ कि हिन्दी लेने वालों की संख्या घट गयी है! माध्यम बदलने के लिये विद्यार्थी को डाइरेक्टर के यहाँ दरखास्त देनी पड़ती है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि कोई लड़का हिन्दी न ले क्योंकि डाइरेक्टर के यहां से जब तक उत्तर आवेगा तब तक उसकी परीक्षा समीप आ जायगी। अतएव वह भाषा बदल ही न सकेगा। अभी तक पंजाब में लड़कियां हिन्दी अधिक पढ़ती हैं। किन्तु नये नियम से अब वे भी हिन्दी न पढ़ सकेंगी। इस प्रकार पंजाब में हिन्दी विरोधी प्रयत्नों का शिक्षा विभाग पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पंजाब के हिन्दी प्रेमियों, आर्य समाज और सनातन धर्म सभाओं, राष्ट्रभाषा प्रचारक संघ और प्रान्तीय सम्मेलन को इस सम्बन्ध में आवश्यक आन्दोलन और प्रयत्न करना चाहिये।

हिन्दी साहित्य सङ्घ—यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि यू० पी० सेक्रेटरियट के कुछ हिन्दी साहित्य प्रेमियों ने सम्मिलित होकर एक हिन्दी साहित्य-संघ की स्थापना की है। इस संघ का उद्देश्य हिन्दी प्रेमियों के नीरस जीवन को सरस बनाने के अतिरिक्त हिन्दी भाषा की सेवा तथा अभिवृद्धि एवं साहित्य प्रेमियों का संगठन, उनके साहित्यिक हितोंकी रक्षा, महत्वपूर्ण साहित्यिक विषयों पर विचार विनिमय, मौलिक साहित्य का निर्माण तथा देव नागरी लिपि और शुद्ध हिन्दी का समर्थन करना है। सेक्रेटरियट के कितने ही हिन्दी प्रेमी इसके सदस्य हैं। श्रीयुक्त बालकृष्णराव जी आई० सी० एस० अण्डर सेक्रेटरी संघके सभापति, असेम्बली विभाग के लायब्रेरियन श्रीयुक्त सी० जे० एडम्स और श्री चक्रधर हंस उप सभापति और श्रीयुक्त बांके बिहारी भटनागर एम० ए० मन्त्री हैं। इस समितिकी एक जोरदार बैठक पहले लखनऊमें हुई, दूसरी नैनीतालमें हुई है। समितिने रेडियोकी भ्रष्ट भाषा सुधरवानेका भी प्रयत्न किया।

नवीन लेखक क्या करे—कुछ दिन पहले श्रीयुक्त वी० एन० शर्मा 'विश्व ने' हिन्दी पत्रकारों से लेखक बनने के कुछ अनुभूत योग चाहे

थे। इस पर श्री विनयमोहन शर्मा ने स्वराज्य में लिखा था कि मनुष्य में आत्मप्रकटीकरण की भावना स्वाभाविक है, उसी भावना ने मनुष्य की "भाषा" को जन्म दिया है। संस्कार और शिक्षा के अनुसार यह प्रकृति प्रत्येक व्यक्तिमें कम ज्यादा होती है और जिस व्यक्तिमें उसकी प्रधानता रहती है वह लेखक-वक्ता या कवि के रूप में हमारे सामने आता है। अध्ययन-चिन्तन और विचारविनिमय से आत्म प्रकटीकरण की शक्ति का विकास होता है। प्रत्येक विषय के पक्ष-विपक्ष पर हमें अपनी बुद्धि से स्वयं सोचना चाहिये। दूसरे उस विषय पर क्या राय रखते हैं इसे अध्ययन कर विचारविनिमय से जानना चाहिये; और तब अपने तथा अन्यों के विचारों में कहाँ तक और क्यों सामान्य और असामान्य है इसकी विवेचना करनी चाहिये। इस विवेचना का जो परिणाम होगा वही व्यक्ति की "धारणा" होगी। अपनी धारणाओं का कर्त्रीकरण ही "मौलिक भाव" कहलाता है। जो ऐसे भावों के धनी होते हैं उनकी लेखनी में ज़ोर होता है और तभी वे अपनी रचनाओं से पाठकों को प्रभावित करते हैं, हिलाते हैं और उन्हें मानसिक भोजन देते हैं। जब लेखक में विचारों की पूँजी की कमी होती है तब वह अपनी रचना को "भाषा" से सँवारने लगता है। भावना प्रधान साहित्य लिखने की इसीलिये लेखन-जीवन के प्रारम्भ में रुचि बढ़ती है। अध्ययन और मनन की लेखक को ही आवश्यकता नहीं है, कवि और कहानीकार को भी हैं। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भावनाओं में जो गहराई है वह कोरी भावुकता का ही परिणाम नहीं है, उसमें उनका, सन्तकवियों तथा आंग्ल कवियों का अध्ययन भी सतरंगी अन्तर्हिता रवि रश्मियों के समान विद्यमान है। कल्पना साहित्य के लिये समाज के सुख दुःख का प्रत्यक्ष अनुभव आवश्यक है। साहित्य प्रेमी को साहित्यकार बनने के लिये इससे अधिक एक बात और चाहिये और वह है सधैर्य लगातार लेखनश्रम करते रहने की साधना।

राष्ट्रभाषा के लिये ठोस कार्य—'सब की बोली' में इस सम्बन्ध में एक नोट आया है। जिसमें कहा गया है कि राष्ट्रभाषा प्रचार केवल परीक्षाओं से नहीं होगा। परीक्षा के साथ साथ साधन ग्रन्थों की तैयारी चाहिये। हम लोगों ने आज तक अगर सेवा की तो वह संस्कृत की।

अंग्रेजी के लिये हमने क्या क्या न किया ! अंग्रेज़ लोग स्वयं अपनी भाषा के ऐसे भक्त हैं कि ज़मानों तक हमें उनसे सबक सीखने पड़ेंगे । अंग्रेज़ों ने अपनी भाषा की भक्ति करके अनेक साधन ग्रन्थ तैयार किये। देखी देखा हम भी उन्हीं की भाषा के भक्त बन गये।.....जो मेहनत हमने संस्कृत के ऊपर की है और अंग्रेज़ी के लिये कर रहे हैं, वही कार्य हमें राष्ट्रभाषा के लिये तुरन्त करना चाहिये। इसमें हिन्दी उर्दू का झगड़ा उठाना आत्मघात की नीति होगी।......हमने राष्ट्रभाषा सिखाने के तरीके बनाने वाले एक ग्रन्थ की मांग शिक्षाशास्त्रियों के सामने पेश की है। यह किताब हिन्दी सीखने वाले और उर्दू सीखने वाले दोनों के काम की होगी ......स्कूल और कालेजों में केवल फारसी और अरबी पढ़ायी जाती है। उसकी जगह अगर यह नियम किया होता कि एक क्लैसीकल भाषा और स्वभाषा को छोड़ कर और कोई एक दूसरी भाषा पढ़नी होगी तो भारतीय एकता की ओर हम बहुत कुछ आगे बढ़ सकते हैं। अंग्रेज़ों ने हमें आपस में एक दूसरे का बहिष्कार करने में उत्तेजन दिया और हमारी राष्ट्रीय एकता शिथिल कर डाली। अब हमें प्रयत्नपूर्वक एक दूसरे का परिचय बढ़ाना होगा। इस प्रयत्न में केवल हिन्दी और उर्दू दो को ही हम लेकर न बैठें; किन्तु सबकी सब प्रान्तीयभाषाओं को भी साथ में लेना होगा। इसके लिये द्विभाषी, त्रिभाषी और पंचभाषी वर्ग कोष भी बनाने होंगे। ऐसे एक अच्छे वर्गकोष (वर्ड बुक की तरह) के लिये अगर हजार रुपये का पारितोषिक रक्खा जाय तो वह अधिक नहीं है। किन्तु ऐसे काम के लिये केवल कोष लेकर बैठने से हमें सफलता नहीं मिलेगी। प्रत्यक्ष एक एक साहित्य सागर का ही मन्थन करना होगा; क्योंकि इन सब सागरों को मिला कर हमें आख़िरकार एक भारतीय महासागर बनाना है।

आधुनिक बाल साहित्य—कुछ वर्षों पहले बाल साहित्य की हिन्दी में बहुत कमी थी। उसकी आवश्यकता की माँग बढ़ी, इधर कुछ लेखकों में कमाने की नयी उमंग जमी और बाल-साहित्य के नाम से जैसा साहित्य निर्माण होने लगा वह सभी स्वागत योग्य नहीं हो सका। तरह तरह के विचित्र नामों से बाल साहित्य की सृष्टि होने लगी है। इससे बच्चों का बस्ता

तो बहुत मोटा हो गया; किन्तु उसी के अनुसार उनकी ज्ञान वृद्धि नहीं हो सकी। यदि मनोरञ्जन के साथ कुछ उपदेश न मिला, ज्ञान वृद्धि न हुई तो उसे साहित्य कहा ही नहीं जा सकता। ऐसी पुस्तकों के नाम रखने में जितनी दिमागी ताक़त लगायी जाती है, यदि अच्छे लेखकों का चुनाव कर पुस्तकें भी अच्छी लिखायी जायँ तो बच्चों का मनोरञ्जन हो, उनका अनुभव और जानकारी बढ़े, उपदेश मिले और उनमें ज्ञान की वृद्धि भी हो। श्रीयुत दिनेश बी० ए० जी ने शुभचिन्तक में इस विषय को लेकर एक आलोचनात्मक लेख लिखा है। आपका कहना है कि ऐसी पुस्तकों में संगीत की जगह केवल तुकबन्दी नहीं होनी चाहिये। संगीत पर संगीतज्ञ ही सफलता से कलम चला सकता है। बच्चों के लिये यदि प्रहसन या छोटे नाटक लिखने हों तो वह भी उन्हीं के योग्य होने चाहिये। लड़कों को सिनेमा के गान जितने जल्दी याद हो जाते हैं उतने अकुशल लेखकों के गीत नहीं हो पाते। विनोद की सामग्री की भी ऐसी ही दुर्दशा है। जब तक किसी लेख या विनोद या अभिनय से बच्चों में भाव की उत्पत्ति न हो, तब तक उस कार्य का महत्व उन्हें समझाया नहीं जा सकता। दिनेश जी का कहना है कि हमारे असफल कविगण यदि छायावाद और रहस्यवाद के बदले भारतीय गार्हस्थ्यवाद पर अपनी कलम उठावें तो साहित्य और समाजका विशेष भला हो। हमारे जीवन के बहुत कुछ कवितामय अंगों को कवियों की लेखनी ने छुवा तक नहीं! एक ही एक विषय की क़ब्र को खोद-खोद कर उस पर ही तरह तरह के बहुमूल्य शब्दों का जामा बार बार बेमतलब पहनाया जाता है। इसी तरह "लोरियों" की भी हमारे साहित्य में कमी है। प्राथमिक शिक्षा के शब्द क्रम में इतिहास को भी किसी रूप में स्थान मिलना चाहिये और ऐसी मुख्य मुख्य घटनाओं के वर्णन बच्चों को माँ के दूध के साथ गान के रूप में मिलना चाहिये। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने भी बाल साहित्य के निर्माण की ओर ध्यान दिया है, आशा है उससे निर्दोष बाल साहित्य की प्राप्ति की जा सकेगी।

श्रीभानु अभिनन्दन ग्रन्थ—भानुकवि बाबू जगन्नाथप्रसाद मध्यप्रदेश ही नहीं समस्त भारतके साहित्यिकों के आदर और मान के पात्र हैं। उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने के लिये रायपुर में एक समिति स्थापित हुई है।

इस वृद्ध महारथी को जो ग्रन्थ भेंट किया जायगा, उसमें मध्यप्रदेश के सभी जीवित लेखक और कवियों की रचनाएं रहेंगी। जीवित लेखकों से तो लेख लिखाये ही जाँयगे; किन्तु समिति ने एक और भी सुन्दर अनुष्ठान सोचा है। मध्यप्रदेश के कुछ स्वर्गीय लेखकों के भी ऐसे लेख प्रकाशित करने का विचार है जो अभी तक अप्रकाशित हैं। इनमें १ सैयद अमीर अली मीर २ पंडित माधव रावजी सप्रे ३ पं० विनायकराव भट्ट ४ पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी ५ डाक्टर हीरालाल ६ पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ७ पं० अनन्तराम पाण्डेय ८ श्री मंगला प्रसाद विश्वकर्मा ९ पण्डित विष्णुदाल मिश्र १० श्री गोविन्ददास जी भारतीय के नाम सूचित किये गये हैं। अतः जिनके पास इनकी अप्रकाशित रचनाएं हों उन्हें शीघ्र लेख संकलन मन्त्री, श्रीयुत बन्देअली फातमी, प्रेम मन्दिर, रायपुर सी. पी. के पते से भेज देना चाहिये। हमारी समझ में स्वर्गीय लेखकों में यदि ठाकुर जगमोहनसिंह और मालिनी रचयिता पं० नन्दलाल जी के लेख भी प्राप्त हो सकते तो उत्तम होता।

हिन्दी पत्रों का निश्चय—लड़ाई छिड़ने पर कागज की महँगी आदि कठिनाइयों का विचार करते हुए हिन्दी पत्रों की समिति ने तय किया था कि दैनिक पत्रों की पृष्ठ संख्या ६ से अधिक न रखी जाय। इधर की महँगी तथा छपाई के सामानों की महँगी और भी बढ़ गयी और ज्यों ज्यों लड़ाई की भयंकरता बढ़ती जाती है त्यों त्यों महँगी की विभीषिका और भी बढ़ रही है। २४ जून को संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी पत्रों के प्रतिनिधियों ने कानपुर में इकट्ठा होकर इस पर फिर विचार किया है। अब पृष्ठ संख्या तो वही ६ रहेगी; किन्तु दैनिक पत्रों का दाम दो पैसे की जगह तीन पैसा फी अंक होगा। एजंटों के पास जो अंक भेजे जायँगे उन्हें एजंट बेचे या न बेचे अब वे वापस नहीं किये जायँगे। साप्ताहिक पत्रों का मूल्य चार की जगह पांच पैसा हो जावेगा।

प्राप्तिस्वीकार

(श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, संग्रह मन्त्री)

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी संग्रहालय के लिये प्राप्त हुई हैं। एतदर्थ प्रेषक-प्रकाशक और लेखक महोदयों को अनेक धन्यवाद।

हिन्दुस्तानी मुहावरे—हिन्दी में प्रचलित मुहावरों का कोई अच्छा संग्रह अब तक नहीं था। इस अभाव की पूर्ति इस वर्ष के हमारे सभापति वृद्ध साहित्य महारथी और व्याकरणाचार्य पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी जी ने कर दी है। इस पुस्तक में अकारादि क्रम से मुहावरे देकर उनका अर्थ समझाया गया है, साथ ही उदाहरण के द्वारा अर्थ की पुष्टि की गयी है। यही नहीं अंग्रेज़ी में भी उसका भाव समझा दिया गया है। जिससे पुस्तक हिन्दी भाषाभाषी पाठकों के लिये ही नहीं राष्ट्रभाषा सीखने वाले और हिन्दुस्तानी समझने की इच्छा रखने वाले सज्जनों के लिये भी उपयोगी हुई है। दाम १।) पता पं० उपेन्द्रनारायण वाजपेयी, १०२ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

नवरस—बाबू गुलाबराय जी एम० ए०, एल-एल० बी० इसके लेखक हैं। आप इस विषय के मर्मज्ञ और प्रसिद्ध आलोचक हैं। अतएव आपकी लिखी पुस्तक का विशेष महत्व है। इसीलिये कई विश्वविद्यालयों और परीक्षण संस्थाओं में पाठ्य पुस्तक के रूप में इसका प्रचार भी है। इसमें नवों रसों की परिभाषा, भावों और मनोविकारों की शरीर विज्ञान सम्बन्धी व्याख्या के सहित देने का उद्योग किया गया है। उदाहरण प्राचीन और वर्तमान नवीन कवियों के भी दिये गये हैं। भावों के खोलने का अच्छा प्रयत्न किया गया है। पहले और दूसरे अध्याय में रस निर्णय तथा रससामग्री का वर्णन कर तब अध्यायों में नवरस का और फिर नवरस से तररस रसाभास और भावाभास, रसों की शत्रुता और मैत्री, रसदोष, रसों का काव्याङ्गों से सम्बन्ध तथा रसनिष्पत्ति आदि आनुषंगिक विषयों का वर्णन दिया गया है। काव्य रसों का रस लेने की इच्छा रखने वालों के लिये पुस्तक बहुत काम

की है। मूल्य ४) मन्त्री, आरा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा से प्राप्त होगी।

सुशील शिक्षा—पुस्तक शिक्षाप्रद है। सुशील और सुचरित्र होने के लिये किन गुणों की आवश्यकता है, उन्हीं का स्वर्गीय पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने संक्षेप में वर्णन किया है। मूल्य दो आना। पता—नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

बाबू जैनेन्द्र किशोर की जीवनी—आरा में एक रईस, सम्पादक, साहित्यिक कवि और देश सेवक रूप में प्रख्यात बाबू जैनेन्द्र किशोर जी हो गये है। श्रीमान पं० सकल नारायण पाण्डेय जी के साथ आपने आरा नागरी प्रचारिणी सभा और नागरी प्रचारक पुस्तकालय भी स्थापित कराया था। उन्हीं की इसमें जीवनी है। मूल्य =) पता नागरी प्रचारणी सभा, आरा।

अपराजिता—चन्द्रवंशीय राजा उदय नारायण के राजकवि शेखर भक्तिरस प्रधान कविता किया करते थे। एक बार राज दरबार में शब्द शास्त्र-वेत्ता पण्डित पुण्डरीक दक्षिण से आये। दोनों में शास्त्रार्थ हुआ। शेखर शान्त और भक्त थे और पुण्डरीक वावदूक था। राजा ने उसी को विजय-माल पहनायी। शेखर कवि को ऐसी ग्लानि हुई कि घर में आकर उन्होंने अपनी सब कविता आग में जला दी और स्वयं विषपान कर लिया। शेखर कवि की कविता का रसा स्वाद राजकन्या अपराजिता पर्दे में रह कर ही करती थी। अपने पिता का यह निर्णय उसे बहुत दुःखकर मालूम हुआ और उसने रात में शेखर कवि के घर आकर कहा कि पिता जी का निर्णय ठीक नहीं हुआ; यथार्थ विजयी आप ही हुए हैं; अतएव मैं आपको विजय माला पहनाती हूँ। इससे कवि शेखर को शान्ति तो हुई किन्तु विष असर कर गया था और उसी से उनका अन्त हो गया। इस पुस्तक में यही कथानक है। मूल्य –)॥ पता नागरी प्रचारणी सभा, आरा।

खगोल विज्ञान—खगोल विज्ञान पर बाबू जैनेन्द्र किशोर अग्रवाल का लिखा हुआ निबन्ध है। दो आने में आरा नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त होता है।

आरापुरातत्व—म० म० पं० सकलनारायण पाण्डेय जी ने आरा ज़िले के पुरातत्व अनुसन्धान का इसमें विवरण दिया है। जिसमें कहा गया है कि महाभारत के पहले यह एक चक्रापुरी नाम से प्रसिद्ध था और भीमसेन ने वकासुर राक्षस को यहीं मारा था। इतिहास प्रसिद्ध अरण्यों में से यह भी एक था। इसी तरह ज़िले के प्रसिद्ध स्थानों का इतिहास दिया गया है। मूल्य ≡) पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

रसायन शास्त्र—बाबू आनन्द बिहारी की लिखी हुई यह रसायन शास्त्र (कैमिस्ट्री) की पुस्तक है। ३४ वर्ष पहले आरा नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया था। मूल्य ॥=)

कलवार की उत्पत्ति—इसमें कलवार जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विचार किया गया है और कलवार जाति को वैश्यों के अन्तर्गत माना गया है। दाम आध आना। पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

बाबू राधाकृष्णदास—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्णदास की संक्षिप्त जीवनी बाबू ब्रजनन्दन सहाय की लिखी हुई है। दाम ।)॥ पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

अर्थशास्त्र-बाबू ब्रजनन्दन सहाय जी वकील ने यह बालोपयोगी अर्थशास्त्र लिखा था। दाम =) पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

बाबू रामदीनसिंह—खड्गविलास प्रेस के संस्थापक बाबू रामदीन सिंह जी की संक्षिप्त जीवनी बाबू नरेन्द्रनारायण सिंह जी ने लिखी है। मूल्य –) पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

पं० बलदेवप्रसाद मिश्र—मुरादाबाद निवासी स्वर्गीय सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक और हिन्दी प्रचारक पं० बलदेव प्रसाद मिश्र की यह संक्षिप्त जीवनी बाबू ब्रजनन्दन सहाय की लिखी हुई है। दाम –) पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

सृष्टितत्व—म० म० पण्डित सकलनारायण पांडेय जी ने बहुत सरलता से सृष्टितत्व के कठिन विषय को संक्षेप में समझाया है। पुस्तक काम की है। दाम =) पता नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

सिक्ख गुरुओं की जीवनी—बाबू शिवनन्दन सहाय जी ने इस पुस्तक में सिक्ख पन्थ के दशों गुरुओं की जीवनी, उनके उपदेश, उनके अद्भुत कार्य, और जाति तथा धर्म के संगठन के लिये आत्मत्याग का वर्णन किया है। अन्त में गुरु खानदान के कुछ विशिष्ट पुरुषों और श्री बन्दा वैरागी का भी वर्णन दिया गया है। दाम लिखा नहीं।

हरिऔध अभिनन्दन ग्रन्थ—हरिऔध पण्डित अयोध्यासिंह जी उपाध्याय की सत्तरवीं वर्ष गाँठ के उपलक्ष्य में आरा नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया था। भूमिका लेखक डाक्टर काशीप्रसाद जी जायसवाल थे। सम्पादक म० म० पं० सकलनारायण शर्मा, पं० रामप्रीति शर्मा, और पं० श्रीनाथ पाण्डेय लिखित वक्तव्य बहुत महत्व का है। उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा लिखित १३१ लेख और कितने ही चित्रों से युक्त पुस्तक है। यह अभिनन्दन ग्रन्थ सभा की कृति का एक उत्कृष्ट नमूना है। दाम १०)

सत्यामृत— सत्यसमाज सत्याश्रम, वर्धा की ओर से श्रीयुत दरबारीलाल जी सत्यभक्त की लिखी हुई यह मानव धर्मशास्त्र सम्बन्धी विश्वशान्ति के उद्देश्य से सम्पूर्ण राष्ट्रों, सम्प्रदायों और जातियोंमें सांस्कृतिक ऐक्य स्थापित करने के तरीके बतलाने वाली यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। पुस्तक पढ़ने और विचार योग्य है। दाम १।)

भेषजरत्नाकर—माडर्न इकानमिक फार्मसी, ४२। ४ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता की ओर से डाक्टर नैश एम. डी. की होमियोपैथी की पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है। ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ४) है।

बिहार का एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन—बिहार के पिछले काँग्रेस अधिवेशन के उपलक्ष्य में विहार के इतिहास की यह पुस्तक तैयार की गयी है। प्राप्त साधनों का उपयोग कर श्रीयुत पृथ्वीसिंह जी मेहता ने श्रीयुत जयचन्द जी विद्यालंकार की पूर्ण सहायता से इसे तैयार किया है। प्रारम्भिक काल से लेकर अब तक का बिहार का यह खासा इतिहास तैयार हो गया है। पुस्तक महत्वपूर्ण है। दाम १॥।) पता—पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय, दर्भङ्गा।

भूठसच—पुस्तक साधारण पाठकों के काम की चाहे न हो परन्तु साहित्यिक बन्धुओं के मनोरंजन के लिये बढ़िया साधन है। यह साहित्यिक निबन्धों का संग्रह है। लेखक हैं कुशल साहित्यिक बाबू सियारामशरण जी गुप्त। भावों के बवण्डर और साहित्यिक शब्दाडम्बर समझने के लिये साहित्यिक पाठक ही उपयुक्त हो सकते हैं। दाम २) पता—साहित्य सदन चिरगांव, झाँसी।

साकेत—(एक अध्ययन) कमर्शल कालेज दिल्ली के प्रोफेसर श्रीयुत नरेन्द्र जी ने श्रीयुत मैथिली शरण जी गुप्त के 'साकेत' का मार्मिकता और सहृदयता के साथ अनेक बार अध्ययन, अनुशीलन और आकलन किया है। उसी के फल स्वरूप आपने यह आलोचना ग्रन्थ लिखा है समालोचना बड़ी गम्भीरता, सहृदयता और उदारता के साथ की गयी है। गुप्त जी की कविता के गुण इससे अधिक निखर आये हैं। पुस्तक साहित्यकों के अनुशीलन योग्य है। मूल्य १॥) पता—साहित्य रत्न भण्डार, सिविल लाइन, आगरा।

विहार का चित्रित गौरव—रामगढ़ कांग्रेस के समय उसकी स्वागत समिति ने विहार का एक सचित्र विवरण छापा था, जिससे विहार का गौरव संक्षेप में प्रस्फुरित हो जाय। इसके लेखक श्रीयुत राधाकृष्ण जी और प्रस्तावना लेखक श्रीयुत डाक्टर बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी हैं। पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय ने इसे प्रकाशित कर अवसर के अनुरूप अच्छा काम किया है। सीतास्वयम्बर से आरम्भ कर जरासन्ध, महाजनक, महावीर, बुद्ध, वैशाली, सेल्यूकसआत्मसमर्पण, कुणाल, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, आर्यभट्ट, स्कन्द गुप्त, शेरशाह, गुरु गोविन्दसिंह, मीरकासिम, बाबू कुंवरसिंह तथा विरसा भगवान आदि के चित्र देकर परिचय दिया गया है। परिचय बड़ी ही सजीव भाषा में है। मूल्य १)

बैजू की सूक्तियां—सतगढ़ रीवां के श्रीयुत वैद्यनाथ प्रसाद "बैजू" अध्यापक जी बघेलखण्डी बोली में बहुत अच्छी और मार्मिक कविता करते हैं। उन्हीं की कविताओं का इसमें संग्रह है। बैजू जी की दृष्टि बड़ी पैनी और सूक्ति गहरा असर डालने वाली है। दाम ≈) पता—प्रकाश कार्यालय, रीवां।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद—समाजवाद की फिलासफी सम्बन्धी पुस्तक है। समाज परिवर्तन का विज्ञान इसमें अच्छी तरह समझाया गया है। कार्लमार्क्स की क्रान्तिकारी कार्यप्रणाली का विवेचन हिन्दी में जिन्हें देखना हो इसे अवश्य पढ़ें। दाम १।) श्रीनाथ पाल्लित विशारद, ३९ केसरी कार्यालय, कचहरी रोड गया।

हमारे गांव और किसान—श्री चौधरी मुखत्यारसिंह जी ने गाँवों की दशा और किसानों की स्थिति पर चार भागों में अच्छा प्रकाश डाला है। गरीबी के कारण, प्राचीन आदर्श, खेती पर प्रभाव डालने वाले महत्व-पूर्ण कारण तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष और सरकार द्वारा करने के उद्योगों का अच्छा विवेचन हुआ है। मूल्य ॥) पता—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली।

सत्याग्रह—महात्मा गाँधी जी ने इस पुस्तक में यह दिखलाया है कि सत्याग्रह क्यों कब और कैसे किया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध में १७ लेख महात्मा गांधी के, दो पं० जवाहरलाल नेहरू के और दो श्रीयुत महादेव देसाई के भी है। दाम ≶) पता—सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

राष्ट्रीय पंचायत—कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली पर महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर पट्टाभिसीतारामैया, श्री एम० एन० राय, बाबू सम्पूर्णानन्दजी और श्री आसफ अली के लेखों को श्रीयुत यशपाल बी० ए० एल-एल० बी० ने सम्पादित किया है। मूल्य।) पता—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली।

प्रेम में भगवान—सस्ता साहित्य मण्डल टालस्टाय ग्रन्थावली भी निकालता है। उसी माला की श्री जैनेन्द्र कुमार जी लिखित यह तीसरी पुस्तक है। महात्मा टालस्टाय के १७ लेखों का यह अच्छा अनुवाद हैं। मूल्य ।॥)

युद्ध संकट—अभी ब्रिटेन ने जर्मनी से जो युद्ध घोषणा की है, उसके सम्बन्ध में भारत का क्या रुख होगा इस विषय में महात्मा गाँधी और वाइस-राय की बातचीत से लेकर २६ जनवरी स्वाधीनता दिवस तक जो विचार महात्मा गाँधी, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, पं० जवाहरलाल नेहरू आदि ने प्रकट किये हैं तथा कार्य समिति और महासमिति ने जो प्रस्ताव किये हैं, उनका

संकलन किया गया है। मूल्य।) पता—सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

बाल साहित्य माला—दिल्ली का सस्ता साहित्य मण्डल एक बाल साहित्य माला भी प्रकाशित करता है। उसकी पहली पुस्तक सीख की कहानियाँ हैं, जिनमें ८ कहानियाँ हैं। कहानियां श्रीयुत गिजूभाई की गुजराती कहानियों का स्वतन्त्र अनुवाद है। दाम =) दूसरी पुस्तक कथा कहानी है। इसमें भी पहले से कुछ ऊँचे दर्जे की सात कहानियों का संग्रह है। दाम =) तीसरी पुस्तक शिवाजी चरित्र की है। इसमें संक्षेप में किन्तु बालकों को कर्तव्य परायणता, वीरता, देशभक्ति और चतुराई का पाठ पढ़ाने के ढंग पर महाराज शिवा जी का चरित्र लिखा गया है। दाम =)

साधना मन्दिर की पुस्तकें—नं० १०४ सी० पी० टैंक रोड, बम्बई में साधना मन्दिर नामक एक प्रकाशित संस्था स्थापित हुई है। इसकी पहली पुस्तक जापान के गाँधी कागावा के परिचय की है। कागावाका कहना है कि मेरे ग्रन्थों में मेरी अन्तरात्मा रोती है और उसके रोने को जो कोई सुनता है वही मेरा सच्चा मित्र है। कागावा का "वसुधैव कुटुम्बकम्" सिद्धान्त का सच्चा चरित्र पढ़ने और मनन करने योग्य हैं। लेखक हैं बनारसी दास चतुर्वेदी। दाम लागत मात्र। एक आना। दूसरी पुस्तक अराजकवादी ऐमा गोल्डमैन के चरित्र की है। इसके लेखक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी हैं। इस रूसी महिला ने कितने कष्ट सह कर अपने सिद्धान्तों का पालन किया यह पढ़ने योग्य है। मूल्य एक आना। तृतीय पुस्तक "मेरी भावना" है। लेखक है श्रीयुत जुगलकिशोर मुख्तार। दाम दो पैसा। चौथी पुस्तक अराजकवादी लुई माइकेल की जीवनी है। लेखक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी हैं। मूल्य −) इस निर्भीक फ्रेञ्च अराजकवादी महिला का चरित्र बड़ा तेजोमय है। पांचवीं पुस्तक रूस के नेता प्रिंसक्रोपाटकिन की जीवनी की है। इसे भी पं० बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने लिखा है। दाम −) एक राजकुमार होते हुए भी क्रोपाटकिन एक दार्शनिक, अत्याचार पीड़ित जनता पर दया दृष्टि फैलाने वाले और भौगोलिक विद्वान ही नहीं थे; किन्तु सक्रिय अराजक भी थे। बोरोडिन के नाम से गुप्तरूप से किसानों में जागृति करना, अराजक साहित्य का प्रचार करना आपका वर्षों से चलता रहा। ४२

वर्ष तक आप निर्वासित रहे और आश्चर्य है कि रूसी क्रान्ति के बाद भी लेनिन का समर्थन न कर सकने के कारण आप सुखी न रह सके। छठी पुस्तक में इटली के अराजकवादी मैलटेस्टा का जीवन चरित्र है। लेखक वही पं० बनारसीदास चतुर्वेदी और मूल्य -) है। मैलटेस्टा अभी ८१ वर्ष के हैं और जीवित हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू कहते हैं कि एक बार इन्हें इसलिये जेल की सजा दी गयी थी क्योंकि इनके उपदेश से लोगों का स्वभाव बदल गया, लोगों ने अपराध करना बन्द कर दिया, जुर्मों की संख्या घट गयी। सरकार को डर हुआ कि अपराध बन्द हो जायँगे फिर अदालतें क्या करेंगी! सातवीं पुस्तक का नाम 'मंगलमय महावीर' है। लेखक श्री साधु वसवानी जी हैं। मूल्य -) जैनियों के आचार्य तीर्थङ्कर महावीर स्वामी का इसमें जीवन चरित्र है। आठवीं पुस्तक 'बाल शिक्षण और मा-बाप' नाम की है। इसमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के विचारों का भी समावेश है। लेखक हैं श्री भानुकुमार जी जैन। मूल्य एक आना। नवीं पुस्तक 'विप्लवगान या क्रान्तिगीत' नाम की है। इसमें हिन्दी के प्रसिद्ध क्रान्तिदर्शी कवियों की रचनाओं का संग्रह है। मूल्य -)

सुभाषचन्द्र बोस—बाबू सुभाषचन्द्र बसु का जीवन चरित्र है। लेखक श्री रमेशचन्द्र जी आर्य और सम्पादक पं० इन्दु जी विद्यावाचस्पति। मूल्य ।=) पता—विजयी पुस्तक भण्डार, दिल्ली।

बालकों का योरप—प्रोफेसर कृपानाथ मिश्र, एम० ए० लिखित बालकों के समझने योग्य यूरप का सचित्र इतिहास है। मूल्य ।=) पता—पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय।

ढाई हज़ार अनमोल बोल—सन्त महात्माओं की वाणियों से ढाई हज़ार अनमोल बोल अर्थात सूक्तियाँ श्रीयुत हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने संग्रह की हैं। पुस्तक भक्ति, नीति, सदाचार, कर्तव्य आदि बोधक वचनों से पूर्ण है। दाम ॥=) पता—गीता प्रेस, गोरखपुर।

प्राचीन भक्त—श्रीयुत हनुमानप्रसाद पोद्दार जी ने पुराणों से संग्रह कर मारकण्डेय आदि १५ भक्तों के चरित्र और कथाओं का इसमें संग्रह किया है। तेरह चित्र भी है। कथाएँ संक्षिप्त होने पर भी बहुत ही रोचक।

उपदेशप्रद और भक्ति बढ़ाने वाली हैं। मूल्य ॥) पता गीता प्रेस, गोरखपुर।

प्रेमी भक्तउद्धव—श्री मद्भागवत की कथा सुनने-पढ़ने वालों को भक्तराज उद्धव का नया परिचय नहीं कराना होगा। श्री शान्तनु बिहारी जी द्विवेदी ने उन्हीं का इसमें जीवन चरित्र लिखा है। श्री कृष्णभक्ति में तल्लीन कराने वाली पुस्तक है। मूल्य ≥) पता—गीता प्रेस, गोरखपुर।

मिस्टीसिज़म इन दी उपनिषद— श्रीयुत बाबू बांके बिहारी जी ने बड़े परिश्रम से उपनिषदों का मन्थन कर उपनिषदों के मूलभूत उपदेशों और विषयों का इसमें वर्णन किया है। पुस्तक अंग्रेजी में है और हिन्दी द्वारा ऐसे विषयों को न समझ सकने वालों के लिये उपयोगी है। मूल्य ||=) पता—गीता प्रेस, गोरखपुर।

श्री रामचरित मानस—तुलसीकृत श्री रामचरित मानस का यह मूल गुटका है, छपाई सफाई बढ़िया है। रामायण पाठ करने वालों के लिये काम की चीज़ है। मूल्य ॥) पता—गीता प्रेस गोरखपुर।

हिन्दी छहढाला—इसमें जैन धर्म का रहस्य बड़े पाण्डित्य के साथ दिया गया है। इसके रचयिता कविवर दौलतराम जी हैं। जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी ने हिन्दी अनुवाद किया है। जैन साहित्य प्रचारक कार्यालय हीराबाग पो० गिरगांव, बम्बई में पुस्तक प्रकाशित हुई है। बीस हजार पुस्तक बिक चुकी और आठवीं बार तीन हजार फिर निकली है। मूल्य ≥)

जैन सिद्धांत प्रवेशिका—इसे भी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय ने प्रकाशित किया है। पं० श्री गोपालदास वरैया इसके लेखक हैं। इसके अध्ययन से जैन सिद्धान्तों में सुगमता से प्रवेश हो सकता है। श्री फूलचन्द सिद्धान्त शास्त्री ने इसे हिन्दी पाठकों के लिये अनुवादित किया है। मूल्य ।=)

आज़ादी की कुर्बानियां—श्रीयुत राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह बी० ए०, एम० एल० ए० ने इसमें रूस देश के आज़ादी के दीवानों के १२ जीवन चरित्र लिखे गये हैं। स्वतन्त्रता के लिये किस प्रकार आत्मबलिदान

करना होता है, किस प्रकार मूल्य चुकाना होता है, यह इन कुर्बानी की कथाओं से अच्छी तरह मालूम पड़ेगा। मूल्य ||) पता—मैनेजर किताब घर, कदम कुवां, पटना।

राष्ट्र के कर्णधार—इसमें महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई, श्रीमती सरोजनी नायडू, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, खान अब्दुल गफ्फार खां, आचार्य कृपलानी, श्री भूलाभाई, पट्टाभि सीतारामैया, श्री शंकरराव देव, श्री एम० एन० राय, श्री सुभाषचन्द्र बोस और श्री जयप्रकाश नारायण के जीवन चरित्र दिये गये हैं। पुस्तक सर्वथा पठनीय है। सम्पादक श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार हैं। दाम ||) पता—किताब घर, कदम कुवां, पटना है।

लालचीन—पुस्तक बहुत योग्यता और परिश्रम से लिखी गयी है। चीन देश किस प्रकार अंगड़ाई लेकर उठा और किस प्रकार वहां के नव जवानों में लाल खून दौड़ा, किस प्रकार वहां वालों ने अपना कर्तव्य सँभाला, किस प्रकार वहां विचारों की क्रान्ति हुई और वहाँ के नवजवान देश के लिये मरने मारने को तैयार हुए, किस प्रकार वहां सोवियट सिद्धान्तों का प्रचार हुआ इसका सजीव वर्णन इसमें दिया गया है। लेखक हैं श्रीयुत रामवृक्ष वेनीपुरी जी। पुस्तक दो रुपये में ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर से मिलती है।

स्टालिन—रूस के नेता स्टालिन का इसमें जीवन लिखा गया है। उनके उथल पुथलकारी कार्यों का और तहलका मचानेवाले तथा संसार के रंग ढंग को पलट देने वाले सिद्धान्तों का भी इसमें परिचय मिल जाता है। इसके लेखक श्रीराम इकबाल सिंह जी 'राकेश' मूल्य २) पता—ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर।

यजुःकर्मदीपिका– यजुर्वेदियों के लिये समस्त धार्मिक और सामाजिक तथा नित्य करणीय कर्मों का इसमें संग्रह किया गया है। धार्मिक पुरुषों के लिये पुस्तक बहुत काम की है। मासमास के कृत्यों का अलग विवेचन है। पुस्तक बंगला में है। लेखक पण्डित रामहरि स्मृति तीर्थ और प्रकाशक

नवविभाकर प्रेस ९१। २ मछुवा बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता है। मूल्य लिखा नहीं है।

दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास—श्रीयुत भवानी दयालु जी ने इसे कई वर्ष पहले लिखा था। पुस्तक महत्व पूर्ण है। मूल्य ३॥) पता—सरस्वती सदन, इन्दौर।

व्यक्ति और राज—इसके लेखक श्रीयुत सम्पूर्णानन्द जी हैं मूल्य १=) और प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजेंसी, ज्ञानवापी, काशी है। इसमें अध्यात्मवाद, द्वन्द्वात्मक प्रधान वाद, फासिस्टवाद और नाज़ीवाद; अफलातून का मत, सुखकी खोज, स्वाधीनता, तत्परता की सीमा, राज और आत्मज्ञान आदि विषयों की विवेचना की गयी है। स्तम्यवाद के सिद्धान्तों के अनुसार विषयों का विचार हुआ है। गम्भीर विचारपूर्ण पुस्तक है।

आनन्द शब्दावली—शिमला के पास विलासपुर रियासत है। वहां के धीश्वर श्रीमान महाराज आनन्द चन्द जी चाहते हैं कि हमारी रियासत में प्रारम्भिक शिक्षा बहुत अच्छी तरह दी जाय और उसके लिये उपयोगी पाठ्य-पुस्तकें उपयुक्त विद्वानों द्वारा तैयार करायी जावें ऐसी। पुस्तको में कैसी शब्द-योजना होनी चाहिये, अकारादि क्रम से इसमें वह दिखलायी गयी है। यह शब्दावली पुस्तकों के लिये आधार भूत होगी। श्री मान का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य है। इसके लेखक काशी निवासी बाबू राम चन्द जी वर्मा है। पता शिक्षा विभाग, बिलासपुर राज्य।

हिन्दी टाइप राइटिंग—हिन्दी में टाइप राइटिंग सिखाने के लिये श्रीयुत गोवर्द्धनदास जी गुप्त ने यह गंगाप्रणाली निर्धारित की है। टाइप राइटिंग से सम्बन्ध रखने वाली सभी बातों का इसमें विवेचन हुआ है। टाइप-राइटिंग मशीन में कुछ आवश्यक संकेत शामिल कर देने से टाइप राइटिंग का काम हिन्दी में भी सुगमता से हो सकता है। इस पुस्तक को काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया है और वहीं से पुस्तक प्राप्त होगी।

पुष्पवाण—श्रीयुत पण्डित रामनरेश त्रिपाठी जी के सुयोग्य सुपुत्र पण्डित आनन्दकुमार जी की १७ कविताओं का इसमें संग्रह है। कविताएँ

मधुर, भावपूर्ण और हृदय के अन्तस्तल से निकली हुई सुन्दर हैं। दाम ॥) पता—हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।

नारद भक्ति सूत्र—नारद भक्ति सूत्र भागवत सम्प्रदायका प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। परन्तु पण्डित श्री रामावतार विद्याभास्कर जी ने अद्वैत सिद्धान्तमूलक इसकी व्याख्या की है। जिसमें अद्वैतनिष्ठा, भक्ति तथा मनुष्य के व्यावहारिक जीवन का एकीभाव खूबी के साथ दिखलाया गया है। तुलनात्मक विचार धारा का आपने अवलम्बन किया है। आशा है विद्वानों में इस सम्बन्ध में अच्छी रगड़ चलेगी। मूल्य ॥।=) पता—श्री मोतीलाल माणिकचन्द, तत्व ज्ञानमन्दिर, अमलनेर, पूर्व खानदेश।

क्या और कैसे खायँ—डाक्टर बालेश्वरप्रसाद सिंह जी प्राकृतिक चिकित्सक हैं। आपने भोजन के सम्बन्ध में यह छोटी पुस्तिका लिखी है। भोजन और त्रिधातु, खाद्यपदार्थों का मेल, ऋतुप्रधान भोजन, गर्भिणी, प्रसूता और शिशु के भोजन, अवस्थानुसार भोजन क्रम, रोगी और निरोगी दशा का भोजन, मर्द और औरतों का औसत वजन, रोगानुसार भोजन, विरुद्धाहार, खाद्यपदार्थों के विटामिन आदि पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक अच्छी है। दाम ।) पता—प्राकृतिक स्वास्थ्यगृह, लूकरगंज, इलाहाबाद।

स्थायी समिति का चतुर्थ अधिवेशन

नियम १६ के अनुसार स्थायी समिति का विशेष अधिवेशन रविवार, १५ वैशाख संवत् १९९७, तारीख २८ अप्रैल १९४० को ६ बजे सायंकाल से संम्मेलन कार्यालय में श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुआ। कार्यवाही का विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

१—गत अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हुई।

२—श्रीमान् गोकुलचन्द जी के पुत्र के देहावसान के सम्बन्ध में कार्य-समिति द्वारा भेजा हुआ निम्नलिखित शोक प्रस्ताव सब ने खड़े होकर स्वीकार किया—

"सम्मेलन की इस स्थायी समिति को सम्मेलन के विशिष्ट सहायक और 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक" के दाता श्री बाबू गोकुलचन्द जी के पुत्र हिन्दी प्रेमी श्री कृष्णकुमार जी के असामयिक निधन पर अत्यन्त दुःख हुआ है। समिति इस शोक में उनके साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करती है।"

३—प्रधानमंत्री ने पूना सम्मेलन विषयक श्री काका कालेलकर और स्वागत समिति के तारों को पढ़ कर सुनाया और संक्षेप में परिस्थिति का परिचय दिया। श्री बालकृष्ण पाण्डे के प्रस्ताव करने पर सभापति की आज्ञानुसार श्री काका कालेलकर, श्री शंकरराव देव तथा श्री ग० र० वैशम्पायन के पत्र पढ़कर सुनाए गए। यह भी सूचना दी गई कि श्री काका कालेलकर आज रात को ९ बजे आ जाएंगे और उन्होंने इच्छा प्रकट की है कि उनकी बात बिना सुने स्थायी समिति कृपा कर कोई निर्णय न करे।

समिति के कतिपय सदस्यों ने अपना मत प्रकट किया। समिति ने श्री देशमुख (कार्याध्यक्ष, स्वागत समिति, पूना) का भी विवरण सुना।

तत्पश्चात् श्री डाक्टर गोरखप्रसाद के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि—"स्थायी समिति की यह बैठक कल सोमवार तारीख २९ अप्रैल ४० को ७ बजे प्रातःकाल के लिए स्थगित की जाय। यदि श्री काका-

कालेलकर से वार्तालाप के अनन्तर पूने में मेल से सम्मेलन का आगामी अधिवेशन करने का कोई मार्ग निकल आए तो फिर इस विषय के लिए स्थायी समिति की अन्य बैठक करने की आवश्यकता नहीं है; अन्यथा ५ मई को बैठक की जाय। यदि अधिवेशन की तिथियों में परिवर्तन करने की आवश्यकता हो, तो समिति कल की बैठक में परिवर्तन कर ले अथवा इस सम्बन्ध में उचित समझे तो कार्य समिति को अधिकार दे दे।"

उक्त निश्चय के अनुसार समिति का स्थगित अधिवेशन सोमवार, १६ वैशाख १९९७, तारीख २९ अप्रैल ४० को ७ बजे सबेरे श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुआ। कार्यवाही का व्यौरा नीचे लिखे अनुसार है—

१--प्रधानमंत्री ने श्री काका कालेलकर को समिति की पिछली बैठक की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण बताया। तत्पश्चात् श्री काका जी ने पूने की परिस्थिति के सम्बन्ध में प्रकाश डाला और उपस्थित सदस्यों के प्रश्नों का उत्तर दिया।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि निम्नलिखित पांच सदस्यों की उपसमिति समझौते का प्रयत्न करे और यदि मेल से पूने में अधिवेशन करने के लिए कोई मार्ग निकल आए तो ठीक है, नहीं तो वह ५ मई की स्थायी समिति में अपनी रिपोर्ट पेश करे।

(१) श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी (२) श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (संयोजक) (३) श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर (४) श्री काका कालेलकर (५) श्री विश्वनाथ माधव देशमुख।

२--प्रधानमंत्री ने बताया कि आगामी अधिवेशन के लिए तिथियां २४, २५, २६ तथा २७ मई निश्चित की गई थीं किन्तु स्वागत समिति की सिफारिश है कि २५-२८ मई तारीखें कर दी जायं। निश्चय हुआ कि कार्य समिति तारीखें निश्चित करके स्वागत समिति को सूचना दे दे।

३--प्रधानमंत्री ने अधिवेशन के लिए कार्यक्रम और विषय सूची की स्वीकृति का विषय उपस्थित किया। विषय सूची नीचे लिखे अनुसार स्वीकृत हुई। कार्यक्रम निश्चित करने का अधिकार कार्य समिति को दिया गया।

साहित्य

१—हिन्दी साहित्य पर राजनीति का प्रभाव।
२—हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।
३—हिन्दी हिन्दुस्तानी।
४—वर्तमान युग में हिन्दी की प्रगति।
५—आधुनिक हिन्दी कविता का दृष्टिकोण।
६—नागरी लिपि में परिवर्तन की आवश्यकता।
७—भाषा विज्ञान की दृष्टि से राष्ट्रभाषा के स्वरूप का निर्णय।
८—आधुनिक हिन्दी कहानियाँ।
९—हिन्दी साहित्य में उपन्यास का विकास।
१०—हिन्दी का अन्य प्रान्तीय भाषाओं से सम्बन्ध।
११—देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता।
१२—हिन्दी प्रचार तथा प्रसार में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भाग।
१३—हिन्दी भाषा पर अँगरेजी का प्रभाव।
१४—हिन्दी के वर्तमान पत्र तथा पत्रकार।
१५—वर्तमान हिन्दी कवियों की कला।
१६—मुसलिम शासन काल का हिन्दी साहित्य।
१७—हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य।
१८—कला और साहित्य।
१९—हिन्दी और प्रान्तीय सरकारें।
२०—हिन्दी में अनुवाद की प्रगति।
२१—नागरी लिपि तथा मुद्रण कला।
२२—हिन्दी नाटक का भविष्य।
२३—दक्षिण भारत तथा हिन्दी।
२४—महाराष्ट्र में हिन्दी (प्राचीन और आधुनिक)।
२५—हिन्दी तथा मराठी का सम्बन्ध।

दर्शन

१—हिन्दी में दार्शनिक ग्रन्थों का सिंहावलोकन।

२—हिन्दी काव्य पर दार्शनिक प्रभाव।
३—हिन्दी काव्य और रहस्यवाद।
४—कबीर के दार्शनिक विचारों का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव।
५—भक्त दार्शनिक और हिन्दी।
६—आधुनिक चार्वाक।
७—हिन्दी पर सूफ़ी कवियों की छाप।
८—तुलसी और सूर के परब्रह्म
९—छायावाद दर्शन।

विज्ञान

१—हिन्दी में वैज्ञानिक ग्रन्थ।
२—हिन्दी में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्द।
३—आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली का तुलनात्मक विवेचन।
४—फल और स्वास्थ्य।
५—भोजन और स्वास्थ्य।
६—मनोविज्ञान शास्त्र।
७—विज्ञान और भारत।
८—आयुर्वेद की प्रगति और भविष्य।
९—वैज्ञानिक आधार पर खेती।
१०—आधुनिक विज्ञान तथा मानवता।
११—अन्तर्विज्ञान तथा वाह्य विज्ञान।
१२—आधुनिक विज्ञान के दुष्परिणाम।
१३—प्राचीन भारत के भूगोल का अन्वेषण।

इतिहास

१—हिन्दी में ऐतिहासिक ग्रन्थों की खोज।
२—हिन्दी प्रेमी भारत के मुसल्मान शासक।
३—हिन्दी के चारण काव्य तथा इतिहास।
४—राष्ट्रीय आन्दोलन तथा हिन्दी के सम्पर्क का इतिहास।
५—मध्यकाल में हिन्दी की गति विधि।

६—हिन्दी तथा मध्यकालीन सामाजिक जागृति।
७—"भारतीयों में ऐतिहासिकता की कमी"।
८—बौद्ध साहित्य तथा प्राचीन भारत।
९—अपभ्रंश काल का भारत।
१०—हड़प्पा मोहिंजोदड़ो की सभ्यता।
११—भारत के आदि निवासी।
१२—सुमेर तथा आदि भारतीय।
१३—महाराष्ट्र तथा भारतीय इतिहास।

४—प्रधानमंत्री ने नियम ३६ (क) के अनुसार आगामी अधिवेशन के लिये विभिन्न प्रान्तों की ओर से प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि कार्य समिति को स्थायी समिति अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देती है।

५—प्रधानमंत्री ने आगामी २९ वीं स्थायी समिति के संगठन के विषय में नियम १० के अनुसार विभिन्न मंडलों की ओर से प्रतिनिधियों के चुनाव का प्रश्न उपस्थित किया। नियमानुसार नीचे लिखे सज्जन स्थायी समिति के लिये प्रतिनिधि चुने गये।

सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति

श्री महामना पंडित मदनमोहन मालवीय, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।
श्री महात्मा मोहनदास करमचन्द गान्धी, साहित्यवाचस्पति, सेवाग्राम, वर्धा।
श्री श्यामसुन्दरदास, बी० ए०, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति, भेलूपुरा, काशी
श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, स्पीकर भवन, लखनऊ।
श्री भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्०, सेवाश्रम, सिगरा, काशी।
श्री राजेन्द्रप्रसाद, सदाक़त आश्रम, पो० दीघाघाट, पटना।
श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', साहित्यवाचस्पति, कामाच्छा, काशी।
श्री गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, रायबहादुर, महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति, डी० लिट्०, राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर।

श्री श्यामबिहारी मिश्र, एम० ए०, रावराजा, रायबहादुर, १०५, गोलागंज, लखनऊ।
श्री सेठ जमनालाल बजाज, बजाज वाड़ी, वर्धा।
श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, सम्पादक 'आज', काशी।
श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, १०२, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

सम्मेलन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री

श्री ब्रजराज, एम० ए०, बी० एस्सी०, एलेल० बी०, क्रास्थवेट रोड, प्रयाग।
श्री कृष्णकान्त मालवीय, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग।
श्री रमाकान्त मालवीय, बी० ए०, एलेल० बी०, जार्ज टाउन, प्रयाग।
श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, आयुर्वेद पञ्चानन, क्रास्थवेट रोड, प्रयाग।
श्री सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह, लूकरगञ्ज, प्रयाग।

रजिस्टर्ड उपाधिधारियों की ओर से प्रतिनिधि

श्री उदयनारायण तिवारी, अलोपी बाग, प्रयाग।
श्री बालकृष्ण पाण्डेय, कान्यकुब्ज इंटर कालेज, लखनऊ।
श्री गुरुभक्तसिंह, म्युनिस्पल बोर्ड, आजमगढ़।
श्री रमाकान्त त्रिपाठी, दारागंज, प्रयाग।

सम्मानित सदस्यों की ओर से प्रतिनिधि

श्री सेठ गोकुलचन्द रईस, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।
श्री सेठ हुकुमचन्द रईस, इन्दौर।
श्री महाराजा इन्दौर, इन्दौर।
श्री शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, काशी।
श्री पद्मपत सिंहानियाँ, कानपुर,
श्री वेनीप्रसाद अग्रवाल, कटरा, प्रयाग।
श्री वेनीमाधव अग्रवाल, कटरा, प्रयाग।

श्री सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२।१, हरीसनरोड, कलकत्ता।

श्री जगमल राजा, नैनी, इलाहाबाद।

स्थायी सदस्यों की ओर से प्रतिनिधि

श्री राय कृष्णदास, काशी।

श्री रामकुमार नेवटिया, बम्बई।

श्री युगलकिशोर बिड़ला, १३७, कैनिंगरोड, कलकत्ता।

श्री मदालसा देवी अग्रवाल, द्वारा श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।

श्री राजकुमार रणंजयसिंह, अमेठी राज्य, रामनगर, सुल्तानपुर।

विशेष सदस्यों की ओर से प्रतिनिधि

श्री रामप्रसाद, ९, रानीमंडी, प्रयाग।

श्री दुलारेलाल भार्गव, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ।

साधारण सदस्यों की ओर से प्रतिनिधि

श्री होरीलाल सक्सेना, ४ ए, पार्करोड, लखनऊ।

श्री मोहनचन्द्र जोशी, अनुवाद विभाग, सिविल सेक्रेटरिएट, लखनऊ।

प्रान्तीय सम्मेलनों की ओर से प्रतिनिधि

श्री केसरीकिशोर शरण, राजेन्द्र कालेज, छपरा।

श्री साँवलियाबिहारीलाल वर्मा, सीतामढ़ी।

श्री विश्वनाथप्रसाद, बिहार प्रादेशिक हि० सा० सम्मेलन, पटना।

संबद्ध संस्थाओं के प्रतिनिधि

श्री मदनगोपाल एडवोकेट, गुजराती मुहल्ला, मुरादाबाद।

श्री कैलाशचन्द्र गुप्त सर्राफ, बाजारगंज, मुरादाबाद।

श्री तेगराम सम्पादक 'दीपक', साहित्य सदन, अबोहर, पंजाब।

श्री जगन्नाथप्रसाद साह, लालगंज, मुजफ्फरपुर।

श्री रामेश्वरप्रसाद, द्वारा हिंदी हितैषिणी सभा, लालगंज, मुजफ्फरपुर।

श्री शत्रुघ्नप्रसाद सिंह रईस, मोतीझील, मुजफ्फरपुर।
श्री ओम्प्रकाश सिंह, विद्यालंकार, हिन्दी प्रचार मण्डल, बदायूँ।
श्री श्रीकृष्ण शुक्ल, ५९ लहङ्गपुरा, शरकी, काशी।
श्री श्रीराम शर्मा, बलकाबस्ती, आगरा।
श्री महेन्द्र, ५३ ए, सिविल लाइन्स, आगरा।
श्री जगन्नाथ तिवारी, आगरा कालेज, आगरा।
श्री पी० एम० भम्भानी, बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा।
श्री ब्रजमोहन रावत, द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा।
श्री कपिलेश्वर झा, धमौरा, चनपटिया, चम्पारन।
श्री विद्याधर चतुर्वेदी, अध्यापक, बी० सी० हाई स्कूल, लश्कर।
श्री राजगोपालाचार्य, उपाध्यक्ष, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।
श्री सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।
श्री अवधनन्दन, शिक्षामंत्री, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागराय नगर, मद्रास।
श्री कृष्णलाल शरसोदे, प्रबन्ध सम्पादक 'ज्योति,' बैतूल, सी० पी०।
श्री ग० र० वैशंम्पायन, ७८७ (ब) सदाशिव पेठ, बंदेमातरम् बंगला, पुणें २।
श्री पु० रा० भुपटकर, ४ शुक्रवार पेठ, पुणें २।
श्री शं० दा० चितड़े, असिस्टैण्ट मास्टर, दक्षिण जिनखाना हाई स्कूल पूना ४।
श्री हरिश्चन्द्र सक्सेना, मैनपुरी।
श्री हरिश्चन्द्र पाठक, मैनपुरी।
श्री सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ पाढ़म, मैनपुरी।
श्री गुरुदत्त आयुर्वेदालंकार, भारतीय विश्वविद्यालय, पाढ़म, मैनपुरी।
श्री विश्वनाथ कुलश्रेष्ठ, पुष्पभवन, पाढ़म, मैनपुरी।
श्री लक्ष्मीशंकर जौहरी, हेडमास्टर, रा० के हाइ स्कूल, शिकोहाबाद।
श्री किशनलाल श्रीवास्तव, सिरसागंज, मैनपुरी।

८

श्री छत्रधारी सिंह, मास्टर जौनपुर राजप्रियानाथ घोष हाई स्कूल, जौनपुर।

श्री नागेन्द्रनाथ, जौनपुर राजप्रियानाथ घोष हाई स्कूल, जौनपुर।

श्री सुन्दर लाल जानी, द्वारा हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर।

श्री बालकृष्ण जी दुबे, द्वारा हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर।

श्री नवलकिशोरप्रसाद सिंह, धरफरी, मुजफ्फरपुर।

श्री भँवरलाल सेठी, प्रधानमंत्री, मध्य भारत हि० सा० समिति, तुकोगंज, इन्दौर।

श्री रामभरोसे १२, तुकोगंज साउथ, इन्दौर।

श्री शिवसेवक तिवारी, द्वारा मध्यभारत, हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।

श्री कमलाशंकर मिश्र,द्वारा मध्यभारत, हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।

श्री सत्यनारायण मिश्र, साधूराम हाई स्कूल, कटनी।

श्री केदारनाथ मिश्र, हिन्दी साहित्य संघ, कालपी।

श्री शिवगोविन्द मिश्र, आर्यनगर, कानपुर।

श्री करुणाशंकर शुक्ल चौक सराफा, कानपुर।

श्री फूलरानी देवी, मुहल्ला मियाँ बाजार, शहर गोरखपुर।

श्री चन्दनलता देवी, ग्राम कोटिया, पो० मेंहदावल, जि० बस्ती।

श्री दुर्गावती देवी, द्वारा चंद्रबली त्रिपाठी वकील, बस्ती।

श्री कमलाकर चतुर्वेदी, वकील, देवरिया, (गोरखपुर)।

श्री चम्पावती देवी,द्वारा श्री जगदीश मिश्र, मुंसिफ,मोहमदाबाद, गाजीपुर।

श्री विजयबहादुर सिंह, ग्रा० नेतवर, पो० लोटक, जि० बस्ती।

श्री शेषमणि त्रिपाठी, सब डिप्टी इन्सपैक्टर, सुलतानपुर।

श्री रत्नाकर चतुर्वेदी, द्वारा श्री कमलाकर चतुर्वेदी, वकील, देवरिया, गोरखपुर।

श्री चन्द्रबली त्रिपाठी वकील, बस्ती।

श्री आदित्यप्रसाद सिंह, आनरेरी मजिस्ट्रेट, गोरखपुर।

श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, धर्मपुरा, मस्जिद खजूर, दिल्ली।

श्री पुत्तूलाल वर्मा, गार्डनिंग इन्जीनियर, श्रद्धानन्द बाज़ार, दिल्ली।

श्री गुलाबचन्द सोगनी, मैनेजर, स्टेट कोआपरेटिव बैंक लि०, कोटा।

श्री रामबालक पाण्डेय, गोविन्दापुर, पत्रालय, पटेढ़ी; सारन।
श्री सिद्धगोपाल मिश्र, हिन्दी साहित्य संघ, उरई।
श्री व्रजनन्दनसिंह, माझी (सारन)।

स्वागत समिति के प्रतिनिधि

श्री ग० दा० सावरकर, 'सावरकर सदन' केलुसकरपथ, विनायक नगर, दादर।
श्री न० गो० अभ्यंकर बी० ए०, एलेल० बी०, जोगेश्वरी बोल, पुणें।
श्री वि० मा० देशमुख, बी० ए०,एलेल० बी०, ३७३ सदाशिव पठे, पुणें।
श्री कुमारी मैनावती माटे "साहित्य रत्न" मेंहेंदले बंगला, पुणें।
श्री धबड़गाव, एस० सी० कालेज क्वार्टर्स, पुणें २।

परीक्षकों के प्रतिनिधि

श्री दयाशङ्कर दुवे, दारागंज, प्रयाग।
श्री लक्ष्मीनारायण दीक्षित, ऐंग्लो बंगाली इंटरमीजिएट कालेज, प्रयाग।
श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी, विद्यामन्दिर हाई स्कूल, प्रयाग।
श्री गिरिजादत्त शुक्ल, दारागंज, प्रयाग।
श्री रामकुमार वर्मा, प्रयाग।
श्री बनारसीप्रसाद सक्सेना, चैथम लाइन, प्रयाग।
श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी, दारागंज, प्रयाग।
श्री रामशंकर शुक्ल, नया कटरा, प्रयाग।
श्री पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित, हुसेनगंज, लखनऊ।
सुश्री चन्द्रावती त्रिपाठी, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।
श्री अयोध्यानाथ शर्मा, सनातनधर्म कालेज, कानपुर।
श्री रामनारायण मिश्र, 'भूगोल' कार्यालय, प्रयाग।
श्री केदारनाथ गुप्त, दारागंज, प्रयाग।
श्री उमेश मिश्र, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।
श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, कटरा, प्रयाग।

श्री ताराचन्द, कायस्थ पाठशाला युनिवर्सिटी कालेज, प्रयाग ।
श्री रामचन्द्र टंडन, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।
श्री नन्ददुलारे वाजपेयी, 'लीडर' प्रेस, प्रयाग ।
श्री सद्गुरुशरण अवस्थी, विश्वम्भरनाथ सनातन धर्म कालेज, कानपुर ।

केन्द्रव्यवस्थापकों के प्रतिनिधि

श्री प्रधानमंत्री, मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर ।
श्री मार्कण्डेय सिंह, काशी ।
श्री अम्बिकाप्रसाद उपाध्याय, काशी ।
श्री प्रधानाध्यापक, दारागञ्ज हाईस्कूल, प्रयाग ।
श्री चाँदकरण शारदा, मदार दरवाजा, अजमेर ।
श्री मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा ।
श्री प्रिंसिपल, नवभारत विद्यालय, वर्धा ।
श्री रजिस्ट्रार, गुरुकुल काँगड़ी, सहारनपुर ।
श्री प्रधानाध्यापक, हिन्दी विद्यापीठ, महेवा, नैनी, प्रयाग ।
श्री डाइरेक्टर ऑव एजूकेशन, अलवर ।
श्री मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, आरा ।
श्री जगन्नाथ शर्मा, पटना ।
श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, वृन्दाबन ।
श्री प्रिंसिपल, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार ।
श्री रामलोचनशरण, पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय ।
श्री हेडमास्टर, बालमुकुन्द हाई स्कूल, गोरखपुर ।
श्री प्रभुनारायण शर्मा, जयपुर ।
श्री प्रिंसिपल, बिड़ला इंटरमीजिएट कालेज, पिलानी ।
श्री प्रधानाध्यापक, राष्ट्रभाषा विद्यालय, बरहज ।
श्री व्यवस्थापक, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास ।

नियम १०(ठ) के अनुसार

श्री जमुनाप्रसाद श्रीवास्तव, आसाम ।
श्री भँवरमल सिंघी, बङ्गाल ।

श्री राजकृष्ण बोस, उत्कल।
श्री कृ० ज़० धर्माधिकारी, महाराष्ट्र।
श्री कान्तिलाल जोशी, बम्बई।
श्री अमृतलाल नाणावटी, वर्धा।
श्री चंद्रसेन जेतली, सिंध।

मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त विद्वान

श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय, कला प्रेस, प्रयाग।
श्री गोरखप्रसाद, नया कटरा, प्रयाग।
श्री चन्द्रावती लखनपाल, प्रिंसिपल,
महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून।
श्री जयचन्द विद्यालंकार, द्वारा काशी विद्यापीठ, काशी।
श्री मुकुन्दस्वरूप वर्मा, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।
श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, कामाक्षा, काशी।
श्री मैथिलीशरण गुप्त, चिरगांव झांसी।
श्री सत्यकेतु, गुरुकुल विश्वविद्यालय, सहारनपुर।
श्री सुधाकर, द्वारा पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन, लाहौर।
श्री रामचन्द्र शुक्ल, काशी विश्वविद्यालय, काशी।

६—प्रधानमन्त्री ने सम्मेलन के वार्षिक विवरण की स्वीकृति का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि निम्नलिखित तीन सदस्यों की समिति कार्यविवरण का सम्पादन करे —

(१) श्री प्रधानमन्त्री
(२) श्री प्रबन्धमन्त्री (संयोजक)
(३) श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी

बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधानमन्त्री।

स्थायी समिति का स्थगित अधिवेशन

२९ अप्रैल की बैठक के निश्चयानुसार स्थायी समिति की स्थगित बैठक रविवार, २२ वैशाख १९९७, तारीख ५ मई १९४० को सायंकाल ५½ बजे से कार्यालय में श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुई।

१—प्रधानमन्त्री ने पिछली कार्यवाही पढ़कर सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधानमन्त्री के प्रस्तावानुसार २९ अप्रैल के अधिवेशन में नियुक्त की गई उपसमिति के संयोजक श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने उपसमिति की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई।

श्री गोरखप्रसाद ने प्रस्ताव किया कि "आगामी सम्मेलन पूने में हो"। श्री बालकृष्ण पाण्डे ने इसका समर्थन किया।

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने उपसमिति की रिपोर्ट का स्पष्टीकरण किया। इसके बाद श्री ग० र० वैशम्पायन ने श्री गोरखप्रसाद के प्रस्ताव का समर्थन किया।

श्री कृष्णकान्त मालवीय ने उपसमिति की रिपोर्ट का समर्थन करते हुए निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया।

"उपसमिति की यह सिफारिश कि आगामी सम्मेलन की तिथियां हटाई जायं स्वीकृत हो। सम्मेलन कब हो इसका निश्चय स्थायी समिति पीछे करेगी। यह समिति कार्यसमिति को आदेश देती है कि वह महाराष्ट्र के दोनों पक्षों में मेल करा कर पूने में सम्मेलन कराने का यत्न करे।"

श्री गोरखप्रसाद ने एतराज किया कि यदि मालवीय जी का प्रस्ताव उनके प्रस्ताव से भिन्न, एक स्वतंत्र प्रस्ताव माना जाय तो पहिले उनके प्रस्ताव पर विचार हो जाय। सभापति ने निर्णय किया कि मालवीय जी का प्रस्ताव एक स्वतंत्र प्रस्ताव है।

श्री कृष्णकान्त मालवीय ने श्री गोरखप्रसाद से निवेदन किया कि वह अपना प्रस्ताव वापस ले लें किन्तु श्री गोरखप्रसाद ने अपना प्रस्ताव वापस नहीं लिया।

सभापति ने प्रस्तावों पर मत लिए। श्री गोरखप्रसाद के प्रस्ताव के पक्ष में ९ मत और विपक्ष में ११ मत आए। इसलिए उनका प्रस्ताव गिर गया।

श्री कृष्णकान्त मालवीय के प्रस्ताव के पक्ष में १० मत, विरोध में ५ मत आए। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

बाबूराम सक्सेना, एम्० ए०, डी० लिट्०,
प्रधानमंत्री।

कार्यसमिति का चतुर्थ अधिवेशन

कार्यसमिति की बैठक रविवार, १५ वैशाख संवत् १९९७, तारीख २८ अप्रैल १९४० को ४ बजे सायंकाल से कार्यालय में श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुई। कार्यवाही का विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

१—पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और वह स्वीकृत हुई।

२—प्रधानमन्त्री ने सम्मेलन के सभापति तथा परिषदों के सभापतियों के लिए प्राप्त मतों की गणना का विषय उपस्थित किया और गणना हुई।

३—प्रधानमन्त्री ने जिला सारन में स्थापित पलकाश्रम पुस्तकालय को सम्बद्ध किये जाने का विषय उपस्थित किया और बताया कि नियमानुसार पुस्तकालय का सम्बन्ध शुल्क प्राप्त है और प्रार्थना स्वीकार करने योग्य है। निश्चय हुआ कि पुस्तकालय सम्बद्ध किया जाय।

४—सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि स्थायी समिति से सिफारिश की जाय कि वह निम्नलिखित शोकप्रस्ताव स्वीकार करे।

"सम्मेलन की इस स्थायी समिति को सम्मेलन के विशिष्ट सहायक और 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' के दाता श्री बाबू गोकुलचन्द जी के पुत्र हिन्दी प्रेमी श्री कृष्णकुमार जी के असामयिक निधन पर अत्यन्त दुःख हुआ है। समिति इस शोक में उनके साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करती है।"

बाबूराम सक्सेना, एम्० ए०, डी० लिट्०,
प्रधानमन्त्री।

कार्यसमिति का पंचम अधिवेशन

कार्यसमिति की बैठक रविवार, २२ वैशाख १९९७, तारीख ५ मई १९४०, को ४ बजे दिन से कार्यालय में श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुई। कार्यवाही का विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

१—पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और स्वीकृत हुई।

२—२९ अप्रैल की स्थायी समिति के आदेशानुसार प्रधानमन्त्री ने सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिए कार्यक्रम तथा तिथियाँ निश्चित करने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि स्थायी समिति के निर्णय से इस विषय का गहरा सम्बन्ध है, इस लिए समिति की बैठक स्थायी समिति का अधिवेशन हो चुकने तक स्थगित की जाय।

स्थायी समिति के अधिवेशन के उपरान्त कार्यसमिति की स्थगित बैठक उसी दिन ७½ बजे सायंकाल श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी के सभापतित्व में पुनः प्रारम्भ हुई। स्थायी समिति द्वारा स्वीकृत निम्नलिखित प्रस्ताव पढ़ा गया—

"उपसमिति की यह सिफारिश कि आगामी सम्मेलन की तिथियाँ हटाई जायं स्वीकृत हो। सम्मेलन कब हो इसका निश्चय स्थायी समिति पीछे करेगी। यह समिति कार्यसमिति को आदेश देती है कि वह महाराष्ट्र के दोनों पक्षों में मेल कराकर पूने में सम्मेलन कराने का यत्न करे।"

निश्चय हुआ कि पूने में समझौते का प्रयत्न करने के लिए निम्नलिखित तीन सज्जनों की उपसमिति बनाई जाय। यह समझौते का उद्योग कर कार्यसमिति के समक्ष अपनी रिपोर्ट उपस्थित करे।

१—श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
२—श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर
३—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (संयोजक)

३—आगरा की नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमन्त्री का अधिक सहायता की मांग के सम्बन्ध का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि विषय अभी स्थगित किया जाय।

बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्,
प्रधानमन्त्री।

हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मुखपत्रिका 'सम्मेलन पत्रिका' पिछले कई वर्षों से प्रकाशित होती आई है। समय समय पर उसमें सुन्दर और विचार पूर्ण लेखों के साथ सम्मेलन की स्थायी समिति तथा अन्यान्य समितियों के कार्य विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। हिन्दी के प्रेमियों, विद्वानों तथा स्थायी समिति के सदस्यों को यह अविदित नहीं है। किन्तु अब हम चाहते हैं कि 'सम्मेलन पत्रिका' प्रति मास ठीक समय पर प्रकाशित हो। साथ ही सुन्दर और श्रेष्ठ साहित्यिक लेख प्रकाशित किये जायँ जिससे हिन्दी के प्रति अनुराग रखने वाले सुदूर प्रांतों के हिन्दी प्रेमी और विद्यार्थी भी उससे लाभ उठा सकें। इसके सिवा 'साहित्य रत्न', 'मध्यमा' तथा 'प्रथमा' परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों को साहित्य अध्ययन में समय समय पर सहायता प्राप्त होती रहे। इसलिये हम प्रत्येक हिन्दी प्रेमी तथा विद्यार्थी से अनुरोध करते हैं कि वह 'सम्मेलन पत्रिका' के स्वयं ग्राहक बनें और अपने मित्रों को भी बनावें। यदि एक हजार भी ग्राहक हमको मिल गये तो 'पत्रिका' का आकार प्रकार भी बड़ा कर दिया जायगा और विद्वानों के श्रेष्ठ साहित्यिक लेखों से भी इसका कलेवर अलंकृत होता रहेगा। आशा है, हिन्दी प्रेमी इस निवेदन की ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे। सम्मेलन प्रत्येक हिन्दी प्रेमी की संस्था है और इसीलिये हम उनसे हर प्रकार के सहयोग और सहायता की पूर्ण आशा रखते हैं। जिन ग्राहकों का वार्षिक चंदा समाप्त हो गया है वे कृपया १) मनीआर्डर से शीघ्र भेज दें।

साहित्य मंत्री।

परीक्षासमिति का पाँचवाँ अधिवेशन

परीक्षासमिति की बैठक रविवार ९ आषाढ़ ता० २३ जून सन् १९४० को श्री पं० लक्ष्मीधर जी बाजपेयी के सभापतित्व में हुई। कार्यवाही नीचे लिखे अनुसार हैं।

(१) परीक्षामंत्री ने संवत् १९९६ की परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियों की उत्तर पुस्तकों के पुनर्वार निरीक्षण का परीक्षाफल उपस्थित किया। वह स्वीकृत हुआ।

(२) नवीन केन्द्रों की स्थापना का विषय उपस्थित हुआ। नीचे लिखे स्थानों में मध्यमा परीक्षा के केन्द्र अस्थायी रूप से स्वीकृत हुए —

मदुरा, विजयपुर (ग्वालियर), सिंगिया (दरभंगा), महू (मध्य-भारत), डुमरी (पटना), लोकल बोर्ड, मुंगेर।

(३) निम्नलिखित केन्द्र तोड़े गये —

बांदी, जहानाबाद।

(४) निश्चय हुआ कि जबलपुर स्पेन्स ट्रेनिंग कालेज अथवा राबर्टसन कालेज के प्रधानाध्यापक यदि अपनी अध्यक्षता में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र रखना स्वीकार करें तो वहां उक्त परीक्षा का केन्द्र स्थापित किया जाय।

(५) निश्चय हुआ कि वालटेर (मद्रास) और कलकत्ता में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र रखने के सम्बन्ध में क्रमशः श्री प्रो० गुर्ती वेंकट रांव और प्रो० ललिताप्रसाद शुक्ल से पत्र व्यवहार किया जाय।

(६) आन्ध्र विश्वविद्यालय की 'भाषा प्रवीण' और मद्रास विश्वविद्यालय की 'विद्वान' परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को उत्तमा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया गया।

(७) आगामी शीघ्रलिपि विशारद परीक्षा की तिथि २१ जुलाई निश्चित हुई और उसके परीक्षकों का निर्वाचन हुआ।

(८) निम्नलिखित परीक्षार्थियों को मध्यमा में सम्मिलित होने का विशेष अधिकार दिया गया —

सर्वश्री गणेश प्रशाद, प्रेमचन्द्र गुप्त, कौशल किशोर सिंह, मान मल जैन।

(९) निम्नलिखित परीक्षार्थियों को उत्तमा में सम्मिलित होने का विशेष अधिकार दिया गया—

सर्वश्री युगल किशोर, कृष्णचन्द्र पेगोरिया, प्रेमनारायण शर्मा और बलवन्त राय।

(१०) आधे शुल्क से मुक्त किये जाने के बारे में परीक्षार्थियों के प्रार्थना पत्रों पर विचार करने का अधिकार परीक्षामंत्री को दिया गया।

(११) संवत् १९९८ और ९९ की परीक्षाओं के लिए गणित और ड्राइंग विषयों के संयोजकों द्वारा भेजा हुआ पाठ्यक्रम स्वीकृत हुआ।

(१२) निश्चय हुआ कि कलकत्ता केन्द्र के क्रम सं० २४२ के परीक्षार्थी की फटी हुई उत्तर पुस्तक के सम्बन्ध में व्यवस्थापक महोदय से विवरण मांगा जाय।

(१३) हाजीपुर केन्द्र के सम्बन्ध में सबडिवीज़नल आफ़ीसर की रिपोर्ट के आधार पर निश्चय हुआ कि उक्त केन्द्र के सब परीक्षार्थी अनुत्तीर्ण किये जायँ और वहाँ दूसरा केन्द्र स्थापित कराने का प्रयत्न किया जाय।

दयाशङ्कर दुबे, एम० ए०,
परीक्षामन्त्री।

विज्ञप्ति

विक्रम के चलाए संवत् की बीसवीं शताब्दी समाप्तप्राय है। उस वीर पुरुष को हुए शीघ्र ही २००० वर्ष पूरे होने वाले हैं। किन्तु अभी तक उसके बारे में जो कुछ संसार को ज्ञात हुआ है वह लगभग नहीं के बराबर है। शकारि विक्रमादित्य, विक्रम की उज्जयिनी, विक्रम के नवरत्न आदि परम्परा-प्रसिद्ध शब्द अभी तक किंवदन्ती मात्र के द्योतक समझे जाते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि इस बीसवीं शताब्दी की समाप्ति के अवसर पर विद्वत्समुदाय विक्रमादित्य के सम्बन्ध में खोजपूर्ण लेख तथा ग्रन्थ लिख कर उस महापुरुष की स्मृति को सजीव बनाने का प्रयत्न करे। इस विषय के उत्कृष्ट लेख तथा ग्रन्थ प्राप्त होने पर सम्मेलन द्वारा प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रधानमन्त्री।

हिन्दी विश्वविद्यालय की सूचनाएँ

(१) सम्मेलन के हिन्दी विश्वविद्यालय की आगामी परीक्षाएँ शनिवार, २३ कार्तिक, ता० ९ नवम्बर १९४० से आरम्भ होंगी। परीक्षार्थियों के आवेदनपत्र परीक्षाशुल्क सहित ता० १५ अगस्त १९४० तक कार्यालय में प्राप्त हो जाने चाहिए। आवेदनपत्रों के छपे फार्म सम्मेलन कार्यालय, प्रयाग से प्राप्त होंगे।

(२) इस वर्ष परीक्षाओं के लिए नवीन केन्द्र स्थापित कराने के आवेदन-पत्र ता० ३१ जुलाई १९४० तक कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए। केन्द्र स्थापन के लिए आवेदनपत्रों के छपे फार्म सम्मेलन कार्यालय से मंगाने चाहिये।

(३) परीक्षासमिति ने उत्तमा परीक्षा के हिन्दी साहित्य विषय के प्रश्न-पत्र २ (वीर काव्य) के पाठ्य ग्रन्थों में प्रथम पाँच ग्रन्थों के बदले निम्न-लिखित दो पुस्तकें भी स्वीकार की हैं—

श्री मोतीलाल मेनारिया—डिंगल में वीर रस।

तिवारी तथा दीक्षित—वीर काव्य संग्रह।

ये दोनों पुस्तकें सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हो रही हैं। संवत् १९९७ की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थी इस सुविधा से लाभ उठावें।

परीक्षामन्त्री।

अपनी बात

पूना सम्मेलन—हिन्दी संसार को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी अधिवेशन महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध नगर पुणें में होने जा रहा है। पिछले दिनों पूना अधिवेशन के संबंध में हिन्दी जगत में काफी चहल पहल रही किन्तु पूज्य पुरुषोत्तमदास जी टंडन के अथक उद्योग और परिश्रम से मार्ग प्रशस्त हो गया है और पूने की स्वागत समिति अधिवेशन को सफल बनाने में पूर्ण रूप से प्रयत्नशील है। सम्मेलन का सभापतित्व हिन्दी के सुपरिचित लेखक और देशभक्त श्री संपूर्णानन्द जी ने स्वीकार कर लिया है। सम्मेलन के अन्तर्गत होने वाली अन्य परिषदों का सभापतित्व डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा, आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री गुलाबराय, डॉ० सत्यप्रकाश, श्री वेंकटेश नारायण तिवारी, ने स्वीकार किया है। इसमें सन्देह नहीं है कि महाराष्ट्र प्रांत में होने वाला यह सम्मेलन अभूतपूर्व होगा। महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा की जो गौरव वृद्धि हो रही है, उससे यह स्पष्ट हो गया है कि सम्मेलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में विशेष सफल हुआ है और होता जा रहा है। सम्मेलन समस्त हिन्दी संसार की संस्था है, उसके लोकप्रिय बनाने में हिन्दी के सभी सेवकों का ही हाथ है, ऐसी दशा में प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को पूना सम्मेलन को पूर्ण सफल बनाने के लिये अधिक से अधिक सहयोग देना चाहिये और वहाँ उपस्थित होकर हिन्दी का संदेश देश के कोने कोने में पहुँचाना चाहिये।

आगामी सम्मेलन तथा उसके साथ होनेवाली परिषदों के सभापति

सम्मेलन—श्री सम्पूर्णानन्द।
साहित्य परिषद्—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।
समाजशास्त्र परिषद्—आचार्य नरेन्द्रदेव।
दर्शन परिषद्—श्री गुलाबराय।
विज्ञान परिषद्—डॉ० सत्यप्रकाश।
राष्ट्रभाषा परिषद्—श्री वेंकटेशनारायण तिवारी।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

बुद्ध चरित—रचयिता पं० रामचन्द्र शुक्ल; नवीन संस्करण; मूल्य २॥); महात्मा बुद्ध का उज्वल चरित्र, सुन्दर ब्रजभाषा काव्य; महत्वपूर्ण भूमिका में ब्रज, खड़ी और अवधी भाषाओं का व्याकरण विवेचन।

सोवियत भूमि—ले०--महापंडित राहुल सांकृत्यायन; मूल्य ५।), वर्तमान रूस के संबंध में यह एक विश्वकोष है।

हिन्दी रस-गंगाधर (दूसरा भाग)— अनुवाद पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी; मूल्य ३॥)। यह संस्कृत के उद्भट विद्वान पंडितराज जगन्नाथ के ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। अलंकार संबंधी स्वतंत्र आलोचनाओं से भरा हुआ संस्कृत साहित्य का पांडित्यपूर्ण और अत्यन्त प्रामाणिक लक्षण ग्रंथ है।

प्रेमसागर—सम्पादक --बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी० पृष्ठ संख्या ४७०; नवीन संस्करण; मूल्य १॥)। यह हिन्दी गद्य साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं; परन्तु यह सर्वोपरि संशोधित और मूल प्रेमसागर के आधार पर तैयार किया गया है।

भारतीय मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास; मू० साधारण सं० १); विशिष्ट सं० १।)। भारतवर्षीय मूर्तिकला की अथ से इति तक सचित्र तात्विक व्याख्या। इस विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है।

भारत की चित्रकला--ले०-राय कृष्णदास; मू० साधारण संस्करण १); विशिष्ट सं० १।)। भारतवर्ष की महान चित्रकला का मार्मिक निरीक्षण। समस्त भारतीय भाषाओं में अपने ढंग की सर्वश्रेष्ठ रचना।

बाल-मनोविज्ञान—ले० प्रो० लालजी राम शुक्ल; एम० ए०, बी० टी०; मूल्य १।)। हिन्दी में बाल मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

बिहार में हिन्दुस्तानी—ले०-चन्द्रवली पांडे, एम० ए०; मूल्य।); बिहार प्रान्त में हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या की मार्मिक व्याख्या।

भाषा का प्रश्न--ले०--पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए०, मूल्य ।।।); भाषा संबंधी प्रश्न का विस्तृत और विवेचनापूर्ण उत्तर।

कचहरी की भाषा और लिपि-ले०—प० चंद्रवली पांडे, एम० ए०, मूल्य ।।।)। अदालतों में प्रयुक्त होने वाली भाषा और लिपि की गंभीर आलोचना।

मिलने का पता—**नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा

प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≡)
४ राष्ट्र भाषा ॥)
५ शिवाबावनी ≡)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास भाग १ २॥)
८ " " " " २ २।)
९ ब्रजमाधुरी सार २॥)
१० पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
११ सत्य हरिश्चन्द्र ।-)
१२ हिन्दी भाषा सार ।॥)
१३ सूरदास की विनय पत्रिका ≡)
१४ नवीन पद्य संग्रह ।॥)
१५ कहानी कुञ्ज ॥=)
१६ विहारी संग्रह ≡)
१७ कवितावली ।॥)
१८ सुदामा चरित्र ।)
१९ अलंकार प्रकाश ।=)
२० कबीर पदावली ।॥=)
२१ हिन्दी गद्य निर्माण १॥)
२२ हिन्दी साहित्य की रूप रेखा ।)
२३ सती कएणकी ॥)
२४ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव ॥=)
२५ पार्वती मङ्गल ।)
२६ सूर पदावली ॥=)
२७ नागरी अंक और अक्षर ≡)
२८ हिन्दी कहानियाँ १॥)
२९ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)
३० तुलसी दर्शन २॥)
३१ भूषण संग्रह भाग १ ।-)
३२ भूषण संग्रह भाग २ ॥=)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)
२ प्रथमालंकार निरूपण ≡)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ।॥)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल साहित्यमाला

१ बाल पञ्चरत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ

१६)

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२१

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अभूतपूर्व साहित्यिक प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, आचार्य पंडित रामचंद्र जी शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के निर्माता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द। मूल्य ४॥)

बाल साहित्यमाला

बालभारती
श्रीयुत श्रीनाथ सिंह
मूल्य ।=)

वीर शतमन्यु
श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर'
मूल्य ।)

बालकथा
सौभाग्यवती श्रीमती कमलाबाई किबे
मूल्य ॥)

छत्रपति शिवाजी
श्रीयुत गुर्ती सुब्रह्मण्यम् एम० ए०
मूल्य ।)

बाल कवितावली
श्री सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ
मूल्य ।)

साधारण पुस्तकमाला

चित्ररेखा
श्री रामकुमार वर्मा एम० ए०
मूल्य १॥)

गोरख बानी
डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल एम० ए०, डी० लिट्०

सच्च संगहो
भिक्षु भदंत आनन्द कौसल्यायन
मूल्य ।=)

आधुनिक कवि—१
श्रीमती महादेवी वर्मा एम० ए०
मूल्य १)

वीर काव्य संग्रह
श्री उदयनारायण तिवारी एम० ए०
श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित 'साहित्यरत्न'
मूल्य ३)

साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक १)

मुद्रक—गिरिजा प्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

श्रावण-भाद्रपद, संवत् १९९७

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २७, संख्या १२, १]

संपादक
श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल,
साहित्य मंत्री।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग।

वार्षिक १)

एक प्रति ।)

विषय सूची

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है।

२—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) है।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्रव्यवहार साहित्यमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका संबन्धी पत्रव्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए; अन्यथा आवश्यक अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

'मानस' बालकांड की सं० १६४३ की प्रति का अंतिम पृष्ठ तथा
'मानस' अरण्यकांड की सं० १६४३ की प्रति के अंतिम दो पृष्ठ

'सूकरक्षेत्रमाहात्म्य भाषा' की प्रति का अंतिम पृष्ठ
तथा 'रत्नावली' की प्रति का एक पृष्ठ

सम्मेलन पत्रिका

भाग २७-२८] श्रावण, भाद्रपद १९९७ [संख्या १२, १

सोरों में प्राप्त गोस्वामी तुलसीदास के जीवन वृत्त से संबंध रखनेवाली सामग्री की बहिरंग परीक्षा

[लेखक—श्री माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०]

[सम्मेलन के पिछले (काशी) अधिवेशन के अवसर पर विषय निर्वाचिनी समिति के सामने कई प्रस्ताव इस आशय के आए थे कि गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्म स्थान के विषय में सम्मेलन आवश्यक जांच कर के उचित निर्णय दे। इस सम्बन्ध में श्री माताप्रसाद गुप्त, एम० ए० (लेक्चरर, प्रयाग विश्वविद्यालय) से प्रार्थना की गई कि इस विषय की जांच वह अपने हाथ में लें। श्री माताप्रसाद जी ने गोस्वामी जी के विषय में अद्वितीय खोज की है और इनका डी० लिट्० डिग्री का थीसिस परीक्षकोंके समक्ष पेश है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने सोरों की सामग्री की समीक्षा की है। किन्हीं कारणों से राजापुर की सामग्री अभी सम्पूर्ण रूप से नहीं मिली है। मिलने पर उसकी भी समीक्षा यही करेंगे। तब निश्चय किया जायगा कि इस विषय में अधिक क्या कर्त्तव्य है ? —प्रधान मन्त्री]

सोरों, जिला एटा, और उसके आसपास में इधर कुछ दिनों में जो विस्तृत और मूल्यवान् सामग्री गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन वृत्त से संबंध रखने वाली प्राप्त हुई कही जाती है उस पर विस्तारपूर्वक विचार करना आवश्यक होगा। यह सामग्री निम्नलिखित है—

(१) रामचरितमानस के बालकांड की एक प्रति की पुष्पिका जो सं० १६४३ की लिखी हुई कही जाती है।

(२) रामचरितमानस के अरण्यकांड की एक प्रति की पुष्पिका जो आषाढ़ शुद्ध ४, सं० १६४३ की लिखी हुई कही जाती है।

(३) कृष्णदास रचित 'सूकरक्षेत्र माहात्म्य भाषा' की एक प्रति, जिसका रचना काल सं० १६९० बताया गया है।

(४) मुरलीधर चतुर्वेदी कृत 'रत्नावली' की एक प्रति, जिसका रचना काल सं० १८२९ बताया गया है।

(५) 'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' की दो प्रतियां।

(६) 'दोहा रत्नावली' की एक प्रति।

(७) सोरों में तुलसीदास के स्थान का अवशेष।

(८) तुलसीदास के भाई नंददास के उत्तराधिकारी।

(९) सोरों में स्थित नरसिंह जी का मंदिर।

(१०) सोरों में नरसिंह जी चौधरी के उत्तराधिकारी।

इन सभी सामग्रियों को मैंने जिस रूप में पाया है उसका एक संक्षिप्त विवरण आवश्यक होगा। नीचे उसी दिशा में प्रयत्न किया गया है।

(१) 'रामचरितमानस' के बालकांड की प्रति हाथ के बने हल्के सफ़ेद रंग के कागज पर लिखी गई है, जिसका आकार ११$\frac{1}{8}$″ × ६″ है। प्रति के चारों किनारों को उल्लेख योग्य क्षति पहुँची है, और बायाँ किनारा तो आग से जला जान पड़ता है। इसके कई पत्रे, जिनमें प्रथम पत्रा भी सम्मिलित है, खंडित हैं। अंतिम पत्रा अवश्य शेष है, पर वह भी अक्षत नहीं बच पाया है। इसी पत्रे पर वह पुष्पिका दी हुई है, जिससे प्रति का लिपि काल आदि ज्ञात होता है। कुल प्रति, और पुष्पिका भी, चमकदार काली स्याही से लिखी हुई है। देखने में प्रति इतनी काफ़ी पुरानी जान पड़ती है कि वह विक्रमीय सत्रहवीं शताब्दी की कही जा सके।

प्रति की पुंष्पिका निम्नलिखित है —

१......इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल

२...ग्य संपादिनी नाम १ सोपान समाप्तः संवत १६४३ शाके १५०८

३.........वासी नन्ददास पुत्र कृष्नदास हेत लिषी रघुनाथदास ने कासी पुरी में[1]

---

१ बिन्दुवाले स्थानों पर कागज निकला हुआ है।

इस पुष्पिका में यह ध्यान देने योग्य है कि उन कुल शब्दों पर जो 'वासी' से प्रारंभ होकर 'में' पर समाप्त होते हैं—अर्थात् पुष्पिका की तीसरी पंक्ति के सभी शब्दों पर पीछे से हल्की काली स्याही फेरी गई है।

कहा जाता है कि यह प्रति कोई तीन वर्ष पूर्व सोरों निवासी स्व० पं० मुरारीलाल शुक्ल से प्राप्त हुई थी, जो अपने को गोस्वामी जी का वंशधर कहते थे।

(२) रामचरितमानस के अरण्यकांड की प्रति हाथ के बने गहरे भूरे रंग के कागज पर लिखी हुई है, जिसका आकार १२" × ६३/४" है। इसके किनारे घिसे हुए हैं पर अन्यथा उसे कोई क्षति नहीं पहुंची है। इस प्रति के भी कई पत्रे, जिनमें पहला भी सम्मिलित है, खंडित हैं। अंतिम पत्रा बचा हुआ है और वह अक्षत भी है। इसी में वह पुष्पिका है जिसमें प्रति का लिपि काल आदि दिया हुआ है। कुल प्रति, पुष्पिका के एक अंश को छोड़ कर गाढ़ी काली स्याही से लिखी हुई है। देखने में यह प्रति इतनी काफ़ी पुरानी जान पड़ती है कि विक्रमीय सत्रहवीं शताब्दी की कही जा सके।

पुष्पिका इस प्रकार है —

१. ॥ इति श्री रा

२. मायने सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्ये संपादिनी षट सुजन संवादे राम वन चरित्र

३. वर्नतो नाम तृतियो सोपान आरन्य कांड समाप्त ॥३॥ श्री तुलसीदास गुरु की आग्या सों उन

४. के भ्राता सुत कृष्णदास सोरों छेत्र निवासी हेत लिखितं लछिमनदास कासी जी मध्ये सं

५. वत् १६४३ आषढ़ सुद्ध ४ सुक्रे इति ॥

इस पुष्पिका में यह ध्यान देने योग्य है कि "इति" से "३॥" तक का अंक पहले लाल स्याही से लिखा हुआ था, पीछे से उस पर चमकदार काली स्याही फेरी गई है। इस पुनर्रंजन में केवल "इति" और "ध्ये" के एकार की मात्रा अपने पहले के रंग में बने हुए हैं, शेष सभी शब्द काले कर दिए गए हैं। इस अंश के अनंतर "श्री" से "इति ॥" तक का अंश चमकदार काली स्याही से लिखा हुआ है। इस पर फिर स्याही नहीं फेरी गई है, केवल संवत् का

"१६४" पुनर्लेखन का परिणाम जान पड़ता है।

इस प्रति का भी प्राप्ति स्थान और प्राप्ति काल वही बताया जाता है जो उपर्युक्त बालकांड की प्रति का बताया जाता है।

(३) 'सूकरक्षेत्र महात्म्य भाषा' की प्रति हाथ के बने भूरे कागज पर लिखी गई है, जिसका आकार ११$\frac{1}{4}$'' × ७$\frac{1}{4}$'' है। किनारे कुछ घिसे हुए हैं। प्रति संपूर्ण है, कोई भी पत्रा उसका खंडित नहीं है। प्रति भर में एक सामान्य गाढ़ेपन और चमक की काली स्याही का प्रयोग हुआ है। देखने में प्रति इतनी पुरानी जान पड़ती है कि उसे विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी का कहा जा सके।

पुष्पिका इस प्रकार है—

संवत् १८७० मिति कातिक वदी ११ एकादशी बुधवासरे लिखितम् शिव सहाय कायस्थ सोरों मध्ये।

इस प्रति के संबंध में एक बात ध्यान देने योग्य है। इसका प्रत्येक शब्द एक दूसरे से अलग अलग लिखा गया है, सटा कर और मिला कर नहीं लिखा गया है, जैसा हमें प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है।

इस प्रति का भी प्राप्ति स्थान तथा प्राप्ति काल वही बताया जाता है जो उपर्युक्त 'मानस' की प्रतियों का बताया जाता है।

पुष्पिका के नीचे किन्ही मुरलीधर चतुर्वेदी रचित पाँच छप्पय भी दिये हुए हैं। यह भी उसी लिखावट में हैं जिसमें शेष प्रति है, और इनकी स्याही भी वही है जो शेष प्रति की है, जिससे यह स्पष्ट है है कि इनका भी लेखक, और लिपिकाल, वही होगा जो शेष प्रति का है। इस अंश में भी हमें प्रत्येक शब्द एक दूसरे से अलग अलग लिखे गए मिलते हैं, सटाकर और मिलाकर लिखे गए नहीं मिलते।

इन छप्पयों के अनंतर उपर्युक्त प्रति में हमें कृष्णदास रचित एक 'कृष्णदासवंशावली' भी मिलती है जो दस दोहों में समाप्त होती है। इस 'वंशावली' की लिखावट शेष प्रति की लिखावट से मिलती है, पर इसके अक्षरों का आकार उपर्युक्त अंशों के अक्षरों के आकार से छोटा और इसकी स्याही उपर्युक्त अंशों के अक्षरों के आकार से छोटा और इसकी स्याही उपर्युक्त अंशों की स्याही से कुछ गाढ़ी है। फलतः यह स्पष्ट है कि यह

'वंशावली' शेष अंशों के बाद किसी समय लिखी गई, यद्यपि इसका भी लेखक वही था जो शेष प्रति का था।

'सूकरक्षेत्र माहात्म्य भाषा' अब पुस्तकाकार प्रकाशित है, और लकी स्टोर्स, सोरोंगेट, कासगंज जि० एटा से मिल सकती है, पर उसमें मुरलीधर के उपर्युक्त छप्पय और कृष्णदास वंशावली नहीं दिए गए हैं।

(४) 'रत्नावली' की प्रति हाथ के बने भूरापन लिए हुए सफ़ेद रंग के कागज पर लिखी हुई है, जिसका आकार ९$\frac{1}{8}$" × ७$\frac{1}{2}$" है। किनारे किंचित घिसे हुए हैं। प्रति संपूर्ण प्राप्त है। स्याही प्रति भर में हल्की काली है। देखने में प्रति इतनी पुरानी अवश्य जान पड़ती है कि उसे विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी का कहा जा सके।

पुष्पिका इस प्रकार है—

१. इति श्री रत्नावली संपूरणम्। लिषितम् श्री मुरलीधर चतुर
२. वेदि शिष्येन राम वल्लभ मिश्रेन सोरों मध्ये संवत् १८६४ ॥
३. मारगशिर मासे शुक्ल पक्षे ६ शनिवासरे। कृष्णायनमः ॥
४. शुभम् ॥ शुभम् ॥ शुभम् ॥ शुभम् ॥ शुभम् ॥ शुभम् भूयात्

कहा जाता है कि यह प्रति कासगंज, जिला एटा, निवासी मुनीम जुगुल किशोर जी से प्राप्त हुई थी, और उन्हें भी यह कहीं अन्यत्र से प्राप्त हुई थी।

'रत्नावली' के पाठ के ठीक नीचे उसके लेखक के ही रचे हुए तीन छप्पय मिलते हैं। यह छप्पय उन पाँच में से प्रथम तीन हैं जो हमें ऊपर 'सूकरक्षेत्र-माहात्म्य भाषा' की प्रति में मिले थे। यह तीन छप्पय भी उसी लिखावट में है और उसी स्याही में लिखे गए हैं जिनमें 'रत्नावली'। फलतः यह भी 'रत्नावली' के साथ ही उसी के लेखक लिखे गए जान पड़ते हैं।

'रत्नावली' अब दो संस्करणों में प्रकाशित है। एक पं० भद्रदत्त जी वैद्यभूषण, बड़ी टोली, कासगंज, ज़ि० एटा से प्राप्य है, और दूसरा पं० प्रभुदयाल जी शर्मा, शर्माभवन, इटावा से प्राप्य है। वैद्यभूषण जी वाले संस्करण में उपर्युक्त तीन छप्पय भी प्रकाशित हैं। उसमें जो चौथा छप्पय दिया हुआ है वह अवश्य 'रत्नावली' वाली प्रति में नहीं है।

(५) 'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' की दो प्रतियाँ हैं। इसमें से एक हाथ के

बने भूरापन लिए हुए सफ़ेद कागज पर लिखी हुई है, जिसका आकार ६ × ५½ है। किनारे इस प्रति के घिसे हुए नहीं हैं, वे ज्यों के त्यों हैं। प्रति संपूर्ण है। स्याही प्रति भर में काली है। देखने में प्रति पुरानी अवश्य ज्ञात होती है, यद्यपि बहुत सावधानी के साथ रक्खी गई जान पड़ती है।

इसकी पुष्पिका इस प्रकार है—

—इति श्री रत्नावली लघु दोहा संग्रह संपूर्णम्। लिखितम् इदं पुस्तकम पंडित रामचन्द्र बदरिया ग्रामे शुभे संवत् १८७४ चैत्र कृष्ण १३ भृगुवासरे।

यह प्रति कहा जाता है कि पं० अङ्गदराम जी शास्त्री बदरिया निवासी के अधिकारियों से प्राप्त हुई थी। पं० अङ्गदराम शास्त्री का देहान्त सं० १९४५ के हुआ था। इस प्रति के मुखपृष्ठ पर सं० १९२५ में किया हुआ उनका हस्ताक्षर भी है।

'रत्नावली लघु दोहा-संग्रह' की दूसरी प्रति हाथ के बने सफ़ेद कागज पर लिखी हुई है जिसका आकार ९" × ६½' है। इस प्रति के किनारे कुछ घिसे हुए हैं। प्रति संपूर्ण है। स्याही प्रति भर में हल्की काली है। देखने में प्रति इतनी पुरानी अवश्य जान पड़ती है कि वह विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी ही कही जा सके।

इस प्रति की पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्रीरत्नावली लघु दोहा संग्रह संपूर्णम्। लिखितम् ईसुरनाथ पंडित सोरों जी मिती माह सुदी तेरसि १३ सोमवार संवतु १८७५ में।

यह प्रति कहा जाता है कि सोरों निवासी किन्हीं पं० प्यारेलाल से प्राप्त हुई थी।

'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' अब 'रत्नावली' के उस संस्करण के साथ प्रकाशित है जो पं० भद्रदत्त वैद्यभूषण से प्राप्त है।

(६) 'दोहा-रत्नावली' 'रत्नवाली' के उस संस्करण के साथ प्रकाशित है जो पं० प्रभुदयालु शर्मा से प्राप्य है। इसके दोहे भी रत्नावली की ही कृति कहे जाते हैं। पर इस संस्करण का आधार कोई हस्तलिखित प्राचीन प्रति है या नहीं यह कहना कठिन है। इसकी भूमिका में सम्पादक लिखते हैं कि प्रेस के लिए दोहों की एक प्रतिलिपि उन्हें पं० भद्रदत्त जी से मिली थी, उसी के अनुसार यह दोहे छापे गए हैं (पृ० ३१)। मैं स्वयं पं० भद्रदत्त ही से मिला

था। इस सम्बन्ध में प्रश्न करने पर मुझे उनसे ज्ञात हुआ कि उन्हें भी प्रेस के लिए यह प्रतिलिपि पं० गोविन्दवल्लभ भट्ट से प्राप्त हुई थी। उन्होंने स्वतः वह प्रति तैयार नहीं की या कराई थी। मैं पं० गोविन्दवल्लभ भट्ट से भी मिला था। इस सम्बन्ध में उनसे प्रश्न करने पर मुझसे भट्ट जी ने कहा कि प्रेस के लिए वह प्रतिलिपि एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति से कराई गई थी जो उनके पास थी, पर उसे वह देहरादून या हरद्वार में छोड़ आए थे।

इस 'दोहा रत्नावली' की विशेषता यह है कि इसमें हमें वे सभी दोहे तो मिलते ही हैं जो 'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' में मिलते हैं साथ ही ९० और भी ऐसे दोहे मिलते हैं जो 'लघु दोहा संग्रह' में नहीं है, और इन ९० दोहों में हमें गोस्वामी जी और उनकी स्त्री के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बहुत सी ऐसी सामग्री मिलती है जो अन्यत्र नहीं मिलती।

(७) मुहल्ला जोगमारग (योगमार्ग) में बुद्धू गद्दी नामक एक मुसलमान ग्वाले (?) का एक कच्चा मकान है। कहा जाता है कि उसी मकान के स्थान पर पहले गोस्वामी जी का मकान था। यह मकान बस्ती के उत्तरी सिरे पर है। इसके उत्तर में और कोई मकान नहीं है। पूर्व में एक कच्ची सड़क और रास्ता है, पश्चिम में अब्दुल्ली गद्दी का मकान है, दक्षिण में अब्दुल्ला मशक वाले का मकान है। यह मकान किसी पुराने मकान के अवशेष पर बनाया हुआ जान पड़ता है। चहारदीवारी का फाटक स्पष्ट ही किसी पुराने फाटक के भग्नावशेष पर बनाया हुआ है। इस मकान के उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग दो फर्लांग के अन्तर पर, एक मरघट है, और इस मकान के पूर्व की ओर कच्ची सड़क के बाद मुसलमानों की एक बस्ती है जिसमें कसाई भी हैं। हिन्दुओं के मकान इस बस्ती में कदाचित् एकाध ही हैं।

(८) यहाँ पर सनाढ्य शुक्लों का एक घराना है, जिसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि वह नन्ददास की वंशपरम्परा में है। इस समय इस कुल में एक पंडित बाबूराम हैं, और उनका एक भतीजा है जो उनके भाई उन स्व० पं० मुरारीलाल का पुत्र है जिनसे 'मानस' की उपर्युक्त प्रतियों की प्राप्ति बताई जाती है।

(९) सोरों में चौधरियों के मुहल्ले में पक्के मकान का एक खंडहर है। यह नरसिंह जी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें प्राचीन अंश पूर्व और पश्चिम का है। दक्षिण का अंश अपेक्षाकृत नवीन है, और उत्तर की ओर कोई बनावट नहीं रह गई है। इसमें अब केवल हनुमान जी की एक मूर्ति है, और कुछ नहीं है।

(१०) इसी मुहल्ले में चौधरियों के कुछ घर हैं जो हमारे कवि के गुरु नरसिंह चौधरी के वंशधर बताए जाते हैं। पंडित रंगनाथ आजकल इनके मुखिया हैं।

इस कुल सामग्री का एक सामान्य परिचय प्राप्त कर लेने के अनन्तर अब हमें उसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

(१) जब हम उपर्युक्त बालकांड की प्रति की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में विचार करने लगते हैं तो हमें नीचे लिखी बातें खटकती हैं—

(अ) पुष्पिका की अन्तिम पंक्ति और अन्त से दूसरी पंक्ति के बीच में एक छोटी आड़ी रेखा इस प्रकार खींची हुई है कि उससे जान पड़ता है कि पुष्पिका उसके ऊपर ही समाप्त हो गई थी, और फलतः उसके नीचे वाली पंक्ति अर्थात् अब इस अन्तिम पंक्ति के नीचे तीन छोटी आड़ी रेखाएँ एक दूसरे के समानान्तर संभवतः यह प्रकट करने के लिए खींची गई हैं कि एक पंक्ति ऊपर वाली रेखा को समाप्ति-सूचक न मानी जावे। इससे वह बात और भी प्रकट हो जाती है कि पुष्पिका की समाप्ति पहले वाली आड़ी रेखा पर ही हो चुकी है।

(ब) अन्तिम पंक्ति की लिखावट शेष प्रति और पुष्पिका की लिखावट से पूरा पूरा मेल नहीं खाती। दोनों में शैली, गति अक्षरों के आकार शिरोरेखा लम्बाई, और समाप्ति की ओर पहुँचते हुए पंक्ति से अक्षरों की गति में अन्तर ज्ञात होता है, यद्यपि अक्षरों के बीच के फ़ासले और उनकी बनावट में साम्य दिखाई पड़ता है। इन लिखावटों का मिलान गोलाई और ख़त की दृष्टियों से इसलिए नहीं किया जा सकता कि अन्तिम पंक्ति में अक्षरों के ऊपर स्याही फेर कर उन्हें बिगाड़ दिया गया है।

(स) अंत से दूसरी पंक्ति में प्रतिलिपि की जो तिथि दी हुई है उसकी लिखावट में बड़ी अस्वाभाविकता जान पड़ती है। ६ और ४ के बीच में

इतनी जगह छूट जाती है कि यदि स्वाभाविक रीति से लिखा जाता तो उतने स्थान में एक और अंक सरलता पूर्वक लिखा जाता। फिर 'शाके' और '१५०८' के बीच में तो इतना अंतर छोड़ दिया गया है कि उसमें दो अंक अवश्य आ सकते थे यदि वह शब्द क्रमि द्वारा पत्रज्ञाति के पूर्व लिखे गए होते।

(२) जब हम अरण्यकांड वाली प्रति की पुष्पिका पर विचार करने लगते हैं, तब हमें उसको प्रामाणिक मानने में निम्नलिखित अड़चनें पड़ती हैं —

(अ) "श्री तुलसी" से लेकर अंतिम "इति" तक की लिखावट शेष प्रति और पुष्पिका की लिखावट से शैली, गति और अक्षरों के आकार के विषय में भिन्न ज्ञात होती है, यद्यपि वह गोलाई और ख़त, अक्षरों के बीच के फासले, और पंक्ति की सीधाई के संबंध में एक सी जान पड़ती है। 'क' 'ह' '१' और '६' की बनावट में और इकार की मात्रा की बनावट में भी दोनों अंशों में कुछ अंतर ज्ञात होता है।

(ब) संवत् के "१६४" इस प्रकार पुनर्निर्मित हैं कि वे पंक्ति के अन्य अक्षरों और अङ्कों की अपेक्षा बहुत बड़े हो गए हैं। उनकी इस अस्वाभाविक विकृति को देखकर जान पड़ता है कि संभवतः किन्हीं दूसरे अङ्कों को बिगाड़ कर उनका निर्माण किया गया है।

(३) जब हम 'सूकरक्षेत्र माहात्म्य भाषा' की प्रति की जाँच करते हैं तो हमें जो बात खटकने वाली मिलती है वह है उसके प्रत्येक शब्द का दूसरे शब्द से अलग लिखा जाना, प्रत्येक शब्द में आने वाले अक्षर एक शिरो-रेखा के नीचे लिखे गये हैं, और उन्हें प्रत्येक दूसरे शब्द के अक्षर समूह से अलग रक्खा गया है। प्रति का लिपि काल सं० १८७० दिया गया है। इस समय के लगभग की एक भी ऐसी अन्य प्रति मेरे देखने में नहीं आई हैं जिसमें उपर्युक्त लेखन शैली बरती गई हो।

उपर्युक्त बातें मुरलीधर के उन पाँच छप्पय और कृष्णदास की कृष्णदास-वंशावली, जो प्रति के अन्त में दिए गए हैं, के संबंध में भी कही जा सकती है।

(४) जब हम मुरलीधर चतुर्वेदी कृत 'रत्नावली' की जाँच करते हैं तो हमें एक बात उसमें भी खटकती हैं। वह है उसकी शैली और शब्दविन्यास

का अपेक्षाकृत आधुनिक होना। नीचे लिखी पंक्तियों में यह बात ध्यान देने योग्य है—

सीम प्रेम तुम करी पार। नाथ प्रेम के तुम अधार।
मम सुप्रेम निज हिये धार। उतरे प्रिय सुरसरित पार।
जग अधार पद प्रेम धार। जात मनुज भव उदधि पार।
प्रेम हीन जीवन अधार। नाथ प्रेम महिमा अपार। १२९-३२

(५) 'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' के संबंध में अवश्य हमें कोई संदेहजनक बात नहीं ज्ञात होती। पर सोरों में मिली हुई प्रत्येक अन्य सामग्री के संदेहातीत न होने के कारण इस 'लघु दोहा संग्रह' के संबंध में भी यदि किसी को पर्याप्त विश्वास न हो तो कुछ आश्चर्य नहीं।

(६) 'दोहा रत्नावली' की प्रति, यदि कोई प्राचीन प्रति है तो, हमें देखने को नहीं मिली, इसलिए उसके संबंध में हम कुछ भी कहने में असमर्थ हैं।

(७) कवि के घर के संबंध में सोरों में एक जनश्रुति है—

तुलसी घर मरघट्ट में गलकटियन के पास।
अपनी करनी आप संग तू क्यों होय उदास॥

ऊपर हमने जिस मकान की स्थिति देखी है, उसके संबंध में यह जनश्रुति लागू हो सकती है, इसमें सन्देह नहीं।

इस मकान के साथ एक और परंपरा लगी चली आती है। सोरों के लोगों का यह विश्वास है कि इस मकान की मिट्टी कनवर (कर्णमूल प्रदाह) नामक रोग में गुणकारी होती है, और इसीलिए वे अब भी इसे ले जाते हैं और उपर्युक्त रोग में इसका प्रयोग करते हैं। पर इस परंपरा से यह बात सिद्ध नहीं होती कि वह मकान, जिसकी मिट्टी लोग इस प्रकार ले जाते हैं, तुलसीदास का था।

इस मकान के संबंध में एक और बात है जिसे सोरों को तुलसीदास की जन्मभूमि मानने वाले लोग प्रकाश में नहीं लाते। मुझे स्थानीय जाँच से यह ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त मकान, और उससे मिले जुले कुछ और मकान भी, पहले राजोरियों के थे (शुक्लों के नहीं) और वे राजोरिया घराने धीरे धीरे नष्ट हो गए। यह बात लेखक को कुछ कठिनाई के बाद ज्ञात हुई, क्योंकि सोरों का अधिकांश जन समाज यह चाहता है कि सोरों तुलसीदास जी

की जन्मभूमि मानी जाय, और यह बात कदाचित् उसके मार्ग में बाधक होती। फलतः जब तक इस बात का कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिल जाता कि वह घर शुक्लों का था प्रस्तुत लेखक उसे राजोरियों का ही मानेगा।

इस नई बात से दो परिणाम निकलते हैं—

(क) या तो उपयुक्त मकान तुलसीदास का था ही नहीं, और

(ख) या तुलसीदास राजोरिया थे, सनाढ्य शुक्ल नहीं।

प्रश्न यह स्वाभाविक है कि यह 'राजोरिया' कौन होते हैं? यह ब्राह्मणों के एक वर्ग हैं जो लगभग एक अर्द्ध शताब्दी पूर्व एटा जिले के ब्राह्मणों में संख्या के नाते काफी प्रमुख थे।[1] 'राजोरिया' नाम का इतिहास किसी स्थान के साथ संबंध रखता हुआ जान पड़ता है। कुछ दिनों तक लेखक 'राजोरिया' को 'राजापुरिया' का एक विकृत रूप समझता था, क्योंकि भाषाविकास के नियमों के अनुसार 'उ' के संयोग के कारण 'प' का 'लोप' स्वाभाविक था, पर अब उसका अनुमान है कि 'राजोरिया' शब्द की उत्पत्ति 'राजौरा' से हुई है जो आगरा जिले में आगरा शहर से ३२ मील की दूरी पर, अक्षांश २६° ५८ तथा देशान्तर ७८° ३२ पर, यमुना के दक्षिणी किनारे पर बसे हुए एक ग्राम का नाम है।[2]

(८) इस बात का यथेष्ट प्रमाण कोई नहीं है कि पं० बाबूराम शुक्ल और उनके घर वाले नंददास के वंशज हैं। स्व० पं० मुरारीलाल शुक्ल का कथन मात्र इस सम्बन्ध में प्रमाण नहीं हो सकता। सोरों यात्रा में मैंने पं० बाबूराम से मिलना चाहा, पर वे बाहर चले गये थे। इसलिए मिलना न हो सका। पर, जो कुछ मैंने पं० बाबूराम के सम्बन्ध में वहाँ सुना उससे मुझे सन्देह है कि पं० बाबूराम भी अपने को नन्ददास का वंशज कहते हैं या नहीं।

(९) नरसिंह जी के मंदिर के सम्बन्ध में जाँच करते हुए मैं

१. देखो, डबल्यू० क्रुक—ट्राइब्स ऐंड कास्ट्स इन दी एन० डबल्यू० पी० (सन् १८९६) पृ. १४७

२. देखो थार्नटन—ए गजेटियर ऑव् दि टेरिटरीज़ अंडर दी गवर्नमेंट ऑव दी ईस्ट इंडिया कम्पनी ऐंड दी नेटिव स्टेट्स ऑव दी कॉन्टिनेन्ट ऑव इंडिया (सन १८५८) पृ. ८११

उस स्थान के पटवारी मुं० गिरिजाशंकर से मिला, और उनसे मैंने उक्त मंदिर की खतौनी जमाबंदी प्राप्त की। उस खतौनी में लिखा है "मंदिर नरसिंह जी महाराज"। प्रश्न यह है कि क्या यह शब्दावली इस बात की सूचना देती है कि उक्त मंदिर किन्हीं नरसिंह चौधरी का था? कम से कम प्रस्तुत लेखक तो इस शब्दावली का आशय यही लेगा कि यह मंदिर नृसिंह भगवान का था, न कि किन्हीं नरसिंह चौधरी का। "जी" और "महाराज" शब्द तो कम से कम इसी ओर संकेत करते हैं।

(१०) अपनी सोरों यात्रा में मैं पं० रंगनाथ चौधरी से मिला था। उनसे प्रश्न करने पर ज्ञात हुआ कि उन्हें केवल अपने आठ पूर्वपुरुषों के नाम ज्ञात हैं, और इनमें से नरसिंह नहीं हैं। उपर्युक्त मंदिर अवश्य उनके घराने के अधिकार में चला आ रहा है। किन्तु केवल इतनी बात से यह सिद्ध नहीं होता कि उनके कोई पूर्वपुरुष नरसिंह चौधरी नाम के थे, जो तुलसीदास जी के समकालीन थे, या इतना भी कि मंदिर का नाम 'नरसिंह जी महाराज का मंदिर' उनके किन्हीं पूर्वपुरुष के नाम से सम्बन्धित होने के कारण पड़ा।

एक बात अवश्य है जिससे यह ज्ञात होता है कि पं० रंगनाथ और पं० बाबूराम के घरानों में कुछ पूर्वकाल से संबंध चला आ रहा है। भागीरथी की गुफा में, जो मौजा होडलपुर में है, दोनों घरानों का हिस्सा है। पं० बाबूराम उसमें चढ़े हुए द्रव्य का तीन चौथाई और पं० रंगनाथ एक चौथाई लिया करते हैं। यह बात प्रस्तुत लेखक को उक्त गाँव के पटवारी मुं० महावीर-शंकर से भी ज्ञात हुई थी।

संक्षेप में यही सोरों और उसके आस पास में मिली हुई गोस्वामी तुलसी-दास के जीवन वृत्त से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री और उसकी बहिरंग परीक्षा है।[१]

———

१. राजापुर संबंधी सामग्री के संबंध में आगे लिखा जायगा—लेखक

हिन्दी-काव्य में श्रीकृष्ण

[लेखक—श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी एम॰ ए॰, विशारद]

हिन्दी कविता में बहुत प्राचीन समय से श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र उच्चतम स्थान पाता रहा है। यदि हम हिन्दी-काव्याकाश के केवल नव जाज्वल्यमान नक्षत्रों में से 'सूर-सूर तुलसी शशी' के आधार पर महाकवि सूरदास में सूर्य के गुण पाने का प्रयास करें तो बिना किसी विशेष श्रम के हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि सूरदास की सफलता का सारा श्रेय श्रीकृष्ण को ही है, जिनकी विमल कीर्त्ति के गुणगान करने के कारण जन्मान्ध सूरदास इस अक्षय यश के भागी बने। सूरदास की रचना में बाल श्रीकृष्ण से लेकर उनके जीवन के अन्य पहलुओं पर जिस संगीतमय तथा कर्णप्रिय शब्दावली द्वारा श्रीकृष्ण के प्रति जो अटूट प्रेम प्रकट किया गया है वह सचमुच सूरदास को हिन्दी-काव्याकाश का सूर्य बना देता है। "माई आजु तौ बधाई बाजै नन्द महर कै" से प्रारम्भ होकर "कर गहि पग अँगुठा मुख मेलत" फिर "मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ" अथवा "कब बढ़ि है मोरी चोटी" या "गोपाल दुरे हैं माखन खात" आदि बाल्य-जीवन के वे चित्र हैं जिन पर किसी भी साहित्य को गर्व हो सकता है। श्रीकृष्ण का धेनु-चराना, नाग-नाथना, गो-दोहन, गोवर्द्धन-धारण आदि का जो चित्र सूरदास ने खींचा है, वह सचमुच चित्ताकर्षक है। श्रीकृष्ण और गोपियों का प्रेम, जिसमें अश्लीलता खोजे से भी न मिलेगी, कवि और उसके पात्र दोनों को उच्चकोटि का बना देता है। श्रीकृष्ण को देख कर "नैना भये घर के चोर" के अतिरिक्त और कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया गया। रासलीला में, हिंडोला-झूलने में सर्वत्र

ही उत्तम चरित्र-चित्रण ही कवि का ध्येय रहा है। विरह-निवेदन, उद्धव-गोपिका-संवाद इत्यादि में भी सूरदास ने श्रीकृष्ण के चारों ओर ही सत्साहित्य की सृष्टि की है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिन्दी-भाषा के सूर्य सूर को इतना ऊँचा उठाने का श्रेय महान् आत्मा श्रीकृष्ण को ही है।

हिन्दी-काव्य के दूसरे रत्न 'रामचरित मानस' के रचयिता महात्मा तुलसीदास भी श्रीकृष्ण-चरित्र के लिखे बिना तृप्ति न पा सके। केशव की क्लिष्ट कल्पना का आधार यदि श्रीकृष्ण न थे तो न सही परन्तु देव और बिहारी दोनों महाकवियों ने श्रीकृष्ण की ही सेवा में अपनी कृतियाँ सादर समर्पित की हैं।

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परे, स्यामु हरित दुति होइ॥

या

तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति कर अनुराग।
जिहिं-ब्रज-केलि-निकुञ्ज-मग, पग-पग होतु प्रयाग॥

या

सीस-मुकट, कटि-काछनी, कर-मुरली, उर माल।
इहि बानिक मो मन सदा, बसौ बिहारी लाल॥

अथवा

पायनु नुपूर मंजु बजैं—
कटि में धुनि किंकिन की मधुराई।
साँवरे अङ्ग लसै पट पीत—
हिये हुलसै बनमाल सुहाई॥
माथे किरीट बड़े दृग चञ्चल,
मन्द हँसी मुख चन्द जुन्हाई।
जै जग मन्दिर दीपक सुन्दर,
श्री ब्रज-दूलह देव सहाई॥

आदि में जो श्रद्धा के भाव उभय कवियों ने श्रीकृष्ण जी के प्रति प्रकट किये हैं वे सर्वथा प्रशंसनीय हैं। परन्तु आगे चल कर उन्होंने श्रीकृष्ण को एक उत्कृष्ट नायक के रूप में देखना प्रारम्भ किया और अपने

परवर्त्ती कवियों के लिए एक नया मार्ग प्रदर्शित किया। बिहारी के श्री कृष्ण में फिर भी उनकी जगत-प्रसिद्ध मन-मोहकताओं का ही आश्रय लिया गया है :— यथा

कितीं न गोकुल कुल-बधू, किहि न काहि सिख दीन।
कौने तजी न कुल गली, ह्वै मुरली सुर-लीन॥
डिगत पानि डिगुलाति गिरि, लखि सब ब्रज बेहाल।
कंपि किसोरी दरसि कैं, खरैं लजाने लाल॥
बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै, भौंहनु हँसै, दैन कहै, नटि जाइ॥
बाल-बेलि सूखी सुखद, इहिं रूखी रुख-घाम।
नैंकु डहडही कीजिये, सरस सींचि घन-श्याम॥
कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली, कहुँ पीत पट, कहूँ मुकुट बनमाल॥
मोर-चन्द्रिका स्याम-सिर, चढ़ि कत करत गुमान।
लखवी पायन पर लुठति, सुनियत राधा-मान॥

कविवर देव ने जहाँ श्रीकृष्ण को उच्चकोटि के शृङ्गार में स्थान दिया है वहाँ विशेष कोटि के शृङ्गार में भी उन्हें लाने में कोर-कसर नहीं की।

देवजी के 'अष्टयाम' में महात्मा श्रीकृष्ण का जो विशेष प्रेम दिखलाया गया है वह अत्युक्ति पूर्ण है। हिन्दी के बहुत से कवियों ने देव जी के इसी आदर्श को अपना कर अपनी लेखनी चलाई है। पर ऐसी रचना की कटु-आलोचना ने उसका जीवन क्षणिक बना दिया है। देव जी की आदर्श रचनाओं में श्रीकृष्ण के अच्छे से अच्छे चित्र भी पाये जाते हैं। यहाँ हम उनके उद्धरण देने का लोभ संवरण नहीं कर सकते—

सुनि कैं धुनि चातक, मोरन की,
चहुँ ओरन कोकिला कूकनि सों॥
अनुराग भरे हरि बागन में,
सखि रागत राग अचूकनि सों॥

कवि 'देव' घटा उनई जु नई,
वन-भूमि भरी दल-दूकनि सों।
रँगराती हरी हहराती लता,
झुकि जाती समीर के झूकनि सों।

इन रत्नों के अतिरिक्त चन्द और भूषण ने श्रीकृष्ण की ओर ध्यान नहीं दिया। कबीर का रहस्यवाद भी अपने रहस्यों के उद्‌घाटन में संलग्न रहा। मतिराम त्रिपाठी ने महाकवि देव के दूसरे आदर्श का अनुसरण किया। केवल भारतेन्दु ने फिर सूरदास के उच्चतम आदर्श तक पहुंचने का प्रयास किया तथा श्रीकृष्ण के संबंध में भाव पूर्ण शृङ्गार काव्य की रचना की।

भारतेन्दु से पहले अनेक कवियों ने श्रीकृष्ण का जैसे बन पड़ा चित्रण किया। किसी ने उन्हें एक नायिका के साथ घसीटा तो दूसरे ने दूसरी के साथ। किसी ने यदि 'अंरवान के नीर' के जलाहल बनाए तो किसी ने 'नन्द के बारो' से 'गहि बाँह गरीब ने ठाड़ी करी' इत्यादि सेवाएं लीं। फिर भी इस युग में दो-चार कवि ऐसे मिल सकते हैं जो श्रीकृष्ण के रङ्ग में पूर्णतया रंगे होने के कारण उनको सब प्रकार से उत्तम चित्रित करने में सफल हुए हैं। कविवर नन्ददास जी और सोमनाथ जी की पञ्चाध्यायी, मीरा के पद, रहीम का कृष्ण-वर्णन तथा सर्वोपरि रसखान की रसमय भक्ति श्रीकृष्ण के ही चरित्र-चित्रण का परिणाम है।

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि, नवौ निधि को सुख–
नन्द की धेनु चराय बिसारौं॥
आँखिन सों रसखान कबै
ब्रज के बन, बाग, तड़ाग निहारौं।
कोटिक हूँ कलधौत के धाम
करील के कुञ्जन ऊपर वारौं॥

इस उच्च आदर्श को लक्ष्य में रखने वाले 'रसखान' ही कह सकते हैं कि—

"दोऊ परैं पइयाँ, दोउ लेत हैं बलैयाँ,
उन्हें भूल गई गैयाँ, उन्हें गागरि उठाइबो।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द ने 'कृष्ण-चरित्र' काव्य की रचना पृथक रूप से भी की है। उनके सवैयों में स्थल-स्थल पर कृष्ण-जीवन सम्बन्धी उत्तमोत्तम चित्र सर्वत्र सुलभ हैं। सूरदास के से पद भी हरिश्चन्द्र ने उच्चकोटि के रचे हैं।

सम्हारहु अपने को गिरधारी।
मोर मुकुट सिर पाग पेंच कसि, राखहु अलक सँवारी।
हिय हुलसत बनमाल उठावहु मुरली धरहु उतारी॥......"

भारतेन्दु का उपदेश सब को यही था कि—

"श्री राधा माधव युगल प्रेम रस का
अपने को मस्त बना।"

भारतेन्दु के पश्चात् हिन्दी-कबिता का वर्तमान युग प्रारम्भ होता है। इस युग में भी अधिकांश कवियों को महाकवि बनाने का श्रेय श्रीकृष्ण-चरित्र को ही प्राप्त है। श्रीधर-पाठक का 'गोपिका गीत' श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" का 'प्रिय-प्रवास', 'रत्नाकर' का 'उद्धव शतक' कविरत्न सत्यनारायण का 'भ्रमर-दूत' व स्फुट काव्य इस युग की उत्तमोत्तम रचनाओं में से हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों ने भी अपने स्फुट काव्य में श्रीकृष्ण को किसी न किसी रूप में अवश्य ही याद किया है। ठा० गोपालशरण सिंह का 'ब्रज-वर्णन', श्री कौशलेन्द्र राठौर की 'करुणा-कादम्बिनी', हिन्दी-काव्य की अमूल्य सम्पत्ति हैं। वर्तमान कविता में बांसुरी वाले की झलक न मिले तो न सही परन्तु जिस महान् आत्मा की पवित्र-स्मृति प्रत्येक हृदय में विद्यमान् है, उसके सम्बन्ध में मौनावलम्बन सफल कवि के लिये कठिन कार्य है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने, जिन्होंने कविसम्राट तुलसीदास की भाँति राम-चरित्र पर ही अधिक लेखनी उठाई है, अपनी पुस्तक 'हिन्दू' में जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्ण-लीला का चित्र खींचते हैं। आपकी निम्नाङ्कित पंक्तियों में श्रीकृष्ण के पवित्र-जीवन की एक झलक है :—

कुटिल नीति मयु कल्मष कंस।
हो जावे ससैन्य विध्वंस॥
माखन मिश्री, मोहन भोग।
आवे सब का ऐसा योग॥

सजें यशोदा माँएं थाल ।
जी में बाल रूप गोपाल ॥
बजे चैन की बंशी ऐन ।
कर दे हमें वही बेचैन ॥

आधुनिक युग की रचनाओं में 'प्रिय-प्रवास' और 'उद्धव-शतक' प्रत्येक साहित्य-प्रेमी का अनेक बार मनोरंजन कर चुके हैं। कविरत्न सत्यनारायण के—

श्री राधावर निज जन-बाधा सकल नसावन ।
जाको ब्रज मन-भावन जो ब्रज को मन-भावन ॥
रसिक सिरोमनि, मन-हरन, निरमल नेह-निकुञ्ज ।
मोद-भरन, उर सुख-करन, अविचल आँनद-पुञ्ज ॥

"रंगीलो सांवरों" को लोग अब किन-किन रूपों में देखेंगे कहना कठिन है। श्रीकृष्ण जी के मनमोहक चरित्र से केवल हिन्दी-साहित्य ने ही लाभ नहीं उठाया, बंगाल के प्रसिद्ध कवि माइकेल मधूसूदन दत्त की 'विरहणी-ब्रजाङ्गना' काव्य यह बतलाता है कि यह चारु-चरित्र अनेक साहित्यों का कीर्तिस्तम्भ है। फिर भगवान श्रीकृष्ण के प्रति हिन्दी साहित्य का इतना ऋणी होना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

बांकीदास और उनके काव्य

(प्रत्यालोचना)

[लेखक—श्री मोतीलाल मेनारिया एम० ए०]

'सम्मेलन-पत्रिका' के चैत्र-वैशाख, सम्वत् १९९७ के अंक में श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित 'साहित्य-रत्न' का लिखा हुआ एक लेख 'बांकीदास और उनके काव्य' शीर्षक से निकला है। इसमें पंडित रामकर्ण जी आसोपा द्वारा संपादित 'बांकीदास ग्रंथावली' के प्रथम भाग की समालोचना की गई है। इस लेख के लिखने से दीक्षित जी का क्या अभिप्राय था, यह तो ठीक-ठीक नहीं बतलाया जा सकता; पर इसके पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि दीक्षित जी को न तो डिंगल भाषा का ज्ञान है और न राजस्थान के इतिहास से जानकारी। अपने लेख के प्रारंभ में दीक्षित जी ने बांकीदास का जीवन-चरित्र लिखा है, जिसका आधार उक्त ग्रंथ की भूमिका है। बाद में बांकीदास की कविता की आलोचना की गई है। अपने मत के समर्थन में दीक्षित जी ने स्थान स्थान पर बांकीदास की कविता के उदाहरण भी दिये हैं। इनके जो अर्थ किये गये हैं वे अशुद्ध हैं। लेकिन इस सम्बंध में हम अभी यहां कुछ कहना नहीं चाहते। इस समय हमारा उद्देश्य पाठकों का ध्यान उन दो भूलों की ओर आकर्षित करने का है जो दीक्षित जी ने की हैं।

दीक्षित जी लिखते है—"बांकीदास ग्रंथावली के प्रथम भाग के पृष्ठ ९ पर कविराजा मुरारिदान को जोधपुर नरेश महाराजा जसवंत सिंह का कृपा पात्र और समकालीन लिखा है। यह ध्यान ही नहीं दिया कि महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब के समकालीन थे, और उसी के कहने से फ्रांटियर में वहां के निवासियों को दबाने के लिये भेजे गये थे और वहीं मारे गये थे। यह संवत् १७४३ वि० की घटना है और कविराजा मुरारिदान सं० १९०० वि० के लगभग हुए हैं। ये बांकीदास के पौत्र और भरतदान के पुत्र थे। बांकीदास का जन्म सं० १८३८ में हुआ था। अतः उनके पौत्र मुरारिदान सं० १७४३ वि० से पूर्व कैसे हो सकते हैं?"

"संभवतः यह भूल उनके ग्रंथ 'जसवंत जसोभूषण' और 'जसवंत भूषण' के रचने के कारण हुई है। मुरारिदान ने महाराजा जसवंतसिंह की प्रशंसा में उनके नाम को विख्याति और स्थायित्व प्रदान करने के लिये ये ग्रंथ रचे हैं; उनके आश्रित होने के कारण नहीं। इसी भ्रम में पड़ कर संपादक ने भूल कर दी है।"

दीक्षित जी को मालूम होना चाहिये कि जोधपुर में जसवंत सिंह नाम के दो महाराजा हुए हैं। जसवंतसिंह प्रथम और जसवंतसिंह दूसरे। जसवंत सिंह प्रथम औरंगजेब के समसामयिक थे। इनका जन्म सं० १६८३ में और देहान्त सं० १७३५ में हुआ था। जसवंतसिंह दूसरे सं० १८९४ में पैदा हुए थे। इन्होंने सं० १९२९ से सं० १९५२ तक राज्य किया। मुरारिदान जी जसवंतसिंह दूसरे के आश्रित थे और इन्हीं की कीर्ति को अक्षुण्ण रखने के लिये इन्होंने 'जसवंत जसोभूषण' की रचना की थी। सं० १९५० में जब यह ग्रन्थ बन कर तैयार हो गया तब मेवाड़, कोटा, बूंदी आदि राज्यों से बड़े-बड़े कवि और विद्वान जोधपुर बुलाये गये थे और इन सब की उपस्थिति में महाराजा जसवंतसिंह (दूसरे) ने इस ग्रन्थ को सुना था। इनमें पण्डित रामकर्ण जी भी थे। इस ग्रंथ-रचना से उक्त महाराजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने मुरारिदान जी को 'कविराजा' की उपाधि और कई बहुमूल्य वस्तुएं आदि पुरस्कार में दीं, जिनका उल्लेख उन्होंने 'जसवंत जसोभूषण' के अंत में इस प्रकार किया है:—

इक गज द्वै हयराज, कनक भूषन सौं भूषित।
मुक्तमाल सिरपेच, रत्न जटित जु कर अति हित॥
कुंडल कंकन वसन, खड़ग जमदढ जुत भूषन।
पंच सहस्त्र मुद्रिका, अपर परिजन हित दिय गन॥
प्रति वर्ष सहस्त्र षट उपज के, लक्ष पूर्ति को ग्राम दिय।
निज ग्रंथ रीझ जसवंत नृप, यह विध जग थिर नाम किय॥

सारांश यह कि कविराजा मुरारिदान जी जोधपुर नरेश महाराजा जसवंत सिंह दूसरे के आश्रित थे और पंडित रामकर्ण जी ने जो कुछ भी इनके विषय में लिखा है, वह बिलकुल ठीक है।

आगे चल कर दीक्षित जी लिखते हैं—"इसके अतिरिक्त कुछ शब्दार्थों

में भी भूल हुई है ।" इन्होंने अपनी तरफ से कुछ संशोधन भी पेश किये हैं। जिन छः दोहों के शब्दार्थों को उन्होंने गलत बतलाया है वे सभी ठीक हैं और डिंगल भाषा में उनके वही अर्थ होते हैं जो ग्रंथावली में दिये हुए हैं। सौभाग्य से इनमें एक भी शब्द ऐसा नहीं है जिसके दो या दो से अधिक अर्थ हो सकें और यह कहने की भी गुंजाइश हो कि दीक्षित जी के अर्थ भी ठीक हो सकते हैं। जिन छः दोहों के शब्दार्थों को दीक्षित जी ने ग़लत बतलाया है, उन सब को यहाँ देकर हम समय नष्ट करना नहीं चाहते, सिर्फ दो-तीन दोहे उद्धृत करके शेष के बारे में यही कहना चाहते हैं कि उनके जो अर्थ ग्रंथावली में दिये हुए हैं वे ठीक है और दीक्षित जी ने जो संशोधन पेश किये हैं वे अशुद्ध हैं।

भलाँ पधारो भीचड़ा, गरक सिलह में गात ।
केहर वाला कलह री, वळता की जौ वात ॥

अर्थ—हे सुभटो ! हथियारों में डूबे हुए (खूब सजे हुए) अपने इस शरीर से अभी तो (लड़ने के लिये रण-क्षेत्र में) जाओ। सिंह के साथ जो तुम्हारा युद्ध हुआ है, उसकी कहानी पीछे लौट कर कहना।

ग्रंथावली के संपादक ने उपर्युक्त दोहे के 'वलता' शब्द का अर्थ 'पीछे लौटना' दिया है जो ठीक है। पर दीक्षित जी इसका अर्थ 'व्यर्थ' बतलाते हैं। मालूम नहीं, 'व्यर्थ' अर्थ करने से दोहे का क्या मतलब होगा ? वस्तुतः यह 'वळ्ता' शब्द संस्कृत 'वल्' से बना है। 'वळती', 'वळते', 'वळ्तो' आदि इसके अन्य रूप हैं जिनका प्रयोग (पीछे लौटने के अर्थ में) डिंगल काव्यों में प्रचुरता से मिलता है। बोलचाल की राजस्थानी में भी इसका प्रयोग इसी अर्थ में होता है, जैसे-'ढळती-वळती छाया' 'वळती दाण' आदि। दीक्षित जी यह भी लिखते हैं कि राजपूताने में यह शब्द इस अर्थ (व्यर्थ) में प्रयुक्त होता है। पर उनका यह कथन भी भ्रमात्मक है।

ज्यारां मोटा भाग जग, मोटा किरतब मन्न ।
वां हंदी आसा करै, खैराती खट ब्रन्न ॥

अर्थ—संसार में जिनका बड़ा भाग्य है और जिनके मन और काम बड़े हैं, उनसे कुछ प्राप्त करने की आशा ब्राह्मण, चारण आदि छः वर्ण के सभी लोग करते हैं।

उपर्युक्त दोहे के 'मन्न' शब्द का अर्थ दीक्षित जी 'मानो' बतलाते हैं। पाठक स्वयं ही देख सकते हैं कि उनका यह अर्थ कहाँ तक ठीक है।

दीक्षित जी से हमारी जान पहचान नहीं हैं। हमें तो यह भी नहीं मालूम कि वे कहाँ के रहने वाले है। अतएव ऊपर जो कुछ भी लिखा गया है, वह किसी द्वेष के कारण नहीं, बल्कि सद्भाव से। आशा है, दीक्षित जी हमें इस धृष्टता के लिये क्षमा करेंगे।

स्वर्गीय प्रेमघन जी का रहन-सहन

[लेखक—श्री दिनेशनारायण उपाध्याय 'साहित्यरत्न']

संवत् १९१२ विक्रमी में उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' जी का जन्म हुआ। उस समय न रेलगाड़ियों का आधिक्य था और न कल पुर्जों का बाहुल्य। लोगों को अधिकतर कार्य विज्ञान के आधुनिक साधनों के बिना ही करना पड़ता था। 'प्रेमघन' जी का बाल्यकाल प्राचीन कालीन रईसों के बालकों के साथ व्यतीत हुआ, जिनमें अयोध्या नरेश महाराजा प्रतापनारायण सिंह और पायर नरेश राजा उदयनारायण सिंह उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त आपके घर का वायुमण्डल भी प्राचीन वीरता और शूरता से ओतप्रोत था। साथ ही साथ वीरता की परम्परा ने रईसी का बीजारोपण भी कर दिया था। बाल्यावस्था में 'प्रेमघन' जी बड़े हँसमुख और शौकीन थे। आपका स्वभाव साधारणतया हँसी-ठट्ठा करने का न था वरञ्च एक मर्यादायुक्त हँसी का द्योतक था।

'प्रेमघन' जी ने जब घर का काम-काज सँभाला तब वे मिर्जापूर में रहने लगे। वहां पर इनका रहन-सहन कुछ विलक्षणताओं से युक्त था। कुछ दिनों तक प्रातःकाल आप उस समय तक नहीं उठते थे जब तक कि उनका नियुक्त गायक आकर उन्हें अपने सुरीली तानों द्वारा "वाह वाह खूब तान ली" कहते हुए उठने को बाध्य न कर देता। जब नींद खुल जाती तब आप कृष्ण भगवान की स्तुति करते हुए बिस्तर पर से उतर कर आते और मुँह-हाथ धो कर तमालपत्र ग्रहण कर शौचादि से निवृत्त होते। संध्या-पूजा से निवृत होकर अपने अध्ययन के कमरे में बैठते और कुछ स्वाध्याय और मनोविनोद करते। इसके उपरान्त भोजन कर के आराम करते। इसी समय किसी नौकर से पैर दबवाते और अपने लड़कों से अखबार पढ़वाते हुए सो जाते। संध्या समय भांग छानकर छत पर टहलते हुए कविताएं लिखते। मिर्जापूर में अब भी वह पत्थर रखा है जिस पर कागज पेंसिल रखी जाती थी और वे छत के एक कोने से दूसरे कोने तक टहल-टहल कर छन्द या

तो स्वयं लिखते या किसी को वहाँ खड़ा रखते जिसे वे कवितायें लिखाया करते। यह कार्य उस समय अधिक प्रयोग में लाया गया जब उनके हाथ काँपने लगे थे और लिखना कष्टकर सा हो गया था।

'प्रेमघन' जी का कविता लिखना नियमित कार्यक्रम नहीं था बल्कि यह उनके 'मूड' पर निर्भर था। भारतेन्दु बाबू से एक दिन प्रेमघनजी की इसी बात पर बड़ी झक-झक हो गई। बात यह थी कि 'प्रेमघन' जी बुढ़वा मंगल के मेले के अवसर पर बनारस में भारतेन्दु जी के यहाँ टिके थे। 'प्रेमघन' जी ने यह देखा कि वे जब कभी बैठते तब हाथ में कलम और सामने कागज रखे रहते और कुछ न कुछ लिखा ही करते। इस पर 'प्रेमघन' जी ने उनसे कहा "क्या भारतेन्दु जब देखो तब लिखा ही करते हो" इस पर भारतेन्दु ने उत्तर दिया "जी हाँ, मैं यह जानता हूँ कि आपके इतना अच्छा नहीं लिख सकता, पर आप अच्छा लिख कर ही क्या करेंगे यदि लिखेंगे ही नहीं" 'प्रेमघन' जी कहा करते थे कि 'हमें अब भी भारतेन्दु की वह बात याद आती है।"

'प्रेमघन' जी का सदैव ध्यान अपने रहन-सहन को भारतीयता के रंग में रंगा रखने की ओर था। उन्हें दूसरों की नकल परम निन्दनीय तथा लज्जास्पद ज्ञात होती थी। पहनावा बिलकुल भारतीय था। बंगाली-चपकन, आबा, इत्यादि आप के उतने ही प्रिय कपड़े थे जितने कि सर में बड़े-बड़े कुन्तल और मुँह पर बड़ी-बड़ी मूछें। उनके रहन सहन में भारतीयता थी, इसकी भी एक सुन्दर कथा है। मिर्जापूर में टाउनहाल में विक्टोरिया के मरने पर शोक सभा हुई। उसमें 'प्रेमघन' जी भी बुलाये गये थे। शहर के रईस के नाते से ही नहीं वरन एक आनरेरी मैजिस्ट्रेट के नाते भी वहाँ पहुँचे। वहाँ जिन जिन लोगों ने आपको देखा सब सन्न हो गये और बड़े फेर में पड़ गये कि इन्हें क्यां सूझी है? कारण यह था कि सब लोग काले कपड़े से युक्त थे और यह काले शोकप्रद आवरण में आवृत न होकर पूर्ण विमल स्वच्छ वस्त्रों से सुशोभित थे। सब लोगों ने प्रश्न किया कि यह क्या आप पहन कर आये हैं? उन्होंने कहा "जो वास्तव में चाहिए था। मैं तो हिन्दू हूँ और हमारे यहाँ तो अशुभ अवसर पर सफेद ही कपड़े पहनने की परिपाटी है। देखिए तो सही, मुर्दे के शव के दाह के उपरान्त हमारे यहाँ सफेद वस्त्र ही

पहनने का विधान है ।" सब काले कपड़े वाले चुप हो गये।

इस प्रकार से हमें 'प्रेमघन' जी के जीवन में भारतीयता का सच्चा चित्र मिलता है। 'प्रेमघन' जी में जितना ही क्रोध कम था उतना ही अधिक भी था। वह हठी इतने थे कि जो सोच बैठते उसे बिना किये छोड़ते नहीं थे। जीवन के अंतिम समय में उन्हें अपने भाइयों से अपनी रियासत के बंटवारे के संबंध में बड़ा वैमनस्य हो गया। उसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपने एक भाई से बोलना ही बंद कर दिया और अन्तिम अवस्था में जब वे उनके पास गए तब भी उन्होंने उनसे बात नहीं की।

लेकिन वे हास्य और मनोरंजन के साक्षात अवतार थे। होली के अवसर पर वे मकान के नींचे गदहे की एक बड़ी सी तसवीर बनवा कर टांग देते थे और उस पर यही केवल लिखा रहता था कि "आप ही तो हैं।" कितना भी हँसोड़ आदमी आप के यहाँ जाता लेकिन वह हार कर लौटता था।

'प्रेमघन' जी के साथ सदैव दो तीन आदमी रहते थे। यदि कोई पान की तश्तरी लिये हैं तो कोई तौलिया और पंखा। इस प्रकार 'प्रेमघन' जी का रहन-सहन पूर्ण रूप से आराम और सुविधा के संयोग का फल था।

काव्यों में लक्ष्मण का चरित्र-चित्रण

[लेखक—श्री पद्मानन्द चतुर्वेदी, साहित्याचार्य]

हिन्दी साहित्य में रामायण का स्मरण करते ही रामचन्द्र और लक्ष्मण की मूर्ति सामने आ जाती है। परस्पर दोनों भाइयों में दो शरीर एक प्राण की तरह स्नेह था। लड़कपन से ही छाया की तरह लक्ष्मण रामचन्द्र के के साथ थे। खेलकूद, खाना-पीना, सोना और यहाँ तक कि वन में भी लक्ष्मण ने साथ नहीं छोड़ा। इस विशेष प्रीति में पायसान्न का प्रभाव था। 'द्वन्द्वीभूय-चरन्तौ तौ पायसांशानुसारतः,' (अध्यात्म रामायण आदि-काण्ड ३, अध्याय ४८ श्लोक)। "बारेहि तें निज हित पति जानी, लछिमन रामचरन रति मानी" तुलसीदास ने अपनी रामायण में भी 'निज हित पति जानी' कह कर विशेष प्रीति की पुष्टि की है। इस प्रकार लक्ष्मण की दिनचर्या भ्रातृ-सेवा में व्यतीत होती थी। परन्तु एक बात आश्चर्य की यह है कि शान्त चित्त वाले रामचन्द्र के साथ रहने पर भी लक्ष्मण में क्रोध की मात्रा अधिक थी। रामचन्द्र के सिवा दूसरे को वे तृण बराबर भी नहीं समझते थे। इसी प्रकृति के कारण यह ज्ञात होता है कि सहन-शक्ति लक्ष्मण में नहीं थी। आवेश में वे अपने गुरुजनों को भी मार डालने के लिए तैयार रहते थे तथा उन्हें धमकियां भी देते थे। लक्ष्मण का स्वभाव वाल्मीकीय रामायण तथा 'मानस' में क्षत्रियत्व के प्रभाव से पूर्ण दिखाई पड़ता है। परशुराम-लक्ष्मण-सम्वाद इसके प्रमाण के लिए यथेष्ठ है। वाल्मीकीय रामायण में यह संवाद है कि विवाह कर के लौटते समय रास्ते में रामचन्द्र ने धनुष चढ़ाकर परशुराम को निरुत्साहित कर दिया था। जनकपुर में धनुषयज्ञ की कल्पना गोस्वामी ने ही की है। इस कल्पना द्वारा गोस्वामी जी का लक्ष्मण के मुख से बारबार परशुराम को धमकाना तथा उन पर व्यग बाणों की वर्षा कराना, यह लक्ष्मण के चरित्र पर सुन्दर प्रकाश डालता है।

कैकेयी के साथ लक्ष्मण का बर्ताव कल्पनातीत प्रतीत होता है। वन-गमन की बात सुनते ही लक्ष्मण का पारा बेहद चढ़ जाता है और वे

यह नहीं सोच सकते कि आखिर वन-गमन का रहस्य क्या है ? क्यों इस तरह का परिवर्तन यहाँ हो रहा है ? लक्ष्मण क्रोध में कैकेयी तथा दशरथ को मार डालने के लिए तैयार हो जाते हैं। कौशिल्या-भवन में रामचन्द्र को वन जाने के लिये दृढ़-प्रतिज्ञ देखकर वह कहते हैं—"आर्ये, मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता कि राज्यश्री को त्याग कर राघव वन को जायें। स्त्री के वचन को न मानना चाहिए। वृद्ध नृप तो स्त्री के वश में हैं और विषय वासना में फंसे हैं। काम के वश होकर वे क्या नहीं कह सकते ? मैं तो रामचन्द्र में किसी प्रकार का दोष नहीं देखता, जिसके कारण ये राज्य से बाहर निकाले जा रहे हैं। मैं सत्य कहता हूँ कि विषयी वृद्ध राजा को अवश्य मारूँगा, इस समय स्त्री के कारण उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। भैय्या रामचन्द्र ! आप घबराएं नहीं, मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि कामी राजा, कैकेयी, भरत तथा उनका साथ देने वाले युधाजित मामा को भी मैं मार डालूँगा" (वा० रा० अयोध्या० २१ सर्ग) इस तरह की बातें लक्ष्मण के मुख से निकलती हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब कि रामचन्द्र जी वन-गमन की बातों को शान्ति के साथ माता कौशिल्या को समझाते हैं फिर भी लक्ष्मण बार-बार बिगड़ते ही चले जाते हैं और मारने की धमकी भी देते हैं। इससे यही ज्ञात होता है कि लक्ष्मण में विचार-शक्ति का कुछ अभाव था। उन्होंने यह न सोचा कि आखिर रामचन्द्र वन क्यों जाने को तैयार हैं ? क्या वे यह समझते थे कि रामचन्द्र युद्ध से डरते हैं ? क्या उन्होंने रामचन्द्र की वीरता के उदाहरण नहीं देखे थे ? क्या उनके मन में यह अभिमान नहीं था कि मुझसे बढ़ कर दूसरा कोई वीर नहीं है ? फिर क्या कारण है कि लक्ष्मण बहके-बहके से मालूम पड़ते हैं ? इसी तरह चित्रकूट पर्वत पर जब भरत-शत्रुघ्न सेना सहित रामचन्द्र से भेंट करने तथा उन्हें लौटाने जाते हैं उस समय आती हुई सेना का सन्देश पाकर रामचन्द्र के सामने वह क्रोधित हो उठते हैं। (......लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत् ..विधपिते; वा० रामा०. अयो० ९६ सर्ग) प्रज्वलित अग्नि जिस प्रकार अपनी सीमित वस्तु को जला-डालना चाहती है उसी प्रकार क्रोध से सेना की ओर देखते हुए वे बोले —'प्रतिष्ठित राज्य की इच्छा रखता हुआ, अभिषेक-संस्कार से प्रसन्न भरत सेना लेकर हम लोगों को मार डालने के लिये यहां आया है।

में भरत को देख लूँगा, जिसके कारण हम लोगों को यह निर्वासन मिला है। जिस निमित्त को लेकर आप राज्य से बहिर्मुख हुए हैं वह शत्रु यहां आ गया है, इसलिए उसको मैं अवश्य मारूंगा। भरत के वध में कोई दोष नहीं है। अपकारी के त्याग में अधर्म नहीं होता। कैकेयी भी अपनी आंखों से अपने पुत्र का बध देख ले।' इस प्रकार लक्ष्मण की बात सुनकर मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र शान्ति-युक्त वचनों से समझाते हैं—'लक्ष्मण! बिना पूरी परीक्षा लिये तुम क्या कह रहे हो? अरे, अपने बन्धुवर्गों के संबंध में इस तरह की भावना क्यों रखते हो? राज्यपद के लिये यदि लालायित हो तो मैं भरत से कह कर तुम्हें राज्य दिला दूं। मुझे विश्वास है कि भरत अवश्य तुमको राज्य दे देंगे।' (वा० रामा० अयोध्या० ९६ सर्ग) यह सुन कर लक्ष्मण लज्जा के कारण नतमुख हो जाते हैं। 'मानस' में भी ऐसा ही वर्णन है। रामचन्द्र किरातों द्वारा भरत का आगमन सुन कर मन ही मन संकल्प-विकल्प में पड़ जाते हैं। उस समय उन्हें चिन्तित देखकर लक्ष्मण अपना स्वभाव प्रकट करते हुए उन्हें धीरज देते हैं—

'विषयी जीव पाइ प्रभुताई.........जानि राम बनवास एकाकी।' रामायण की इन चौपाइयों से ज्ञात होता है कि लक्ष्मण का मन कैकेयी की ओर से साफ़ नहीं है। वे समझते हैं कि पहले भरत जो प्रेम दिखलाते थे वह बनावटी था। इस समय राज पद पाकर वे यह चाहते हैं कि रामचन्द्र को मार डालें, जिससे निष्कण्टक राज्य करें। भरत के मन में कपट अवश्य है अन्यथा वे सेना लेकर यहां क्यों आते? राम को अकेला समझ कर ही भरत की नीति बदली है। पर भरत का मनोरथ सफल नहीं हो सकता। क्योंकि हमारी भुजाओं में भी बल है। धूलि भी ठुकराने से सिर पर चढ़ती है, फिर हम लोग तो रघुकुल में पैदा हुए हैं। 'अनुचित......धूरि समान...' आदि (मानस अयो०)।

इस प्रकार लक्ष्मण का स्वभाव क्रोधी प्रवृत्ति का ज्ञात होता है। लेकिन लक्ष्मण की भ्रातृ-भक्ति भी प्रशंसनीय है क्योंकि सारे सुखों पर लात मार कर ये बन गये थे। किंतु एक ओर जहाँ उनके भ्रातृ-प्रेम की प्रशंसा होती है वहाँ दूसरी ओर उनकी इस प्रवृत्ति के कारण दुर्गुण का भी सम्बन्ध आ जाता है। क्या एक वीर के मुख से अपने बंधुओं के प्रति बिना विचारे इस प्रकार

के वचन निकालना अच्छा है? यदि वे रामचन्द्र के साथ थे और आज्ञा पालन करने के लिये साथ साथ घूमते थे तो क्या इतने दिनों में वह रामचन्द्र के स्वभाव को परख नहीं सके थे? क्या उनमें यह समझने को इतनी बुद्धि नहीं थी कि रामचन्द्र तो सभी बातों को शान्ति पूर्वक सहन करते आ रहे हैं हम क्यों उनकी नीति के विरुद्ध कार्य कर? इन्हीं बातों से यह कहना पड़ता है कि वह विशेष क्रोधी थे। उनको समझाने के लिये तथा राह पर ले आने के लिये सिवाय रामचन्द्र के दूसरा कोई नहीं था।

'साकेत' के लक्ष्मण का आदर्श अद्भुत ही दिखाई पड़ता है। यद्यपि 'साकेत' के कवि ने लक्ष्मण का रूप सेवक की भाँति चित्रित किया है तथापि अन्य उपादानों के कारण सेवक के कार्य में विषमता पैदा हो गई है। जब हम पुराणों के आधार पर जैसा कि 'मेघनाद वध' के लिए लक्ष्मण का चरित्र चित्रित किया गया है, 'साकेत' के लक्ष्मण के चरित्र से तुलना करते हैं तो आकाश पाताल का अन्तर दिखाई पड़ता है। क्योंकि जब यह कहा जाता है कि जिसने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया हो, स्त्री का मुख न देखा हो, वही मेघनाद का वध कर सकता है तो 'साकेत' में उर्मिला लक्ष्मण का मिलन तथा परस्पर विरह की बातों को पढ़कर एक दूसरा ही चित्र संमुख आ जाता है। यदि लक्ष्मण विरही हैं और प्रिया की याद में तन्मय रहते हैं तो वे सफल सेवक कैसे कहला सकते हैं? 'साकेत' में लक्ष्मण की उक्ति तथा वीरता पर जब ध्यान जाता है है तो प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। क्योंकि एक सच्चे सेवक का जो धर्म है वह पूरा-पूरा लक्ष्मण में दिखाई पड़ता है। तात्पर्य यह है कि लक्ष्मण की विचार-धारा कैकेयी के बिलकुल प्रतिकूल थी और कैकेयी पर वे बिगड़ते दिखाई पड़ते हैं। इसलिये कवियों ने जैसा चाहा वैसा ही उनके स्वभाव का चित्रण किया है।

———

नागरी-लिपि में सुधार

[लेखक—श्री अवधनन्दन]

काशी के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में लिपि-सुधार-सम्बन्धी प्रस्ताव का विरोध करते हुए यह कहा गया था कि देवनागरी-लिपि सर्वांगपूर्ण है और इसमें किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। किसी ने यह भी कहा था कि यह लिपि पूरी-पूरी वैज्ञानिक है। इस लेख में हम इसी पर विचार करेंगे कि देवनागरी-लिपि कहाँ तक वैज्ञानिक है, और साथ ही हम उसको वैज्ञानिक और सरल बनाने की एक योजना भी पेश करेंगे।

सब के पहले यह समझ लेना चाहिये कि लिपि और वर्णमाला दो जुदा-जुदा चीज़ें हैं, और किसी वर्णमाला के साथ उसकी लिपि का संयोग बिलकुल आकस्मिक है। देवनागरी की वर्णमाला वैज्ञानिक है, इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता। उर्दू और तमिल को छोड़कर हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओं की वर्णमाला एक ही है; लेकिन हर एक की लिपि अलग-अलग है। इस लिपि-वैषम्य ने हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओं को अलग-अलग कमरों में बन्द कर दिया है। इसका नतीजा यह हुआ कि कोई भी भाषा अपने छोटे दायरे से निकलकर बाहर नहीं आ सकी। न लिपि की चहारदीवारी टूटती है और न भाषा को फैलने का मौक़ा ही मिलता है। इस लिपि-भेद ने हिन्दी और उर्दू के बीच तो ऐसी खाई खोद रखी है कि दोनों भाषाएँ एक-दूसरे से दूर भागती जा रही हैं। अगर इन दोनों की एक लिपि होती, तो हिन्दी और उर्दू का झगड़ा शायद ही पैदा होता। मुझे तो यक़ीन है कि आनेवाली सन्तान कभी भी लिपियों की इस विषमता को बर्दाश्त नहीं करेगी। अगर हमने अभी से उनका रास्ता साफ़ न किया, तो वह देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों को ठुकरा कर अपना अलग रास्ता निकाल लेगी।

अब सवाल यह है कि क्या देवनागरी-लिपि वैज्ञानिक है और इसमें राष्ट्र-लिपि बनने की सभी योग्यताएँ हैं? इस लिपि की कमियों को जितना वे लोग सम.. सकते हैं, जिनकी यह लिपि नहीं है और जिनको राष्ट्र-भाषा के नाते यह लिपि सीखना पड़ती है, उतना वे लोग नहीं समझ सकते, जो बचपन से इस लिपि को सीखते हैं। इसीलिए हिन्दी-भाषा भाषी देवनागरी लिपि की

त्रुटियाँ समझने में असमर्थ होते हैं। सिर्फ़ यह मान लेने से कि हमारी लिपि सर्वांगपूर्ण और वैज्ञानिक है, उसमें ये गुण नहीं आ सकते। इसके लिए उसकी त्रुटियों को दूर कर इस योग्य बनाना होगा कि हम उसे वैज्ञानिक और सर्वांगपूर्ण कह सकें। यों यह कहा जा सकता है कि दुनिया की कोई भी लिपि वैज्ञानिक नहीं है, क्योंकि लिपियों का विकास स्वाभाविक रूप से हुआ है, वैज्ञानिक रूप से नहीं। पर यह युग विज्ञान का है। विज्ञान के साधनों को भुला कर हमारा जीवन कठिन हो जायगा। उसके बिना न हमारी भाषा तरक्की कर सकती है और न हमारा जीवन ही सुखमय हो सकता है। टाइप-राइटर, प्रेस, तार, रेडियो आदि चीज़ों के बिना काम चलना मुश्किल है। ऐसी हालत में अगर हम अपनी लिपि में थोड़ी वैज्ञानिकता लाने की कोशिश करें, तो इसमें अनुचित ही क्या है? यदि हम उसे राष्ट्र-लिपि के सिंहासन पर भी बिठाना चाहते हैं, तब तो यह बहुत ज़रूरी है कि उसको उस पद के योग्य बनाया जाय। अगर हम किसी अन्य प्रान्तवाले से कहें कि भाई, तुम देव-नागरी को राष्ट्र-लिपि स्वीकार करो, तो वह ज़रूर पूछेगा कि देवनागरी-लिपि में क्या सुविधा है? क्या उसमें हम अपनी मातृभाषा के. शब्दों को आसानी से लिख और पढ़ सकते हैं? क्या हम उसको आसानी से सीख सकते हैं? क्या उसमें छपाई, टाइप व तार भेजने की सुविधाएँ हैं? देवनागरी के हिमायती इस प्रश्न का क्या उत्तर देंगे? 'दुइ न होइ इक संग भुआलू, हँसब ठठाइ फुलाइव गालू' के अनुसार यह नहीं हो सकता कि हम देवनागरी में कोई परिवर्त्तन भी न करना चाहें, और वह राष्ट्र-लिपि भी बन जाय। एक का मोह छोड़कर हमें दूसरा काम करना पड़ेगा।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय, तो इस लिपि में अनेक त्रुटियाँ हैं; पर हम नीचे उन्हीं कतिपय त्रुटियों का उल्लेख करेंगे, जो मोटे तौर पर हम देख सके हैं :—

(१) देवनागरी में महाप्राण अक्षरों के रूप अल्पप्राण अक्षरों से बिल्कुल भिन्न हैं, जिससे अल्पप्राण अक्षरों को सीखने से महाप्राण अक्षरों को सीखने में कोई सहायता नहीं मिलती। उदाहरणार्थ, 'ख' 'क' का महाप्राण है; लेकिन 'क' और 'ख' के रूपों में कितना अन्तर है? 'ख' का रूप 'र' और 'व' के संयोग से बना है, जिससे उसको पढ़ने में

बड़ी तकलीफ़ होती है, और अक्सर 'खाना को रवना' भी पढ़ लिया जाता है। घ,थ,ध, भ आदि अन्य महाप्राण अक्षर भी अपने जोड़े के अल्पप्राण अक्षरों से भिन्न हैं।

(२) 'ष' की सूरत 'श' की अपेक्षा 'प' से ज़्यादा मिलती है।

(३) 'ङ' 'क' का पंचमाक्षर न होकर 'ट' का पंचमाक्षर होता, तो ज़्यादा ठीक होता।

(४) देवनागरी के सभी अक्षरों के अन्त में पाई न होने से संयुक्ताक्षर लिखना लोहे के चने चबाने से कम कठिन नहीं है।

(५) 'ए' और 'ओ' का ह्रस्व रूप न होने से अँग्रेज़ी, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं के शब्दों को ठीक-ठीक लिखना मुश्किल हो जाता है।

(६) 'इ' की मात्रा अक्षर के पहले लिखे जाने से संयुक्ताक्षरों को पढ़ने में बहुत कठिनाई होती है। उदाहरणार्थ, 'अस्ति' को बहुत से लोग 'असित' और 'मुश्किल' को 'मुशिकल' पढ़ते और लिखते हैं।

(७) 'ई' के सिरवाले चिह्न और रेफ़ में कोई फ़र्क़ न होने से नए-नए भाषा सीखनेवाले 'गई' को 'गरइ' और 'ताई' 'तरइ' पढ़ते हैं।

(८) स्वरों का चिह्न अक्षरों के ऊपर-नीचे लिखे जाने से टाइप और कम्पोज़ करने में जो तकलीफ़ें होती हैं, वे प्रायः सभी को मालूम हैं।

(९) अक्षरों की संख्या बहुत ज़्यादा होने से इसका सीखना कठिन हो जाता है, और यह कठिनाई सब से ज़्यादा वे लोग महसूस करते हैं, जो बड़ी उम्र में देवनागरी सीखते हैं।

हम देवनागरी-लिपि में किसी घोर परिवर्तन के पक्षपाती नहीं हैं; लेकिन अगर उसमें थोड़ा-बहुत सुधार कर देने में ऊपर कही गई त्रुटियाँ दूर हो जायँ, तो हर हिन्दी-भाषा-भाषी और देवनागरी प्रेमी को इस त्याग के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

ऊपर कही गई तमाम बातों का ख़याल रख कर हमने देवनागरी में सुधार की निम्न-लिखित योजना तैयार की है, और उसके अनुसार अक्षरों के रूप और मात्राओं में सुधार पेश किये हैं।

अक्षरों के रूप में परिवर्त्तन करने में नीचे लिखी बातों का खयाल रखा जाना आवश्यक है :—

(१) महाप्राण अक्षर निकाल दिये जायँ और उनकी रचना उनके अल्प-प्राण रूपों के कोई सामान्य चिह्न लगा कर की जाय।

(२) सभी अक्षर पाई अन्त वाले हों, ताकि संयुक्ताक्षर बनाने में सुविधा हो।

(३) जो अक्षर गोल हैं, उनकी सूरत में पहले नियम के अनुसार परिवर्तन कर दिया जाय।

(४) ङ, ञ और ण अक्षर निकाल दिये जायँ और क, च और ट अक्षरों पर ही कोई सामान्य चिह्न लगा कर उनके रूप बनाये जायँ।

(५) इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ आदि रूप निकाल दिये जायँ और 'अ' में इकारादि लगा कर सब स्वर बनाये जायँ।

(६) स्वरों के चिह्न ऊपर, नीचे और आगे न लिख कर पीछे बगल में लिखे जायँ।

(७) मात्राओं में ऐसा परिवर्त्तन किया जाय कि उनका लिखना आसान हो जाय और जिससे एक ही बार बिना कलम उठाये लिखे जा सकें।

(८) जिन उच्चारणों के लिए हिन्दी में अक्षर नहीं हैं, उनके लिये रूप बनाये जायँ।

(विशालभारत)

———

हिन्दी-संसार

[लेखक—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, संग्रह-मन्त्री]

सेक्रेटेरिएट का हिन्दी साहित्य-संघ—लखनऊ के सरकारी सेक्रेटेरिएट विभाग के कुछ हिन्दी प्रेमियों ने एक हिन्दी साहित्य संघ बनाया था उसके संबंध में गवर्नमेंट की ओर से निम्नलिखित विज्ञप्ति निकली है—

"हाल में स्थानीय सेक्रेटेरिएट में हिन्दी साहित्य संघ और उसके कार्यों के विषय में कुछ आन्दोलन हुआ है। यह सूचना के लिये प्रकाशित किया जाता है कि अब सेक्रेटेरिएट से संबंधित कोई ऐसी संस्था नहीं है और न सेक्रेटेरिएट में उसकी कोई बैठकें होती हैं।"

हमें यह भी समाचार पढ़ने को मिला कि गत १२ अगस्त को हिन्दी साहित्य संघ का तुलसी जयन्ती सम्बन्धी समारोह संघ के सभापति श्री बालकृष्ण राव के घर पर हुआ। सरकारी विज्ञप्ति से यह जान पड़ता है कि अब सरकारी सेक्रेटेरिएट की इमारत में हिन्दी साहित्य संघ की बैठकें नहीं हुआ करेंगी और उसके शब्दों से यह भी जान पड़ता है कि सेक्रेटेरिएट के कर्मचारियों को आज्ञा हो गई है कि वे सेक्रेटेरिएट हिन्दी साहित्य संघ के नाम से काम न करें। यह स्पष्ट है कि सेक्रेटेरिएट के कर्मचारी सरकारी आज्ञा का उल्लंघन न कर सकेंगे किन्तु सेक्रेटेरिएट का लगाव छोड़ कर हिन्दी साहित्य संघ चलाने में तो कोई मनाही नहीं हो सकती। हमें भरोसा है कि सेक्रेटेरिएट के उत्साही हिन्दी प्रेमी, जिन्होंने यह संघ बनाया है, सेक्रेटेरिएट का नाम हटा कर भी संघ के काम को उत्साह के साथ जारी रक्खेंगे।

रेडियो के संबंध में उन्होंने जो अपना निश्चय नैनीताल में किया था वह बहुत से हिन्दी विरोधियों की आंखो में खटका है। संघ का निश्चय बिल्कुल ही उचित था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से उस विषय के ऊपर पहले निश्चय हो चुका है। रेडियो की भाषा में बहुत सुधार की आवश्यकता है। किन्तु जो लोग अरबी और फारसी शब्दों के बाहुल्य को ही हिन्दुस्तानी समझते हैं, उन्हें न सम्मेलन का और न हिन्दी साहित्य संघ का प्रस्ताव

अच्छा लग सकता है। किन्तु हमारा कर्तव्य तो हमारे साथ है। विरोधियों से हमारा काम रुकने वाला नहीं।

विरोध होते हुये भी पिछले ३० वर्षों में हिन्दी ने देश भर में अद्भुत उन्नति की है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रयत्न से उन प्रदेशों में भी, जहां कि साधारण भाषा हिन्दी नहीं है, इस समय प्रत्येक वर्ष हजारों विद्यार्थी सम्मेलन अथवा उसकी सम्बद्ध संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में बैठते हैं। देश भर हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर चुका है। संयुक्त प्रांत की तो वह विशेष रूप से भाषा है। हमारे प्रांत में नगर नगर में हिन्दी सभाओं की आवश्यकता है। जहां जहां भी हिन्दी प्रेमी हों उनसे हमारा अनुरोध है कि हिन्दी सभाएं बनावें और हिन्दी के प्रचार का काम उठावें। अदालतों और सरकारी दफ़्तरों में विशेष रीति से हिन्दी के प्रचार की आवश्यकता है। यह काम स्थानीय सभाएं ही लग कर और परिश्रम से कर सकती हैं। हमारे सूबे में जनता के अधिकारों की रक्षा नागरी लिपि और हिन्दी द्वारा ही हो सकती है क्योंकि जनता में मुख्य कर नागरी लिपि और हिन्दी भाषा की ही चलन है।

हिन्दी साहित्य संघ के कार्यकर्ताओं को हम बधाई देते हैं और उनको सलाह देते हैं कि सेक्रेटेरिएट के बंधन से मुक्त हो वे अपने को अधिक शक्तिशाली बनावें और लखनऊ ऐसे बड़े केन्द्र में, जहां हिन्दी के काम की बहुत दिशाओं में आवश्यकता है, हिन्दी का गहरा प्रचार करें।

कर्नाटक में हिन्दी प्रचार—अभी मैसूर रियासत का तृतीय हिन्दी प्रचार सम्मेलन हुआ था। उसमें भाषण करते हुए सभापति एम० बी० जम्बुनाथन ने कहा कि हमारे बीच में हिन्दी के जो लेखक हैं उनका संगठन करने की हमें व्यवस्था करनी चाहिए और उनकी जो संस्थाएँ हैं उनपर विचार करके हल करने की कोशिश करना चाहिए। स्वतन्त्ररूप से मौलिक काव्य हम हिन्दी में बहुत कम लिखते हैं। किन्तु हिन्दी की पढ़ाई और प्रचार सम्बन्धी कुछ नये साहित्य का हम अवश्य निर्माण करते हैं (जैसे हिन्दी शिक्षण विधान, तुलनात्मक व्याकरण आदि) जिससे हिन्दी भाषा-भाषी बहुधा अनभिज्ञ होते हैं। इसे नया और मौलिक साहित्य ही समझना चाहिए। अनुवाद साहित्य में

हिन्दी ग्रन्थों का अनुवाद कन्नड़ भाषा में और कन्नड़ भाषा के ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी भाषा में हम करते हैं। इस तरह के अनुवादों से कन्नड़ साहित्य सर्वाङ्गपूर्ण और सुसम्पन्न होता है किन्तु अनुवाद योग्य ग्रन्थों का चुनाव सन्तोष जनक होना चाहिए। हमारे यहाँ के लोग हिन्दी की प्रारम्भिक परीक्षा देकर उच्च परीक्षा की तैयारी करने लगते हैं और साहित्य-अलङ्कार आदि हिन्दी ग्रन्थों के द्वारा सीखने लगते हैं। यही ज्ञान यदि मातृ-भाषा द्वारा प्राप्त करें तो अधिक सुविधा हो। इसलिये मातृभाषा का ज्ञान अनिवार्य समसमझना चाहिए। राष्ट्रभाषा के लिये हम उस भाषा को पसन्द करेंगे जिसे भारत के सभी प्रान्त के लोग, सभी भाषा बोलने वाले समझें। उर्दू की परीक्षा लेने, एक नयी वर्णसंकर भाषा बनाने, हिन्दी लिपि में परिवर्तन करने जैसे अनावश्यक और विवादास्पद झमेलों में पड़ने की हमें आवश्यकता नहीं। इसके बदले मातृभाषा के साहित्य का अज्ञान दूर करने का प्रयत्न करना श्रेयस्कर है। कन्नड़ साहित्य की शोभा बढ़ाने वाले खासकर प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद होना आवश्यक है। आप लोग हिन्दी प्रचार के इस पहलू पर अधिक ध्यान दें और अपनी भाषा और साहित्य की खूबी और उत्कृष्टता का परिचय हिन्दी जगत को दें। मद्रास सरकार ने हिन्दुस्तानी पुस्तकें छपायी हैं, उनमें दीवाचा, मश्क, हरफ, लफ़ज आदि ऐसे शब्द हैं जिन्हें मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का सार्टिफिकट रहने पर भी हम नहीं समझते। हमें ऐसे शब्द चुनने चाहिएं जो दूसरी भाषा वालों को भी समझने में सहज हों।

राष्ट्रभाषा का स्वरूप—राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में 'देशदूत' में लिखते हुए हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीयुक्त आर० एस० जैन लिखते हैं कि दूसरी भाषा को हम समझ भले ही लें; किन्तु उससे भाषा का—साहित्य का और समाज का कुछ भी भला नहीं होगा। कोई आदमी हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओं को सीखने का ख्याल नहीं कर सकता। उसके लिये कोई एक भाषा ऐसी जरूरी होनी चाहिए जो सभी जगहों में बोली और समझी जा सके। इस पर विचार करने से इसी नतीजे पर हम पहुँच रहे हैं कि दिल्ली की तरफ जो हिन्दी बोली जाती है वही ठीक है, क्योंकि उसका प्रचार अधिक है और उसमें शब्द भी हिन्दी के साथ ही अरबी-फारसी के भी हैं। जैसे सूर्यप्रकाश

श्वेत दिखता है किन्तु उसमें विभिन्न सात रंगों का समावेश है। उसी तरह हमारी भाषा देखने में एक दिखे तो भी उसमें सभी प्रान्तों की भाषाओं के अंश मौजूद रहें। हिन्दी और उर्दू के व्याकरण एक हैं। हिन्दी और उर्दू का गठन एक है, और दोनों की उत्पत्ति हिन्दुस्थान में ही हुई है। साथ ही साथ दोनों के मूल में संस्कृत नहीं तो प्राकृत जरूर है। बंगला, गुजराती, मराठी, आसामी, सिन्धी, कन्नड़, तामिल और तेलगू में संस्कृत के शब्द अधिक आते हैं। इसलिये उनकी और हिन्दी की शब्दावली बहुत अंशों में एक है। इसी तरह पाली, मलयालम आदि भाषाओं पर भी संस्कृत का प्रभाव पड़ा है। राष्ट्र भाषा को अन्य भाषा-भाषियों के लिये सुगम बनाने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि उनकी शब्दावली ऐसी बने कि सारे देश के लोगों के लिये उसे सीखने में सुविधा हो जाय। साहित्य अनन्त-सागर के समान अथाह है। उसमें उन्नति उसी समय हो सकती है जब हम देशी और विदेशी दोनों भाषाओं का पूर्ण ज्ञान रखें। एक ही जगह में और एक ही भाषा में समस्त प्रान्तों का साहित्य संग्रहीत होने से प्रत्येक साहित्य को स्फूर्ति और वेग मिले बिना नहीं रहेगा। हिन्दुस्तानी का प्रचार करना राष्ट्रभाषा का विकृत स्वरूप है। हम इस "हिन्दुस्तानी" को राष्ट्रभाषा नहीं मान सकते, क्योंकि इस हिन्दुस्तानी की आड़ में अरबी-फारसी का प्रचार निहित है। जिन शब्दों को हम हजारों वर्षों से इस्तेमाल में ला रहे हैं उन्हें हटा कर दूसरे अप्रचलित शब्दों को लाया जा रहा है। अतः इस प्रकार की "हिन्दुस्तानी" का हम जोरदार शब्दों में विरोध करते हैं। हमारी राष्ट्रभाषा एक दो प्रान्तों की नहीं करोड़ों की भाषा होगी और इसी राष्ट्रभाषा में हमारे भारतीय साहित्य का उत्थान होगा।

भारत की भाषाओं में हिन्दुस्तानी का स्थान—'विश्वमित्र' लिखता है कि भारत में २२५ भाषाएं और १५० बोलियाँ प्रचलित हैं। भाषा सम्बन्धी छानबीनों का परिणाम देखते हुए यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषाभाषियों की संख्या ही सबसे अधिक है और समस्त बड़े-बड़े शहरों में परस्पर विचारों के आदानप्रदान का साधन भी हिन्दी ही है। इससे यह स्पष्ट है कि हिन्दी ही अन्तर-प्रान्तीय भाषा का स्थान ग्रहण कर

सकती है। जो भारत की कोई भी प्रान्तीय भाषा नहीं जानते वे भी हिन्दी को ही अपने विचार-विनिमय का माध्यम बनाते हैं। उदाहरणार्थ यूरोपियन किसी भी प्रान्त में हों; किन्तु हिन्दुस्तानियों से हिन्दुस्तानी द्वारा ही बात करेंगे। बंगाल में प्रारम्भ से ही अँग्रेजों ने सर्वत्र हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिये हिन्दुस्तानी में पुस्तकें प्रकाशित करने में बड़ा परिश्रम किया। पिछली मर्दुमशुमारी के समय बंगाल में १८ लाख ९१ हजार ३३७ और कलकत्ते में ४ लाख २६ हजार १२३ मनुष्य हिन्दुस्तानी बोलनेवाले थे।

राष्ट्रभाषा सम्बन्धी प्रस्ताव—राष्ट्र भाषा के सम्बन्ध में कुछ लोग प्रस्ताव करते हैं कि हिन्दी भाषा की लिपि तो नागरी ही रहे; पर उसमें शब्द उर्दू-फारसी के अधिक रहें। जिससे उसे हिन्दू तो समझें ही, अधिकांश मुसलमान भी समझ सकें। इस पर श्री प्रेमनारायण जी टण्डन "साधना" में कहते हैं कि इसके समर्थकों ने केवल संयुक्त प्रान्त की या बहुत थोड़ी सी पंजाब की परिस्थिति समझ कर इसे सामने रखा है। यहां के मुसलमान सम्भव है थोड़ा बहुत लाभ उठा लें पर बंगाल-महाराष्ट्र या गुजरात अथवा सुदूर दक्षिण के मुसलमान इससे कोई लाभ न उठा सकेंगे। कारण यह है कि अपने स्थानों की भाषा की अपेक्षा अरबी-फारसी प्रधान भाषा उनके लिये अधिक कठिन होगी। दूसरा प्रस्ताव है कि हिन्दी को संस्कृत प्रधान बना दिया जाय। क्योंकि ऐसी भाषा समझने वाले भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में मौजूद हैं। इसके सिवाय संस्कृत का प्रभाव किसी न किसी रूप में मराठी-गुजराती-बंगाली आदि प्रायः सभी भाषाओं पर थोड़ा बहुत पड़ा है। अतएव स्वभावतः दूसरे प्रान्तों के लोग उसे आसानी से समझ सकेंगे और यों राष्ट्र-भाषा की समस्या हल हो जायगी। तीसरे प्रस्तावक इन दोनों के बीच के हैं। वे चाहते हैं कि इन भाषाओं को उस तरह अपनाना चाहिये जिस प्रकार तुलसीदास ने इन्हें अपनाया था। जो भाषा मानस का अनुकरण कर बनायी जायगी वही भाषा राष्ट्रभाषा होने के उपयुक्त होगी। सब से पहले राष्ट्रभाषा का प्रश्न ४० बर्ष पहले एक महाराष्ट्र विष्णु शास्त्री चिपलूनकर जी ने उठाया था। अच्छा हो कि हम इस पर कुछ न कहें और हिन्दी भाषा को किस रूप में राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए इसका निर्णय उन्हीं

प्रान्तों के निवासियों पर छोड़ देना चाहिए जहां की मातृभाषा हिन्दी नहीं है। दैनिक विचारों को प्रकट करने के लिये जिन शब्दों की आवश्यकता होती है उनमें से दो हजार या कम अधिक शब्द चुनकर सब प्रान्तों में भेज दिये जाँय और वहां की जनता से उनके पर्यायवाची शब्द माँग लिये जायँ— इससे हमें ज्ञात हो जायगा कि भाषा का कौनसा रूप किस अंश तक जनता को पसन्द है। इस बीच में हम हिन्दी भाषा भाषियों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि अपने साहित्य के रिक्त अंगों की पूर्ति करके अपनी अपनी भाषा की व्यञ्जना शक्ति बढ़ाते रहें, जिससे अन्य भाषा भाषियों को हिन्दी में "एक कमी" दिखाने का अवसर न मिले।

रोमन का प्रेम—विहारप्रान्तीय निरक्षरता-निवारण-समिति ने सन्थाल परगने में साक्षरता की शिक्षा देने के लिये निश्चय किया है कि संथालों के लिये रोमन लिपि में पुस्तकें प्रकाशित की जायँ। प्रसन्नता की बात है कि अभी हाल में सन्थाल परगना कांग्रेस की बैठक हुई थी, उसने इस नीति की कड़े शब्दों में निन्दा की है। यदि सरकार न माने तो कमिटी ने सभी वैध उपायों से इस योजना के विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलन करने का निश्चय किया है। कमिटी ने सन्थाल परगने के शिक्षकों से अनुरोध किया है कि वे रोमन लिपि द्वारा शिक्षा देने का विरोध करें और यदि उनकी बात न मानी जाय तो वे लोग सहयोग न दें। निरक्षता निवारण समिति का रोमन लिपि प्रेम बड़ा बेढब मालूम होता है। जो लिपि विहार प्रान्त भर में प्रचलित है उस नागरी लिपि को छोड़ कर सन्थालों के एक छोटे समुदाय में और सन्थाल परगने के जिले में रोमन का आग्रह प्रकाशित करना अजीव राष्ट्रीयता विरुद्ध कार्यवाही है। आशा है विहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन इसके लिये पूर्ण उद्योग करेगा।

चतुर्वेदी संग्रह—स्वर्गीय पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी के लेख मनोरंजक और हास्यरसोत्पादक हुआ करते थे। उनका संग्रह सब दिन पाठकों का आकर्षण करने वाला होगा। प्रसन्नता की बात है कि उनके पुत्र उनके लिखे लेख, कविता तथा संस्मरणों का संग्रह प्रकाशित करना चाहते हैं वे चाहते हैं कि यह संग्रह उनके वार्षिक श्राद्ध के समय प्रकाशित हो जाय।

संग्रह में उक्त चतुर्वेदी जी के सम्बन्ध में हिन्दी लेखकों की ओर से जो रचना भेजी जायगी उसे भी प्रकाशित करने का विचार है। जिनके पास चतुर्वेदी जी के लेखों का संग्रह हो वे भी कृपा कर उनके ज्येष्ठ पुत्र पं० रमावल्लम चतुर्वेदी पो० मलयपुर जिला मुंगेर के पास भेज दें।

रेडियो की भाषा—दिल्ली के रेडियो में हिन्दुस्तानी के नाम से जिस अजीब भाषा का उपयोग किया जाता है वह हिन्दी तो है ही नहीं, किंतु वह सरल उर्दू भी है या नहीं इसमें भी सन्देह है। साधारण जनता को सुनाने और समझाने के लिये उसी भाषा का प्रयोग होना चाहिये जिसे सब लोग समझ सकें। यही कारण है कि आजकल रेडियो की इस भाषा का सर्वत्र विरोध हो रहा है। यू० पी० सरकार के सेक्रेटरियट के कर्मचारियों की संस्था की ओर से विरोध हो चुका है और कितनी ही सार्वजनिक सभाओं में भी इसका प्रतिवाद किया गया है। अभी बदायूँ के "हिन्दी-प्रचार-मण्डल ने" रेडियो की हिन्दी विरोधिनी नीति की घोर निन्दा की है। मण्डल ने कहा है कि यह मण्डल फारसी शब्दों से भरी हुई हिन्दुस्तानी बोली को घृणा की दृष्टि से देखता है तथा इस सम्बन्ध में रेडियो विभाग की नीति को हिन्दी भाषी जनता के लिये अपमान जनक समझता है। यह भी कहा है कि जब हिन्दी और उर्दू का कार्यक्रम अलग ब्राडकास्ट किया जाता है तब भी हिन्दी लेखकों को बहुत कम अवसर दिया जाता है। जिन लेखकों की रचनाएँ रेडियो द्वारा प्रचारित की जाती हैं उनकी भाषा विकृत और अस्वाभाविक बना दी जाती है जो सर्वथा पक्षपात युक्त और अन्याय पूर्ण है। हमें आशा है कि समस्त हिन्दी सम्बन्धी सभाओं और प्रभावशाली पुरुषों द्वारा इसी तरह विरोध होते रहने से इस अन्याय का प्रतीकार अवश्य हो सकेगा।

गढ़वाल साहित्य-परिषद्—गढ़वाल प्रान्त में साहित्य परिषद नाम की एक संस्था स्थापित है। इसका पाँचवाँ अधिवेशन अभी पौड़ी में मनाया गया था। स्वागताध्यक्ष श्री रवींद्रचन्द्र गैरोला बी० ए० ने संस्था के सम्बन्ध में ईश्वर से प्रार्थना की कि यह परिषद गढ़वाल की और समस्त भारतीय साहित्य की सेवा करता हुआ अन्य साहित्य परिषद और

सम्मेलन में एक जगमगाती हुई संस्था बने । परिषद का उद्घाटन प्रयाग विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर श्रीयुक्त रुद्रा के द्वारा हुआ था। परिषद के सभापति प्रोफेसर जुबाल बनाये गये थे ।

अध्यापक जी का स्वर्गवास—आगरे के पण्डित रामरत्न जी अध्यापक का स्वर्गवास हो गया । यह संवाद हिन्दी संसार में बहुत ही शोक के साथ सुना जायगा । असहयोग आन्दोलन के आरम्भ में आपने अध्यापकी छोड़ी और कांग्रेस कार्य से जेल भी गये थे । आप सच्चे लगन के कार्यकर्ता थे । अपने अध्यवसाय और परिश्रम से नौकरी छोड़ने के पश्चात् पुस्तक प्रणयन और प्रकाशन कर आपने अपनी आर्थिक स्थिति सँभाल ही नहीं रखी बल्कि उसे बहुत बढ़ा लिया । साहित्य की सेवा करना तो आपके जीवन का मूल मन्त्र था । आगरा नागरी प्रचारिणी सभा तथा शिमला नागरी प्रचारिणी सभा के आप संस्थापक थे । इनकी उन्नति और प्रतिष्ठा-वृद्धि के लिये आपने बड़ा प्रयत्न और परिश्रम किया था । हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के आप परीक्षा मन्त्री भी रह चुके हैं । अपने मन्त्रित्व काल में आपने परीक्षा समिति की अच्छी उन्नति की थी और उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिये काफी दौड़ा भी किया था । इधर १० वर्षों से आप क्षयरोग और भगन्दर के शिकार हो गये थे । जब अधिक असमर्थ होते तब पहाड़ों में चले जाते थे; किन्तु वहाँ से कुछ शक्ति संचय कर फिर काम में जुट जाया करते थे । इसीसे आप स्थायी स्वाथ्य लाभ न कर पाये । आपके स्वर्गवास से हिन्दी संसार की बहुत हानि हुई है । हम आपके दुःख सन्तप्त परिवार के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं । आपके शोक में कई स्थानों में सभाएं हुई हैं । प्रयाग में भी माननीय बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन के सभापतित्व में सम्मेलन भवन में एक सभा हुई है ।

जीवन और साहित्य—सितंबर के 'विशाल भारत' में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी का एक अत्यन्त सुंदर और विचारपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है । इसमें संदेह नहीं है कि हिन्दी के क्षेत्र में धांधली मची हुई है । साहित्य की आड़ में कितने ही मौज कर रहे हैं और वास्तविक साहित्य-सेवियों की कोई पूछ नहीं है । साहित्य का क्या उचित मूल्य है, इसको आँकने

में चतुर्वेदी जी खूब सफल हुए हैं। हिन्दी संसार और साहित्यिकों के लिये आपने कुछ क्रियात्मक योजना का सुझाव सुझाया है। लेख के कुछ उपयोगी अंश इस प्रकार हैं—

सरकारी शराबबन्दी तथा मादक द्रव्य-निवारिणी सभाओं के तमाम व्याख्यानों के बावजूद भी हिन्दी के ९५ फ़ी सदी प्रकाशक भाँग, गाँजा या अफ़ीम का अमल करते हैं या चरस की दम लगाते हैं, यह मेरा अटल विश्वास है। आप उनके यहाँ से प्रकाशित ग्रन्थों की सूची देख जाइये, तो आपको फौरन पता लग जायगा कि इन प्रकाशकों को समय की गति का कुछ भी ख्याल नहीं है, जीवन के प्रश्नों से उनका कुछ भी परिचय नहीं है और उनमें से अधिकांश अपने को सर्वज्ञ समझे बैठे हैं। विलायत के अच्छे-अच्छे प्रकाशक अपने यहाँ भिन्न-भिन्न विषयों के विशेषज्ञ रखते हैं, जिनकी सम्मति से वे ग्रन्थ लेते और छपाते हैं; पर हमारे यहाँ के प्रकाशक मुफ्त में भी विशेषज्ञों की सम्मति नहीं लेना चाहते! हाँ, पुस्तकों को छपाने के बाद बिना जिल्द की एक प्रति भेज कर उस पर विस्तृत आलोचना चाहने वाले प्रकाशकों की हमारे यहाँ कमी नहीं! अपनी बारह आने की किताब पर (जो उन्हें बारह पैसे में पड़ी होगी) आपके बारह रुपये का समय माँगने के अव्यापार में वे अवश्य कुशल हैं! यदि प्रकाशकों में कुछ भी बुद्धि होती, तो वे स्वयं आपस में मिलकर इस बात की जाँच के लिए एक कमेटी मुकर्रर करते कि साधारण जनता अथवा विशेष वर्गों के लिए किस-किस प्रकार के साहित्य की जरूरत है।

श्रोता लोग पूछ सकते हैं, "आप कवियों से चूहे पकड़वाना चाहते हैं, 'साहित्य-कलरव' बन्द करा के मोरी के मच्छरों पर धावा बोलना चाहते हैं, क़ामशास्त्री लेखकों को जेलखाने भेजना चाहते हैं फिर आखिर आप चाहते क्या हैं? क्या कला और सौन्दर्य के प्रति आपके हृदय में कुछ भी प्रेम नहीं है?" ऐसे प्रश्न-कर्ताओं की सेवा में मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि मैं कला तथा सौन्दर्य का उतना ही प्रेमी हूँ, जितना कि एक मामूली लेखक को होना चाहिए, पर हर चीज का एक वक्त होता है, और युगधर्म के अनुसार कला और सौन्दर्य का उपयोग विशेष उद्देश्यों को लेकर होना चाहिए। यदि आपके नगर के शौचालय अत्यन्त गन्दे हैं और उनसे

हर साल हैजा फैलता है, तो आपके यहाँ की साहित्य-समिति पर जितना रुपया व्यय होता है, उसमें से कुछ अंश इस गन्दगी को दूर करने के लिए खर्च होना चाहिए। आखिर वह हमारे हृदय तथा मस्तिष्क की भीतरी अस्वच्छता है, जो प्रकट रूप में हमारी गन्दी गलियों तथा सड़कों के रूप में सामने आती है। सुप्रसिद्ध नीग्रो लीडर बुकर टी० वाशिंगटन ने कहा था—"किसी जाति की सभ्यता या असभ्यता का अन्दाज उसके पाखानों की सफाई या गन्दगी को देख कर लगाया जा सकता है।"

कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसी युग-धर्म के तकाजे को अपनी पुस्तिका (नगर और ग्राम) में बड़ी खूबी के साथ बतलाया है। उन्होंने लिखा है :—

"हमारा उद्देश्य यह है कि ग्राम-जीवन की नदी की तह में, जो झाड़-झंखाड़ों और कूड़ा-करकटों से भर गई है और जिसमें प्रवाह नहीं रहा, आनन्द की नहर की बाढ़ ला दें। और इस कार्य के लिए हमें विद्वानों, कवियों, गायकों तथा कलाकारों के सम्मिलित प्रयत्न की आवश्यकता है। ये सब मिल कर अपनी-अपनी भेंट (शुष्क ग्राम-जीवन को सरस बनाने के लिए) लायँगे। यदि ये लोग ऐसा नहीं करते, तो समझना चाहिए कि ये जोंक की तरह हैं, जो ग्रामवासियों का जीवन-रस चूस रहे हैं और उसके बदले में उन्हें कुछ भी नहीं दे रहे। इस प्रकार का शोषण जीवन-रूपी भूमि की उर्वरा-शक्ति को नष्ट कर देता है। इस भूमि को बराबर जीवन-रस मिलता ही रहना चाहिए, और उसका तरीका आदान-प्रदान ही है; जो उससे कुछ ले, वह उसे किसी रूप में वापस दे और इस प्रकार दान-प्रतिदान का चक्र बराबर चलता रहे।"

कवीन्द्र ने इन थोड़े-से शब्दों में लेखकों, कवियों, गायकों और कलाकारों के लिए एक महान सन्देश दे दिया है। कवीन्द्र कोरमकोर कल्पनाशील व्यक्ति ही नहीं हैं। उन्होंने जीवन को पूर्ण रूप में देखा है, और मानव-समाज के सर्वांगीन विकास के लिए उनका आदर्श, जिसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए उन्होंने शान्तिनिकेतन, विश्व-भारती और श्रीनिकेतन की स्थापना की है, हिन्दी-जनता के लिए अनुकरणीय है। उनका श्रीनिकेतन शान्तिनिकेतन का पूरक है। वे जीवन को शुष्क नहीं बनाना चाहते। उनके

वर्षोत्सव, शरदोत्सव और वसन्तोत्सव को जिन्होंने देखा है, वे कह सकते हैं कि कवीन्द्र जीवन को एकांगी बनाने के सख्त विरोधी हैं। क्या ही अच्छा होता, यदि हिन्दी लेखकों, कवियों, गायनाचार्यों और विद्वानों का कोई डेपूटेशन शान्तिनिकेतन तथा श्रीनिकेतन की यात्रा इस उश्द्देय से करता कि हम वहाँ की विशेषताओं का अध्ययन करके उन्हें हिन्दी भाषा-भाषियों की संस्थाओं में लायँगे। कवीन्द्र रवीन्द्र वस्तुतः महान कर्मयोगी भी हैं।

यदि कवि के मानी हैं द्रष्टा, जो बहुत दूर की देख सके, जो कल्पना के आकाश में विचरण कर सके, यही नहीं जो अपनी कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता हो और जिसका व्यक्तित्व उसके प्रत्येक वाक्य एवं प्रत्येक शब्द के पीछे बोलता हो, तो यह कहना पड़ेगा कि महात्मा गांधी इस युग के सब से महान कवि हैं। कोरमकोर छन्दबद्ध पद्य लिखनेवाले जीव कवि नहीं। किसी महान लेखक ने कहा—"कोरमकोर विचार बिना कार्य के वैसा ही है, जैसा गर्भपात।" और हमें अपने साहित्य-क्षेत्र को इस पाप से—शक्ति के इस अपव्यय से—बचाना है।

लेखक का काम ख़ास तौर पर दुभाषिये का है। वह प्रकृति का दुभाषिया मानव-समाज के लिये है और स्वयं मानव-समाज के एक भाग का दूसरे भाग के लिए। विश्व में तथा मानव जगत में इस समय जो इतना कलह मचा हुआ है, उसका एक कारण यह भी है कि संसार में उपयुक्त दुभाषियों की कमी है। इसके सिवाय अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध संग्राम करने के लिए कटिबद्ध रहना भी लेखक का ही कर्तव्य है। यह ज़माना विचार-जगत् में विचरने का नहीं है, यह है अपने विचारों का कार्यरूप में परिणत करने युग। किसी ने रोमा रोलाँ से पूछा था—"आप नवयुवकों के लिए क्या सन्देश देंगे?"

उन्होंने उत्तर दिया—"नवयुवकों को मेरा सन्देश एक वाक्य में आता है—विचारों से कार्य को अलग मत करो। कार्य दो प्रकार के होते हैं। एक तो निकट का, अभी हाल का और दूसरा दूर का, यानी भविष्य का। ऐसा न होना चाहिए कि दूर के कार्य के कारण हम वर्तमान कर्तव्य की उपेक्षा करें अथवा वर्तमान कार्य हमारी दृष्टि को संकुचित कर दे और विचारों का क्षितिज हमारी आँखों से ओझल ही हो जाय। जो 'बुद्धि-जीवी' वास्तव में सच्चा

और सजीव है, वह उपर्युक्त दोनों कर्तव्यों को साथ-साथ निबाहेगा, वह एक के लिए दूसरे का परित्याग न करेगा। जो विचारक है, वह अपने विचारों द्वारा भिन्न-भिन्न कार्यों की धारा को प्रभावित करने का प्रयत्न करेगा। जो विचार क्रियाशील नहीं है, वह विचार दरअसल विचार ही नहीं है, वह तो कोई स्थिर चीज है—मुर्दा है! आजकल हमारे समाज के विशेष व्यक्ति जिस सौन्दर्य-उपासना का ढोंग रचते हैं और 'विचारों का उद्देश्य विचार' बतलाते हुए कार्य-क्षेत्र से भागते हैं, वह सौन्दर्योपासना वास्तव में बाँझ है और वह पतन के गड्ढे के किनारे पर ही है। उसमें मुर्दे की सड़ाँद आने लगी है। जो क्रियाशील है, वही जीवित है।"

रोमा रोलाँ का कथन वस्तुतः सोलह आने ठीक है। हमारे जो लेखक अथवा कवि केवल अपने मन-मन्दिर में प्रगतिशील बनने का अभिमान करते हैं; पर जिनके जीवन के रहन-सहन तथा नित्यप्रति के कार्यों में वही पुरानी प्रतिक्रियात्मक पद्धति विराजमान है, वे साधारण जनता को कभी स्फूर्ति दे सकेंगे, इसकी कोई सम्भावना नहीं। जिनका हम उद्धार करना चाहते हैं उनके बीच में जाने से झिझकते हैं, इससे अधिक विडम्बना की बात क्या हो सकती है? और सच तो यह है कि यह 'उद्धार' शब्द ही ग़लत है। हमें दूसरों का नहीं, अपना 'उद्धार' करना है।

हमारे पास इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है—'जैसा जिसकी अन्तरात्मा कहे, वह वैसा करे।" यह अपनी-अपनी योग्यता, रुचि, सामर्थ्य और परिस्थिति पर निर्भर है। पर पूर्णतया सजीव साहित्यिक हम उसी को मानेंगे, जिसकी आत्मा किसी बन्धन में नहीं है, जिसकी, कलम को कोई सरकार या संस्था कदापि नहीं ख़रीद सकती, अपनी अन्तरात्मा का आदेश ही जिसके लिए सर्वोपरि है और जो तमाम खतरों में पड़ कर भी तदनुसार कार्य करता है। हमें श्रम-विभाजन की नीति से और पात्र-भेद का ख़याल करते हुए काम करना चाहिए। वास्तव में हिन्दी लेखकों, कवियों और कलाकारों की जिम्मेवारी इस भारत-भूमि में सबसे अधिक भारी है।

आयरलैण्ड के उस अमर कलाकार और कर्मयोगी ए० ई० के शब्दों को एक बार हम फिर उद्धृत करते हैं—"अर्थशास्त्री हमें दैनिक रोटी दे सकते हैं; पर भावी दिनों के लिए जिस भोजन की ज़रूरत प्रभु ईसा ने बतलाई

थी, उसका प्रबन्ध तो कोई दूसरे ही करेंगे। वह कार्य है कवियों का, कलाकारों गायकों का और उन वीरतापूर्ण तथा उदारचरित महान व्यक्तियों का, जिनका जीवन नमूने के तौर पर जनता के सामने पेश किया जा सके। वे लोग ही उन आदर्शों को जन्म दे सकते हैं, जिनसे हमारा समाज प्रभावित तथा शासित होगा। कलाकारों का कर्तव्य है कि वे वांछनीय जीवन की कल्पित मूर्ति हमारे सामने उपस्थित करें, आदर्श मानव-जगत की झलक हमको दिखलायँ और राष्ट्र की आत्मा का चित्र हमारे सामने खींच कर रख दें। आयरलैण्ड की विफलता की जिम्मेवारी है हमारे उन कवियों पर, जो अपनी दैवी श्रेणी से बिल्कुल बिछुड़ गये और जो अपनी-अपनी ढपली पर अलग-अलग अपना-अपना राग छेड़ते रहे, और साथ ही उस विफलता की जिम्मेवारी उन लेखकों पर भी है, जिन्होंने मानव-स्वभाव के महत्व पर ध्यान देने के बजाय उसकी क्षुद्रताओं का ही वर्णन करना उचित समझा !"

क्या उपर्युक्त पंक्तियों में हमारे लिए कोई सन्देश नहीं है ? हिन्दी-भाषा-भाषी ग्रामों की संख्या चार लाख से कम न होगी। अब वक्त आ गया है कि हिन्दी लेखक और कवि, गायक कलाकार आपस में मिल कर इस प्रश्न पर विचार करें कि चार लाख हिन्दी-भाषा-भाषी ग्रामों में, जहाँ जीवन-सरिता की तह (बक़ौल कवीन्द्र) झाड़-झंखाड़ों और कूड़ा-करकटों से भर गई है, किस प्रकार आनन्द और उल्लास की लहर लाई जा सकती है ? ओह ! कितना महान कार्य और कितना उच्च लक्ष्य है हमारे सामने !

मनिहारी—सितम्बर के 'विशाल भारत' में उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यिक स्वर्गीय अल्लामा राशउल खैरी की एक छोटी और सुंदर कहानी प्रकाशित हुई है। कहानी इस प्रकार है—

मनिहारी आई।

कौन मनिहारी ?

टके की चूड़ियाँ पहनाने वाली। मगर किस तरह आई ? घर में दाख़िल होते ही बहुओं ने झुक कर आदाब किया। बेटियों ने सलाम किये। मनिहारी ने दुआएँ दीं, और घरवाली के पास पहुँची। बहुओं और बेटियों ने मनिहारी को आदबो सलाम किया था—घर वाली ने

बैठे-ही-बैठे, मगर गर्दन झुका कर। मनिहारी ने सर पर हाथ रखा, दुआ दी और बैठ गई।

माँ का इशारा पाते ही बेटी या बहू ने सिवइयाँ, कचौरियाँ, मिठाइयाँ सामने लाकर रखीं। मनिहारी ने पेट भर कर खाईं। कुल्ली की। पानी पिया। बीवी ने पिटारी खोल ज़र्दा बनाया। मनिहारी ने पान मुँह में रखा और यह दुआ दी—"बूढ़ सुहागिन, साँईं जिएँ, बच्चे जिएँ।"

चूड़ियाँ सारे घर को आठ-दस आने से ज़्यादे की न होंगी। बीवी ने अढ़ाई रुपये बटुए से निकाल सामने रखे और कहा—"लो बुआ, अपना नेग।"

मनिहारी सुकड़ कर पीछे हटी और कहने लगी—"वाह बेगम, ये अढ़ाई कैसे? मैं तो वही पाँच लूँगी। और अब के तो और ज़्यादा दो। तुम्हारी हुसना भी तो ससुराल से आई हुई है। उसकी ईदी भी लूँगी।"

बेगम ने अठन्नी और दी—"लो, हुसना की भी लो"

मनिहारी अब भी अकड़ रही है और हाथ नहीं लगती—"नहीं बीवी, मैं तो पूरे पाँच लूँगी। अल्ला रखे, सब ख़र्च पूरे हुए, मेरे ही दो रुपये काट रही हो। मैं तो बड़ी बेगम साहबा से पाँच ही लेकर उठती थी।"

बहू-बेटियाँ दम-बख़ुद हैं, लड़के ख़ामोश हैं और अगर साहबे ख़ाना मौजूद हैं, तो उनकी मजाल नहीं कि बुज़ुर्गों के ज़माने की मनिहारी के सामने उफ़ कर सकें। बेगम ने एक रुपया और दिया कहा—"बस, देख लो, चार रुपये हो गये, यही ले जाओ। अल्लाह चाहे, तो बक़रईद पर कसर निकाल दूँगी।"

बहुतेरे ही बीवी ने समझाया; मगर मनिहारी ने 'ना' से 'हाँ' न की और यही कहे गई—"ऐ बीवी, सालका मेला है। तुम्हारी जूतियों की तुफ़ैल, बाल-बच्चों की ईद हो जाती है। तुम देने वाले ज़िन्दा रहो कि मुझ बुढ़िया का मान रख लेती हो।"

बेगम ने एक रुपया और दिया। मनिहारी दुआएँ देती हुई उठी। लड़की ने सलाम किया, तो यह दुआ दी—"जीती रहो, नसीब अच्छा हो। अम्मा-बाबा की सलामती में अपना घर सुधारो।" बहू ने सलाम किया, तो

यह दुआ दी—"बूढ़ सुहागिन, दूधों नहाओ, पूतों फलो।"

'विशाल भारत' के संपादक के मतानुसार इस कहानी की भाषा हिन्दी ही है। बस लिपि का भेद है। 'इसमें सन्देह नहीं कि इसकी भाषा हिन्दी ही है। फारसी मिश्रित उर्दू लिखने वालों को इससे सबक सीखना चाहिए। कहानी में 'आदाबो सलाम' 'साहब ख़ाना' और 'तुफ़ैल' आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं यद्यपि यह बोलचाल के हिन्दी शब्द नहीं हैं, तो भी इस तरह की भाषा को किसी कदर हिन्दी कहना उचित ही है। 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर फारसी-अरबी के शब्दों को प्रश्रय देने वाले यदि इस प्रकार की भी भाषा लिखने का प्रयास करें तो राष्ट्रभाषा की व्यापक उन्नति हो सकती है।

———

———

प्राप्ति स्वीकार

[ले०—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, संग्रहमन्त्री]

निम्न-लिखित पुस्तकें-हिन्दी संग्रहालय के लिये प्राप्त हुई हैं। इसके लिये ग्रन्थकर्ता, प्रेषक और प्रकाशकों को अनेक धन्यवाद है।

सूर्यनमस्कार—श्रीमान् औंधनरेश श्री भवानराव पन्त प्रतिनिधि बी० ए० सुलझे हुए विचार के नरेश हैं। आपने सूर्य नमस्कार की व्यावहारिकता और वैज्ञानिकता पर बहुत विचार कर धर्म के साथ स्वास्थ्य और व्यायाम की दृष्टि से सूर्य नमस्कार के प्रचार का बड़ा प्रयत्न किया है। इस सम्बन्ध की बिविध भाषाओं में पुस्तकें भी निकल चुकी हैं। उसी सम्बन्ध की यह हिन्दी पुस्तक है। विविध प्रकार से इस विषय के समर्थन का इसमें १२८ पृष्ठों में विवेचन है। साथ ही सूर्य नमस्कार के दस आसनों का चित्र भी है। पुस्तक सर्वथा अवलोकनीय, संग्राह्य और व्यवहार्य है। दाम ॥) पता स्वाध्याय मण्डल, औंध जिला सतारा।

मनुष्य विकास—श्रीयुक्त रामेश्वर बी० एस० सी० ने इसमें इन बातों का वैज्ञानिक अनुसन्धान किया है कि प्रकृत्ति के अन्तर्गत मनुष्य का स्थान क्या है और मनुष्य अपनी बुद्धि से किस प्रकार सफल होता आया हैं एवं विकास के क्रम में मनुष्य किस स्थान तक पहुँच पाया है। पुस्तक १० प्रकरणों में समाप्त हुई है। पुस्तक महत्व पूर्ण है। सवा रुपये में नवलकिशोर प्रेस हज़रतगंज लखनऊ से मिलती है।

अयोध्या दिग्दर्शन—पण्डित रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक" ने यात्रियों के हितार्थ धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से इसमें अयोध्या का वर्णन किया है। स्थलों का वर्णन उनका माहात्म्य आदि अच्छी तरह दिखाया गया है। ।≥) में पुस्तक श्री-हिन्दी शिक्षित समाज श्री अयोध्या जी से मिलती है।

भाषा का प्रश्न—आज दिन हिन्दी-हिन्दुस्तानी और उर्दू के रूपों के सम्बन्ध में बहुत चर्चा हो रही है। इस पुस्तक में पण्डित चन्द्रवली पाण्डेय

एम० ए० ने १० प्रकरणों में राष्ट्रभाषा, हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का ऐतिहासिक और गुण स्वरूपानुसार वर्णन किया है। पुस्तक बारह आने में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त होती है।

बिहार में हिन्दुस्तानी -बिहार में देहाती लोगों के लिये महमूद सीरीज नामकी पुस्तक माला प्रकाशित हुई है। उनकी भाषा के सम्बन्ध में बड़ी कटु आलोचना हो रही है। इस पुस्तक में पण्डित चन्द्रबली पाण्डेय ने प्रमाणों सहित इस विषय का अच्छा विवेचन किया है और दिखलाया है कि हिन्दुस्तानी के नाम से बिहार में जैसी भाषा प्रचलित की जा रही है, वह उसका कैसा नाशकारी स्वरूप है। पुस्तक चार आने में नागरी प्रचारिणी सभा काशी से मिलती है।

बिहार और हिन्दुस्तानी—बिहार के कुछ साहित्य सेवियों ने इस अपमान से बचने के लिये पुस्तक लिखी है कि हिन्दुस्तानी की सृष्टि बिहार में हो रही है और बिहारियों को हिन्दी लिखना नहीं आता। इसके लेखकों का मुख्य कटाक्ष पं० चन्दवली पांडेय की पुस्तकों पर है। आपने उदाहरण के द्वारा यह भा दिखलाया है कि यू० पी० में भी ऐसी ही भाषा का प्रयोग कई पुस्तकों में हुआ है। हमारी समझ में तो बिहार की पुस्तकें इस समय सामने हैं, इसलिये प्रधानतः उनकी आलोचना हो रही है। बिहारियों पर कटाक्ष करना शायद आलोचकों का उद्देश्य नहीं है। यदि संयुक्त प्रान्त वाले बिगड़ी हिन्दी लिखते हैं तो वे भी दोषी हैं; किन्तु उनकी बिगड़ी हिन्दी के कारण अन्यत्र की बिगड़ी हिन्दी का समर्थन नहीं हो सकता। यदि समझा जाता है कि सचमुच महमूद सीरीज की पुस्तकों की भाषा हिन्दी या सरल हिन्दुस्तानी नहीं है तो उसके संशोधन का प्रयत्न होना चाहिए, इसे तू तू मैं मैं का विषय बना कर प्रधान विषय को गौण नहीं बनने देना चाहिए। चाहे संयुक्त प्रान्त हो चाहे मद्रास वा बम्बई हो, जहां भी भाषा की दृष्टि से प्रयत्न या आन्दोलन की आवश्यकता है वहां स्वतन्त्रता से यह काम होना चाहिए। पुस्तक "विद्यापति-हिन्दी सभा-दरभंगा" द्वारा प्रकाशित हुई है और वहीं से मिलेगी।

हिन्दी बनाम उर्दू— जो लोग यह कहते हैं कि देश की राष्ट्र भाषा

उर्दू है, उनके कथन का उत्तर देते हुए और प्रमाणों द्वारा हिन्दी और उर्दू की परिस्थिति दिखलाते हुए पण्डित वेंकटेशनारायण तिवारी जी ने जो तीन लेख लिखे हैं, उन्हीं का यह संग्रह है और प्रयाग के इण्डियन प्रेस, लिमिटेड से यह प्रकाशित हुई है। आलोचना तीखी किन्तु करारी है। तिवारी जी की आलोचना ने इस आन्दोलन में एक प्रकार की सनसनी पैदा कर दी है।

मराठी-हिन्दी भाषान्तर शिक्षिका—"मुम्बई हिन्दी विद्यापीठ" द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में मराठी से हिन्दी भाषान्तर करने की सुविधा के लिये कुछ व्याकरण की रीति और शब्दार्थ का बोध कराते हुए भाषान्तर करने का ढंग बतलाया है। इसके द्वितीय भाग का दाम ।=) और इसी की कुँजी का दाम डेढ़ आना है। श्रीमती रखमाबाई तल्लूर, इन्दिराबाई वांयगणकर और श्रीयुक्त विट्ठलशेट्टि (तीनों राष्ट्रभाषा विशारद) इसकी लेखिका और लेखक हैं। मराठी द्वारा हिन्दी सीखने वालों के लिये उपयोगी है।

अँग्रेजी हिन्दी भाषान्तर शिक्षिका कुंजी—अँग्रेज़ी से हिन्दी सीखने वालों की सुविधा के लिये "बम्बई हिन्दी विद्यापीठ" ने जो पुस्तकें प्रकाशित की हैं उनके दूसरे भाग की यह कुंजी है। दाम डेढ़ आना। इसकी भी लेखिका और लेखक ऊपर लिखी महोदया और महोदय है।

ब्राह्मणों का इतिहास—बलिया ज़िले और तहसील में भोजपुर एक ग्राम है वहां के ब्राह्मणों का इसमें इतिहास दिया हुआ है। कुछ स्थल का वर्णन भी है। लेखक पं० भुवनेश्वर मिश्र एम० ए० विशारद और पं० हरिकृष्ण मिश्र विशारद हैं। श्री सरयूपारीण ब्राह्मण सभा विहार, वोड़ा, पटना से पुस्तक प्राप्त होती है।

सिन्हा एण्ड को० की पुस्तकें—लहरिया सराय विहार में सिन्हा एण्ड० को० कम्पनी और दी सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज स्थापित है, उसी के स्वत्वाधिकारी और प्रिंसपल-डाक्टर यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० यू० एस० ए० ने होमियोपैथी और वायोकैमिक पर कुछ पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से चार संग्रहालय के लिये प्राप्त हुई हैं। (१) वायोकेमिक चिकित्सा तत्व हैं। इस सिद्धान्त के डाक्टरों का कहना है कि शरीर में सदा १२ क्षारों

की मौजूदगी आवश्यक है। इनमें से किसी की कमी या अधिकता होने से ही रोग होता है। उन्हीं बारह क्षारों द्वारा चिकित्सा करने का इसमें विधान है, मूल्य ॥।) (२) पारिवारिक चिकित्सा इसमें होमियोपैथी और बायोकैमिक विधि से संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा लिखी गयी है। सरल और अच्छी है। मूल्य ॥।) (३) अमेरिकन आर्गेनन होमियोपैथी चिकित्सा के आविष्कारक और प्रचारक सैमुअल हैहनीमैन की मूल पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है। इस चिकित्सा प्रणाली में यह पुस्तक आधारभूत मानी जाती है। मू० १) (४) मेडिकल डिकशनरी होमियोपैथी और डाक्टरी व्यवहृत अँग्रेजी शब्दों का इसमें हिन्दी और उर्दू में अनुवाद दिया गया है। चिकित्सकों के काम की पुस्तक है, मूल्य १॥)

पद्माकर की काव्य साधना—आज कल के कुछ कवि और आलोचक ब्रजभाषा के, विशेष कर रीतिकाल के कवियों की बुरी तरह धज्जी उड़ाया करते हैं। ऐसे समय में प्राचीन कवियों की कृतियों की यथार्थ और मार्मिक आलोचना की बड़ी आवश्यकता है। इस पुस्तक में पद्माकर कवि की कृतियों और उनकी काव्य साधना का आलोचनात्मक विचार हुआ है। लेखक अखोरी गंगाप्रसाद सिंह जी की विचार शैली गम्भीर, गुणदोष निरूपक और उच्च साहित्यिक ढंग की है। इस सफलता के लिये लेखक को बधाई है। साहित्यक सेवा सदन काशी से पुस्तक पौने दो रुपये में मिलती है।

भ्रमर गीत सार—सूरदासकृत सूरसागर का सर्वोत्कृष्ट अंश भ्रमर गीत समझा जाता है। साहित्याचार्य पं० रामचन्द्र जी शुक्ल ने इसमें साहित्यक विचार पूर्ण भूमिका और टिप्पणी देकर उसका शुद्ध संस्करण तैयार किया है। ७६ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका से मूल की ग्रन्थियां खुल जाती हैं। सवा रुपये में साहित्य सेवा सदन काशी से पुस्तक प्राप्त होती है।

हमारे राष्ट्रपति—भारतीय कांग्रेस के सम्पूर्ण सभापतियों का जीवन चरित्र इसमें संग्रहीत है। लेखक श्रीयुक्त सत्यदेव विद्यालंकार और प्रस्तावना लेखक डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी हैं। बाबू सुभाषचन्द्र वसु तक का जीवन चरित्र इसमें आ गया है। मूल्य १) पता सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली।

गीता मन्थन—भाई किशोरलाल मश्रूवाला ने गीता का मन्थन कर

ज्ञान तथा योग के सिद्धान्त, कर्म सिद्धान्त ज्ञान द्वारा कर्म सन्यास, ज्ञान दशा, चित्त निरोध, प्रकृति विज्ञान, योगी का देह त्याग, ज्ञान का सार, विभूति वर्णन, विराट दर्शन, भक्ति तत्व, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विचार, त्रिगुण निरूपण, पुरुषोत्तम स्वरूप देवी और आसुरी सम्पद, गुण से क्रियाओं का भेद, गुण परिणाम जैसा गीता वर्णित गूढ़ विषयों का सरल; मृदु-मधुर मक्खन निकाला है। मूल्य १।।) पता सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली।

महात्मा गाँधी—श्रीयुक्त रामनाथ सुमन जी ने महात्मा गाँधी की जीवनी, जीवन कथा के साथ उनके जीवन का रहस्य, तपस्या, राष्ट्र निर्माण, तत्व-ज्ञान, समाज सुधार, लेखन कला, दीनबन्धुत्व, स्मरणीय प्रसंग आदि का बहुत अच्छा वर्णन किया है। मूल्य ।=) पता सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली।

लंगट सिंह—मुजफ्फरपुर भूमिहार कालेज के संस्थापक और कर्मवीर तथा त्यागवीर बाबू लंगटसिंह की जीवनी श्रीयुक्त पं० रामवृक्ष शर्मा वेनीपुरी जी ने लिखी है। मूल्य ।) पता पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय।

मण्डन मिश्र—भगवान शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने वाले पण्डित मण्डन मिश्र और शास्त्रार्थ में मध्यस्थ होने वाली उनकी पत्नी विदुषी सरस्वती का इसमें जीवन चरित्र दिया गया है। अभी तक लोगों की यही धारणा थी कि मण्डन मिश्र माहिष्मती नगरी नर्मदा किनारे के रहने वाले थे; परन्तु इस पुस्तक में श्रीयुक्त कमलेश जी ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि दर्भङ्गा जिले का "महषी" स्थान ही माहिष्मती है। अर्थात् मण्डन मिश्र मैथिल ब्राह्मण थे और उनके वंशज अब तक दर्भङ्गा जिले के "मंगरौनी" गांव में रहते हैं। दाम ।) पता, पुस्तक भंडार लहरिया सराय।

माइकेल मधुसूदन दत्त—मेघनाद वध वंग काव्य के निर्माता माइकेल मधुसूदन दत्त की जीवनी और उनके कामों का इसमें वर्णन किया गया है। लेखक श्रीयुक्त रामनाथ लाल जी सुमन, पता—पुस्तक भण्डार लहरिया सराय। दाम ।)

देश प्रेम की कहानियाँ—बाल साहित्य माला की यह चौथी पुस्तक है। बालकों के मनोरंजन और साथ ही देश प्रेम की शिक्षा देने के लिए

छः उपयोगी कहानियाँ दी गयी हैं। कहानियाँ भिन्न भिन्न देशों की हैं। अंतिम कहानी ताना जी की सिंहगढ़ विजय की याद दिलाने वाली है। पुस्तक वीरता और देश प्रेम से पूर्ण है। सम्पादक श्रीयुक्त अशोक, दाम दो आना। पता–साहित्य मण्डल, दिल्ली।

जीवन सन्देश—खलील जिब्रान के "दी प्रोफेट" का हिन्दी अनुवाद है, अनुवादक श्रीयुक्त किशोरीरमण जी टण्डन और प्रस्तावना लेखक श्रीयुक्त काका कालेलकर जी हैं। मूल्य आठ आना। पता–सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली। कुल २८ विषयों पर मार्मिक-गम्भीर विचार किये गये हैं। वर्णन इतना सरल है कि पढ़ते-पढ़ते ही विषय समझ में आ जाता है।

हिन्दी मराठी स्वबोधिनी—हिन्दी जानकर आप ही आप मराठी सीखने के लिये यह पुस्तक बड़े काम की है। अनुवाद के लिये जो पाठ दिये गये हैं वे बहुत मनोरंजक हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा से दस आने में मिलेगी।

सत्य सिद्धान्त साहस्त्री– सच्चे सिद्धान्त के एक हज़ार चुने हुये उपदेश वाक्य इसमें दिये गये हैं। लेखक श्रीयुक्त मेलाराम जी वैश्य भिवानी वाले हैं। आप ही से पुस्तक मुफ़ में मिलेगी।

उर्दू का रहस्य—श्रीयुक्त पण्डित चन्द्रवली पाँडेय एम० ए० ने विविध क्षेत्रों में उर्दू के स्वरूप का मार्मिक विवेचन किया है। बहुत सी ऐतिहासिक और मर्म की बातों पर विचार हुआ है। पुस्तक हिन्दी वालों के देखने और समझ कर सावधानी ग्रहण कराने योग्य है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से ॥।) में मिलती है।

मृगमरीचिका—उपन्यास की पुस्तक है। सामाजिक अत्याचार और दुर्दशाओं का अच्छा खाका खींचा गया है। लेखक श्री अखौरी गंगाप्रसाद जी। सवा रुपया में श्री सच्चिदानन्द जी मध्यमेश्वर हिन्दी साहित्य-समिति बनारस से प्राप्त होगी।

बालमनोविज्ञान—बाल शिक्षा में जितने और जिस प्रकार से मनोविज्ञान की आवश्यकता पड़ती है, उसका इसमें विवेचन किया गया है।

लेखक श्रीयुक्त लालजीराम शुक्ल एम० ए० बी० टी० । दाम १।) पता नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

आयुर्वेदिक इंजेकशन विज्ञान—आजकल चिकित्सा जगत में इञ्जेकशन अर्थात सूचिका भरण का महत्व बढ़ता जा रहा है। आयुर्वेद में इसका तत्व तो सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है, परन्तु इसकी विस्तृत रीतियों का विचार पश्चिमी विज्ञान के प्रचार से बलवान् हो उठा है। आयुर्वेद के अनुसार इंजेकशन की औषधियाँ तैयार करना और इंजेकशन लगाने की विधियाँ इसमें लिखी गयी हैं। इसके लेखक झाँसी के डाक्टर राधागोविन्द जी मिश्र हैं। आपसे ही पाँच रुपये में पुस्तक प्राप्त होती है।

नवीन शिल्पमाला—श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका और हित चिन्तिका हैं। वही इसकी लेखिका हैं। गृह शिल्प की बहुत सी चीज़ों की तैयारी की तरकीबें इसमें लिखी गयी हैं। आवश्यक चित्रों के द्वारा विषय समझाया गया है। दाम २॥) लेखिका से देहरादून के पते पर पुस्तक मिलेगी।

मनोहर कहानियाँ—श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी जी की १३ वर्षीया पुत्री कुमारी सुजाता ने इसे बँगला से अनुवाद किया है। कहानियाँ मनोरंजक हैं। लड़कियों और लड़कों का मनोरंजन करने में समर्थ होंगी। दाम ॥) पता ऊपर लिखा है।

माता और कन्या—श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी जी ने अपनी पुत्री को सम्बोधन कर नारी जीवन के महाव्रत के साधन के विषय में उपदेशों का सार सुनाया है। पुस्तक स्त्रियों के काम की है। दाम ।-)

उपनिषत सार—श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी जी के पिता पण्डित नवीनचन्द्र राय पंजाब में एक प्रसिद्ध हिन्दी हितैषी और प्रचारक थे। उन्हीं ने ब्रह्मज्ञान के प्रचार और परिचय के लिये वर्षों पहले यह पुस्तक लिखी थी। उसी को चौधरानी जी ने फिर से प्रकाशित किया है। इसमें उपनिषदों का सार दिया गया है। आठ आने में पुस्तक चौधरानी जी से मिलेगी।

हिन्दी बंगला शिक्षक—हिन्दी के द्वारा बँगला सीखने के लिये यह पुस्तक बहुत सहायक हो सकती है। श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी ने इसे लिखा और प्रयाग के इण्डियन प्रेस ने प्रकाशित किया है। ≡) एक आने में पुस्तक चौधरानी जी से मिलेगी।

यूरोप का इतिहास—यूरोप के इतिहास का यह पहला भाग है। लेखक पण्डित रामकिशोर शर्मा बी० ए० विशारद और प्रकाशक "सस्ता साहित्य प्रकाशक मण्डल" अजमेर है। दाम ॥।≈) संकलन अच्छा हुआ है, वर्णन शैली सादी-सुबोधगम्य है।

यूरोप का इतिहास द्वितीय भाग—यह यूरोप के इतिहास का दूसरा भाग है। इसके लेखक भी पं० रामकिशोर जी और प्रकाशक भी सस्ता साहित्य प्रकाशक मण्डल अजमेर है। दाम ॥≡) इसमें सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट के कैद करने तक का इतिहास है।

तामिल वेद—मद्रास-तामिल में तिरुवल्लुवर एक अछूत महात्मा हो गये हैं, उन्हें लोग ऋषि के समान आदर देते हैं। उन्होंने तामिल भाषा में जो उपदेश कविता वद्ध लिखे हैं उन्हें तामिल वेद के नाम से कहा जाता है। श्रीयुक्त क्षेमानन्द जी राहत ने उसी का हिन्दी अनुवाद कर बड़ा उपकार किया है। तामिल देश का वर्णन और ग्रंथकार का परिचय भी दे दिया गया है। मूल्य ॥।) पता श्रीयुक्त जीतमल जी लूणिया, सस्ता साहित्य मण्डल अजमेर।

प्रारम्भिक जीव विज्ञान—भिन्न भिन्न जीव धारियों की शरीर रचना, उनका प्राकृतिक जीवन, शारीरिक कार्य कलाप, उनकी भोजन प्रणाली, पाचन क्रिया, स्वासोच्छ्वास आदि तथा वनस्पति विज्ञान सम्बन्धी बातों का इसमें प्रारम्भिक वर्णन बहुत अच्छा दिया गया है। इस विषय का वर्णन बहुत मनोरञ्जक और ज्ञानप्रद है। लेखक श्रीयुक्त सन्त प्रसाद जी टण्डन एम० एस० सी०, डी० फिल (श्रीमान टण्डन जी के सुपुत्र) प्रयाग विश्वविद्यालय और प्रकाशक नेशनल प्रेस प्रयाग है। पुस्तक इन विषयों के पाठ्य क्रम के योग्य है।

सन्तवाणी—इसमें कवीर, दादू, तुकाराम, मीरा, नानक, जायसी आदि के १८-विषयों तथा कुछ विविध विषयों पर उपदेशप्रद वाणियां है।

सम्पादक श्रीयुक्त वियोगी हरि जी हैं। दाम ॥) पता सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

उद्गार—श्रीमती होमवती देवी की मार्मिक, हृदयस्पर्शी कविताओं का इसमें संग्रह है। अपने दुःखी जीवन की अनुभूति आपने कविता द्वारा प्रगट की है, इससे उसमें स्वाभाविकता है, एक प्रकार की सरसता है। साधना-साहित्य सदन मेरठ से ॥।) में पुस्तक मिलती है।

अर्घ—इसमें भी श्रीमती होमवती देवी जी की ३० कविताओं का संग्रह है। कविताएं उच्चकोटि की भावमय और प्रभावोत्पादक हैं। आठ आने में बाबू श्रीनिवास अग्रवाल, किताब महल ज़ीरो रोड प्रयाग से मिलती है।

मदशाला—लेखक का विचार है कि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में एक मस्ती और तन्मयता का रहना आवश्यक है। उसकी लहर में जीवन मद का सञ्चार करने के लिये आपने इस मदशाला का निर्माण किया है। इसमें वह मदिरा नहीं जिसे पिपक्कड़ बारम्बार मांगता है; परन्तु वह मद है जिसका खुमार एक बार पीने पर ही सब दिन रहता है। इसमें सूफ़ीमत की प्रेम वासना है। कविता अच्छी है। लेखक श्रीयुक्त कृष्णचन्द शर्मा चन्द्र हैं। आठ आने में चैत्यधाम मेरठ से पुस्तक मिलती है।

श्याम सतसई—पण्डित तुलसीराम शर्मा दिनेश ने श्यामभक्ति में विभोर हो कर इस सतसई का निर्माण किया है। पहले शतक में राधाकृष्ण स्वरूप, दूसरे में उसकी व्यापकता और अध्यात्म तीसरे में प्रेम-अनुकम्पा-भावना-उद्गार, चौथे में सदाचार-वैराग्य, पांचवें में परोपकार आदि, छठे में विनोद आदि और सातवें में अन्योक्तियां, भारत, गोपियां आदि। बा० गंगाराम जी अग्रवाल की सहायता से आप इसे प्रेम पूर्वक भेंट कर रहे हैं। पता—मारवाड़ी व्यापारी विद्यालय, मीरा बाजार, गजाधर पार्कलेन, बम्बई।

प्रतिच्छाया—श्रीमती होमवती देवी तथा श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा और श्री विश्वप्रकाश दीक्षित की कविताओं का इसमें संग्रह है। आप लोगों का लक्ष्य "वर्तमान" विषय है। इसमें अनुभूति का पता लगता है। पुस्तक छः आने में साहित्य रत्न भण्डार, सिविल लाइंस, आगरा के पते पर मिलती है।

शेफाली—सुप्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पण्डित कामताप्रसाद गुरु के सुपुत्र पं० राजेश्वर गुरु की २७ कविताओं का यह संग्रह है। कविताओं में स्वाभाविकता है, प्रभाव उत्पन्न करने की प्रभा और अच्छी जीवनी शक्ति विद्यमान है। उक्तियों में भी नवीनता है, भावों में मौलिकता है। १।) में सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद से प्राप्त होगी।

सभाविधान—सभाओं के विधान सम्बन्ध की यह पुस्तक हिन्दी में नवीन और महत्वपूर्ण है। सभा क्या है, उसके उपकरण, प्रारम्भिक कार्यवाही, वक्तृताधिकार, प्रस्ताव विचार पद्धति, प्रस्ताव भेदोपभेद, प्रधान और फुटकर प्रस्ताव, सुबिधाजनक प्रस्ताव, प्रसंगजन्य प्रस्ताव, अधिकारात्मक प्रस्ताव, संशोधन, वादविवाद, सम्मतिगणना, शान्ति और व्यवस्था, पदाधिकारी और सभासद, समितियां, स्थायी सभाओं का संगठन, फुटकर बातें आदि शीर्षकों में कितने ही अन्तर्गत विषयों का इसमें विचार हुआ है। इसके लेखक पण्डित विष्णुदत्त जी शुक्ल का हम इस उत्तम कार्य के लिये अभिनन्दन करते हैं। ढाई रुपये में पुस्तक शुक्ल जी से साहित्य प्रकाशन मन्दिर ७।१ बाबूलाल लेन, कलकत्ते से मिलती है।

आधुनिक हिन्दी काव्य—श्रीयुक्त डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा और प्रोफेसर रामकुमार वर्मा ने मिलकर इस पुस्तक की रचना की है। १–सन्धि-कालीन धारा, २–नवीन धारा पूर्व ३–नवीन धारा उत्तर और ४–राष्ट्रीयधारा के विभाग कर वर्तमान कवियों की कविता पर इसमें विचार हुआ है। विचार गम्भीरता और सहृदयता पूर्वक हुआ है। प्रत्येक कवि की कृति पर एक सम्मति लिख कर उनकी कविताओं का कुछ संकलन भी कर दिया गया है। सरस्वती पबलिशिंग हाऊस जार्जटाउन इलाहाबाद से पुस्तक प्राप्त होती है।

नागरिक जीवन—अपने विषय की यह एक विचारपूर्ण शास्त्रीय पुस्तक है। चौबीस अध्यायों में नागरिक शास्त्रीय विषयों की विस्तार पूर्वक विवेचना की गयी है। देश के सार्वजनिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वालों के लिये इसे अवश्य देखना चाहिये। लेखक श्री कृष्णानन्द जी गुप्त बधाई के पात्र हैं। एक रुपये में सरस्वती प्रकाशन मन्दिर जार्ज टाउन इलाहाबाद से मिलती है।

पुरस्कार—श्रीयुत कृष्णानन्द जी गुप्त की २७ कहानियों का इसमें संग्रह है। गुप्त जी ने साहित्य सेवा के असिधारव्रतका अच्छा अनुभव किया है। आप कहते हैं "किसी भी भाषा के साहित्य सेवी के लिये ईमानदारी और सचाई के साथ कुछ लिखते रहना कठिन ही नहीं, असम्भव हो गया है।" इसी से प्रकट है कि साहित्य क्षेत्र में फूँक फूँक कर कदम रखने वाले गुप्त जी की कृति-कितनी स्वाभाविक मनोरंजक और आदर्श होगी। पुस्तक तीन रुपये में सरस्वती प्रकाशन मन्दिर इलाहाबाद से मिलती है।

प्रवासी की कहानी—इसके लेखक श्रीयुत भवानीदयालु जी सन्यासी और भूमिका लेखक राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी हैं। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासियों की मुसीबतों, उनके आन्दोलन, अधिकार प्राप्ति के उद्योग आदि का इससे पूरा पता लगेगा। अपने प्रवासी भाइयों की स्थिति का ज्ञान रखना प्रत्येक भारतवासी के लिये आवश्यक है। ढाई रुपये में पुस्तक बाल सहित्य प्रकाशक समिति १७१ हरिसनरोड कलकत्ता से प्राप्त होती है।

भारत की चित्रकला—काशीके श्रीयुत रायकृष्णदासजी भारतीय चित्रकला के विशेष मर्मज्ञ, रसिक और संग्राहक हैं। अपने विषय की यह शास्त्रीय विधि से विवेचित अधिकार पूर्ण पुस्तक है। मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त चित्रकारी के काल से लेकर उस्ताद रामप्रसाद तथा ठाकुर शैली तक की चित्रकला का इसमें सचित्र वर्णन हुआ है। इस परिश्रम पूर्ण सफलता के लिये रायकृष्णदास जी को बधाई है। पुस्तक १) में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त होती है।

त्रिवेणी—इसमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के तीन समालोचनात्मक प्रबन्धों के विशिष्ट अंशों का संग्रह हुआ है। मलिक मुहम्मद जायसी, महाकवि सूरदास और गोस्वामी तुलसीदास की कृतियों पर विचार किया गया है। एक रुपये में पुस्तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त होती है।

मआसिरुल उमरा भाग २—मुगल साम्राज्य के १५४ सरदारों की इसमें जीवनियों का संग्रह है। मुगल सौमाज्य के जो प्रधान मन्त्री, प्रसिद्ध सेनापति, प्रान्ताध्यक्ष आदि थे उनका वर्णन है। उनके नाम के आदि के अक्षर स्वर वर्ण के हैं। स्वर्गीय मुन्शी देवीप्रसाद जी की निधि से काशी नागरी

प्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित किया है। लेखक बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए० एल-एल० बी० ने पुस्तक तैयार करने में अच्छा परिश्रम किया है। मूल्य ४)।

हिन्दुत्व—स्वर्गीय प्रोफेसर रामदास जी गौड़ ने जैसे विज्ञान सम्बन्धी परिचयात्मक ग्रन्थ संग्रह किया था उसी तरह हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में एक विश्वकोष के रूप में यह उनकी अन्तिम देन है। हिन्दुत्व की परिभाषा, धर्म संस्कार, परम्परा और साहित्य से लेकर वेद, पुराण, व्याकरण, इतिहास, मतमतान्तर, कला आदि का इसमें परिचयात्मक वर्णन है। संग्रह बहुत काम का और उपयोगी है। मूल्य १०) मिलने का पता बाबू शिवप्रसाद गुप्त, सेवा-उपवन, काशी है।

कचहरी की भाषा और लिपि—पण्डित चन्द्रवली पाण्डे एम० ए० ने कचहारियों की भाषा और लिपि के इतिहास का इसमें उद्‌घाटन किया है और सिद्ध किया है कि नागरी लिपि और हिन्दी चिरकाल से जनता की लिपि और भाषा समझी जाकर दरबारों और अदालतों में प्रयुक्त होती है। पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा काशी से ॥=) में मिलती है।

जैनधर्म की पुस्तकें— धर्मपुरा- दिल्ली के जैन मित्र मण्डल ने जैनधर्म सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ किया है। इससे प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी में भी जैनधर्म का साहित्य सुलभ होने लगा है। संग्रहालय में निम्नलिखित पुस्तकें आई हैं जिसके लिये धन्यवाद। (१) जैन धर्म क्या है.? भारत में इस समय १२। लाख जैनी हैं, वे संक्षेप में अपने धर्म का-मर्म जान लें, इसीलिये यह ट्रेक्ट छपाया गया है। सारांश में आत्मा के शत्रु क्रोध-मान माया लोभ- अज्ञान आदि को जिन उपायों द्वारा जीता जा सके वही उपाय जैनधर्म है। जो इन शत्रुओं को जीत कर महापुरुष या परमात्मा हो जाते हैं उन्हें जिन या जिनेन्द्र कहते हैं। लेखक-ब्रह्मचारी शीतल-प्रसाद जी (२) ज्ञानसूर्योदय भाग २ फ़ख्ने कौम बाबू सूरजभानु वकील नकुड़ जिला सहारनपुर निवासी ने इसे लिखा है। हेतुवाद सिद्धान्त के अनुसार कर्म और उनका फल किस प्रकार मिलता है। हेतुवाद सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि का रचने वाला कोई ईश्वर नहीं माना जाता। सब काम वस्तु स्वभाव से

ही होता है। इसी को सामने रख इसमें प्रतिपादन शैली से काम लिया गया है। (३) नारी शिक्षादर्श—इसके लेखक पण्डित उग्रसेन जैन एम० ए०, एल० एल० बी० वकील रोहतक हैं। इसमें मिथ्यात्वनिबन्ध, गृहस्थ के दैनिक षटकर्म, पत्नी कर्तव्य, जननी और शिशु, माता का कर्तव्य, स्त्रियों की दैनिक चर्या, चौके की क्रिया, स्वास्थ्य के नियम, रोगी की सेवा और विधवाओं के कर्तव्य, प्रकरणों में स्त्रियों के लिये उपयोगी शिक्षा दी गयी है। मूल्यं ।=) (४) जैन वीरों का इतिहास— बाबू कामता प्रसाद जैन अलीगंज एटा ने जैन वीरों का इतिहास संग्रहकर अच्छा काम किया है। आजकल यद्यपि जैन जाति व्यापार में ही लगी देखी जाती है; परन्तु पिछले समय में इसने राज्य सञ्चालन और बड़े बड़े युद्ध भी किये हैं। इससे उसका आभास मिलेगा। मूल्य ।) (५) जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन—श्रीयुत अयोध्या प्रसाद गोयलीय "दास" ने इसमें इतिहासों का आलोकन कर जैन धर्म के वीरों का उल्लेख कर दिखलाया है कि अन्त में हमारी विलास प्रियता और आधुनिक शिक्षा ने हमारा पतन किया है। पुस्तक परिश्रम पूर्वक लिखी गयी है। मूल्य ।) कुछ भी नहीं है। (६) मौर्य साम्राज्य के जैन वीर—इसमें श्रीयुत अयोध्याप्रसाद गोयलीय ने मौर्य सम्राट चंन्द्रगुप्त का इतिहास लिख कर चन्द्र गुप्त को जैन धर्मानुयायी सिद्ध कराने का उद्योग किया है। आपने ऐसे प्रमाण भी दिये हैं जिनसे मालूम पड़ता है कि अन्तिम समय में चन्द्रगुप्त भी जैन धर्मानुसार आचरण करने वाला हो गया था। यही नहीं मौर्य साम्राज्य में और भी जैन वीरों के होने का इससे पता लगता है। इतिहास खोजियों के लिये पुस्तक पढ़ने योग्य है। मूल्य ।=) बहुत कम है।

वीणा का एकांकी नाटकांक— ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें लम्बे उपन्यास और नाटक पढ़ने का समय नहीं मिलता। ऐसे लोगों के लिए यदि छोटे छोटे नाटक तैयार कराये जायँ तो बहुत सफलता हो सकती है। इन्दोर की 'वीणा' के एकांकी नाटकों का एक स्वतंत्र अंक निकाला है। सभी नाटक छोटे होने के साथ ही बहुत ही मनोरंजक और प्रभावशाली हैं। सम्पादक महोदय को इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। भिन्न भिन्न रुचि तथा विचारों के पोषक नाटकों का संग्रह हुआ है। एतदर्थ सम्पादक जी को बधाई!

प्रान्तीय सम्मेलनों के लिये कार्य्यक्रम

[लेखक—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी]

[सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी और पत्रकार पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने प्रांतीय सम्मेलनों के कार्यक्रम तथा उनके संगठन के संबंध में अपने विचार हमारे पास 'पत्रिका' में प्रकाशनार्थ भेजे हैं, जो विशेष रूप से विचारणीय हैं। सं०]

१—प्रांतीय सम्मेलनों का महत्व दर असल अखिल भारतीय सम्मेलनों से किसी प्रकार कम नहीं, बल्कि कितने ही अंशों में वे केन्द्रीय संस्था से कहीं अधिक उपयोगी बनाये जा सकते हैं। ऐसा प्रयत्न होना चाहिये कि हमारे यह सम्मेलन तीन दिन के तमाशे न बन जायं। पहली बात तो यह है कि महीने भर पहले से प्रांत के भिन्न भिन्न भागों में साहित्यिक भाषण होने चाहिएं और जिन ज़िलों या नगरों में हिन्दी मंडल या हिन्दी परिषद न हों वहाँ तुरन्त ही उनकी स्थापना होनी चाहिए।

२—जिस प्रकार काँग्रेस के चुनाव के मौके पर अन्य प्रान्तों के नेता लोग आ आ कर व्याख्यान देते हैं उसी प्रकार हमारे प्रान्तीय सम्मेलनों के अवसर पर भी अन्य प्रान्तों के प्रमुख साहित्य सेवियों को निमंत्रण देकर बुलाना चाहिए, ताकि वे प्रान्त की साहित्यिक जागृति में सहायक हो सकें। उनके व्याख्यान कराने की इतनी जरूरत नहीं क्योंकि सभी लोग भाषण कला में निपुण नहीं होते जितनी प्रान्त के नवयुवक साहित्य प्रेमियों को उनके सम्पर्क में लाने की आवश्यकता है।

३—ग्राम स्कूलों के अध्यापकों में साहित्यिक प्रेम उत्पन्न करने और ग्राम पुस्तकालयों के स्थापित करने का यह अच्छा अवसर है।

४—ग्राम गीतों, ग्रामीण कहानियों, शब्दों और मुहाविरों के संग्रह के लिये उद्योग होना चाहिए। इसके लिये चार छोटे छोटे पुरस्कारों की घोषणा की जा सकती है।

५—प्रान्तीय साहित्य क्षेत्र का सर्वे होना चाहिए, अब तक क्या क्या

कार्य हुआ है और क्या करने को पड़ा है, इसकी जांच होनी निहायत जरूरी है। प्रान्त के प्रतिभाशाली युवक लेखकों तथा कवियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए तथा उनका परिचय प्रान्त के तथा बाहर के साहित्य सेवियों से तथा पत्रकारों से करा देना चाहिए, अखिल भारतीय सम्मेलन में तो ये लोग दर्शक मात्र ही रह जाते हैं।

६- सम्मेलन के अधिवेशन के एक दिन पहले चुने हुए साहित्य सेवियों की एक मीटिंग हो जानी चाहिए जिसमें प्रान्त के साहित्यिक, शिक्षा सम्बन्धी, तथा सांस्कृतिक प्रश्नों पर गम्भीरतापूर्वक विचार हो सके और आगे का कार्य क्रम निश्चित किया जा सके।

७—प्रांत के तथा हिन्दी जगत् की जो साहित्यिक शिक्षा सम्बन्धी तथा सांस्कृतिक समस्याएँ हों उन पर पहले से ही पत्रों में लिखा पढ़ी होनी चाहिए ताकि उपस्थित व्यक्तियों को उन पर विचार करने में सुविधा हो। उदाहरण के लिये अन्तर्प्रान्तीय साहित्यिक सहयोग का प्रश्न ही लीजिए। संयुक्त प्रान्त, विहार, मध्य प्रान्त, मध्य भारत तथा राजपूताना, हिन्दी के इन सुदृढ़ गढ़ों में अभी तक किसी प्रकार का संगठित साहित्यिक सहयोग नहीं स्थापित हो सका, अवश्य ही यह प्रश्न विचारणीय है।

८—प्रान्त के साप्ताहिक पत्रों के साहित्यांक इस अवसर पर निकलने चाहिए। इन विशेषांकों का साइज मामूली अंकों से दूना हो और इन्हें एक सप्ताह की छुट्टी मिल जाय। इस प्रकार यह घाटे में न रहेंगे।

९—साधारण जनता के मनोरंजन के लिये नाटक, कवि सम्मेलन और कवि दरबार इत्यादि किये जा सकते हैं। कवि सम्मेलनों का यदि उचित नियंत्रण न हो सके तो उन्हें बन्द कर देना ही ठीक होगा। उस हालत में पचास साठ चुने हुए व्यक्तियों के सम्मुख कविता पाठ किया जा सकता है।

१०—समाचार पत्रों में रिपोर्ट भिजवाने और सजीव वृतान्त या संस्मरण छपवाने का प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए। दर असल बाहर से तो सौ दो सौ आदमी ही आ सकते हैं। मुख्य श्रोता समुदाय तो पत्रों के पाठकों द्वारा ही निर्मित होता है।

११—प्रान्त के बाहर से आए हुए साहित्य सेवियों से अनुरोध करना चाहिए कि वे या तो प्रारम्भ में, या फिर सम्मेलन के बाद ४, ५ दिन इस

प्रान्त को दें। इनके मार्ग व्यय का प्रबन्ध सम्मेलन को ही करना चाहिए। जो अपना खर्च स्वयं उठा सकें उनकी बात दूसरी है।

१२—प्रोग्राम ऐसा ठसाठस न भर दिया जाय कि बेचारे साहित्य सेवी तंग आ जाँय। प्रातःकाल के तीन घंटे तो हर हालत में सुरक्षित रहने चाहिएं।

१३—केन्द्रीय सम्मेलन को मजबूत बनाने के लिये भी यह जरूरी है कि प्रान्तीय सम्मेलनों का संगठन सुदृढ़ हो। इस अवसर का उपयोग पिछले वर्ष का लेखा जोखा करने और अगले वर्ष का कार्यक्रम तैयार करने में होना चाहिए। भिन्न भिन्न साहित्य सेवियों के सुपुर्द कोई न कोई संगठनात्मक या रचनात्मक कार्य अवश्य होना चाहिए और वार्षिक अधिवेशन पर उनसे जवाब तलब होना चाहिए।

१४—सभापति ऐसे व्यक्ति को बनाना चाहिए जो साल में तीन चार महीने तो काम कर सके। वयोवृद्धों का सम्मान अधिवेशन के उद्घाटन संस्कार द्वारा किया जा सकता है। इस विषय में हमें अपनी राष्ट्रीय महासभा से सबक लेना चाहिए। राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी ने डेढ़ वर्ष तक जिस लगन से सारे देश का दौरा किया और श्री जवाहरलाल नेहरू ने देश भर में जो उत्साहपूर्ण और तूफानी यात्रा की, यदि उसी लगन तथा उत्साह का शतांश भी हमारे सम्मेलनों के सभापतियों में आ जाय तो फिर साहित्य क्षेत्र को सजीव बनाने में देर न लगे।

१५—सबसे अंतिम तथा सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है निकट के सुन्दर प्राकृतिक स्थलों की यात्रा। इस यात्रा के चित्र भी लिये जाने चाहिएं। खेलों की बात मैंने जान बूझ कर छोड़ दी है, क्योंकि अधिकांश हिन्दी साहित्य सेवी वयोवृद्ध अथवा 'अकाल-गंभीर' हैं, और उनके लिये खेलों में भाग लेना संभव नहीं।

ये थोड़े से परामर्श मुझे सूझे हैं, क्या अन्य सज्जन इस विषय पर अपनी सम्मति विस्तारपूर्वक लिखेंगे?

बुन्देलखण्ड साहित्य मंडल
टीकमगढ़ (सी० आई०)

———

सम्मेलन के लिए

श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की

हितकामना

'वीणा' के ज्येष्ठ १९९७ के अङ्क में 'पूना साहित्य सम्मेलन' शीर्षक के नीचे सम्पादक महोदय ने अपने विचारों में इस आशय का प्रश्न उठाया था कि स्वर्गीय पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी या महाकवि मैथिलीशरण जी गुप्त जैसे कितने साहित्यसेवी सम्मेलन से रूठ गये, और सम्मेलन ने उनकी किस रूप में चिन्ता की। इस पर मैंने 'सम्मेलन क्या करे क्या न करे' शीर्षक अपने लेख में (जो सम्मेलन पत्रिका के ज्येष्ठ-आषाढ़ के अङ्क में तथा और भी पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है) इसका उल्लेख करते हुए इस विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट की थी कि कविवर मैथिलीशरण जी गुप्त सम्मेलन से असन्तुष्ट हैं।

मेरे उक्त लेख को देखने के उपरान्त कविवर गुप्त जी का जो पत्र मेरे पास आया है उसकी प्रतिलिपि नीचे दी जा रही है—

श्रीराम

चिरगाँव (झाँसी)

सावन सुदि ७–'९७

प्रिय महोदय,

सम्मेलन-सम्बन्धी आपके वक्तव्य में अपने विषय की बात पढ़कर संकोच हुआ। विश्वास रखिए, सम्मेलन के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। हिन्दी के नाते मैं उसे अपनी ही संस्था समझता हूँ और उसका हिताहित अपना ही हिताहित मानता हूँ। सम्मेलन ने हिन्दी की बड़ी सेवा की है और टण्डन जी की तपस्या उसके पीछे है। वह तो हमारे गर्व का विषय है।

कृपया सम्मेलन की सेवा में मेरी श्रद्धा का संदेसा पहुँचा दीजिए। सम्मेलन मुझे अपना एक लघु सेवक समझे—ऐसा सेवक, जो अब कुछ

सक्रिय सेवा करने योग्य नहीं रह गया है परन्तु हृदय से सर्वदा उसकी मङ्गल-कामना करता है।

श्री डॉक्टर बाबूराम जी सक्सेना विनीत
हिन्दी साहित्य सम्मेलन मैथिलीशरण
प्रयाग

आशा है कि इस पत्र को पढ़कर कुछ हिन्दी साहित्यिकों की यह मिथ्या-धारणा, कि कविवर मैथिलीशरण जी गुप्त सम्मेलन से रूठे हैं, दूर हो जायगी।

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री।

———

परीक्षासमिति का सातवाँ अधिवेशन

परीक्षासमिति का सातवाँ अधिवेशन रविवार, २ भाद्रपद सम्वत्' ९७, तदनुसार ता० १८ अगस्त, सन् १९४० को श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन के सभापतित्व में हुआ।

(१) परीक्षासमिति के छठे अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और वह स्वीकृत हुई।

(२) पूना, दिल्ली, बीकानेर और लखनऊ स्थानों में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र स्थापित करने का विषय उपस्थित किया गया। सर्वसम्मति से केवल पूना में नूतन मराठी विद्यालय हाई स्कूल के प्रिन्सपल श्री नारलकर जी की अध्यक्षता में उक्त परीक्षा का केन्द्र रखना स्वीकृत हुआ। अन्य प्रार्थनापत्रों के सम्बन्ध में परीक्षासमिति के बताये हुए आदेशों के अनुसार सूचना दी गई।

(३) परीक्षामंत्री ने उत्तमा परीक्षा के विभिन्न केन्द्रों के लिये मौखिक परीक्षकों के निर्वाचन का विषय उपस्थित किया। सर्वसम्मति से प्रत्येक केन्द्र के लिये मौखिक परीक्षक निर्वाचित किये गये। यह भी निश्चय हुआ कि परीक्षासमिति द्वारा निर्वाचित परीक्षकों में से यदि कोई परीक्षक होना अस्वीकार करे तो परीक्षामंत्री को अधिकार होगा कि वह दूसरा परीक्षक नियुक्त कर लें।

(४) बिना प्रथमा में सम्मिलित हुए मध्यमा में सम्मिलत होने का अधिकार चाहने के लिये श्री गयाप्रसाद कुलश्रेष्ठ और श्री कमलाप्रसाद के प्रार्थनापत्र उपस्थित किये गये। केवल श्री गयाप्रसाद को मध्यमा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया गया। दूसरा प्रार्थनापत्र अस्वीकृत हुआ।

(५) परीक्षामंत्री ने चम्पालाल जैन की "भारतवर्ष पर जैन धर्म का प्रभाव" विषयक निबन्धसूची विचारार्थ उपस्थित की। सूची बहुत संक्षिप्त थी और आगामी वर्ष से निबंध लिखकर उपाधि प्राप्त करने का नियम भी हटा दिया गया है। अतः निश्चय हुआ कि परीक्षार्थी यदि चाहे तो

आगामी वर्ष साधारण परीक्षा में सम्मिलित होकर उपाधि प्राप्त करने का प्रयत्न करे।

(६) संवत् '९६ के मध्यमा परीक्षा के परीक्षार्थी श्री सीताराम और परीक्षार्थिनी श्री सावित्री देवी को 'विशारद' उपाधि देने के सम्बन्ध में उनके प्रार्थनापत्र उपस्थित किये गये। सर्वसम्मति से दोनों के प्रार्थनापत्र स्वीकृत हुए।

(७) पंजाब प्रान्त में राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाएं जारी करने के सम्बन्ध में श्री सेढ़मल जी गुप्त का प्रार्थनापत्र विचारार्थ उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि पंजाब हिन्दी भाषाभाषी प्रान्त है। अतः श्री सेढ़मल जी को लिखा जाय कि वे अपने यहाँ के विद्यार्थियों को प्रथमा एवं मध्यमा परीक्षाओं में सम्मिलित करावें और इन्हीं परीक्षाओं का वहाँ पर प्रचार करें।

(८) श्री रघुनाथदास शाण्डिल्य की निबंधसूची के सम्बन्ध में निर्णायकों की सम्मति पढ़कर सुनाई गई। दोनों निर्णायकों की सम्मति विपक्ष में थी। अतः निबन्धसूची अस्वीकृत हुई।

(९) इम्फाल में मध्यमा परीक्षा का केन्द्र स्थापित करने के सम्बन्ध में श्री बालेश्वरराय शर्मा बी० ए०, 'विशारद', हेडमास्टर, भैरवदान स्कूल का प्रार्थनापत्र विचारार्थ उपस्थित किया गया। सर्वसम्मति से वह स्वीकृत हुआ। तत्पश्चात् सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

दयाशंकर दुबे
परीक्षामंत्री

कार्यसमिति की आठवीं बैठक

कार्यसमिति की आठवीं बैठक रविवार तथा सोमवार, श्रावण २६ व २७ संवत् १९९७, ता० ११ और १२ अगस्त १९४० को क्रमानुसार ३ और ४ बजे दिन से सम्मेलन के कार्यालय में श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जी के सभापतित्व में हुई। कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

१—श्री प्रधान मन्त्री जी ने अखिल महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पूना के मन्त्री श्री कृ० ज० धर्माधिकारी का ता० २६-६-४० का इस आशय का परिपत्र कि महाराष्ट्र प्रचार समिति के कार्यकर्त्ताओं के लिए सम्मेलन के पूना में होने वाले अगले अधिवेशन की स्वागत समिति की नई कार्यकारिणी समिति को किसी प्रकार की सहायता देना आवश्यक नहीं है, विचारार्थ उपस्थित किया।

निश्चय हुआ कि कार्यसमिति की राय में श्री धर्माधिकारी जी का उक्त परिपत्र निकालना अनुचित था। महाराष्ट्र प्रचार समिति सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का अंग है। सम्मेलन के अगले अधिवेशन को सफल बनाना सम्मेलन की उक्त प्रचार समिति तथा उसके अंगों का कर्तव्य है। कार्यसमिति को आशा है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति महाराष्ट्र प्रचार समिति के सम्बन्ध में उचित कार्रवाई करेगी और अगले सम्मेलन को सफल बनाने में पूर्ण सहायता देगी।

२—प्रधान मंत्री जी ने सम्मेलन की साधारण सदस्यता के लिए तीस सज्जनों के आवेदनपत्र उपस्थित किए जो स्वीकृत हुए।

३—गनेशदीन चपरासी को ॥) मासिक की वेतन वृद्धि दी जानी स्वीकृत हुई।

४—साहित्य विभाग के लेखक श्री हरिहरप्रसाद के त्यागपत्र दे देने पर उनके स्थान पर श्री रामनिधि शर्मा सम्प्रति तीन महीने के लिए २०) मासिक पर नियुक्त किए गए।

५—१० दिसम्बर ३९ की कार्यसमिति ने श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी

को 'हिन्दी समाचार मंडल' के बारे में योजना उपस्थित करने का काम सौंपा था। उन्होंने इस सम्बन्ध में इस आशय की रिपोर्ट उपस्थित की कि आजकल लड़ाई के दिनों में कागज की महंगी के कारण समाचारपत्र इस ओर विशेष रुचि न लेंगे, इसलिए यह विषय अभी स्थगित किया जाय और उपयुक्त समय पर उठाया जाय। उनके कथनानुसार विषय स्थगित किया गया।

६—परीक्षा विभाग के अस्थायी लेखक श्री गंगाधर तिवारी १५)—१—२५) रु० की नई ग्रेड में स्थायी रूप से नियुक्त किए गए।

७—परीक्षा विभाग के लिए अतिरिक्त लेखकों की नियुक्ति का विषय उपस्थित किया गया और निम्नलिखित सिद्धान्त तय हुए—

(१) परीक्षा विभाग अथवा अन्य किसी विभाग में परीक्षार्थियों की अस्थायी नियुक्ति नहीं होनी चाहिए।

(२) यदि पहले से नियुक्त कोई कर्मचारी सम्मेलन की किसी परीक्षा में बैठना चाहे तो प्रधान मंत्री जी से स्वीकृति लेना आवश्यक होगा।

(३) अस्थायी लेखकों की नियुक्ति के विषय में कार्यालय एक सूची तैयार करे और नियुक्तियाँ यथासम्भव इसी सूची में से की जायँ।

(४) किसी भी दशा में अस्थायी नियुक्ति तीन महीने से अधिक के लिए नहीं होगी। यदि आवश्यकता हो तो उसी कर्मचारी की तीन मास के लिए फिर दुबारा नियुक्ति हो सकती है। किन्तु इस प्रकार की तीन तीन मास की दो नियुक्तियों के बाद यह आवश्यक होगा कि उस कर्मचारी की नियुक्त समाप्त की जाय।

(५) सूची तैयार करने के लिए प्रार्थनापत्र माँगे जायंगे।

८—कार्यालय की कार्यशैली और कार्यविभाग की जाँच के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई गई—

(१) श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, (२) श्री लक्ष्मीधर बाजपेयी, (३) प्रो० ब्रजराज, (४) प्रधान मंत्री तथा (५) प्रबन्ध मंत्री (संयोजक)

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मन्त्री।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

बुद्ध चरित—रचयिता पं० रामचन्द्र शुक्ल; नवीन संस्करण; मूल्य २॥); महात्मा बुद्ध का उज्वल चरित्र, सुन्दर व्रजभाषा काव्य; महत्वपूर्ण भूमिका में व्रज, खड़ी और अवधी भाषाओं का व्याकरण विवेचन।

सोवियत भूमि—ले०—महा-पंडित राहुल सांकृत्यायन; मूल्य ५।), वर्तमान रूस के संबंध में यह एक विश्वकोष है।

हिन्दी रस-गंगाधर (दूसरा भाग)—अनुवादक पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी; मूल्य ३॥)। यह संस्कृत के उद्‌भट विद्वान पंडितराज जगन्नाथ के ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। अलंकार संबंधी स्वतंत्र आलोच-नाओं से भरा हुआ संस्कृत साहित्य का पांडित्यपूर्ण और अत्यन्त प्रामाणिक लक्षण ग्रंथ है।

प्रेमसागर—सम्पादक —बाबू व्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी० पृष्ठ संख्या ४७०; नवीन संस्करण; मूल्य १॥)। यह हिन्दी गद्य साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं; परन्तु यह सर्वोपरि संशोधित और मूल प्रेमसागर के आधार पर तैयार किया गया है।

भारतीय मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास; मू० साधारण सं० १); विशिष्ट सं० १।) भारतवर्षीय मूर्तिकला की अथ से इति तक सचित्र तात्विक व्याख्या। इस विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है।

भारत की चित्रकला—ले०—राय कृष्णदास; मू० साधारण संस्क-रण १); विशिष्ट सं० १।)। भारत-वर्ष की महान चित्रकला का मार्मिक निरीक्षण। समस्त भारतीय भाषाओं में अपने ढंग की सर्वश्रेष्ठ रचना।

बाल-मनोविज्ञान—ले० प्रो० लालजी राम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०; मूल्य १।)। हिन्दी में बाल मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

बिहार में हिन्दुस्तानी—ले०-पं० चन्द्रबली पांडे, एम० ए०; मूल्य ।); बिहार प्रान्त में हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या की मार्मिक व्याख्या।

भाषा का प्रश्न—ले०—पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए०; मूल्य ॥); भाषा संबंधी प्रश्न का विस्तृत और विवेचनापूर्ण उत्तर।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले०—पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए०, मूल्य ॥)। अदलतों में प्रयुक्त होने वाली भाषा और लिपि की गंभीर आलोचना।

मिलने का पता—**नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा

प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≡)
४ राष्ट्रभाषा ॥)
५ शिवाबावनी ≡)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास भाग १ २॥)
८ " " " " २ २।)
९ ब्रजमाधुरीसार २॥)
१० पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
११ सत्य हरिश्चन्द्र ।-)
१२ हिन्दी भाषा सार ॥।)
१३ सूरदास की विनय पत्रिका ≡)
१४ नवीन पद्यसंग्रह ॥।)
१५ कहानी कुञ्ज ॥=)
१६ विहारी संग्रह ≡)
१७ कवितावली ॥।)
१८ सुदामा चरित्र ।)
१९ अलंकार प्रकाश ।=)
२० कबीर पदावली ॥।=)
२१ हिन्दी गद्य निर्माण १॥)
२२ हिन्दी साहित्य की रूप रेखा ।)
२३ सती करुणाकी ॥)
२४ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव ॥=)
२५ पार्वती मङ्गल ।)
२६ सूर पदावली ॥=)
२७ नागरी अंक और अक्षर ≡)
२८ हिन्दी कहानियाँ १॥)
२९ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)
३० तुलसी दर्शन २॥)
३१ भूषण संग्रह भाग १ ।-)
३२ भूषण संग्रह भाग २ ॥=)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)
२ प्रथमालंकार निरूपण ≡)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ॥।)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल साहित्यमाला

१ बाल पञ्चरत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ

१६)